परीक्षागुरु

4623
38

लेखक—

स्वर्गीय लाला श्रीनिवासदास।

प्राप्ति स्थान—

कलकत्ता-पुस्तक-भण्डार

१७१ ए० हरिसन रोड,

कलकत्ता।

द्वितीयबार। [मूल्य १)

प्रकाशक—
मोतीलाल लाट मंत्री, ज्ञान वर्धक विभाग
(मारवाड़ी ट्रेडस् एसोसियेशन)
१६६, हरिसन रोड,
कलकत्ता ।

महावीरप्रसाद पोद्दार द्वारा
मुद्रित—
"वणिक् प्रेस"
६०, मिर्जापुर ष्ट्रीट,
कलकत्ता ।

लाला श्रीनिवासदासका जीवन चरित्र।

लाला श्रीनिवासदास जाति के वैश्य थे। उनके पिताका नाम लाला मंगलीलाल जी था। वे मथुरा के सुप्रसिद्ध सेठ लक्ष्मीचंदजी के प्रधान मुनीब थे। कहने को तो वे मुनीब थे पर वास्तव में वे सेठजी के दीवान थे। वे दिल्ली की कोठी के कारिन्दे थे और वहीं रहते थे।

लाला श्रीनिवासदास का जन्म संवत् १९०८ सन् १८५१ ई० में हुआ था। ये बाल्यावस्था ही से बड़े शीलवान, सदाचारी और चतुर थे। इन्होंने आरंभ में हिन्दी और फिर उर्दू, फ़ारसी, संस्कृत और अंगरेज़ी आदि भाषाओं में अभ्यास करके शीघ्र ही अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली।

लाला श्रीनिवासदास ने छोटी उम्र में बड़ी योग्यता प्राप्त कर ली थी। महाजनी कारोबार में तो इन्होंने ऐसी दक्षता प्राप्त कर ली थी कि केवल अठारह वर्ष की अवस्था में दिल्ली की कोठी का सारा कारोबार हाथों हाथ संभाल लिया। इनकी ऐसी योग्यता देखकर पंजाब प्रांत की गवर्नमेंट ने इन्हें म्युनिसिपल कमिश्नर बनाया और आनरेरी मजिस्ट्रेट की पदवी प्रदान की। इनकी जैसी रीझ बूझ सरकार में थी वैसे ही बिरादरी वाले और शहर के महाजन लोग भी इनको मानते थे।

लाला श्रीनिवासदास को दिल्ली की कोठी का कारबार करने के अतिरिक्त इधर उधर दौरा करके और कोठियों की भी देख भाल करनी पड़ती थी, इससे इन्हें अपनी बुद्धि को परिमार्जित करने का और भी अच्छा अवसर हाथ लगा। इन्हें मातृभाषा

हिन्दी से स्वाभाविक प्रेम था। आप जहां कहीं बाहर जाते और वहां कोई हिन्दी का लेखक या रसिक होता तो उससे अवश्य ही मिलते। यदि इनके यहां कोई हिन्दी का गुणग्राही जाता तो सब काम छोड़ कर उससे बड़े प्रेम से मिलते और उसका अच्छा सत्कार करते थे।

एक बार आप पंडित प्रतापनारायण मिश्र के यहां मिलने गए और बड़ी नम्रतापूर्वक इन्होंने उन्हें एक मोहर नज़र करनी चाही। इस पर पंडित प्रतापनारायण बेतरह बिगड़े और बोले आप हमारे पास अपनी धन की गरूरी बतलाने आए हो। इसके उत्तर में इन्होंने नम्रतापूर्वक हाथ जोड़ कर उत्तर दिया कि नहीं महाराज मैं तो मातृभाषा के मन्दिरपर अक्षत चढ़ाता हूं।

लाला श्रीनिवासदास को हिन्दी से बड़ा प्रेम था और इसकी सेवा करने का बड़ा उत्साह था परन्तु काम काज की झंझट के कारण इन्हें अवकाश बहुत कम मिलता था। इसलिये इनके लिखे हुए तप्तासंवरण, संयोगितास्वयंवर, रणधीरप्रेममोहिनी; और परीक्षागुरु ये ही चार ग्रन्थ हैं, पर फिर भी ये चारों ग्रन्थ एक से एक बढ़ कर हैं। परीक्षागुरु में इन्होंने जो एक साहूकार के पुत्र के जीवन का दृश्य खींचा है उसे देख कर स्पष्ट प्रगट होता है कि इन्हें सांसारिक व्यवहारों का कैसा अच्छा अनुभव था।

खेद के साथ कहना पड़ता है कि लाला श्रीनिवासदास केवल ३६ वर्ष की अवस्था में संवत् १९४४ (सन् १८८७ ई०) में कालकवलित हुए। यदि ये कुछ दिन और रहते तो हिन्दी भाषा की बहुत-कुछ सेवा करते। इनका चरित्र और स्वभाव आदर्श मानने योग्य है।

निवेदन।

अबतक नागरी और उर्दू भाषामैं अनेक तरहकी अच्छी, अच्छी पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं परन्तु मेरे जान इसरीतिसे कोई नहीं लिखी गई इसलिये अपनी भाषामैं यह नई चालकी पुस्तक होगी परंतु नई चाल होनेंसै ही कोई चीज अच्छी नहीं हो सक्ती बल्कि साधारण रीतिसै तो नई चालमैं तरह, तरहकी भूल होनेंकी संभावना रहती है और मुझको अपनी मन्द बुद्धिसै और भी अधिक भूल होनेंका भरोसा है इसलिये मैं अपनी अनेक तरहकी भूलोंसे क्षमा मिलनेंका आधार केवल सज्जनोंकी कृपा दृष्टि पर रखता हूं।

यह सच है कि नई चालकी चीज देखनेंको सबका जी ललचाता है परंतु पुरानी रीतिके मनमैं समाये रहने और नई रीतिको मन लगाकर समझनेंमैं थोड़ी मेहनत होनेंसै पहले पहल पढ़नेंवाले का जी कुछ उलझनें लगता है और मन उछट जाता है इस्से उसका हाल समझमैं आनेंके लिये मैं अपनी तरफसे यहां कुछ खुलासा किया चाहता हूं:—

पहले तो पढ़नेंवाले इस पुस्तकमैं सौदागरकी दुकानका हाल पढ़तेही चकरावेंगे क्योंकि अपनी भाषामैं अबतक वार्तारूपी जो पुस्तकें लिखी गई हैं उन्मैं अक्सर नायक, नायका वगैरैका हाल ठेटसै सिलसिलेवार (यथाक्रम) लिखा गया है "जैसे कोई राजा, बादशाह, सेठ, साहूकारका लडका था उसके मनमैं इस बातसै यह रुचि हुई और उस्का यह परिणाम निकला" ऐसा सिल-

सिला इस्मैं कुछभी नहीं मालूम होता "लाला मदनमोहन एक अङ्गरेजी सौ[illegible]गरकी दूकानमैं अस्बाब देख रहे हैं लाला ब्रजकिशोर, मुन्शीचुन्नीलाल और मास्टर शिंभूदयाल उनके साथ हैं" इन्मैं मदनमोहन कौन, ब्रजकिशोर कौन, चुन्नीलाल कौन और शिंभूदयाल कौन है ? इन्का स्वभाव कैसा है ? परस्पर-सम्बन्ध कैसा है ? हरेककी हालत क्या है ? यहां इस्समय किस लिये इकट्ठे हुए हैं ? यह बातें पहलेसै कुछ भी नहीं जताई गई ! हां पढनें वाले धैर्यसै सब पुस्तक पढ लेंगे तो अपनें, अपनें मौकेपर सब भेद खुल्ता चला जायगा और आदिसै अन्त तक सब मेल मिल जायगा परन्तु जो साहब इतना धैर्य न रक्खेंगे वह इस्का मतलब भी नहीं समझ सकेंगे.

अलबत्ता किसी नाटकमैं यहरीति पहलेसै पाई जातीहै परंतु उस्की इस्की लिखनेंकी रीति जुदी जुदी है. नाटकोंमैं जिस्का बचन होता है उस्का नाम आदिमैं लिख देते हैं और वह पैरेग्राफ* उस्का बचन समझा जाता है परंतु इस्मैं ऐसा नहीं होता इस्मैं ऐसा" " चिन्ह (अर्थात इन्वरटेडकोमा या कुटेशन) के भीतर कहनेंवालेका बचन लिखा जाता है और कहनेंवालेका नाम बचनके बीचमैं या अंतमैं जहां पुस्तक रचनें वालेको जगह मिल्ती है; वह लिखदेता है अथवा नाम लिखे बिना पढनेंवालेको कहनेंवालेका बचन मालूम हो सके तो नहीं भी लिखता. एक आदमीका बचन बहुत करके एक पैरेग्राफमैं पूरा होता है परंतु कहीं, कहीं किसी, किसीके

---

* पैरेग्राफके प्रारंभमैं हर जगह नएसिरसै जरासी लकीर छोडकर लिखा जाता है और जहां वह पूरा होताहै वहां बाकी लकीर खाली छोडदी जातीहै. जैसे यह पैरेग्राफ "" से प्रारम्भ होकर "होतेहैं" पर समाप्त हुआ है.

बचनमैं और और विषय आजाते हैं तो ऐसे "चिन्ह (इन्वरटेडकोमा) सै पहला बचन पूरा किये बिना दूसरे पैराग्राफके आदिसै ऐसे" चिन्ह लगाकर उसीका बचन जारी रक्खा जाताहै. और वचनके बीचमैं दूसरेका वचन आजाता है तो वहां उस बचनको अलग दिखानेंके लिये उस्पर भी अक्सर इन्वरटेडकोमा लगा दिये जातेहैं परंतु जो बचन ऐसे" " चिन्होंके भीतर नहीं होते वह पुस्तक रचनें वालेकी तरफसै होते हैं.

और चिन्होंमैं ऐसा , (कोमा) किंचित् बिश्राम, ऐसा ; (सिमीकोलन) अथवा : (कोलन) अर्धबिश्राम, ऐसा. (फूलिस्टोप) पूर्णबिश्राम, ऐसा ? (इन्ट्रोगेशन) प्रश्नकी जगह, ऐसा ! (एक्सक्लेमेशन) आश्चर्य अथवा संबोधन वगैरेके जो शब्द जोर देकर बोलनें चाहियें उन्के आगे ऐसा–चिन्ह बात अधूरी छोड़नेंके समय लगाया जाता है और ऐसे ( ) चिन्हों (पेरेनथिसिस) के भीतर पहले पदका खुलासा अर्थ या चलते प्रसंगमैं कोई दूतरफी अथवा विशेष बात जतानी होती है वह लिख देते हैं.

इस पुस्तकमैं दिल्लीके एक कलिपत (फर्जी) रईसका चित्र उतारा गया है और उस्को जैसेका तैसा (अर्थात् स्वाभाविक) दिखानेंके लिये संस्कृत अथवा फारसी अरबीके कठिन कठिन, शब्दोंकी बनाई हुई भाषाके बदले दिल्लीके रहनेंवालोंकी साधारण बोलचालपर ज्यादः दृष्टि रक्खी गई है. अलबत्ता जहां कुछ बिद्याबिषय आ गया है वहां विवस होकर कुछ, कुछ शब्द संस्कृत आदिके लेनें पड़े हैं परंतु जिनको ऐसी बातोंके समझनेमैं कुछ झमेल मालूम हो उन्की सुगमताके लिये ऐसे प्रकरणोंपर ऐसा + •

चिन्ह लगा दिया गया है जिस्सै उन प्रकरणोंको छोड़कर हरेक मनुष्य सिलसिले वार वृतान्त पढ़ सका है.

इस पुस्तकमैं संस्कृत, फारसी अङ्गरेजीकी कविताका तर्जुमा अपनी भाषाके छंदोमैं हुआ है परंतु छंदोंके नियम और दूसरे देशोंका चाल चलन जुदा होनेकी कठिनाईसै पूरा तर्जुमा करनेंके बदले कहीं, कहीं भावार्थ ले लिया गया है.

अब इस पुस्तकके गुणदोषों पर विशेष विचार करनेंका काम बुद्धिमानोंकी बुद्धिपर छोड़कर मैं केवल इतनी बात निवेदन किया चाहता हूं कि कृपाकरके कोई महाशय पूरी पुस्तक बांचे बिना अपना विचार प्रगट करनेंकी जल्दी न करैं और जो सज्जन इस विषयमैं अपना विचार प्रगट करैं वह कृपाकरके उस्की एक नकल मेरे पासभी भेजदें (यदी कोई अखबारवाला उस अंककी कीमत चाहेगा तो वह तत्काल उस्के पास भेज दी जायगी) जो सज्जन तरफदारी (पक्षपात) छोडकर इस विषयमैं स्वतंत्रतासै अपना-विचार प्रगट करैंगे मैं उन्का बहुत उपकार मानूंगा.

इसपुस्तकके रचनेंमैं मुझको महाभारतादि संस्कृत, गुलिस्तां वगैरे फारसी, स्पेक्टेटर, लार्ड बेकन, गोल्डस्मिथ, विलियमकूपर आदिके पुरानें लेखों और स्त्रीबोध आदिके बर्तमान रिसालोंसै बड़ी सहायता मिली है इसलिये इन् सबका मैं बहुत उपकार मान्ता हूं और दीनदयालु परमेश्वरकी निर्हेतुक कृपाका सच्चे मनसै अगित उपकार मानकर यह लेख समाप्त करता हूं.

सज्जनोंका कृपाभिलाषी

श्रीनिवासदास, दिल्ली.

परीक्षागुरु

प्रकरण १.

सौदागरकी दुकान.

चतुर मनुष्य को जितनें खर्च मैं अच्छी प्रतिष्ठा अथवा धन मिलसक्ता है मूर्ख को उस्सै अधिक खर्चनें पर भी कुछ नहीं मिल्ता

लार्ड चेस्टर फील्ड.

लाला मदनमोहन एक अंग्रेजी सौदागर की दुकान मैं नई, नई फाशन का अंग्रेजी अस्बाब देख रहे हैं लाला ब्रजकिशोर, मुन्शी चुन्नीलाल, और मास्टर शिंभूदयाल उन्के साथ हैं.

"मिस्टर ब्राइट! यह बड़ी काच की जोड़ी हमको पसंद है इस्की क़ीमत क्या है?" लाला मदनमोहन नें सौदागर सै पूछा.

"इस साथकी जोड़ी अभी तीनहजार रुपे मैं हमनें एक हिन्दुस्थानी रईस को दी है लेकिन आप हमारे दोस्त हैं आपको हम चारसौ रुपे कम कर देंगे."

"निस्सन्देह ये काच आपके कमरेके लायक़ हैं इन्के लगनें सै उस्की शोभा दुगुनी हो जायगी" शिंभूदयाल बोले.

"आहा! मैं तो इन्के चोखटोंकी कारीगरी देखकर चकित हूं! ऐसे अच्छे फूल पत्ते बनाये हैं कि सच्चे बेल बूटों को मात करते

हैं जी चाहता है कि कारीगर के हाथ चूम लूं" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा.

"इन्के बिना आपका इस्समय कौन्सा काम अटक रहा है ?" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "खेल तमाशेकी चीज़ों से भोलेभाले आदमियोंका जी ललचाता है वह सौदागर की सब दुकान को अपनें घर लेजाया चाहते हैं परन्तु बुद्धिमान अपनी ज़रूरी चीजोंके सिवाय किसी पर दिल नहीं दौड़ाते" लाला ब्रजकिशोर बोले.

"ज़रूरत भी तो अपनी, अपनी रुचि के समान अलग, अलग होती है" मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

"और जब दरिद्रियोंकी तरह धनवान भी अपनी रुचि के समान काम न कर सकैं तो फिर धनी और दरिद्रियों मैं अन्तरही क्या रहा ?" मास्टर शिंभूदयाल नें पूछा.

"नामुनसिब काम करके कोई नुक्सानसै नहीं बच सक्ता।

"धनी दरिद्री सकल जन हैं जग के आधीन।
चाहत धनी विशेष कछु तासों ते अति दीन॥"

लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे." मुनासिब रीति से थोड़े ख़र्च मैं सब तरहका सुख मिल सक्ता है परन्तु इन्तज़ाम और कामके सिल्सिले बिना बड़ीसै बड़ी दौलत भी जरूरी ख़र्चों को पूरी नहीं हो सक्ती. जब थोथी बातों मैं बहुतसा रुपया खर्च हो जाता है तो ज़रूरी कामोंके लिये पीछेसै ज़रूर तक़लीफ़ उठानी पड़ती है"

"चित्त की प्रसन्नता के लिये मनुष्य सब काम करते हैं फिर जिन चीज़ों के देखनें सै चित्त प्रसन्नहो उन्का खरीदना थोथी बातोंमैं कैसे समझा जाय ?" मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

"चित्त प्रसन्न रखनें की यह रीति नहीं है चित्त तो उचित व्यवहारसे प्रसन्न रहता है" लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया.

"परंतु निरी फिलासफ़ीकी बातोंसे भी तो दुनियादारीका काम नहीं चल सक्ता" लाला मदनमोहन नें दुनियादार बन कर कहा.

"बलायत की सब उन्नति का मूल लार्ड बेकन की यह नीति है कि "केवल बिचार, ही बिचार मैं मकड़ी के जाले न बनाओ आप परीक्षा करके हरेक पदार्थ का स्वभाव जानों" मिस्टर ब्राइट नें कहा.

"क्यों साहब! ये काच कहां के बने हुए हैं?" मुन्शीचुन्नी-लाल नें सौदागरसे पूछा.

"फ्रान्स के सिवाय ऐसी सुडोल चीज़ कहीं नहीं बन सक्ती. जब से ये काच यहां आए हैं हर वक्त देखनेंवालों को भीड़ लगी रहती है और कई कारीगर तो इन्का नक्शा भी खींच लेगये हैं"

"अच्छा जी! इन्की क़ीमत हमारे हिसाब मैं लिखो और ये हमारे यहां भेज दो"

"मैंनें एक हिन्दुस्थानी सौदागर की दुकान मैं इसी मेल के काच देखे हैं उन्के चोखटों मैं निस्सन्देह ऐसी कारीगरी नहीं है परन्तु क़ीमत मैं वह इन्से बहुत ही सस्ते हैं" लाला ब्रजकिशोर बोले.

"मैं तो अच्छी चीज़ का गाहक हूं चीज़ पसंद आये पीछे मुझको क़ीमत की कुछ परवा नहीं रहती"

"अंग्रेजों की भी यही चाल है" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"परन्तु सब बातों मैं अंग्रेजों की नकल करनी क्या ज़रूर है ?" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"देखिये ! जबसै लाला साहब यह अमीरी चाल रखनें लगे हैं लोगोंमैं इन्की इज़्ज़त कितनी बढ़ती जाती है !" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"सर सामानसै सच्ची इज़्ज़त नहीं मिल सक्ती सच्ची इज़्ज़त तो सच्ची लियाक़तसै मिल्ती है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "और जब कोई मनुष्य बुद्धिके विपरीत इस रीतिसै इज़्ज़त चाहता है तो उस्का परिणाम बड़ा ही भयङ्कर होता है ।"

"साहब ! इतनी बात तो मैं हिम्मतसे कहता हूं कि जो इस साथकी जोड़ी इस शहरमैं दूसरी जगह निकल आवेगी तो मैं ये काच मुफ्त नज़र करूंगा" मिस्टर ब्राइटनें ज़ोर देकर कहा.

"कदाचित इस साथकी जोड़ी दिल्ली भरमैं न होगी परन्तु कीमतकी कस्ती बढ़ती भी तो चीज़की हैसियतके बमूजिब होनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"जिस तरह मोतियोंके हिसाब मैं किसी दानेकी तोल ज़रा ज्याद: होनेंसै चौ बहुत ज्याद: बढ़ जाती है इसी तरह इन शीशोंकी क़ीमतका भी हाल है मुझको लाला साहबसै ज्याद: नफ़ा लेना मंजूर न था इस वास्तै मैंने पहले ही असली क़ीमत मैं चार सौ रुपे कम कर दिये इसपर भी आपको कुछ सन्देह हो तो आप तीसरे पहर मास्टर साहबको यहां भेज दें मैं बीजक दिखला कर इन्सै क़ीमत ठैरा लूंगा".

"अच्छा ! मास्टर शिंभूदयाल मदरसे सै लोटती बार आपके

पास आयंगे पर ये कान्च हमसे पूछे बिना आप और किसीको न दें" लाला मदनमोहननें कहा.

इस बातसे सब अपनें अपनें जीमें राजी हुए, ब्रजकिशोरनें इतना अवकाश बहुत समझा मदनमोहनके मनमें हाथसे चीज़ निकल जानेंका खटका न रहा, चुन्नीलाल और शिंभूदयालको अपनें कमीशन सही करनेंका समय हाथ आया और मिस्टर ब्राइटको लाला मदनमोहनकी असली हालत जाननेके लिये फुरसत मिली.

"बहुत अच्छा" मिस्टर ब्राइटने जवाब दिया "लेकिन आपको फुरसत हो तो आप एक बार यहां फिर भी तशरीफ लायं हालमें नई नई तरहकी बहुतसी चीजें बलायतसे ऐसी उम्दा आई हैं जिन्को देखकर आप बहुत खुश होंगे परंतु अभी वह खोली नहीं गई हैं और इस्समय मुझको रुपेकी कुछ जरूरत है इन चीजों-की क़ीमतके बिलका रुपया देना है आप मेहरबानी करके अपने हिसाब मैंसे थोड़ा रुपया मुझको इस्समय भेज दें तो बड़ी इनायत हो."

इस बचनमैं मिस्टर ब्राइट अपनें अस्बाबकी खरीदारीके लिये लाला मदनमोहनको ललचाता है परंतु अपने रुपे के वास्ते मीठा तक़ाज़ा भी करता है. चुन्नीलाल और शिंभूदयालके कारण उन्को मदनमोहनके लेन देनमें बहुत कुछ फ़ायदा हुआ परंतु उसके पचास हज़ार रुपे इस समय मदनमोहनकी तरफ़ बाक़ी हैं और शहर मैं मदनमोहन की बाबत तरह, तरहकी चर्चा फ़ैल रही हैं बहुत लोग मदनमोहन को फिजूल ख़र्च, दिवालिया बताते हैं और हक़ीक़त मैं मदनमोहन का ख़र्च दिन पर

दिन बढ़ता जाता है इस्सै मिस्टर ब्राइट को अपनी रकम का खटका है इसी लिये उस्ने इन् काचों का सौदा इस्समय अटकाया है और तीसरे पहर मास्टर शिंभूदयाल को अपनें पास बुलाया है.

"रुपया ! ऐसी जल्दी !" लाल ब्रजकिशोरनें मिस्टर ब्राइट को वहम मैं डालनें के लिये आश्चर्य सै इतनी बात कह कर मनमैं कहा" हाय ! इन् कारीगरीकी निरर्थक चीज़ोंके बदले हिन्दुस्थानी अपनी दौलत वृथा खोये देतेहैं"

"सच है पहले आप अपना हिसाब तैयार करायँ, उस्को देख कर अंदाज सैं रुपे भेजे जांयगे" मुन्शीचुन्नीलालनें बात बनाकर कहा.

"और बहुत जल्दी हो तो बिल कर के काम चला लीजिये. जब तक कागज के घोड़े दौड़ते हैं रुपे की क्या कमी है ?" ब्रजकिशोर बीच मैं बोल उठे.

"अच्छा ! मैं हिसाब अभी उतरवाकर भेजता हूं मुझको इस्समय रुपे की बहुत ज़रूरतहै" मिस्टर ब्राइटनें कहा.

"आपनें साढे नो बजे मिस्टर रसल को मुलाक़ातके लिये बुलायाहै इस वास्ते अब वहां चलना चाहिये" मास्टर शिंभूदयाल नें याद दिवाई.

"अच्छा मिस्टर ब्राइट ! इन् काचों की याद रखना और नया अस्बाब खुलै जब हम को ज़रूर बुला लेना" यह कह कर लाला मदनमोहन नें मिस्टर ब्राइट सै हाथ मिलाया, और अपने साथियों समेत जोड़ी की एक निहायत उम्दा वलायती फिटन मैं सवार होकर रवाने हुए.

जब बग्गी कंपनी बाग़ मैं पहुंची तो सवेरे का सुहावना समय देखकर सब का जी हरा हो गया. उस्समयकी शीतल, मंद, सुगंधित हवा बहुत प्यारी लगती थी वृक्षों पर हर तरहके पक्षी मीठे मीठे सुरों सैं चहचहा रहे थे! नहरके पानी की धीरी, धीरी आवाज़ कानको बहुत अच्छी मालूम होती थी! पन्नेसी हरी घास की भूमिपर मोतीसी ओस की बूंदें बिखर रहीं थी! और तरह, तरहकी फुलवाड़ी हरी मख़मल मैं रंग रंगके बूंटोंकी तरह बड़ी बहार दिखा रही थी इस स्वाभाविक शोभाको देखकर लाला ब्रज-किशोरनें मदनमोहन से थोड़ी देर वहां ठैरनें के वास्ते कहा.

इस्समय मुन्शीचुन्नीलाल नें जेबसै निकालकर घडी मैं चाबी दी और घडी देखकर घबराटसै कहा "ओ! हो! नोपर बीस मिनिट चलेगए तो अब मकान को जल्दी चलना चाहिये"

निदान लाला मदनमोहन की बग्गी मकानपर पहुंची और ब्रजकिशोर उन्सैं रुखसत होकर अपनें घर गए.

प्रकरण २

अकालमैं अधिकमास

अप्रापति के दिनन मैं ख़र्च होत अबिचार
घर आवत है पाहुनो बणिज न लाभ लगार

वृन्द.

"हैं अभी तो यहां के घन्टे मैं पोनें नो ही बजे हैं तो क्या मेरी घड़ी आध घन्टे आगे थी?" मुन्शी चुन्नीलालनें मकान पर पहुंच-

ते ही बड़े घन्टे की तरफ़ देख कर कहा. परन्तु ये उस्की चालाकी थी उसनें ब्रजकिशोर सै पीछा छुड़ानें के लिये अपनी घड़ी चाबी देनें के बहानें सै आध घन्टे आगे कर दी थी !

"कदाचित् ये घन्टा आध घन्टे पीछे हो" मास्टर शिंभूदयाल नें बात साध कर कहा.

"नहीं, नहीं ये घन्टा तोप सै मिला हुआ है" लाला मदनमोहन बोले.

"तो लाला ब्रजकिशोर साहब की लच्छेदार बातैं नाहक अधूरी रह गईं ?" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"लाला ब्रजकिशोर की बातैं क्या हैं चकाबू का जाल है वह चाहते हैं कि कोई उन्के चक्कर सै बाहर न निकलनें पाय" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"मैं यों तो ये काच लेता या न लेता पर अब उन्की ज़िद सै अदबद कर लूंगा"

"निस्सन्देह जब वे अपनी ज़िद नहीं छोड़ते तो आपको अपनी बात हारनी क्या जरूर है ?" मुन्शी चुन्नीलाल नें छींटा दीया.

हितोपदेश मैं कहा है "आज्ञालोपी सुतहु कों क्षमैं न नृपति विनीत ॥ को विशेष नृप, चित्रमैं जो न गहे यहरीति" ॥ * पंडित पुरुषोत्तमदासनें मिल्तीमैं मिलाकर कहा.

"बहुत पढ़नें लिखनें सै भी आदमी की बुद्धि कुछ ऐसी निर्बल हो जाती है कि बड़े, बड़े फिलासफर छोटी, बातों मैं धक्कर खानें लगते हैं" मास्टर शिंभूदयाल कहनें लगे. "सर आईजिक न्यूटन

---

* आज्ञा भङ्गकरान् राजा न क्षमेत सुतानपि । विशेषः कोनु राज्ञश्च राज्ञ श्चित्रगतस्य च ॥

कितनी ही बार खाना खाकर भूल जाते थे, जरमन का प्रसिद्ध विद्वान लेसिंग एक बार बहुत रात गए अपने घर आया और कुन्दा खड़काने लगा, नोकर नें ग़ैर आदमी समझ कर भीतर सै कहाकि "मालिक घर मैं नहीं हैं कल आना" इस्पर लेसिंग सच मुच लौट चला !!! इटली का मारीनी नामी कवि एक दिन कविता बनानेमैं ऐसा मग्न हुआ कि अंगीठी सै उस्का पैर जल गया तोभी उसै कुछ ख़बर न हुई !"

"लाला ब्रजकिशोर साहब का भी कुछ, कुछ ऐसा ही हाल है यह सीधी, सीधी बातों को विचार ही विचार मैं खैंच तान कर ऐसी पेचीदा बनालेते हैं कि उन्का सुलझाना मुश्किल पड़ जाता है" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"मैंने तो मिस्टर ब्राइट के रोबरू ही कह दिया था कि कोरी फिलासोफी की बातों सै दुनियादारी का काम नहीं चलता" लाला मदनमोहन नें अपनी अक़ल मंदी ज़ाहर की.

इतनेमैं मिस्टर रसल की गाडी कमरे के नीचे आ पहुंची और मिस्टर रसल खट, खट करते हुए कमरेमैं दाखिल हुए लाला मदनमोहन नें मिस्टर रसल सै शेकिंग्हैंड करके उन्हें कुर्सी पर बिठाया और मिज़ाज की ख़ैरोआफ़ियत पूछी.

मिस्टर रसल नील का एक होसले मंद सोदागर है परंतु इस्के पास रुपया नहीं है यह नील के सिवाय रुई और सन वग़ैरे का भी कुछ, कुछ व्यापार कर लिया करता है इस्का लेन देन डेढ़, पौने दो बरस सै एक दोस्तकी सिफ़ारश पर लाला मदनमोहन के यहां हुआ है पहले बरसमैं लाला मदनमोहन का जितना रुपया लगा था माल की बिक्री सै व्याज

समेत वसूल होगया. परंतु दूसरे साल रुई की भरती की जिस्मैं सात आठ हज़ार रुपे टूटते रहे इस्का घाटा भरनेके लिये पहले सै दुगनी नील बनवाई जिस्मैं एक तो परता कम बैठा दूसरे माल कलकत्ते पहुंचा उस्समय भाव मंदा रह गया जिस्सैं नफ़े के बदले दस, बारह हज़ार इस्मैं टूटते रहे लाला मदनमोहन के लेन देन सै पहले मिस्टर रसल का लेन देन रामप्रसाद बनारसीदास सै था उन्के आठ हज़ार रुपे अबतक इस्की तरफ़ बाक़ी थे जब उन्की मयाद जाने लगी तो उन्होंनें नालिश करके साढेग्यारह हजारकी डिक्री इस्पर कराली अब उन्को इजराय डिक्री मैं इस्का सब कारखाना नीलाम पर चढ़ रहा है और नीलाम की तारीख़मैं केवल चार दिन बाक़ी हैं इस लिये यह बड़े घबराट मैं रुपे का बंदोबस्त करनें के लिये लाला मदनमोहन के पास आया है.

"मेरे मिज़ाज का तो इस्समय कोसों पता नहीं लगता परंतु उस्को ठिकाने लाना आपके हाथ है" मिष्टर रसल नें मदनमोहन के कुशलप्रश्न (मिज़ाजपुर्सी) पर कहा "जो आफ़त एकाएक इस्समय मेरे सिर पर आपड़ी है उस्को आप अच्छी तरह जान्ते हैं. इस कठिन समय मैं आपके सिवाय मेरा सहायक कोई नहीं है आप चाहैं तो दम भर मैं मेरा बेड़ा पार लगा सक्ते हैं नहीं तो मैं तो इस तूफान मैं ग़ारत हो चुका"

"आप इतनें क्यों घबराते हैं? ज़रा धीरज रखिये" मुन्शी चुन्नीलाल नें पहले की मिलावट के अनुसार सहारा लगाकर कहा "लाला साहब के स्वभाव को आप अच्छी तरह जान्ते हैं जहां तक हो सकेगा यह आप की सहायता मैं कभी कसर न करेंगे."

• • •

"पहले आप मुझे यह तो बताइये कि आप मुझसै किस तरह की सहायता चाहते हैं ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"मैं इस्समय सिर्फ इतनी सहायता चाहता हूं कि आप रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया चुकादें मुझसै हो सकेगा जहां तक मैं आपका सब क़र्ज़ा एक बरसके भीतर चुका दूंगा" मिस्टर रसल नें कहा "मुझको अपनी बरबादी का इतना खयाल नहीं है जितनी आपके कर्ज़ की चिन्ता है. रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्रीसैं मेरी जायदाद बिक गई तो और लेनदार कोरे रह जायंगे और मैंनें इन्सालवन्ट होने की दरख़ास्त की तो आप लोगों के पल्ले रुपे मैं चार आनें भी न पड़ेंगे"

"अफ्सोस ! आपकी यह हक़ीक़त सुन् कर मेरा दिल आप सै आप उमड़ा आता है" लाला मदनमोहन बोले.

"सच है महा कवि शेक्सपीअर नें कहा है" मास्टर शिंभूदयाल कहनें लगे :—

"कोमल मन होत न किये होत प्रकृति अनुसार ।
ज्यों पृथवी हित गगन ते वारिद द्रवति फुहार ॥
वारिद द्रवति फुहार द्रवहि मन कोमलताई ।
लेत, देत शुभ हेत दोउनको मन हरषाई ॥
सब गुनते उतकृष्ट सकल बैभव को भूषन ।
राजहु ते कछु अधिक देत शोभा कोमलमन ॥ " ॥ §

---

§ The quality of mercy is not strained.
It droppeth. as the gentle rain from heaven
Upon the place beneath, it is twice. blessed
It blesseth him that gives, and him that takes.
'Tis mightiest in the mightiest. it becomes
The throned monarch better than his crown
William
Shakespeare

"हज़रत सादी कहते हैं कि "दुर्बल तपस्वी सै कठिन समय मैं उस्को दुःख का हाल न पूछ और पूछै तो उस्को दुःख की दवा कर" * मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"अच्छा इस रुपे के लिये ये हमारी दिल जमई क्या कर देंगे?" लाला मदनमोहन नें बड़ी गंभीरता सै पूछा.

"हां हां लाला साहब सच कहते हैं आप इस रुपे के लिये हमारी दिल जमई क्या कर देंगे?" मुन्शी चुन्नीलाल नें दिल-जमई की चर्चा हुए पीछे अपनी सफाई जताने के लिये मिस्टर रसल सै पूछा.

"मैं थोड़े दिन मैं शीशे बरतन का एक कारख़ाना यहां बनाया चाहता हूं अबतक शीशे बरतन की सब चीज़ें बलायत सै आती हैं इस लिये ख़र्च और टूट फूट के कारण उन्की लागत बहुत बढ जाती है जो वह सब चीजें यहां तैयार की जांयगी तो उन्मैं जरूर फ़ायदा रहेगा और खुदा नें चाहा तो एक बरस के भीतर भीतर आपकी सब रक़म जमा हो जायगी परन्तु आपको इस्समय इस बात पर पूरा भरोसा नहो तो मेरा नील का कार-ख़ाना आपकी दिलजमईके वास्ते हाज़िर है" मिस्टर रसल नें जबाब दिया.

"हिंदुस्थान मैं अब तक कलों के कारख़ानें नहीं हैं इस्सै हिंदुस्थानियों को बड़ा नुक्सान उठाना पड़ता है मैं जान्ता हूं कि इस्समय हिम्मत करके जो कलों के कारख़ानें पहले जारी करेगा उस्को ज़रूर फ़ायदा रहेगा" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

---

*दरवेशज़ईफ़हालरा दरखुश्की तङ्गसाल मपुर्सके चुनी इल्ला बशर्त आंकि मरहम बरेशनिही

"आपको रामप्रसाद बनारसीदास के सिवाय किसी और का रुपया तों नहीं देना!" मुनूशी चुन्नीलाल नें पूछा.

"रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया चुके पीछै मुझको लाला साहब के सिवाय किसी की फूटी कौड़ी नहीं देनी रहैगी" मिस्टर रसल नें जवाब दिया.

परन्तु काच का कारख़ाना बनानें के लिये रुपे कहां सै आंयगे? और लाला मदनमोहन के कर्ज़ लायक़ नील के कारख़ानें की हैसियत कहां है? इन्सालवन्ट होनें सै लेनदारों के पल्ले चार आने भी न पड़ेंगे यह बात मिस्टर रसल अपनें मुंह सै अभी कह चुका है पर यहां इन् बातोंकी याद कौन दिलावै?

"इस सूरत मैं रामप्रसाद बनारसीदास की डिक्री का रुपया न दिया जायगा तो उन्की डिक्री मैं इस्का कारख़ाना बिकजायगा और अपनी रक़म वसूल होनें की कोई सूरत न रहैगी" मुन्शी चुन्नीलाल नें लाला मदनमोहन के कान मैं झुक कर कहा.

"परंतु इस्समय इस्को देनें के लिये अपनें पास नकद रुपया कहां है?" लालामदनमोहन नें धीरे सै जवाब दिया.

"अब मेरी शर्म आप को है 'वक्त निकल जाता है बात रहजाती है' जो आप इस्समय मुझको सहारा देकर उभार लोगे तो मैं आपका अहसान जन्म भर नहीं भूलूंगा" मिस्टर रसल नें गिड़ गिड़ा कर कहा.

"मैं मनसै तुह्मारी सहायता किया चाहता हूं परन्तु मेरा रुपया इस्समय और कामो मैं लग रहा है इस्सै मैं कुछ नहीं कर सक्ता" लाला मदनमोहन नें शर्माते, शर्माते कहा.

"अजीहुज़ूर! आप यह क्या कहते हैं? आपके वास्तै रुपे

की क्या कमी है ? आप कहें जितना रुपया इसी समय हाज़िर हो" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"अच्छा ! मुझसै होसकेगा जिस तरह दस हज़ार रुपे का बंदोबस्त करके मैं कल तक आपके पास भेजदूंगा आप किसी तरह की चिन्ता न करैं" लाला मदनमोहननें कहा.

"आपनें बड़ी महरबानी की मैं आपकी इनायत सैं जी गया अब मैं आपके भरोसे बिल्कुल निश्चिन्त रहूंगा" मिस्टर रसल नें जाते, जाते बड़ी खुशी सै हाथ मिला कर कहा. और मिस्टर रसल के जाते ही लाला मदनमोहन भी भोजन करनें चले गए.

प्रकरण ३.

संगतिका फल.

सहबासी बस होत नृप गुण कुल रीति बिहाय
नृप युवती अरु तरुलता मिलत प्राय संग पाय *

हितोपदेशे

लाला मदनमोहन भोजन करके आए उस्समय सब मुसाहब कमरे मैं मौजूद थे. मदनमोहन कुर्सी पर बैठ कर पान खानें लगे और इन् लोगों नें अपनी, अपनी बात छेड़ी.

हरगोबिंद (पन्सारी के लड़के) नें अपनी बग़ल सै लखनऊ की बनी हुई टोपियें निकाल कर कहा "हुज़ूर ये टोपियें अभी

---

* आसन्नमेव नृपतिर्भजते मनुष्यं विद्याविहीन मकुलीन मसङ्गतं वा प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लता श्च, यः पार्श्वतो वसति तं परिवेष्टयन्ति ॥

लखनऊसे एक बज़ाज के यहां आई हैं सोगात में भेजने के लिये अच्छी हैं पसंद हों तो दो, चार ले आऊं ?”’

“कीमत क्या है ?”

“वह तो पचीस, पचीस रुपे कहता है परन्तु मैं वाजबी ठैरा लूंगा”

“बीस, बीस रुपे में आवें तो ये चार टोपियें ले आना.”

“अच्छा ! मैं जाता हूं अपने बस पड़ते तोड़ जोड में कसर नहीं रक्खूंगा” यह कह कर हरगोबिंद वहां से चल दिया.

“हुज़ूर ! यह हिना का अत्र अजमेर से एक गंधी लाया है वह कहता है कि मैं हुज़ूर की तारीफ़ सुनकर तरह, तरह का निहायत उम्दा अत्र अजमेर से लाता था परंतु रस्ते में चोरी होगई सब माल अस्वाब जाता रहा सिर्फ यह शीशी बची है वह आप की नज़र करता हूं” यह कह कर अहमद हुसैन हकीमने वह शीशी लाला साहब के आगे रखदी.

“जो लाला साहब को मंज़ूर करने में कुछ चारा विचार हो तो हमारी नज़र करो हम इस्को मंजूर करके उस्की इच्छा पूरी करेंगे” पण्डित पुरुषोत्तमदास नें बड़ीवजेदारी से कहा.

“आपकी नज़र तो सिवाय करेले के और कुछ नहीं हो सक्ता मरज़ी हो ; मंगवांय ?” हकीमजीनें जवाब दिया.

“करेले तुम खाओ, तुम्हारे घरके खांय हमको मुंह कड़वा करने की क्या ज़रूरत है ? हम तो लाला साहब के कारण नित्य लड्डू उड़ाते हैं और चैन करते हैं” पण्डित जी नें कहा.

“लड्डू ही लड्डूओं की बातें करनी आती हैं या कुछ और भी सीखे हो ?” मास्टर शिंभूदयाल नें छेड़ की.

"तुम सरीखे छोकरे मद्रसे मैं दो एक किताबें पढ़ कर अपनें को अरस्तातालीस समझनें लगते हैं परन्तु हमारी बिद्या ऐसी नहीं है तुम को परीक्षा करनी हो तो लो इस काग़ज़ पर अपनें मन की बात लिख कर अपनें पास रहनें दो जो तुमनें लिखा होगा हम अपनी बिद्या सै बता देंगे" यह कह कर पंडितजी नें अपनें अंगोछे मैं सै काग़ज़ पेनसिल और पुष्टीपत्र निकाल दिया.

मास्टर शिंभूदयालनें उस काग़ज़ पर कुछ लिखकर अपने पास रख लिया और पंडितजी अपना पुष्टीपत्र लेकर थोड़ी देर कुंडली खेंचते रहे फिर बोले "बच्चा तुमको हर बात मैं हंसी सूझती है तुमनें काग़ज़ मैं 'करेला' लिखा है परन्तु ऐसी हंसी अच्छी नहीं"

लाला मदन मोहन के कहनें सै मास्टर शिंभूदयाल नें काग़ज़ खोल कर दिखाया तो हकीकत मैं 'करेला' लिखा पाया अब तो पंडितजी की खूब चढ़ बनी मूछों पर ताव दे, दे कर खखारने लगे.

परंतु पंडितजी नें ये 'करेला' कैसे बता दिया? लाला मदनमोहनके रोबरू आपस की मिलावट सै बकरी का कुत्ता बना देना सहजसी बात थी परंतु पंडित जी का चुन्नीलाल और शिंभूदयाल सै ऐसा मेल न था और न पंडितजी को इतनी विद्या थी कि उस्के बल सै करेला बता देते. असल बात यह थी कि पंडित जीनें एक काग़ज़ पर काजल लगा कर पुष्टीपत्र मैं रख छोड़ा था जिस्समय पुष्टीपत्र पर कागज़ रख कर कोई कुछ लिखता था कलम के दबाव सै काजलके अक्षर दूसरे काग़ज़ पर

उतर आते थे फिर पंडितजी कुंडली खेंचती बार किसी ढब सै उस्को देखकर थोड़ी देर पीछे बता देते थे.

"तो हुज़ूर! उस गंधीके वास्तै क्या हुक्म है?" हकीम जीनें फिर याद दिवाई.

"अतर मैं चंदनके तैल की मिलावट मालूम होती है और मिलावट की चीज़ बेचने का सरकार सै हुक्म नहीं है इस वास्तै कह दो शीशी जप्त हुई वह अपना रस्ता ले" पंडित जी शीशी सूंघ कर बीच मैं बोल उठे.

"हां हकीमजी! आपकी राय मैं उस गन्धी का कहना सच है?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"बेशक, अंदाज़ सै तो ऐसा ही मालूम होता है आगे खुदा जाने" हकीमजी बोले.

"तो लो यह पचीस रुपेके नोट इस्ससमय उस्को खर्चके वास्तै दे दो बिदा पीछे सै सामने बुलाकर की जायगी" लाला मदन-मोहन नें पचीस रुपे के नोट पाकट सै निकाल दिये.

"उदारता इस्का नाम है" "दयालुता इसे कहते हैं" "सच्चे यश मिलनेंकी यह राह है" "परमेश्वर इस्सै प्रसन्न होता है" चारों तरफ़ सै वाह वाह की बोछार होनें लगी.

"ये बहियां मुलाहजे के वास्तै हाज़िर हैं और बहुत सी रकमोंका जमाख़र्च आपके हुक्म बिना अटक रहा है जो अवकाश हो तो इस्समय कुछ अर्ज़ करूं?" लाला जवाहरलाल नें आते ही बस्ता आगे रख कर डरते, डरते कहा.

"लाला जवाहरलाल इतनें बरस सै काम करते है परंतु लाला साहब की तबियत, और कागज़ दिखानें का मोका अब-

तक नहीं पहचान्ते" लाला मदनमोहन को सुना कर चुन्नीलाल और शिंभूदयाल आपस मैं कानाफूसी करनें लगे.

"भला इस्समय इन्बातोंका कौन प्रसंग है? और मुझको बार, बार दिक करने सै क्या फायदा है? मै पहले कहचुका हूं कि तुह्मारी समझ मैं आवै जैसै जमा ख़र्च करलो मेरा मन ऐसे कामों मैं नहीं लगता" लाला मदनमोहन नें झिड़ककर कहा और जवाहरलाल वहां सै उठकर चुप चाप अपने रस्ते लगे.

"चलो अच्छा हुआ! थोड़े ही मैं टल गई मैं तो बहियोंका अटंबार देख कर घबरा गया था कि आज उस्तादजी घेरे बिना न रहैंगे" जवाहरलाल के जाते ही लाला मदनमोहन खुश हो, हो कर कहनें लगे.

"इन्का तो इतना होसला नहीं है परन्तु ब्रजकिशोर होते तो वे थोड़े बहुत उलझे बिना कभी न रहते" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"जब तक लाला साहब लिहाज करते हैं तब ही तक उन्का उलझना उलझाना बन रहा है नहीं तो घड़ी भर मैं अकल ठिकानें आजायगी" मुनशी चुन्नीलाल बोले.

"हुज़ूर! मैं लाला हरदयाल साहब के पास हो आया उन्हों नें बहुत, बहुत करकै आपकी ख़ैरोआफ़ियत पूछी है और आज शामको आप सै बाग मैं मिलनें का करार किया है" हरकिसन दलाल नें आकर कहा.

"तुम गए जब वो क्या कर रहे थे?" लाला मदनमोहन नें खुश होकर पूछा.

"भोजन करके पलंग पर लेटे ही थे आपका नाम सुनकर तुर्त उठ आए और बड़े जोश से आपकी ख़ैरोआफियत पूछनें लगे"

"मैं अच्छी तरह जान्ता हूं वे मुझको प्राण सै भी अधिक समझते हैं" लाला मदनमोहननें पुलकित होकर कहा.

"आपकी चालही ऐसी है जो एक वार मिल्ता है हमेशेके लिये चेला बन् जाता है" मुनूशी चुन्नीलालनें बढावा देकर कहा.

"परंतु कानूनीबंदे इस्सै अलग हैं" मास्टर शिंभूदयाल ब्रजकिशोर की तरफ इशारा कर के बोले.

"लीजिये ये टोपियां अठारह, अठारह रुपेमैं ठैरालाया हूं" हरगोबिंदनें लाला मदनमोहन के आगे चारों टोपिये रख कर कहा.

"तुमनें तो उस्की आंखोंमैं धूल डालदी ! अठारह, अठारह रुपे मैं कैसे ठैरालाये ? मुझको तो ये बाईस, बाईस रुपे सै कमकी किसी तरह नहीं जचती" लाला मदनमोहन नें हरगोविंद का हाथ पकड़कर कहा.

"मैंनें उस्को आगेका फ़ायदा दिखाकर ललचाया और बड़ी बड़ी पट्टियें पढ़ाईं तब उस्नें लागत मैं दो, दो रुपे कम लेकर आप के नामसे ये टोपियें दीं हैं"

अच्छा ! यह लाला हरकिशोर आते हैं इन्सै तो पूछिये ऐसी टोपी कितनें, कितनें मैं लादेंगे ?" दूरसै हरकिशोर बज़ाज़ को आते देखकर पंडित पुरुषोत्तमदास नें कहा.

"ये टोपियें हरनारायण बज़ाज़ के हां कल लखनऊ सै आई हैं

और बाज़ार मैं बारह, बारह रुपे को बिकी हैं पर यहां तो तेरह तेरह मैं आई होंगी" हरकिशोर ने जवाब दिया.

"तुम हमें पंद्रह, पंद्रह रुपे मैं लादो" हरगोविन्द ने झुंझला कर कहा.

"मैं अभी लाता हूं तुह्मारे मन मैं आवे जितनी लेलेना"

"ला चुके, लाचुके लाने की यही सूरत है?" हरगोविन्द ने बात उड़ाने के वास्ते कहा.

"क्यों? मेरी सूरत को क्या हुआ? मैं अभी टोपियां लाकर तुह्मारे साम्ने रखदेता हूं" हरकिशोर नें हिम्मत सै जवाब दिया.

"तुम टोपियें क्या लाओगे? तुह्मारी सूरत पर तो खिसियानपन अभी सै छा गया!" हरगोविन्द नें मुस्करा कर कहा.

"मुझको नहीं मालूम था कि मेरी सूरत मैं दर्पण की खासियत है" हरकिशोर ने हंस कर जवाब दिया.

"चलो चुप रहो क्यों थोथी बातें बनाते हो?" मुन्शी चुन्नीलाल रोकनें के वास्तै भरम मैं बोले.

"बहुत अच्छा! अब मैं टोपी लाये पीछे ही बात करूंगा" यह कह कर हरकिशोर वहां सै चल दिये.

"यहां के दुकानदारों मैं यह बड़ा ऐब है कि जलनके मारे दूसरेके माल को बारह आनेका जाचदेते हैं" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"और किसी समय मुक़ाबला आपड़े तो अपनी गिरह सै घाटा भी दे बैठते हैं" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"न जानें लोगों को अपनी नाक कटा कर औरों की बद्शगूनी करनें मैं क्या मज़ा आता है" हकीमजी नें कहा.

"और जो हरगोविंद कुछ ठगा आया होगा तो क्या मैं इन्के पीछे उस्का मन बिगाड़ूंगा" लाला मदनमोहन बोले.

"आप की ये ही बातैं तो लोगों को बेदाम गुलाम बना लेती है" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"कुछ दिन सै यहां ग्वालियर के दो गवैये निहायत अच्छे आए हैं मरज़ी हो दो घड़ी के वास्तै आज की मजलिस मैं उन्हें बुला लिया जाय" हरकिसन दलाल नें पूछा.

"अच्छा ! बुलालो तुम्हारी पसंद हैं तो ज़रूर अच्छे होंगे" मदनमोहन नें कहा.

"लखनऊ की अमीरजान भी इन दिनों यहीं है इस्के गाने की बड़ी तारीफ़ सुनी गई है पर मैंनें अपनें कान सै अब तक उस्का गाना नहीं सुना" हकीमजी बोले.

"अच्छा ! आप के सुन्ने को हम उसे भी यहां बुलाये लेते हैं पर उस्के गाने मैं सभा न बंधा तो उस्के बदले आप को गाना पड़ेगा !" लाला मदनमोहन नें हंस कर कहा.

"सच तो ये है कि आप के सबब सै दिल्ली की बात बन रही है जो गुणी यहां आता है कुछ न कुछ ज़रूर ले जाता है आप न होते तो उन बिचारों को यहां कौन पूछता ? आपकी इस उदारता सै आपका नाम बिक्रम और हातम की तरह दूर, दूर तक फैल गया है औ बहुत लोग आप के दर्शनोंकी अभिलाषा रखते हैं" मुनशी चुन्नीलाल नें छींटा दिया.

इतने मैं हरकिशोर टोपी ले कर आ पहुंचे और बारह, बारह रुपे मैं खुशी सै देनें लगे.

"सच कहो तुमनें इस्मैं अपनी गिरह का पलोथन क्या लगाया है ?" शिंभूदयाल नें पूछा.

"पलोथन लगानें की क्या ज़रूरत थी मैं तो इस्मैं लाला साहब सै कुछ इनाम लिया चाहता हूं" हरकिशोर नें जवाब दिया.

"मुझको टोपियें लेनी होती तो मैं किसी न किसी तरह सै आपही तुह्मारा घाटा निकालता पर मैं तो अपनी ज़रूरतके लायक़ पहलै ले चुका" लाला मदनमोहन नें रुखाई सै कहा.

"आप को इन्की कीमत मैं कुछ संदेह हो तो मैं असल मालिक को रोबरू कर सक्ता हूं ?"

"जिस गांव नहीं जाना उस्का रस्ता पूछना क्या जरूर"

"तो मैं इन्हैं ले जाउं ?"

"मैंनें मंगाई कब थी जो मुझसै पूछते हो" यह कह कर लाला मदनमोहननें कुछ ऐसी त्योरी बदली कि हरकिशोर का दिल खट्टा हो गया. और लोग तरह, तरह की नकलैं करके उस्का ठट्ठा उड़ानें लगे.

हरकिशोर उस्समय वहां सै उठ कर सीधा अपनें घर चला गया पर उस्के मन मैं इन् बातोंका बड़ा खेद रहा.

प्रकरण ४.

मित्रमिलाप (!)

दूरहिसों करबढ़ाय, नयननते जलबहाय,
आदरसों ढिगबुलाय, अर्धासन देतसो ॥
हितसोंहियमैं लगाय, रुचिसमबाणी बनाय,
कहत सुनत अति सुभाय, आनंद भरि लेत जो ॥
ऊपरसों मधु समान, भीतर हलाहल जान,
छलमैं पंडितमहान, कपटको निकेतवो ॥
ऐसो नाटक विचित्र, देख्यो ना कबहु मित्र,
दुष्टनकों यह चरित्र, सिखवे को हेतको ?॥*

लाला मदनमोहन को हरदयाल सै मिलनें की लालसा मैं दिन पूरा करना कठिन होगया वह घड़ी, घड़ी घंटे की तरफ़ देखते थे और उखताते थे. जब ठीक चार बजे अपने मकान सै सवार होकर मिस्तरीख़ानेंमैं पहुंचे यहां तीन बग्गियें लाला मदनमोहन की फ़र्मायश सै नई चाल की बन रही थीं उन्के लिये बहुतसा सामान वलायत सै मंगाया गया था और मुंबई के दो कारीगरों की राह सै वह बनाई जाती थीं. लाला मदनमोहन नें कह रक्खा था कि "चीज़ अच्छी बनें ख़र्च की कुछ नहीं अटकी जो होगा

---

* दूरा दुच्छ्रितपाणि राद्र नयनः प्रोत्सारितार्द्धासनो
गाढालिङ्गनतत्परः प्रियकथाप्रश्नेषु दत्तादरः ॥
अन्तर्भूतविषो वहि र्मधुमयश्चातीव मायापटुः
कोनामायमपूर्वनाटकविधि र्यः शिक्षितोदुर्जनैः ॥ १ ॥

हम करेंगे " निदान लाला मदनमोहन इन बग्गियों को देख भाल कर वहां से आगा हसनजान के तबेले में गये और वहां तीन घोड़े पांच हजार, पांच सो रुपे में लेनें करके वहां से सीधे अपनें बाग़ 'दिलपसंद' को चले गये.

यह बाग़ सब्ज़ी मंडी से आगे बढ़ कर नहर की पटड़ी के किनारे पर था इस्की रविशों के दोनों तरफ़ रेलिया की क़तार, सुहावनी क्यारियों मैं रंग, रंग के फूलों की बहार, कहीं हरी, हरी घासका सुहावना फ़र्श, कहीं घनघोर वृक्षों की गहरी छाया, कहीं बनावट के झरनें, और बेट, कहीं पेड़ और टट्टियों पर बेलों की लपेट एक तरफ़ को चिड़ियाख़ानें मैं तरह, तरह के पक्षी चहचहा रहे थे दूसही तरफ़ को संगमरमर के एक कुंड मैं तरह, तरह के जलचर अपना रंग ढंग दिखा रहे थे बाग़ के बीच मैं एक बड़ा कमरा हवादार बहुत अच्छा बना हुआ था उस्के चारों तरफ़ संगमरमर का साईवान और साईवान के गिर्द फव्वारों की क़तार लगी थी जिस समय ये फव्वारे छुटते थे जैठ बैसाख को सावन भादों समझ कर मोर नाच उठते थे बीच के कमरे मैं रेशमी ग़लीचे की बड़ी उम्दा बिछायत थी और बढ़िया साठन की मढी हुई सुनहरी कौंच, कुर्सियें जगह, जगह मोक़े से रक्खी थीं. दीवार के सहारे संगमरमर की मेज़ोंपर बड़े, बड़े आठ काच आम्नें साम्नें लगे हुए थे. छत मैं बहुमूल्य झाड़ लटक रहे थे. गोल, बैज़ई और चोखूंटी मेज़ों पर फूलों के गुलदस्ते हाथीदांत, चंदन, आबनूस, चीनी, सीप और काच वग़ैरेके उम्दा, उम्दा खिलोनें मिसल से रक्खे थे, चांदी की रकेबियों मैं इलायची, सुपारी चुनी हुई थी, समय, तारीख, वार, महीना, बतानें की घड़ी, हार-

मोनियम बाजा, अंटा खेलनें की मेज़, अलबम्, सैरबीन, सितार, और शतरंज वगैरे मन बहलानें का सब सामान अपनें, अपनें ठिकानें पर रक्खा हुआ था. दिवारों पर गच के फूल पत्तों का सादा काम अबरख की चमक से चांदी के डले की तरह चमक रहा था और इसी मकान के लिये हज़ारों रुपे का सामान हर महीनें नया ख़रीदा जाता था.

इस्समय लाला मदनमोहन को कमरे मैं पांव रखते ही विचार आया कि इस्के दरवाज़ों पर बढ़िया साठन के पर्दे अवश्य होनें चाहियें उसी समय हरकिशोर के नाम हुक्म गया कि तरह, तरह की बढ़िया साठन लेकर अभी चले आओ. हरकिशोर समझा कि "अब पिछली बातों के याद आनें से अपनें जी मैं कुछ लज्जित हुए होंगे चलो सवेरे का भूला सांझ को घर आजाय तो भूला नहीं बाजता" यह बिचार कर हरकिशोर साठन इकट्ठी करनें लगा पर यहां इन्बातों की चर्चा भी न थी. यहां तो लाला मदनमोहन को लाला हरदयाल की लौ लगरही थी. निदान रोशनी हुए पीछे बड़ी देर बाट दिखाकर लाला हरदयाल आये उन्को देखकर मदनमोहन की खुशी की कुछ हद नहीं रही बग्गीके आनेकी आवाज़ सुन्ते ही लाला मदनमोहन बाहर जाकर उन्को लिवा लाए और दोनों कौंच पर बैठ कर बड़ी प्रीति से बातें करनें लगे.

"मित्र तुम बड़े निठुर हो मैं इतनें दिनसे तुम्हारी मोहनी मुर्ति देखनें के लिये तरस रहाहूं पर तुम याद भी नहीं करते" लाला मदनमोहन नें सच्चे मन से कहा.

"मुझको एक पल आपके बिना कल नहीं पड़ती पर क्या

करूं ? चुगलखोरों के हाथ सै तंग हूं जब कोई बहाना निकाल कर आने का उपाय करता हूं वे लोग तत्काल जाकर लालाजी (अर्थात् पिता) सै कह देते हैं और लालाजी खुलकर तो कुछ नहीं कहते पर बातोंही बातों सै ऐसा झंझोड़ते हैं कि जी जलकर राख हो जाता है आजतो मैंनें उन्सै भी साफ़ कह दिया कि आप राज़ी हों, या नाराज़ हों मुझसे लाला मदनमोहन की दोस्ती नहीं छूट सक्ती" लाला हरदयालनें यह बात ऐसी गर्मा गर्मी सै कही कि लाला मदनमोहन के मनपर लकीर होगई पर यह सब बनावट थी उस्नें ऐसी बातें बना, बना कर लाला मदनमोहन सै " तोफ़ा तहायफ़ " मैं बहुत कुछ फ़ायदा उठाया था इस लिये इस सोनें की चिड़िया को जाल मैं फसाने के लिये भीतर पेटे सब घरके शामिल थे और मदनमोहन के मनमैं मिलने की चाह बढ़ानें के लिये उसनें अब की बार आनें मैं जान बूझ कर देर की थी.

" भाई ! लोग तो मुझे भी बहुत बहकाते हैं कोई कहता है " ये रुपे के दोस्त हैं कोई कहता है " ये मतलब के दोस्त हैं " पर मैं उन्को ज़रा भी मुंह नहीं लगाता क्योंकि मुझ को ओथेलो की बरबादी का हाल अच्छी तरह मालूम है " लाला मदनमोहन नें साफ मन सै कहा पर हरदयाल के पापी मन को इतनीही बात सै खटका हो गया.

"दुनिया के लोगों का ढंग सदा अनोखा देखने मैं आता है उन्मैं सै कोई अपना मतलब दृष्टांत और कहावतों के द्वारा कह जाता है, कोई अपना भाव दिल्लगी और हंसी की बातों मैं जता जाता है, कोई अपना प्रयोजन औरों पर रखकर सुना जाता है. कोई अपना आशय जता कर फिर पलट जानें का पहलू बनायें

रखता है, पर मुझ को ये बातें नहीं आतीं मैं तो सच्चा आदमी हूं जो मनमैं होती है वह ज़बान सै कहता हूं जो ज़बान सै कहता हूं वह पूरी करता हूं." लाला हरदयाल नें भरमा भरमी अपना संदेह प्रगट करके अंत मैं अपनी सचाई जताई.

"तो क्या आपको इस्समय यह संदेह हुआ कि मैंनें बहकानें वालों पर रख कर अपनी तरफ़ सै आपको "रुपेका दोस्त" और "मतलबका दोस्त" ठैरायाहै?" लाला मदनमोहन गिड गिडा कर कहनें लगे "हाय! आपनें मुझको अबतक नहीं पहचाना मैं अपनें प्राणसै अधिक आपको सदा समझता रहा हूं इस संसार मैं आप सै बढ कर मेरा कोई मित्र नहीं है जिस्पर आपको मेरी तरफ़ सै अबतक इतना संदेह बन रहा है मुझको आप इतना नादान समझते हैं. क्या मैं अपनें मित्र और शत्रु को भी नहीं पहचान्ता? क्या आप सै अधिक मुझको संसार मैं कोई मनुष्य प्यारा है? मैं अपना कलेजा चीर कर दिखाऊं तो आपको मालूम हो कि आपकी प्रीति मेरे हृदय मैं कैसी अंकित हो रही है!"

"आप वृथा खेद करते हैं मैं आपकी सच्ची प्रीति को अच्छी तरह जान्ता हूं और मुझको भी इस संसार मैं आप सै बढ कर कोई प्यारा नहीं है मैंनें दुनिया का यह ढङ्ग केवल चालाक आदमियों की चालाकी जतानें के लिये आप सै कहा था आप वृथा अपनें ऊपर ले दोडे मुझको तो आपकी प्रीति का यहां तक विश्वास है कि सूर्य चन्द्रमा की चाल बदल जायगी तो भी आप की प्रीति मैं कभी अंतर न आयगा" लाला हरदयालनें मदनमोहन के गले मैं हाथ डाल कर कहा.

"प्रीति के बराबर संसार मैं कौन्सा पदार्थ है ?" लाला मदनमोहन कहने लगे "और सब तरह के सुख ममुष्य को द्रव्य सै मिल सक्के हैं पर प्रीति का सुख सच्चे मित्र बिना किसी तरह नहीं मिल्ता जिस्नें संसार मैं जन्म लेकर प्रीति का रस नहीं लिया उस्का जन्म लेना बृथा है इसी तरह जो लोग प्रीति करके उस्पर द्रढ नहीं रहते वह उस्के रस सै नावाकिफ़ हैं."

"निस्संदेह ! प्रीति का सुख ऐसा ही अलौकिक है. संसार मैं जिन लोगों को भोजन के लिये अन्न और पहन्ने के लिये वस्त्र तक नहीं मिल्ता उन्को भी अपने दुःख सुख के साथी प्राणोपम मित्र के आगे अपना दुःख रोकर छाती का बोझ हल्का करनें पर, अपनें दुःखों को सुन, सुन कर उस्के जी भर आनें पर, उस्के धैर्य देने पर, उस्के हाथ सै अपनी डबडबाई हुई आखों के आंसू पुछ जानें पर, जो संतोष होता है वह किसी बड़े राजा को लाखों रुपे खर्च करनें सै भी नहीं होसक्ता" लाला हरदयाल नें कहा.

"निस्सन्देह ! मित्रता ऐसीही चीज़है पर जो लोग प्रीति का सुख नहीं जान्ते वह किसी तरह इस्का भेद नहीं समझ सक्के" लाला मदनमोहन कहनें लगे.

"दुनियां के लोग बहुत करके रुपे के नफे नुक्सान पर प्रीति का आधार समझते हैं आज हरगोविंद नें लखनऊ की चार टोपियां मुझको अठारह रुपे मैं ला दी थीं इस्पर हरकिशोर जल मरे और मेरी प्रीति बढ़ानेके लिये बारह रुपे मैं वैसी ही टोपियां मुझको देनें लगे. इन्के निकट प्रीति और मित्रता कोई ऐसी चीज़

है जो दस पांच रुपे की कसर खानें से बातों में हाथ आसक्ती है!"

"हरकिशोर नें हरगोविंद की तरफ से आपका मन उछांटनें के लिये यह तद्बीर की हो तो भी कुछ आश्चर्य नहीं." हरदयाल बोले "मैं जान्ता हूं कि हरकिशोर एक बड़ा"—

इतनेंमें एकाएक कमरे का दरवाजा खुला और हरकिशोर भीतर दाखल हुआ उसको देखतेही हरदयाल की जबान बंद हो गई और दोनों नें लजाकर सिर झुका लिया.

"पहले आप अपनें शुभ चिन्तकों के लिये सजा तजवीज कर लीजिये फिर मैं साठन मुलाहज़े कराऊंगा ऐसे वाहियात कामों के वास्ते इस ज़रूरी काम मैं हर्ज करना मुनासिब नहीं. हां लाला हरदयाल साहब क्या फ़रमा रहे थे "हरकिशोर एक बड़ा–" क्या है?" हरकिशोर नें कमरे मैं पांव रखते ही कहा.

"चलो दिल्लगी की बातैं रहनें दो लाओ, दिखलाओ तुम कैसी साठन लाए हो? हम अपनी निज की सलाह के वास्ते औरों का काम हर्ज नहीं किया चाहते" लाला हरदयाल नें पहली बात उड़ा कर कहा.

"मैं और नहींहूं पर अब आप चाहे जो बना दें मुझको अपना माल दिखानें मैं कुछ उज्र नहीं पर इतना विचार है कि आज कल सच्चे माल की निस्वत नकली या झूंटे माल पर ज्यादः चमक दमक मालूम होती है मोतियों को देखिये चाहे मणियों को देखिये कपडों को देखिये चाहे गोटे किनारी को देखिये जो सफ़ाई झूंटे पर होगी सच्चे पर हरगिज न होगी इस लिये मैं डरता हूं

कि शायद मेरा माल पसन्द न आय" हरकिशोरनें मुस्करा कर कहा.

"तुम कपड़ा दिखानें आए हो या बातोंकी दुकान्दारी लगानें आए हो ? जो कपड़ा दिखाना हो तो झट पट दिखा दो नहीं तो अपना रस्ता लो हमको थोथी बातों के लिए इस्समय अवकाश नहीं है" लाला मदनमोहन नें भौं चढ़ा कर कहा.

"यह तो मैंनें पहले ही कहा था अच्छा ! अब मैं जाता हू फिर किसी वक्त हाज़िर होऊंगा"

"तो तुम कल नो, दस बजे मकान पर आना" यह कह कर लाला मदनमोहन नें उसै रुख़सत किया.

"आपस मैं क्या मज़े की बातैं हो रहीं थीं न जानें यह हत्या बीच मैं कहां सै आगई" लाला हरदयाल बोले.

"ख़ैर अब कुछ दिल्लगी की बात छेड़िये !" लाला मदन-मोहन नें फ़रमायश की.

निदान बहुत देर तक् अच्छी तरह मिल भेट कर लाला हर-दयाल अपनें मकान को गए और लाला मदनमोहन अपने मकान को गए.

हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ० प्र०
२६६०
पुस्तकालय
इलाहाबाद

प्रकरण ५.

विषयासक्त †

इच्छा फलके लाभसों कबहुं न पूरहि आश
जैसे पावक घृत मिले बहु बिधि करत प्रकाश ‡

हरिवंश.

लाला मदनमोहन बाग़ सै आए पीछे ब्यालू करके अपनें कमरे मैं आए उस्समय लाला ब्रजकिशोर, मुन्शी चुन्नीलाल, मास्टर शिंभूदयाल, बाबू बैजनाथ, पंडित पुरुषोत्तमदास, हकीम अहमदहुसैन वग़ैरे सब दरबारी लोग मौजूद थे. लाला साहब के आते ही ग्वालियर के गवैयों का गाना होनें लगा.

"मैं जान्ता हूं कि आप इस निर्दोष दिल्लगी को तो अवश्य पसंद करते होंगे देखिये इस्सै दिन भर की थकान उतर जाती है और चित्त प्रसन्न हो जाता है" लाला मदनमोहन नें थोडी देर पीछै लाला ब्रजकिशोर सै कहा.

"सब बातें काम के पीछे अच्छी लगती हैं जो सब तरह का प्रबंध बंध रहा हो, काम के उसूलों पर दृष्टि हो, भले बुरे काम और भले बुरे आदमियों की पहचान हो, तो आपना काम किये पीछे घडी, दो घडी की दिल्लगी मैं कुछ बिगाड़ नहीं है पर उस्समय भी इस्का व्यसन न होना चाहिये" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

‡ नजातु कामः कामाना मुपभोगेन शाम्यति ॥ हविषा कृष्णवर्त्मे व भूय एवाभिवर्द्धते

"अमीरौं को ऐश के सिवाय और क्या काम है ?" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"राजनीति मैं कहा है "राजा सुख भोगहि सदा मंत्री करहि सम्हार ॥ राजकाज बिगरे कछू तो मंत्री सिर भार * ॥" पंडित पुरुषोत्तमदास बोले.

"हां यहां के अमीरों का ढंग तो यही है पर यह ढंग दुनियां सै निराला है जो बात सब संसार के लिये अनुचित गिनी जाती है वही उन्के लिये उचित समझी जाती है ! उन्की एक, एक बात पर सुननेंवाले लोट पोट हो जाते हैं ! उन्की कोई बात हिकमत सै खाली नहीं ठैरती ! जिन बातों को सब लोग बुरी जान्ते हैं, जिन बातों के करने मैं कमीनें भी लजाते हैं, जिन बातों के प्रगट होनें सै बद्चलन भी शर्माते हैं उन्का करना यहां के धनवानों के लिये कुछ अनुचित नहीं है ! इन् लोगों को न किसी काम के प्रारंभ की चिन्ता होती है ! न किसी काम के परिणाम का बिचार होता है ! यहां के धनपति तो अपनें को लक्ष्मी पति समझते हैं परंतु ईश्वर के हां का यह नियम नहीं है उस्नें अपनी सृष्टि मैं सब गरीब अमीरों को एकसा बनाया है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जो मनुष्य ईश्वर का नियम तोडेगा उस्को अपनें पाप का अवश्य दंड मिलैगा. जो लोग सुख भोग मैं पड़ कर अपनें शरीर या मन को कुछ परिश्रम नहीं देते प्रथम तो असावधान्ता के कारण उन्का वह बैभव ही नहीं रहता और रहा भी तो कुदरती कायदे के मूजिब उन्का

* भोग्यस्य भाजनं राजा मन्त्री कार्य्यस्य भाजनम् ॥ राजकार्य्यपरिध्वंसी मन्त्री दोषैण लिप्यते ॥

शरीर और मन क्रम सै दुर्बल होकर किसी काम का नहीं रहता. पाचन शक्तिके घटनें सै तरह, तरह के रोग उत्पन्न होते हैं और मानसिक शक्तिके घटनें से चित्त की बिकलता, बुद्धि की अस्थिरता, और काम करनें की अरुचि उत्पन्न हो जाती है जिस्सै थोड़े दिन मैं संसार दुःखरूप मालूम होनें लगता है.

"परंतु अत्यंत महनत करनें सै भी तो शिथिलता हो जाती है" बाबू बैजनाथनें कहा.

"इस्सै यह बात नहीं निकल्ती कि बिल्कुल महनत न करो सब काम अंदाजसिर करनें चाहियें" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "लिडिया का बादशाह क़ारून साईरस सै हारा उस्समय साईरस उस्की प्रजा को दास बनानें लगा तब कारूननें कहा "हमको दास किस लिये बनाते हो? हमारे नाश करनें का सीधा उपाय यह है कि हमारे शस्त्र लेलो, हम को उत्तमोत्तम बस्त्र भूषण पहननें दो, नाच रंग देखनें दो, शृंगार रसका अनुभव करनें दो, फिर थोड़े दिन मैं देखोगे कि हमारे शूरवीर अबला बन जायँगे और सर्बथा तुम सै युद्ध न कर सकेंगे" निदान ऐसाही हुआ. पृथ्वीराज का संयोगता सै बिवाह हुए पीछै वह इसी सुख मैं लिपट कर हिन्दुस्थान का राज खो बैठा और मुसल्मानों का राज भी अंत मैं इसी भोग बिलास के कारण नष्ट हुआ"

"आप तो जिस्बात को कहते हैं हद्द के दरजे पर पहुंचा देते हैं भला! पृथ्वी राज और मुसल्मानों की बादशाहत का लाला साहब के काम काज सै क्या संबंध है? उन्का द्रब्य दहुत कर के अपनें भोग बिलास मैं खर्च होता था परंतु लाला

साहब का तो परोपकार मैं होता है" मास्टर शिंभूदयाल ने कहा.

"देखिये लाला साहब का मन पहले नाच तमाशे मैं बिल्कुल नहीं लगता था पर इन्हों ने चार मित्रों का मेल मिलाप बढ़ानें के लिये अपना मन रोक कर उन्की प्रसन्नता की." पंडित पुरुषोत्तमदास बोले.

"बुरे कामों के प्रसंग मात्र सै मनुष्य के मन मैं पाप की ग्लानि घटती जाती है पहले लाला साहब को नाच रंग अच्छा नहीं लगता था पर अब देखते, देखते ब्यसन हो गया फिर जिन् लोगों की सोहबत सै यह ब्यसन हुआ उन्कों मैं लाला साहबका मित्र कैसे समझूं ? मित्रता का काम करे वह मित्र समझा जाता है अपनें मतलब के लिये लंबी, लंबी बातैं बनानें सै कोई मित्र नहीं हो सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "सादी नें कहा है "एक दिवस मैं मनुज की विद्या जानी जाय ! पै न भूल, मन को कपट बरसन लग न लखाय ॥+

"तो क्या आप इन् सब को स्वार्थपर ठैरा कर इन्का अपमान करते हैं ?" लाला मदनमोहन नें जरा तेज होकर कहा.

"नहीं, मैं सब को एकसा नहीं ठैराता परंतु परीक्षा हुए बिना किसी को सच्चा मित्र भी नहीं कह सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. "केलीप्स नामी एक एथीनियन सै साइराक्यूस के बादशाह डिओन की बड़ी मित्रता थी. डिओन वहुधा

+ तवां शनाख्त बयकरोज़ दर शमायल मरद † किता कुजाश रसीदस्त पायगाह इलूम। वले ज़ बातिनश एमन मवाशो गर्रा मशो † के खुब्स नफ्स नगर्दद बसालहा मालूम

केलीप्स के मकान पर जाकर महीनों रहा करता था एक वार डिओन को मालूम हुआ कि केलीप्स उस्का राज छीन्ने के लिये कुछ उद्योग कर रहा है. डिओन नें केलीप्स से इस्का वृत्तांत पूछा तब वह डिओन के पांव पकड़कर रोनें लगा और देवमंदिर मैं जाकर अपनी सच्ची मित्रता के लिये कठिन से कठिन सौगंध खा गया पर असल मैं यह बात झूंटी न थी अंत मैं केलीप्स नें साइराक्यूस पर चढ़ाई की और डिओन को महल ही मैं मरवा डाला! इस लिये मैं कहता हूं कि दूसरे की वातों मैं आकर अपना कर्तव्य भूलना वड़ी भूल की वात है"

"अच्छा! फिर आप खुलकर क्यों नहीं कहते आप के निकट लाला साहब को वहकानें वाला कौन, कौन है?" पंडितजी नें जुगत से पूछा.

"मैं यह नहीं कह सक्ता जो बहकाते होंगे; अपनें जीमैं आप समझते होंगे मुझको लाला साहब के फायदे से काम है और लोगों के जी दुखानें से कुछ काम नहीं है. मनुस्मृति मैं कहा है "सत्य कहहु अरु प्रिय कहहु अप्रिय सत्य न भाख॥ प्रियहु असत्य न बोलिये धर्म्म सनातन राख॥" * "इस लिये मैं इस्समय इतना ही कहना उचित समझता हूं" लाला व्रजकिशोर नें जवाब दिया.

और इस्पर थोडी देर सब चुप रहे.

---

*सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्॥
प्रियं च नानृतं ब्रूया देषधर्मस्सनातनः॥

प्रकरण ६.

भले बुरेकी पहचान.

धर्म्म, अर्थ शुभ कहत कोउ काम, अर्थ कहिं आन
कहत धर्म्म कोउ अर्थ कोउ तीनहुं मिल शुभ जान ❀

मनुस्मृति.

"आप के कहनें मूजब किसी आदमी की बातों सै उस्का स्वभाव नहीं जाना जाता फिर उस्का स्वभाव पहचान्नें के लिये क्या उपाय करें?" लाला मदनमोहन नें तर्क की.

"उपाय करनें की कुछ जरूरत नहीं है, समय पाकर सब भेद अपनें आप खुल जाता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मनुष्य के मन मैं ईश्वरनें अनेक प्रकार की बृत्ति उत्पन्न की हैं जिन्मैं परोकार की इच्छा, भक्ति और न्याय परता धर्म्मप्रवृत्ति मैं गिनी जाती हैं; दृष्टांत और अनुमानादि के द्वारा उचित अनुचित कामों की विवेचना, पदार्थज्ञान, और विचारशक्ति का नाम बुद्धिबृत्ति हैं. बिना बिचारे अनेकबार के देखनें, सुन्नें आदि सै जिस काम मैं मन की प्रबृत्ति हो, उसै आनुसंगिक प्रबृत्ति कहते हैं काम, सन्तानस्नेह, संग्रह करनें की लालसा, जिघांसा और

❀ धर्म्मार्थावुच्यते श्रेयः कामार्थौ धर्म एव च ॥
अर्थ एवेह वा श्रेय स्त्रिवर्ग इति तु स्थितिः ॥

आत्मसुख की अभिरुचि इत्यादि निकृष्ट प्रवृत्ति मैं शामिल हैं और इन् सब के अविरोध सै जो काम किया जाय वह ईश्वर के नियमानुसार समझा जाता है परन्तु किसी काम मैं दो वृत्तियों का विरोध किसी तरह न मिट सके तो वहां जरूरत के लायक आनुसंगिक प्रवृत्ति और निकृष्ट प्रवृत्ति को धर्म्मप्रवृत्ति और बुद्धि वृत्ति सै दबा देना चाहिये जैसै श्रीरामचन्द्रजी नें राज पाट छोड कर बन मैं जानें सै धर्म्म प्रवृत्ति को उत्तेजित किया था."

"यह तो सवाल और जवाब और हुआ मैंनें आप सै मनुष्य का स्वभाव पहिचान्ने की राय पूछी थी आप बीच मैं मन की बृत्तियों का हाल कहनें लगे" लाला मदनमोहन नें कहा.

"इसी सै आगे चल कर मनुष्य के स्वभाव पहचान्ने की रीति मालूम होगी—"

"पर आप तो काम, सन्तानस्नेह आदि के अविरोध सै भक्ति और परोपकारादि करनें के लिये कहते हैं और शास्त्रों मैं काम क्रोध, लोभ, मोहादिक की बारम्बार निन्दा की है फिर आप का कहना ईश्वर के नियमानुसार कैसै हो सक्ता है?" पंडित पुरुषोत्तमदास बीच मैं बोल उठे.

"मैं पहले कह चुका हूं कि धर्म्मप्रवृत्ति और निकृष्टप्रवृत्ति मैं बिरोध हो वहां जरूरत के लायक धर्म्मप्रवृत्ति को प्रवल मान्ना चाहिये परंतु धर्म्मप्रवृत्ति और बुद्धिप्रवृत्ति का बचाव किये पीछै भी निकृष्टप्रवृत्ति का त्याग किया जायगा तो ईश्वर की यह रचना सर्वथा निरर्थक ठैरेगी पर ईश्वर का कोई काम निरर्थक नहीं है मनुष्य निकृष्टप्रवृत्ति के बस होकर धर्म्मप्रवृत्ति और बुद्धि वृत्ति की रोक नहीं मान्ता इसी सै शास्त्र मैं बार-

ग्बार उस्का निषेध किया है परंतु धर्म्मप्रबृत्ति और बुद्धि को मुख्य माने पीछै उचित रीति सै निकृष्टप्रबृत्ति का आचरण किया जाय तो गृहस्थ के लिये दूषित नहीं हो सक्ता हां उस्का नियम उल्लंघन कर किसी एक बृत्ति की प्रवलता सै और, और बृत्तियों के विपरीत आचरण कर कोई दुःख पावै तौ इस्मैं किसी का बस नहीं, सब सै मुख्य धर्म्मप्रबृत्ति है परंतु उस्मैं भी जबतक और बृत्तियों के हक की रक्षा न की जायगी अनेक तरह के बिगाड होनें की संभावना बनी रहैगी."

"मुझ को आप की यह बात बिल्कुल अनोखी मालूम होती है भला परोपकारादि शुभ कामों का परिणाम कैसे बुरा हो सक्ता है ?" पंडित पुरुषोत्तमदास नें कहा.

"जैसें अन्न प्राणाधार है परंतु अति भोजन सै रोग उत्पन्न होता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "देखिये परोपकार की इच्छा ही अत्यंत उपकारी है परंतु हद्द सै आगे बढ़नें पर वह भी फ़िज़ूलखर्ची समझी जायगी और अपनें कुटुंब परवारादि का सुख नष्ट हो जायगा जो आलसी अथवा अधर्म्मियों की सहायता की तो उस्सै संसार मैं आलस्य और पाप की बृद्धि होगी इसी तरह कुपात्र मैं भक्ति होनें सै लोक, परलोक दोनों नष्ट हो जायंगे. न्यायपरता यद्यपि सब बृत्तियों को समान रखनें वाली है परंतु इस्की अधिकता सै भी मनुष्य के स्वभाव मैं मिलनसारी नहीं रहती, क्षमा नहीं रहती. जब बुद्धि बृत्ति के कारण किसी बस्तु के बिचार मैं मन अत्यंत लग जायगा तो और जान्नें लायक पदार्थों की अज्ञानता बनी रहैगी मन को अत्यंत परिश्रम होनें सै वह निर्बल हो जायगा. और शरीर

का परिश्रम बिल्कुल न होनें के कारण शरीर भी बलहीन हो जायगा. आनुसंगिक प्रवृत्ति के प्रबल होनें सै जैसा संग होगा वैसा रंग तुरत लग जाया करेगा. काम की प्रबलता सै समय, असमय और स्वस्त्री परस्त्री आदि का कुछ बिचार न रहैगा. संतानस्नेह की बृत्ति बढ़ गई तो उस्के लिये आप अधर्म्म करनें लगेगा, उस्को लाड, प्यार मैं रखकर उस्के लिये जुदे कांटे बोयेगा. संग्रह करनें की लालसा प्रबल हुई तो जोरी सै, चोरी सै, छल सै, खुशामद सै, कमानें की डिढ्या पडैगी और खानें, खर्चनें के नाम सै जान निकल जायगी. जिघांसा बृत्ति प्रबल हुई तो छोटी, छोटी सी बातों पर अथवा खाली संदेह पर ही दूसरों का सत्यानाश करनें की इच्छा होगी और दूसरे को दंड देती बार आप दंड योग्य बन जायगा. आत्म सुख की अभिरुचि हद्द सै आगे बढ गई तो मन को परिश्रम के कामों सै बचानें के लिये गानें बजानें की इच्छा होगी, अथवा तरह, तरह के खेल तमाशे हँसी चुहल की बातें, नशेबाजी, और खुशामद मैं मन लगैगा, द्रब्य के बल सै बिना धर्म्म किये धर्मात्मा बना चाहैंगे, दिन रात बनाव सिंगार मैं लगे रहैंगे. अपनी मानसिक उन्नति करनें के बदले उन्नति करनें वालों सै द्रोह करैंगे, अपनी झूंटी ज़िद निबाहनें मैं सब बड़ाई समझैंगे, अपनें फायदे की बातों मैं औरों के हक का कुछ बिचार न करेंगे. अपनें काम निकालनें के समय आप खुशामदी बन जायँगे, द्रब्य की चाहना हुई तो उचित उपायों सै पैदा करनें के बदले हुआ, बदनी, धरोहड़, रसायन, या धरी ढकी दोलत ढूंडते फिरैंगे.—"

"आप तो फिर वोही मन की बृत्तियों का झगड़ा ले बैठे. मेरे सवाल का जवाब दीजिये या हार मानिये" लाला मदनमोहन उखता कर कहनें लगे.

"जब आप पूरी बात ही न सुनें तो मैं क्या जवाब दूं ? मेरा मतलब इतनें बिस्तार सै यह था कि सब बृत्तियों का संबंध मिला कर अपना कर्तव्य कर्म निश्चय करना चाहिये किसी एक बृत्ति की प्रबलता सै और बृत्तियों का बिचार न किया जायगा तो उस्मैं बहुत नुक्सान होगा" लालाब्रजकिशोर कहनें लगे:—

"वाल्मीकि रामायण मैं भरत सै रामचन्द्र नें और महाभारत मैं नारदमुनि नें राजायुधिष्ठिर सै ये प्रश्न किया है "धर्महि धन, अर्थहिधरम बाधक तो कहु ं नाहिं ? ॥ काम न करत बिगार कछु पुन इन दोउन मांहिं ? ॥ १"

"बिदुरप्रजागर मैं बिदुरजी राजाधृतराष्ट्र सै कहते हैं धर्म अर्थ अरु काम, यथा समय सेवत जु नर ॥ मिल तीनहुँ अभिराम, ताहि देत दुहुँलोक सुख ॥ २"

"बिष्णु पुराण मैं कहा है "धर्म बिचारै प्रथम पुनि अर्थ, धर्म अविरोधि ॥ धर्म, अर्थ बाधा रहित सेवै काम सुसोधि ॥३"

"रघुबंश मैं अतिथि की प्रशंसा करतीबार महाकवि कालि-

---

१ कच्चिदर्थं न वा धर्मं धर्मेणार्थं मथा पिवा ॥
उभौ वा प्रीतिसारेण न कामेन प्रबाधसे ॥

२ योधर्म मर्थं कामं च यथा कालं निषेवते ॥
धर्मार्थं काम संयोगं सोमुत्रेहच विन्दति ॥

३ विद्वुद्ध श्चिन्तयेद्धर्म मर्थं चास्या विरोधिनम् ॥
अपीडया तयो: काम मुभयोरपि चिन्तयेत् ॥

दास नें कहा है "निरीनीति कायरपनो केवल बल पशुधर्म्म ॥ तासों उभय मिलाय इन सिद्ध किये सब कर्म्म ॥ ४ ॥

हीन निकम्मे होत हैं बली उपद्रववान ॥ तासों कीन्हें मित्र तिन मध्यम बल अनुमान ॥ ५"

"चाणक्य नें लिखा है " बहुत दान ते बलि बँध्यो मान मरो कुरुराज ॥ लंपट पन रावण हत्यो अति वर्जित सब काज ॥ ६"

"फ्रीजिया के मशहूर हकीम एपिक्टेट्स की सब नीति इन दो बचनों में समाई हुई है कि "धैर्य से सहना" और "मध्यम भाव से रहना" चाहिये.

"कुरान मैं कहा है कि "अय (लोगो) ! खाओ, पीओ परन्तु फ़िज़ूलख़र्ची न करो ॥ ७"

"बृन्द कहता है "कारज सोई सुधर है जो करिये समभाय ॥ अति बरसे बरसे बिना जों खेती कुह्मलाय ॥"

"अच्छा संसार मैं किसी मनुष्य का इसरीति पर पूरा बरताव भी आज तक हुआ है ?" बाबू बैजनाथ नें पूछा.

"क्यों नहीं देखिये पाईसिस्ट्रेट्स नामी एथीनियन का नाम इसी कारण इतिहास मैं चमक रहा है पह उदार होनें पर

---

४ कातर्यं केवलानीतिः शौर्यंश्वापदचेष्टितम् ॥
अतः सिद्धिसमेताभ्या मुभाभ्यामन्वियेष सः ॥

५ हीनान्यनुपकर्तॄणि प्रवृद्धानि विकुर्वते ॥
तेन मध्यमशक्तीनी मित्राणि स्थापितान्यतः

६ अतिदानाद् वलिर्बद्धो नष्टो मानात् सुयोधनः ॥
विनष्टो रावणो लौल्या दतिसर्वत्र वर्जयेत्

७ कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफू

फ़िज़ूलखर्च न था और किसी के साथ उपकार कर के प्रत्युपकार नहीं चाहता था बल्कि अपनी मानवरी की भी चाह न रखता था वह किसी दरिद्र के मरनें की खबर पाता तो उस्की क्रिया कर्म के लिये तत्काल अपनें पास सै ख़र्च भेज देता. किसी दरिद्र को बिपद ग्रस्त देखता तो अपनें पास से सहायता कर के उस्के दु ख दूर करनें का उपाय करता पर कभी किसी मनुष्य को उस्की आवश्यकता सै अधिक देकर आलसी और निरुद्यमी नहीं होनें देता था. हां सब मनुष्यों की प्रकृति ऐसी नहीं हो सक्ती, बहुधा जिस मनुष्य के मन मैं जो वृत्ति प्रबल होती है वह उस्को खींच खांच कर अपनी ही राह पर ले जाती है जैसे एक मनुष्य को जंगल मैं रुपों की थैली पडी पावै और उस्समय उस्के आस पास कोई न हो तब संग्रह करने की लालसा कहती है कि "इसै उठा लो" सन्तानस्नेह और आत्म सुख की अभिरुचि सम्मति देती है कि "इस काम सै हम को भी सहायता मिलेगी" न्याय परता कहती है कि "न अपनी प्रसन्नता सै यह किसी नें हम को दी न हमनें परिश्रम कर के यह किसी सै पाई फिर इसपर हमारा क्या हक है ? और इस्का लेना चोरी सै क्या कम है ? इसै पर धन समझ कर छोड़ चलो" परोपकार की इच्छा कहती है कि "केवल इस्का छोड़ जाना उचित नहीं, जहां तक हो सके उचित रीति सै इस्को इस्के मालिक के पास पहुंचानें का उपाय करो" अब इन् वृत्तियों सै जिस वृत्ति के अनुसार मनुष्य काम करे वह उसी मेल मैं गिना जाता है यदि धर्म्मप्रवृत्ति प्रबल रही तो वह मनुष्य अच्छा समझा जायगा और निकृष्ट प्रवृत्ति प्रबल रही तो वह मनुष्य नीच गिना

जायगा, और इस रीति सै भले बुरे मनुष्यों की परीक्षा समय पाकर अपनें आप हो जायगी बल्कि अपनी वृत्तियों को पहचान कर मनुष्य अपनी परीक्षा भी आप कर सकेगा, राजपाट, धन दौलत, विद्या, स्वरूप, बंश, मर्यादा सै भले बुरे मनुष्य की परीक्षा नहीं हो सक्ती. बिदुरजी नें कहा है "उत्तमकुल आचार बिन करे प्रमाण न कोइ ॥ कुलहीनो आचारयुत लहे बडाई सोइ † ॥"

प्रकरण ७

सावधानी (होशयारी)

सब भूतनको तत्व लख कर्म योग पहिचान ॥
मनुजनके यत्नहि लखहिं सो पंडित गुणवान ॥ *

बिदुर प्रजागरे.

"यहां तो आप अपनें कहनें पर खुद ही पक्के न रहें. आपनें केलीप्स और डिओन का द्रष्टांत देकर यह बात साबित की थी कि किसी की जहिरी बातों सै उस्की परीक्षा नहीं हो सक्ती परन्तु अंत मैं आप नें उसी के कामों सै उस्को पहचान्नें की राय बतलाई" बाबू बैजनाथ नें कहा.

---

† न कुलं वृत्तहीनस्य प्रमाण मिति मे मतिः ॥
अन्तेष्वपि हि जातानां वृत्तमेव विशिष्यते ॥

* तत्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम् ॥
उपायज्ञो मनुष्याणां नरः पंडित उच्यते ॥

"मैंनें केलीप्सके दृष्टांत में पिछले कामों सै पहली बातों का भेद खोल कर उस्का निज स्वभाव बता दिया था इसी तरह समय पाकर हर आदमी के कामों सै मन की वृत्तियों पर निगाह कर के उस्की भलाई बुराई पहचान्ने की राह बतलाई तो इस्सै पहली बातों सैं क्या विरोध हुआ ?" लाला ब्रजकिशोर पूछनें लगे.

"अच्छा ! जब आपके निकट मनुष्य की परीक्षा बहुत दिनों मैं उस्के कामों सै हो सक्ती है तो पहले कैसा बरताव रक्खें ? क्या उस्की परीक्षा न हो जब तक उस्को अपनें पास न आनें दें ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"नहीं, केवल संदेह सै किसी को बुरा समझना, अथवा किसी का अपमान करना सर्वथा अनुचित है परंतु किसी की झूंटी बातों मैं आकर ठगा जाना भी मूर्खता सै खाली नहीं." लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "महाभारत मैं कहा है "मन न भरे पतियाहु जिन पतियायेहु अति नाहिं ॥ भेदी सों भय होतही जर उखरे छिन माहिं ॥" * इस्कारण जब तक मनुष्य की परीक्षा न हो साधारण बातों मैं उस्के ज़ाहिरी बरताव पर दृष्टि रखनी चाहिये परंतु जोखों के काम मैं उस्सै सावधान रहना चाहिये उस्का दोष प्रगट होनें पर उस्को छोड़नें मैं संकोच न हो इस लिये अपना भेदी बना कर, उस्का अहसान उठाकर, अथवा किसी तरह की लिखावट और जंबान सैं उस्के बसवर्ती होकर अपनी स्वतंत्रता न खोवै यद्यपि किसी, किसी के बिचार मैं

---

* न विश्वसे दविश्वस्ते विश्वस्ते नाति विश्वसेत् ॥
विश्वासाद्द भयमुत्पन्न मूलान्यपि निकृन्तति ॥

छल, बल की प्रतिज्ञाओं का निबाहना आवश्यक नहीं है परंतु प्रतिज्ञा भंग करनें की अपेक्षा पहले बिचार कर प्रतिज्ञा करना हर भांत अच्छा है"

"ऐसी सावधानी तो केवल आप लोगों ही सै हो सक्ती है जो दिन रात इन्हीं बातों के चारा बिचार मैं लगे रहैं" लाला मदनमोहन नें हँसकर कहा.

"मैं ऐसा सावधान नहीं हूं परंतु हर काम के लिये सावधानी की बहुत ज़रूरत है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैं अभी मन की बृत्तियों का हाल कहकर अच्छे बुरे मनुष्यों की पहचान वता चुका हूं परंतु उन मैं सै धर्म्मप्रवृत्ति की प्रबलता रखनें वाले अच्छे आदमी भी सावधानी बिना किसी काम के नहीं हैं क्योंकि वे बुरी बातों को अच्छा समझ कर धोखा खा जाते हैं आप नें सुना होगा कि हीरा और कोयला दोनों मैं कार्बोन है और उन्के बन्ने की रसायनिक क्रिया भी एकसी है दोनों मैं कार्बोन रहता है केवल इतना अंतर है हीरे मैं निरा कार्बोन जमा रहता है और कोयले मैं उस्की कोई खास सूरत नहीं होती जो कार्बोन जमा हुआ, दृढ़ रहनें सै वहुत कठोर, स्वच्छ, स्वेत और चमकदार होकर हीरा कहलाता है वही कार्बोन परमाणुओं के फैल फुट और उलट पुलट होनें के कारण काला, झिर्झिरा, बोदा, और एक सूरत मैं रहकर कोयला कहलाता है! येही भेद अच्छे मनुष्यों मैं और अच्छी प्रकृतिवाले सावधान मनुष्यों मैं है कोयला बहुतसी ज़हरीली और दुर्गंधित हवाओं को सोख लेता है अपनें पास की चीज़ों को गलनें सडनें की हानि सै बचाता है. और अमोनिया इत्यादि के द्वारा बन-

स्पति को फ़ायदा पहुंचाता है इसी तरह अच्छे आदमी दुष्कर्मों सै बचते हैं परंतु सावधानी का योग मिले बिना हीरा की तरह क़ीमती नहीं हो सक्ते"

"मुझे तो यह बातैं मनः कल्पित मालूम होती हैं क्यौंकि संसार के बरताव सै इन्की कुछ बिध नहीं मिल्ती संसार मैं धनवान कुपढ, दरिद्री पंडित, पापी सुखी, धर्मात्मा दुखी, असावधान अधिकारी, सावधान आज्ञाकारी, भी देखनें मैं आते हैं" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"इस्के कई कारण हैं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैं पहले कह चुका हूं कि ईश्वर के नियमानुसार मनुष्य जिस विषय मैं भूल करता है बहुधा उस्को उसी विषय मैं दंड मिल्ता है. जो बिद्वान दरिद्री मालूम होतें हैं वह अपनी बिद्या मैं निपुण हैं परंतु संसारिक व्यवहार नहीं जान्ते अथवा जान बूझ कर उस्के अनुसार नहीं बरतते. इसी तरह जो कुपढ धनवान दिखाई देते हैं वह बिद्या नहीं पढे परंतु द्रव्योपार्जन करनें और उस्के रक्षा करनें की रीति जान्ते हैं. बहुधा धनवान रोगी होते हैं और ग़रीब नैरोग्य रहते हैं इस्का यह कारण है कि धनवान द्रव्योपार्जन करनें की रीति जान्ते हैं परंतु शरीर की रक्षा उचित रीति सै नहीं करते और गरीबों की शरीर रक्षा उचित रीति सै बन् जाती है परंतु वे धनवान होनें की रीति नहीं जान्ते. इसी तरह जहां जिस बात की कसर होती है वहां उसी चीज की कमी दिखाई देती हैं. परंतु कहीं, कहीं प्रकृति के विपरीत पापी सुखी, धर्मात्मा दुखी, असावधान अधिकारी, सावधान आज्ञाकारी, दिखाई देते हैं इस्के दो कारण हैं. एक यह कि संसार

की वर्तमान दशा के साथ मनुष्य का वड़ा दृढ संबंध रहता है इस लिये कभी, कभी औरों के हेतु उस्का विपरीत भाव हो जाता है जैसे मा बाप कें विरसे से द्रव्य, अधिकार या ऋण रोगादि मिल्ते हैं, अथवा किसी और की धरी हुई दौलत किसी और के हाथ लगजानें से वह उस्का मालिक बन बैठता है, अथवा किसी अमीर की उदारता से कोई नालायक धनवान बन जाता है, अथवा किसी पास पड़ोसी की गफ़लत से अपना सामान जल जाता है, अथवा किसी दयालु विद्वान के हितकारी उपदेशों से, कुपढ मनुष्य विद्या का लाभ ले सक्ते हैं, अथवा किसी बलवान लुटेरे की लूट मार से कोई गृहस्थ बेसबब धन और तन्दुरुस्ती खो बैठता है और ये सब बातें लोगों के हक मैं अनायास होती रहती हैं इस लिये इनको सब लोग प्रारब्ध फल मान्ते हैं परंतु ऐसे प्रारब्धी लोगों मैं जिस्को कोई बस्तु अनायास मिल गई पर उस्के स्थिर रखनें के लिये उस्के लायक कोई वृत्ति अथवा सब वृत्तियों की सहायता स्वरूप सावधानी ईश्वर नें नहीं दी तो वह उस चीज़ को अन्त मैं अपनी स्वाभाविक वृत्तियों के बस होकर बहुधा खो बैठता है अथवा बिपरीत बृत्तियों की प्रबलता से वह बस्तु अधिक हुई तो उस्मैं उन वृत्तियों का नुक्सान गुप्त रहकर समय पर ऐसे प्रगट होता है जैसे बचपन की बेमालूम चोट बडी अवस्था मैं शरीर को निर्बल पाकर अचानक कसक उठे, या शतरंज मैं किसी चाल की भूल का असर दसबीस चाल पीछै मालूम हो. पर ईश्वर की कृपा से किसी को कोई बस्तु मिलती है तो उस्के साथ ही उस्के लायक बुद्धि भी मिलजाती है या ईश्वर की कृपा

सै किसी कायम मुकाम (प्रतिनिधि) वगैरे की सहायता पाकर उस्के ठीक, ठीक काम चलनें का बानक बन जाता है जिस्सै वह नियम निभे जाते हैं परंतु ईश्वर के नियम मनुष्य सै किसी तरह नहीं टूट सक्के."

"मनुष्य क्या मैं तो जान्ता हूं ईश्वरसे भी नहीं टूट सक्के" बाबू बैजनाथने कहा.

"ऐसा बिचारना अनुचित है ईश्वर को सब सामर्थ्य है देखो प्रकृतिका यह नियम सब जगह एकसा देखा जाता है कि गर्म होनें सै हरेक चीज़ फैलती है और ठंडी होनें सै सिमट जाती है यही नियम २१२ डिक्री तक जल के लिये भी है परन्तु जब जल बहुत ठंडा होकर ३२ डिक्री पर बर्फ बन्ने लगता है तो वह ठंड सै सिमटनें के बदले फैलता जाता है और हल्का होनें के कारण पानी के ऊपर तैरता रहता है इस मैं जल जंतुओंकी प्राणरक्षा के लिये यह साधारण नियम बदल दिया गया ऐसी ऐसी बातों सै उस्की अपरमित शक्तिका पूरा प्रमाण मिलता है उस नें मनुष्य के मानसिक भावादि सै संसार के बहुतसे कामोंका गुप्त संबंध इस तरह मिला रक्खा है कि जिस्के आभास मात्र सै अपना चित्त चकित होजाता है. यद्यपि ईश्वर के ऐसे बहुतसे कामोंकी पूरी थाह मनुष्य की तुच्छ बुद्धि को नहीं मिली तथापि उस नें मनुष्य को बुद्धि दी है इस लिये यथाशक्ति उस्के नियमों का बिचार करना, उन्के अनुसार बरतना और बिपरीत भावका कारण ढूंढना उस्को उचित है सो मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार एक कारण पहले कह चुकाहूं. दूसरा यह मालूम होताहै कि जैसे तारों की छांह चन्द्रमा की चांदनी मैं और चन्द्रमाकी चांदनी

सूर्य्य की धूपमैं मिलकर अपनें आप उस्का तेज बढानें लगती है इसी तरह बहुत उन्नति मैं साधारण उन्नति अपनें आप मिलजाती है. जबतक दो मनुष्योंका अथवा दो देशों का बल बराबर रहता है कोई किसी को नहीं हरा सक्ता, परंतु जब एक उन्नति-शाली होता है, आकर्षणशक्ति के नियमानुसार दूसरे की समृद्धि अपनें आप उस्की तरफ़ को खिचनें लगती है देखिये जबतक हिंन्दुस्थान मैं और देशों सै बढकर मनुष्य के लिये बस्त्र और सब तरह के सुख की सामग्री तैयार होती थी, रक्षाके उपाय ठीक, ठीक बनरहे थे, हिंन्दुस्थान का वैभव प्रतिदिन बढता जाता था परंतु जबसे हिंन्दुस्थान का एका टूटा और देशोंमैं उन्नति हुई बाफ और बिजली आदि कलोंके द्वारा हिंदुस्थान की अपेक्षा थोड़े ख़र्च थोड़ी महनत, और थोड़े समय मैं सब काम होनें लगा हिन्दुस्थान की घटती के दिन आगए ; जब तक हिन्दुस्थान इन बातों मैं और देशों की बराबर उन्नति न करेगा यह घाटा कभी पूरा न होगा. हिन्दुस्थान की भूमि मैं ईश्वर की कृपा सै उन्नति करनेंके लायक सब सामान बहुतायतसे मौजूदहैं केवल नदियों के पानी ही सै बहुत तरह की कलैं चल सक्ती हैं परंतु हाथ हिलाये बिना अपनें आप ग्रास मुख मैं नहीं जाता नई, नई युक्तियों का उपयोग किये बिना काम नहीं चलता. पर इन बातों सै मेरा यह मतलब हरगिज़ नहीं है कि पुरानी, पुरानी सब बातैं बुरी और नई, नई सब बातैं एकदम अच्छी समझ ली जायँ. मैंनें यह दृष्टांत केवल इस विचार सै दिया है कि अधिकार और व्यापारादि के कामों मैं कोई, कोई युक्ति किसी समय कामकी होती है वह भी काला-न्तर मैं पुरानी रीति भांत पलटजानें पर अथवा किसी और तरह

की सूधी राह के निकल आनें पर अपनें आप निरर्थक हो जाती है और संसार के सब कामों का संबन्ध परस्पर ऐसा मिला रहता है कि एक की उन्नति अवनतिका असर दूसरों पर तत्काल हो जाता है इस कारण एक सावधानी बिना मनकी वृत्तियों के ठीक होनें पर भी जमानें के पीछै रह जानें सै कभी, कभी अपनें आप अवनति हो जाती है और इनही कारणों सै कहीं, कहीं प्रकृति के बिपरीत भाव दिखाई देता है"

"इस्सै तो यह बात निकली की हिन्दुस्थान मैं इस्समय कोई सावधान नहीं है" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा.

"नहीं यह बात हरगिज नहीं है, परंतु सावधानीका फल प्रसंगके अनुसार अलग, अलग होता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "तुम अच्छी तरह बिचार कर देखोगे तो मालूम हो जायगा कि हरेक समाजका मुखिया कोई निरा बिद्वान् अथवा धनवान नहीं होता, बल्कि बहुधा सावधान मनुष्य होता है और जो खुशी बड़े बड़े राजाओंको अपनें बराबर वालों मैं प्रतिष्ठा लाभ सै होती है वही एक ग़रीब सै ग़रीब लकडहारे को भी अपनें बराबर वालोंमैं इज़्ज़त मिलनें सै होती है और उन्नति का प्रसंग हो तो वह धीरै, धीरै उन्नति भी करता जाता है परंतु इन दोनोंकी उन्नतिका फल बराबर नहीं होता क्योंकि दोनोंको उन्नति करनेके साधन एकसे नहीं मिलते. मनुष्य जिन कामोंमैं सदैव लगा रहता है अथवा जिन बातोंका बारबार अनुभव करता है बहुधा उन्हीं कामोंमैं उस्की बुद्धि दौडती है और किसी साव-धान मनुष्यकी बुद्धि किसी अनूठे काममैं दोडी भी तो उसै काममैं लानेंके लिये बहुत करकै मौका नहीं मिलता. देशकी

उन्नति अवनतिका आधार वहांके निवासियों की प्रकृति पर है. सब देशोंमैं सावधान और असावधान मनुष्य रहते हैं परन्तु जिस देशके बहुत मनुष्य सावधान और उद्योगी होते हैं उस्की उन्नति होती जाती है और जिस देशमैं असावधान और कमकस विशेष होते हैं उस्की अवनति होती जाती है. हिन्दुस्थान मैं इस समय और देशोंकी अपेक्षा सच्चे सावधान बहुत कम हैं और जो हैं वे द्रव्यकी असंगति सै, अथवा द्रव्यवानोंकी अज्ञानता सै, अथवा उपयोगी पदार्थोंकी अप्राप्तिसै, अथवा नई, नई युक्तियोंके अनुभव करनें की कठिनाइयोंसै, निरर्थक से हो रहे हैं और उन्की सावधानता बनके फूलोंकी तरह कुछ उपयोग किये विना बृथा नष्ट हो जाती है परंतु हिन्दुस्थान मैं इस समय कोई सावधान न हो यह बात हरगिज़ नहीं है"

"मेरे जान तो आजकल हिन्दुस्थान मैं बराबर उन्नति होती जाती है. जगह, जगह पढ़नें लिखनें की चर्चा सुनाई देती है, और लोग अपना हक़ पहचान्नें लगे हैं" बाबू बैजनाथनें कहा.

"इन सब बातों मैं बहुत सी स्वार्थपरता और बहुतसी अज्ञानता मिली हुई है परन्तु हकीकत मैं देशोन्नति बहुत थोडी है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जो लोग पढ़ते हैं वे अपनें बाप दादोंका रोजगार छोडकर केवल नौकरीके लिये पढते हैं और जो देशोन्नतिके हेतु चर्चा करते हैं उनका लक्ष अच्छा नहीं है वे थोथी बातों पर बहुत हल्ला मचाते हैं परंतु विद्याकी उन्नति, कलोंके प्रचार, पृथ्वीके पैदावार बढ़ानें की नई, नई युक्ति और लाभदायक व्यापारादि आवश्यक बातों पर जैसा चाहिये ध्यान नहीं देते जिस्से अपनें यहांका घाटा पूरा हो. मैं पहले कह चुका

हूं कि जिन मनुष्यों की जो बृत्तियां प्रबल होती हैं वह उन्को खींच खांचकर उसी तरफ़ ले जाती हैं सो देख लीजिये कि हिन्दुस्थान मैं इतनें दिन सै देशोन्नति की चर्चा हो रही है परन्तु अबतक कुछ उन्नति नहीं हुई और फ्रांस वालों को जर्मनीवालों सै हारे अभी पूरे दस बर्स नहीं हुए जिस्मैं फ्रान्सवालों नें सच्ची सावधानी के कारण ऐसी उन्नति करली कि वे आज सब सुधरी हुई बलायतों सै आगै दिखाई देते हैं."

"अच्छा ! आपके निकट सावधानी की पहचान क्या है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"सुनिये" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जिस तरह पांच, सात गोलियें बराबर, बराबर चुन्दी जायं और उन्मैं सै सिरे की एक गोली को हाथ सै धक्का देदिया जाय तो हाथ का बल, पृथ्वी की आकर्षणशक्ति, हवा आदि सब कार्य कारणों के ठीक, ठीक जान्ने सै आपस्मैं टकरा कर अन्त की गोली कितनी दूर लुढकैगी इस्का अन्दाज हो सक्ता है इसी तरह मनुष्यों की प्रकृति और पदार्थों की जुदी, जुदी शक्ति का परस्पर संबन्ध विचार कर दूर और पास की हरेक बात का ठीक परिणाम समझ लेना पूरी सावधानी है परन्तु इन बातों को जान्नें के लिये अभी बहुत से साधनों की कसर है और किसी समय यह सब साधन पा कर एक मनुष्य बहुत दूर, दूर की बातोंका ठीक परिणाम निकाल सकै यह बात असंभव मालूम होती है तथापि अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो मनुष्य इस राह पर चलै वह अपनें समाज मैं साधारण रीति सै सावधान समझा जाता है. एक मोमबत्ती एक तरफ सै जल्ती हो और दूसरी दोनों तरफ जलती हो तो उस्के

बर्तमान प्रकाश पर न भूलना परिणाम पर द्रृष्टि करना सावधानी का साधारण काम है और इसी सै सावधानता पहचानी जाती है."

"आपनें अपनी सावधानता जतानें के लिये इतना परिश्रम करके सावधानी का वर्णन किया इस लिये मैं आपका बहुत उपकार मान्ता हूं" लाला मदनमोहन नें हंस कर कहा.

"वाजबी बात कहनें पर मुझको आप सै ये तो उम्मेद ही थी." लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया, और लाला मदनमोहन सै रुखसत होकर अपने मकान को रवानें हुए.

प्रकरण ८.

सबमैं हां (!)

"एकै साधे सब सधैं सब साधे सब जाहिं
जो गहि सींचै मूलकों फूलैं फलैं अघाहिं

कबीर.

"लाला ब्रजकिशोर बातें बनानेमैं बड़े होशयार हैं परंतु आपनें भी इस्समय तो उन्को ऐसा मंत्र सुनाया कि वह बंद ही होगए" मुनशी चुन्नीलालनें कहा.

"मुझको तो उन्की लंबी चोड़ी बातोंपर लुक्मानकी वह कहावत याद आती है जिस्मैं एक पहाड़के भीतरसै बड़ी गड़गड़ाहट हुए पीछै छोटीसी मूसी निकली थी" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"उन्की बातचीतमैं एक बड़ा ऐब यह था कि वह बीचमैं दूसरे को बोलने का समय बहुत कम देते थे जिस्सै उन्की बात अपने आप फीकी मालूम होनें लगती थी" बाबू बैजनाथनें कहा.

"क्या करें ? वह वकील हैं और उन्की जीविका इन्हीं बातों सै है" हकीम अहमदहुसेन बोले.

"उन् पर क्या है अपना, अपना काम बनानें मैं सब ही एकसे दिखाई देते हैं" पंडित पुरुषोत्तमदासनें कहा.

"देखिये सवेरे वह काचोंकी ख़रीदारी पर इतना झगड़ा करते थे परंतु मन मैं क़ायल हो गए इस्सै इस्समय उन्का नाम भी न लिया" मुन्शी चुन्नीलाल नें याद दिलाई.

"हां; अच्छी याद दिलाई, तुम तीसरे पहर मिस्टर ब्राइट के पास गये थे ? काचोंकी क़ीमत क्या ठैरी ?" लाला मदनमोहन नें शिंभूदयाल सै पूछा.

"आज मदरसे सै आनें मैं देर हो गई इस्सै नहीं जासका" मास्टर शिंभूदयाल नें जवाब दिया. परंतु यह उस्की बनावट थी असल मैं मिस्टर ब्राइट नें लाला मदनमोहन का भेद जान्नें के लिये सौदा अटका रक्खा था.

"मिस्टर रसलको दस हज़ार रुपे भेजनें है उन्का कुछ बंदोबस्त हो गया." मुन्शी चुन्नीलाल नें पूछा.

"हां लाला जवाहरलाल सै कह दिया है परंतु मास्टर साहब भी तो बंदोबस्त करनें कहते थे इन्हों नें क्या किया ?" लाला मदनमोहन नें उलट कर पूछा.

"मैंनै एक, दो जगह चर्चा की है पर अबतक किसी सै पकावट नहीं हुई" मास्टर शिंभूदयाल नें जवाब दिया.

"खैर ! यह बातैं तो हुआ ही करैंगी मगर वह लखनऊ का तायफ़ा शाम सै हाज़िर है उस्के वास्तै क्या हुक्म होता है ?" हकीम अहमदहुसैन नें पूछा.

"अच्छा ! उस्को बुलवाओ पर उस्के गानें मैं समा न बँधा तो आप को वह शर्त पूरी करनी पड़ेगी" लाला मदन-मोहन नें मुस्कराकर कहा.

इस्पर लखनऊ का तायफ़ा मुजरे के लिये खड़ा हुआ और उस्नें मीठी आवाज़ सै तालसुर मिलाकर सोरठ गाना शुरू किया.

निस्संदेह उस्का गाना अच्छा था परंतु पंडितजी अपनी अभिज्ञता जतानें के लिये बे समझे बूझे लट्टू हुए जाते थे सम-झनेंवालों का सिर मोके पर अपनें आप हिल जाता है परंतु पंडितजी का सिर तो इस्समय मतवालों की तरह घूम रहा था मास्टर शिंभूदयाल को दुपहर का बदला लेनें के लिये यह समय सब सै अच्छा मिला उस्नें पंडितजी को आसामी बनानें के हेतु और लोगों सै इशारों मैं सलाह कर ली और पंडितजी का मन बढ़ानें के लिये पहलै सब मिलकर गानें की वाह २ करनें लगे अंत मैं एकनें कहा "क्या स्यामकल्याण है" दूसरेनें कहा "नहीं, ईमन है" तीसरे नें कहा "वाह झंझौटी है" चोथा बोला "देस है" इस्पर सुनारी लड़ाई होनें लगी.

"पंडितजी को सब सै अधिक आनंद आरहा है इस लिये इन्सै पूछना चाहिये" लाला मदनमोहन नें झगड़ा मिटानें के मिस सै कहा.

"हां, हां पंडितजी नें दिन मैं अपनी बिद्या के बल सै बेदेखे भाले करेला बता दिया था सो अब इस प्रत्यक्ष बात के बतानें

में क्या संदेह है ?" मास्टर शिंभूदयाल नें शै दी और सब लोग पंडितजी के मुंह की तरफ़ देखनें लगे.

"शास्त्र सै कोई बात बाहर नहीं है जब हम सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण पहले सै बता देते हैं तो पृथ्वी पर की कोई बात बतानी हम को क्या कठिन है ?" पंडित पुरुषोत्तमदास नें बात उड़ानें के वास्तै कहा.

"तो आप रेल और तार का हाल भी अच्छी तरह जान्ते होंगे ?" बाबू बैजनाथ नें पूछा. "मैं जान्ता हूं कि इन सब का प्रचार पहले हो चुका है क्योंकि "रेल पेल" और "एकतार" होनें की कहावत अपनें यहां बहुत दिन सै चली आती है" पंडितजी नें जवाब दिया.

"अच्छा महाराज! रेल शब्द का अर्थ क्या है? और यह कैसे चल्ती है ?" मास्टर शिंभूदयाल नें पूछा.

"भला यह बात भी कुछ पूछनें के लायक़ है! जिस तरह पानी की रेल सब चीज़ों को बहा ले जाती है इसी तरह यह रेल भी सब चीज़ों को घसीट ले जाती है इस वास्तै इस्को लोग रेल कहते हैं और रेल धुँएं के ज़ोर सै चल्ती है यह बात तो छोटे, छोटे बच्चे भी जान्ते हैं † " पंडित पुरुषोत्तमदास नें जवाब दिया, और इस्पर सब आपस मैं एक दूसरे की तरफ़ देखकर मुस्करानें लगे.

"और तार ?" मुन्शी चुन्नीलाल नें रही सही कलई खोलनें के वास्ते पूछा.

---

† देशभाषा मैं बाफ और बिजली की शक्ति के वृत्तान्त न प्रकाशित होनें का यह फल है कि अब तक सर्व साधारण रेल और तार का भेद कुछ नहीं जान्ते.

"इस्मैं कुछ योग बिद्या की कला मालूम होती है !" इतनी बात कहकर पंडित पुरुषोत्तमदास चुप होते थे परंतु लोगों को मुस्कराते देखकर अपनी भूल सुधारनें के लिये झट पट बोल उठे कि "कदाचित् योग बिद्या न होगी तो तार भीतर सै पोला होगा जिस्मैं होकर आवाज़ जाती होगी या उस्के भीतर चिट्ठी पहुंचानें के लिये डोर बंध रही होगी"

"क्यों दयालु! बैलून × कैसा होता है ?" बाबू बैजनाथ नें पूछा.

"हम सब बातें जान्ते हैं परंतु तुम हमारी परीक्षा लेनें के वास्तै पूछते हो इस्सै हम कुछ नहीं बताते" पंडितजी नें अपना पीछा छुडाने के लिये कहा. परंतु शिंभूदयाल नें सब को जता कर झूंटे छिपाव सै इशारे मैं पंडितजी को उडनें की चीज बताई इस्पर पंडितजी तत्काल बोल उठे "हम को परीक्षा देनें की क्या जरूरत है ? परंतु इस समय न बतावैंगे तो लोग बहाना समझैंगे. बैलून पतंग को कहते हैं ."

"वाह, वा, वाह ! पंडितजी नें तो हद कर दी इस कलि काल मैं ऐसी बिद्या किसी को कहां आ सक्ती है !" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"हां पंडितजी महाराज ! हुलक किस जान्वर को कहते हैं ?" हकीम अहमदहुसैन नें नया नाम बना कर पूछा.

"एक चोपाया है" मुन्शी चुन्नीलाल नें बहुत धीरी आवाज़ सै पंडितजी को सुना कर शिंभूदयाल के कान मैं कहा.

"और बिना परों के उडता भी तो है" मास्टर शिंभूदयाल नें उसी तरह चुन्नीलाल को जवाब दिया.

× गैस सै भरा हुआ उडनें का गुबारा

"चलो चुप रहो देखें पंडितजी क्या कहते हैं" चुन्नीलाल नें धीरे सै कहा.

"जो तुम को हमारी परीक्षा ही लेनी है तो लो, सुनो हुलक एक चतुष्पद जंतु विशेष है और बिना पंखों के उड सक्ता है" पंडितजी नें सब को सुनाकर कहा.

"यह तो आप नें बहुत पहुंच कर कहा परंतु उस्की शक्ल बताइये" हकीमजी हुज्जत करनें लगे.

"जो शक्ल ही देखनी हो तो यह रही" बाबू बैजनाथ नें मेज़-पर सै एक छोटासा काच उठाकर पंडितजी के सामनें कर दिया.

इस्पर सब लोग खिल खिलाकर हँस पड़े.

"यह सब बातें तो आपनें बता दीं परंतु इस रागका नाम न बताया" लाला मदनमोहननें हँसी थमे पीछे कहा.

"इस्समय मेरा चित्त ठिकानें नहीं है मुझको क्षमा करो" पंडित पुरुषोत्तमदासनें हार मान कर कहा.

"बस महाराज! आपको तो करेला ही करेला बताना आता है और कुछ भी नहीं आता" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"नहीं साहब! पंडितजी अपनी बिद्यामैं एक ही हैं" "रेल और तारका हाल क्या ठीक, ठीक बताया है!" "और बैलूनमैं तो आप ही उड चले!" "हुलककी सूरत भी तो आप ही नें दिखाई थी!" "और सब सै बढ़कर राग का रस भी तो इनही नें लिया है" चारों तरफ लोग अपनी अपनी कहनें लगे.

पंडित जी इन लोगोंकी बातें सुन, सुनकर लज्जाके मारे धरतीमैं गढे चले जाते थे पर कुछ बोल नहीं सक्ते थे.

आखिर यह दिल्लगी पूरी हुई तब बाबू बैजनाथ लाला मदन-मोहनको अलग ले जा कर कहनें लगे "मैंनें सुना है कि लाला ब्रजकिशोर दो, चार आदमियों को पक्का कर कै यहां नए सिर सै कालिज स्थापन करनें के लिये कुछ उद्योग कर रहे हैं यद्यपि सब लोगोंके निरुत्साह सै ब्रजकिशोर के कृतकार्य होनें की कुछ आशा नहीं है तथापि लोगों को देशोपकारी बातों मैं अपनी रुचि दिखानें और अग्रसर बन्नें के लिये आप इस्मैं ज़रूर शामिल हो जायँ अख़बारोंमैं धूम मैं मचादूंगा यह समय कोरी बातोंमैं नाम निकालनें का आ गया है क्योंकि ब्रजकिशोर नामवरी नहीं चाहते इसी लिये मैं चलाकर आपको चेतानें के लिये इस्समय आपके पास आया था"

"आप की बड़ी महरबानी हुई मैं आपके उपकारोंका बदला किसी तरह नहीं दे सक्ता किसीनें सच कहा है "हितहि परायो आपनो अहित अपनपोजाय ॥ वनकी ओषधि प्रिय लगत तनको दुख न सुहाय ॥ + ऐसा हितकारी उपदेश आपके बिना और कौन् दे सक्ता है" लाला मदनमोहननें बड़ी प्रीति सै उन्का हाथ पकडकर कहा.

और इसी तरह अनेक प्रकारकी बातोंमैं बहुत रात चली गई तब सब लोग रुख़सत होकर अपनें, अपनें घर गए.

\+ परोपि हितवान् बन्धुर्बन्धु रप्यहित: पर: ।
अहितो देहजो व्याधि र्हितमारण्यमोषधम् ॥

प्रकरण ९.

सभासद.

धर्मशास्त्र पढ, वेद पढ दुर्जन सुधरे नाहिं
गो पय मीठो प्रकृति ते प्रकृति प्रबल सब माहिं †

हितोपदेशे,

इस्समय मदनमोहनके बृत्तान्त लिखनें सै अवकाश पाकर हम थोड़ा सा हाल लाला मदनमोहनके सभासदोंका पाठक गण को विदित करते है. इन्मैं सब सै पहलै मुन्शी चुन्नीलाल स्मर्ण योग्य हैं.

मुन्शी चुन्नीलाल प्रथम ब्रजकिशोर के यहां दस रुपे महीनें का नोकर था उन्हींनें इस्को कुछ, कुछ लिखना पढ़ना सिखाया था, उन्हींकी संगति मैं रहनें सै इसै कुछ सभाचातुरी आ गई थी, उन्हींके कारण मदनमोहन सै इस्की जान पहचान हुई थी परन्तु इस्के स्वभाव मैं चालाकी ठेठ से थी इस्का मन लिखनें पढ़नें मैं कम लगता था पर इस्ने बड़ी, बड़ी पुस्तकों मैं सै कुछ, कुछ बातें ऐसी याद कर रक्खी थीं कि नए आदमी के सामनें झड़ बांध देता था स्वार्थ परता के सिवाय परोपकार की रुचि नाम को न थी पर ज़बानी जमा खर्च करनें और कागज़ के घोड़े

† न धर्म्मशास्त्रं पठतीति कारणं न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः ।
स्वभाव एवात्र तथातिरिच्यते यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः ॥

दौड़ाने में यह बड़ा धुरंधर था. इस्की प्रीति अपना प्रयोजन निकालने के लिये, और धर्म्म लोगों को ठगने के लिये था. यह औरों सै बिवाद करने मैं बड़ा चतुर था परन्तु इस्को अपना चाल चलन सुधारने की इच्छा न थी. यह मनुष्यों का स्वभाव भली भांत पहचान्ता था, परन्तु दूर द्रृष्टि सै हरेक बात का परि-णाम समझलेने की इस्को सामर्थ्य न थी. जोड़ तोड़ की बातों मैं यह इयागो का अवतार था. कणिक की नीति पर इस्का पूरा बिश्वास था. किसी बड़े काम का प्रबंध करने की इस्को शक्ति न थी परन्तु बातोंमैं धरती और आकाश को एक कर देता था इस्के काम निकालने के ढंग दुनियासै निराले थे. यह अपने मतलब की बात बहुधा ऐसे समय करता था जब दूसरा किसी और काम मैं लग रहा हो जिस्सै इस्की बात का अच्छी तरह बिचार न कर सके अथवा यह काम की बात करती बार कुछ, कुछ साधारण बातों की ऐसी चर्चा छेड़ देता था जिस्सै दूसरे का मन बटा रहै अथवा कोई बात रुचि के बिपरीत अंगिकार करानी होती थी तो यह अपनी बातोंमैं हर तरह का बोझ इस ढबसै डाल देता था कि दूसरा इन्कार न करसके कभी, कभी यह अपनी बातों को इस युक्ति सै पुष्ट कर जाता कि सुन्ने वाले तत्काल इस्का कहना मान लेते. जो काम यह अपने स्वार्थ के लिये करता उस्का प्रयोजन सब लोगों के आगे और ही बताता था और अपनी स्वार्थ परता छिपाने के लिये बडी आना कानी सै वह बात मंजूर करता था यह अपने बैरी की व्याजस्तुति इस ढब सै करता था कि लोग इस्का कहना इस्की दयालुता और शुभचिन्तकता सै समझने लगते थे.

जिस्बात के सहसा प्रगट करने मैं कुछ खटका समझता उस्का प्रथम इशारा कर देता था और सुन्नेंवाले के आग्रह पर रुक, रुक वह बात कहता था. जोखों की बात लोगों पर ढाल कर कहता था अथवा शिंभूदयाल वगेरे के मुख सै कहवा दिया करता था और आप साधनें को तयार रहता था. तुच्छ बातों को बढा कर, बड़ी बातों को घटा कर, अपनी तरफ़ सै लोन मिर्च लगाकर, कभी प्रसन्न, कभी उदास, कभी क्रोधित, कभी शान्त होकर यह इस रीति सै बात कहता था कि जो कहता था उस्की मूर्ति बन जाता था. इस्के मन मैं संग्रह करनें की वृत्ति सब सै प्रबल थी.

मुन्शी चुन्नीलाल ब्रजकिशोर के यहां नोकर था जब अपनीं चालाकी सै बहुधा मुक़द्दमेंवालों को उलट पुलट समझा कर अपना हक़ ठैरा लिया करता था. स्टाम्प, तलबाने वगैरे के हिसाब मैं उन लोगों को धोका दे दिया करता था बल्कि कभी, कभी प्रतिपक्षी सै मिल्कर किसी मुक़द्दमेंवाले का सबूत वग़ैरे भी गुप चुप उस्को दिखा दिया करता था. ब्रजकिशोर नें ये भेद जान्ते ही पहले उसै समझाया फिर धमकाया जब इस्पर भी राह मैं न आया तो घर का मार्ग दिखाया. इस्नें पहले ही सै ब्रजकिशोर का मन देख कर लाला मदनमोहन के पास अपनी मिसल लगा ली थी हरकिशोर को अपना सहायक बना लिया था. लाला ब्रजकिशोर के पास सै अलग होते ही लाला मदन-मोहन के पास रहनें लगा.

मुन्शी चुन्नीलाल नें लाला मदनमोहन के स्वभाव को अच्छी तरह पहचान लिया था. लाला मदनमोहन को हाकमों की

प्रसन्नता, लोगों की वाह वाह, अपनें शरीर का सुख, और थोड़े ख़र्च मैं बहुत पैदा करनें के लालच सिवाय किसी काम मैं रुपया ख़र्च करना अच्छा नहीं लगता था पर रुपया पैदा करनें अथवा अपनें पासकी दौलत को बचा रखनें के ठीक रस्ते नहीं मालूम थे इस लिये मुनशी चुन्नीलाल उन्को उन्की इच्छानुसार बातें बनाकर खूब लूटता था.

मास्टर शिंभूदयाल प्रथम लाला मदनमोहन को अंग्रेज़ी पढ़ानें के लिये नोकर रक्खा गया था पर मदनमोहन का मन बचपन सै पढ़नें लिखनें की अपेक्षा खेल कूद मैं अधिक लगता था. शिंभूदयाल नें लिखनें पढ़नें की ताकीद की तो मदनमोहन का मन बिगड़नें लगा. मास्टर शिंभूदयाल खानें, पहन्नें, देखनें, सुन्नें, का रसिक था और लाला मदनमोहन के पिता अंग्रेजी नहीं पढ़े थे इस लिये मदनमोहन सै मेल करनें मैं इस्नें हर भांत अपना लाभ समझा पढ़ानें लिखानें के बदले मदनमोहन बालक रहा जितनें अलिफ़लैला मैं सै सोते जागते का क़िस्सा, शेक्सपियर के नाटकों मैं सै कोमेडी आफ़ एर्रज़, ट्वेलफ्थनाइट, मचएडू एबउट नथिंग; बेनजान्सन का एव्रीमैन इनहिज़ ह्यूमर; स्विफ्टके ड्रेपीअर्सलेटर्स, गुलिवर्स ट्रैवल्स, टेल आफ़ ए टब; आदि सुनाकर हँसाया करता था और इस युक्ति सै उस्को, टोपी, रुमाल, घड़ी, छड़ी आदि का बहुधा फ़ायदा हो जाता था. जब मदनमोहन तरुण हुआ तो अलिफ़लैला मैं सै अबुलहसन, और शम्सुल्निहार का किस्सा; शेक्सपियर के नाटकों मैं सै रोमयो ऐन्ड जुलियट आदि सुना-

कर आदि रस का रसिक बनानें लगा और आप भी उस्के साथ फूलके कीडे की तरह चैन करनें लगा. परंतु यह सब बातें मदनमोहन के पिता के भय सै गुप्त होती थीं और गुप्त होती थीं इसी सै शिंभूदयाल आदि का बहुत फ़ायदा था वह पहाड़ी आदमियों की तरह टेढी राह मैं अच्छी तरह चल सक्ता था परंतु समभूमि पर चलनें की उस्को आदत न थी जब चुन्नीलाल मदनमोहन के पास आया कुछ दिन इन दोनों की बड़ी खटपट रही परंतु अंत मैं दोनों अपना हानि लाभ समझ कर गरम लोहे की तरह आपस मैं मिल गए. शिंभूदयाल को मदनमोहन नें सिफ़ारश कर के मदरसे मैं नोकर रखा दिया था इस्कारण वह मदनमोहन की अहसानमंदी के बहानें सै हर वक्त वहां बना रहता था.

पंडित पुरुषोत्तमदास भी बचपन सै लाला मदनमोहन के पास आते जाते थे इन्को लाला मदनमोहन के यहां सै इन्के स्वरूपानुरूप अच्छा लाभ हो जाता था परंतु इन्के मन मैं औरों की डाह बडी प्रबल थी. लोगों को धनवान, प्रतापवान, विद्वान, बुद्धिमान, सुन्दर, तरुण, सुखी और कृतिकार्य देखकर इन्हैं बड़ा खेद होता था. वह यशवान मनुष्यों सै सदा शत्रुता रखते थे औरों को अपनें सुख लाभ का उद्योग करते देखकर कुढ जाते थे अपनें दुखिया चित्त को धैर्य देनें के लिये अच्छे, अच्छे मनुष्यों के छोटे, छोटे दोष ढूंढा करते थे किसी के यश मैं किसी तरह का कलंक लग जानें सै यह बड़े प्रसन्न होते थे. पापी दुर्योधन की तरह सब संसार के बिनाश होनें मैं

इन्की प्रसन्नता थी. और अपनी सर्बज्ञता बतानें के लिये जानें बिना जानें हर काम मैं पांव अड़ाते थे. मदनमोहन को प्रसन्न करनें के लिये अपनी चिड़ करेले की कर रक्खी थी. चुन्नीलाल और शिंभूदयाल आदि की कटती कहनें मैं कसर न रखते थे परंतु अक़ल मोटी थी इस लिये उन्हों नें इन्हें खिलोना बना रक्खा था. और परक़ैंच कबूतर की तरह वह इन्हें अपना बसबर्ती रखते थे.

हकीम अहमदहुसैन बड़ा कम हिम्मत मनुष्य था इस्को चुन्नी-लाल और शिंभूदयाल सै कुछ प्रीति न थी परंतु उन्को कर्ता समझ कर अपनें नुक्सान के डर सै यह सदा उन्की खुशामद किया करता था उन्हीं को अपना सहायक बना रक्खा था उन्के पीछै बहुधा मदनमोहन के पास नहीं जाता आता था और मदनमोहन की बड़ाई तथा चुन्नीलाल और शिंभूदयाल की बातोंको पुष्ट करनेंके सिवाय और कोई बात मदनमोहन के आगे मुखसै नहीं निका-लता था मदनमोहन के लिये ओषधि तक मदनमोहन के इच्छा-नुसार बताई जाती थी मदनमोहन का कहना उचित हो, अथवा अनुचित हो यह उस्की हांमैं हां मिलानेंको तयार था मदनमोहन की राय के साथ इस्को अपनी राय बदलनेंमैं भी कुछ उज्र न था! "यह लालाजी का नोकर था कुछ बैंगनोंका नोकर नहीं था" परंतु इन लोगों की प्रसन्नता मैं कुछ अंतर न आता हो तो यह ब्रजकिशोर की कहनमैं भी सम्मति करनें को तैयार रहता था इस्को बड़े, बड़े कामोंके करनेंकी हिम्मत तो कहांसै आती. छोटे, छोटे कामों सै इस्का जी दहल जाता था अजीर्ण के डर

सै भोजन न करने और नुक्सान के डरसै व्यापार न करने, की कहावत यहां प्रत्यक्ष दिखाई देती थी. इस्को सब कामों मैं पुरानी चाल पसंद थी.

बाबू बैजनाथ ईस्ट इन्डियन रेलवे कंपनी मैं नौकर था अंग्रेज़ी अच्छी पढ़ा था. यूरुप के सुधरे हुए बिचारों को जान्ता था परंतु स्वार्थपरताने इस्के सब गुण ढक रक्खे थे बिद्या थी पर उस्के अनुसार व्यवहार न था "हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और थे" इस्के निर्वाह लायक इस्समय बहुत अच्छा प्रबंध हो रहा था परंतु एक संतोष बिना इस्के जीको ज़रा भी सुख न था. लाभसै लोभ बढ़ता जाता था और समुद्र की तरह इस्की तृष्णा अपार थी. लोभसै धर्म्म, अधर्म्मका कुछ बिचार न रहता था. बचपन मैं इस्को इल्ममुसल्लिम, तहरीरउक्लेद्स और जब्रमुक़ाबले वग़ैरे के सीखने मैं परीक्षा के भयसै बहुत परिश्रम करना पड़ा था परंतु इस्के मनमैं धर्म्म प्रवृत्तिके उत्तेजित करने के लिये धर्म्म नीति आदिके असरकारक उपदेश अथवा देशोन्नतिके हेतु बाफ़ और बिजली आदिकी शक्ति, नई, नई कलोंका भेद, और पृथ्वी की पैदावार बढाने के हेतु खेती बाड़ी की बिद्या, अथवा स्वछंदतासै अपना निर्वाह करनेके लिये देशदशाके अनुसार जीविका करने की रीति और अर्थ बिद्या, तंदुरुस्ती के लिये देह रक्षाके तत्व द्रव्यादिकी रक्षा और राजाज्ञा भंगके अपराधसै बचनेंको राजाज्ञाका तात्पर्य, अथवा, बड़े और बराबर वालोंसैं यथायोग्य व्यवहार करने के लिये शिष्टाचार का उपदेश बहुत ही कम मिला था बल्कि नहीं मिलनेके बराबर था इसके

कई बर्ष,तो केवल,अंग्रेज़ी भाषा सीखने में विद्याके द्वारपर खड़े, खड़े बीत गये जो अंग्रेज़ों की तरह ये शिक्षा अपनी देश भाषा मैं होती अथवा काम, कामकी पुस्तकों का अपनी भाषामैं अनुबाद हो गया होता तो कितना समय व्यर्थ नष्ट होनेसै बचता ? और कितने अधिक लोग उस्सै लाभ उठाते ? परंतु प्रचलित रीतिके अनुसार इस्को सच्ची हितकारी शिक्षा नहीं हुई थी जिस्पर अभिमान इतना बढ गया था कि बड़े बुढे मूर्ख मालूम होनेलगे और उन्के कामसै ग्लानि हो गई पर इस विद्वत्ता मैं भी सिवाय नोकरीके और कहीं ठिकाना न था भाग्यबलसै मद्रसा छोड़ते ही रेलवे की नोकरी मिलगई पर बाबूसाहब को इतने पर संतोष न हुआ वह और किसी बुर्दकी ताक झांक मैं लगरहे थे इतनेमैं लाला मदनमोहनसै मुलाकात होगई एक बार लालामदनमोहन आगरे लखनऊकी सैर को गए उस्समय इसने उन्की स्टेशन पर बड़ी खातिर की थी उसी समयसै इन्की जानपहचान हुई. यह दूसरे तीसरे दिन लाला मदनमोहनके यहां जाता था और समा बांध कर तरह, तरह की बातें सुनाया करता था. इस्की बातोंसै मदनमोहन के चित्त पर ऐसा असर हुआ कि वह इस्को सब सै अधिक चतुर और बिश्वासी समझने लगा इस्ने अपनी युक्ति सै चुन्नीलाल वग़ैरे को भी अपना बना रक्खा था पर अपने मतलब सै निश्चिन्त न था. यह सब बातें जानबूझकर भी धृतराष्ट्रकी तरह लोभसै अपने मनको नहीं रोक सक्ता था.

खेद है कि लाला ब्रजकिशोर और हरकिशोर आदिके वृत्तान्त लिखनें का अवकाश इस्समय नहीं रहा. अच्छा फिर किसी समय बिदित किया जायगा पाठकगण धैर्य रक्खें.

प्रकरण १० †

प्रबंध (इन्तज़ाम)

कारजको अनुबंध लख अरु उत्तरफल चाहि
पुन अपनी सामर्थ्य लख करै कि न करै ताहि †

बिदुरप्रजागरे.

सवेरे ही लाला मदनमोहन हवा खोरी के लिये कपड़े पहन रहे थे मुन्शी चुन्नीलाल और मास्टर शिंभूदयाल आ चुके थे.

"आजकल मैं हमको एकबार हाकिमों के पास जाना है" लाला मदनमोहन नें कहा.

"ठीक है, आपको म्युनिसिपेलीटी के मेम्बर बनानें की रिपोर्ट हुई थी उस्की मंज़ूरी भी आगई होगी" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"मंज़ूरी मैं क्या संदेह है ? ऐसे लायक़ आदमी सरकार को कहां मिलेंगे ?" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"अभी तो (खुशामदमैं) बहुत कसर है ! साइराक्यूस के सभासद डायोनिस्यसका थूक चाट जाते थे और अमृतसै अधिक मीठा वताते थे" लाला ब्रजकिशोरनें कमरे मैं आते, आते कहा.

"यों हर काम मैं दोष निकालनें की तो जुदी बात है पर

---

† अनुबन्धं च संप्रेक्ष्य विपाकं चैवकर्म्मणाम् ॥
उथ्यान मात्मन श्चैव धीरः कुर्वीत वा नवा ॥

आप ही बताइये इस्मैं मैंनें झूट क्या कहा ? मास्टर शिंभूदयाल पूछनें लगे.

"लाला साहब नें म्युनिसिपेलीटी का सालानः आमद खर्च अच्छी तरह समझ लिया होगा ? आमदनी बढ़ानें के रस्ते अच्छी तरह बिचार लिये होंगे ? शहर की सफ़ाई के लिये अच्छे, अच्छे उपाय सोच लिये होंगे ? लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

"नहीं; इन बातों मैं सै अभी तो किसी बात पर दृष्टि नहीं पहुंचाई गई परंतु इन् बातों का क्या है ? ये सब बातैं तो काम करते, करते अपनें आप मालूम हो जायँगी" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

"अच्छा आप अपनें घर का काम तो इतनें दिनसै करते हो उसके नफ़े नुक्सान और राह बाट सै तो आप अच्छी तरह वाक़िफ़ हो गये होंगे ? लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

इस्समय लाला मदनमोहन नावाक़िफ़ नहीं बना चाहते थे परंतु वाक़िफ़कार भी नहीं बन सक्ते थे इस लिये कुछ जवाब न देसके.

"अब आप घर की तरह वहां भी औरों के भरोसे रहे तो काम कैसे चलेगा ? और सब बातौं सै वाक़िफ़ होनें का बिचार किया तो वाक़िफ़ होंगे जितनें आप के बदले काम कौन करैगा ?" लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

"अच्छा मंज़ूरी आवैगी जितनें मैं इन् बातों सै कुछ, कुछ वाक़िफ़ हो लूंगा" लाला मदनमोहन नें कहा.

"क्या इन बातों सै पहले आप को अपनें घर के कामों सै वाक़िफ़ होनें की ज़रूरत नहीं है ? जब आप अपनें घर का

प्रबन्ध उचित रीति सै कर लेंगे तो प्रबन्ध करनें की रीति आ जायगी और हरेक काम का प्रबन्ध अच्छी तरह कर सकैंगे. परंतु जब तक प्रबंध करनें की रीति न आवेगी कोई काम अच्छी तरह न हो सकेगा. ?" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे. "हाकमों की प्रसन्नता पर आधार रख; अपनें मुख सै अधिकार मागनें मैं क्या शोभा है? और अधिकार लिये पीछै वह काम अच्छी तरह पूरा न हो सकै तो कैसी हँसी की बात है? और अनुभव हुए बिना कोई काम किस तरह भली भांति हो सक्ता है? महाभारत मैं कौरवौं के गौ घेरनें पर बिराट का राजकुमार उत्तर बड़े अभिमान सै उन्को जीतनें की बातैं बनाता था परंतु कोरवौं की सेना देखते ही रथ छोड़कर उघाड़े पांव भाग निकला! इसी तरह सादी अपनें अनुभव सै. लिखते हैं कि "एकबार मैं बलख सै शामवालों के साथ सफ़र को चला मार्ग भयंकर था इस लिये एक बलवान पुरुष को साथ ले लिया वह शस्त्रों सै सजा रहता था और उस्की प्रत्यंचा को दस आदमी भी नहीं चढा सक्ते थे वह बड़े, बड़े बृक्षों को हाथ सै उखाड़ डाल्ता परंतु उसनें कभी शत्रु सै युद्ध नहीं किया था. एक दिन मैं और वो आपस मैं बातैं करते चले जाते थे उस्समय दो साधारण मनुष्य एक टीले के पीछै सै निकल आए और हम को लूटनें लगे उन्मैं एक के पास लाठी थी और दूसरे के हाथ मैं एक पत्थर था परंतु उन्को देखते ही उस बलवान पुरुष के हाथ पांव फूल गए! तीर कमान छूट पड़ी! अन्त मैं हमको अपनें सब बस्त्र शस्त्र देकर उन्सै पीछा छुड़ाना पड़ा. बहुधा अब भी देखनें मैं आता है कि अच्छे प्रबन्ध बिना घर मैं माल होनें

पर किसी, किसी साहूकार का दिवाला निकल जाता है और रुपे का माल दो, दो आनें को बिकता फिरता है"

"परंतु काम किये बिना अनुभव कैसे हो सक्ता है ?" मुन्शी चुन्नीलाल नें पूछा.

"सावधान मनुष्य काम करनें सै पहले औरों की दशा देखकर हरेक बात का अनुभव अच्छी तरह कर सक्ता है और अनायास कोई नया काम भी उस्को करना पड़े तो साधारण भाव सै प्रबन्ध करनें की रीति जानकर और और बातों के अनुभव का लाभ लेनें सै काम करते, करते वह मनुष्य उस बिषय मैं अपना अनुभव अच्छी तरह बढ़ा सक्ता है सो मैं प्रथम कह चुका हूं कि लाला साहब प्रबन्ध करनें की रीति जान जायंगे तो हरेक काम का प्रबन्ध अच्छी तरह कर सकैंगे" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"आप के निकट प्रबन्ध करनें की रीति क्या है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"हरेक कामके प्रबन्ध करनें की रीति जुदी, जुदी हैं परंतु मैं साधारण रीति सै सब का तत्व आप को सुनाता हूं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. "सावधानी की सहायता लेकर हरेक बात का परिणाम पहले सै सोच लेना, और उन सब पर एक बार दृष्टि कर के जितना अवकाश हो उतनें ही मैं सब बातों का ब्योंत बना लेना निरर्थक चीज़ों को काम मैं लानें की युक्ति सोचते रहना और जो, जो बातें आगै होनेंवाली मालूम हों उन्का प्रबन्ध पहलै ही सै दूर दृष्टि पहुंचा कर धीरे, धीरे इस भांत करते जाना कि समय पर सब काम तयार मिलें, किसी

बात का समय न चूकनें पावै, कोई काम उलट पलट न होनें पावै, अपनें आस पास वालों की उन्नति सै आप पीछे न रहे किसी नोकर का अधिकार स्वतन्त्रता की हद सैं आगे न बढनें पाव, किसी पर जुल्म न होनें पावै, किसी के हक मैं अन्तर न आनें पावै, सब बातों की सम्हाल उचित समय पर होती रहे, परंतु ये सब काम इन्की बारीकियों पर दृष्टि रखनें सै कोई नहीं कर सक्ता बल्कि इस रीति सै बहुत महनत करनें पर भी छोटे, छोटे कामों मैं इतना समय जाता रहता है कि उस्के बदले बहुत सै ज़रूरी काम अधूरे रह जाते हैं और तत्काल प्रबन्ध बिगड़ जाता है इस लिये बुद्धिमान मनुष्य को चाहिये कि काम बांट कर उन्पर योग्य आदमी मुकर्रर कर दे और उन्की काररवाई पर आप दृष्टि रक्खे पहले अन्दाज सै पिछला परिणाम मिलाकर भूल सुधारता जाय एक साथ बहुत काम न छेडे, काम करनें के समय बटे रहैं आमद सै थोड़ा खर्च हो और कुपात्र को कुछ न दिया जाय महाराज रामचन्द्रजी भरत सै पूछते हैं "आमद पूरी होत है? खर्च अल्पदरसाय॥ देतन-कबहुं कुपात्रकों कहहुं भरत समुझाय" ❋

इसी तरह इन्तजाम के कामोंमैं रूरीआयत सै बडा विगाड़ होता है. हजरत सादी कहते हैं "जिस्सै तैनें दोस्ती की उस्सै नोंकरीकी आशा न रख" †

❋ आयस्ते विपुल: कच्चित्कच्चिदल्पतरो व्यय: ॥
अपात्रेषु नते कच्चित्कोषो गच्छतिराघव ॥

† चूं इकरारे दोस्ती कर दी तवक्के खिदमत मदार।

"लाला ब्रजकिशोर साहब आज कल की उन्नति के साथी हैं तथापि पुरानी चालके अनुसार रोचक और भयानक बातोंको अपनी कहन मैं इस तरह मिला देते हैं कि किसीको बिल्कुल खबर नहीं होनें पाती" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"नहीं मैं जो कुछ कहता हूं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार यथार्थ कहता हूं" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "चीनके शहनशाह होएननें एकवार अपनें मंत्री टिचीसै पूछा कि "राज्य के वास्ते सब सै अधिक भयंकर पदार्थ क्या है?" मंत्रीनें कहा "मूर्तिके भीतरका मूसा" शहनशाहनें कहा "समझाकर कह" मंत्री बोला "अपनें यहां काठकी पोली मूर्ति बनाई जाती है और ऊपर सै रंग दी जाती है अब दैवयोग सै कोई मूसा उस्के भीतर चला गया तो मूर्ति खंडित होनेंके भयसे उस्का कुछ नहीं कर सक्ते. इसी तरह हरेक राज्य मैं बहुधा ऐसे मनुष्य होते हैं जो किसी तरह की योग्यता और गुण बिना केवल राजा की कृपा के सहारे सै सब कामों मैं दख़ल देकर सत्यानास किया करते हैं परंतु राजा के डर सै लोग उन्का कुछ नहीं कर सक्ते" हां जो राजा आप प्रबंध करनेंकी रीत जान्ते हैं वह उनलोगों के चक्कर सै खूबसूरती के साथ बचे रहते हैं जैसै ईरान के बादशाह आरटाजरकसीस सैं एक बार उस्के किसी कृपापात्रनें किसी अनुचित काम करनें के लिये सवाल किया बादशाहनें पूछा कि तुझको इस्सै क्या लाभ होगा?" कृपा पात्रनें बता दिया तब बादशाहने उतनी रकम उसको अपनें ख़जानें सै दिवा दी और कहा कि "ये रुपे ले इन्के देनें सै मेरा कुछ नहीं घटता परंतु तैनें जो अनुचित सवाल किया था उस्के पूरा करनें सै मैं निस्संदेह

बहुत कुछ खो बैठता" उचित प्रबंध मैं जरासा अंतर आनेसै कैसा भयंकर परिणाम होता है इस्पर बिचार करिये कि इसी दिल्लीके तख़्त बाबत दाराशिकोह और औरंगज़ेब के बीच युद्ध हुआ उस्समय औरंगज़ेब की पराजय मैं कुछ संदेह न था परंतु दाराशिकोह हाथीसै उतरते ही मानों तख़्त सै उतर गया मालिक का हाथी ख़ाली देखते ही सब सेना तत्काल भाग निकली."

"महाराज ! बग्गी तैयार है." नोकरनें आकर रिपोर्ट की.

"अच्छा चलिये रस्ते मैं बतलाते चलेंगे" लाला ब्रजकिशोर-नें कहा.

निदान सब लोग बग्गी मैं बैठकर रवाने हुए.

प्रकरण ११.

सज्जनता.

सज्जनता न मिलै किये जतन करो किन कोय
ज्यों कर फार निहारिये लोचन बड़ो न होय

बृन्द.

"आप भी कहां की बात कहां मिलानें लगे ! म्यूनिसिपेलीटीके मेम्बर होनें सै और इन्तजाम की इन बातों सै क्या संबंध है ? म्यूनिसिपेलीटी के कार्य निर्बाह का बोझ एक आदमी के सिर नहीं है उसमैं बहुत सै मेम्बर होते हैं और उन्मैं कोई

नया आद्मी शामिल हो जाय तो कुछ दिन के अभ्यास सै अच्छी तरह वाक़िफ हो सक्ता है, चार बराबरवालों सै बात चीत करने मैं अपने बिचार स्वत: सुधर जाते हैं और आज काल के सुधरे विचार जान्नें का सीधा रस्ता तो इस्सै बढ़ कर और कोई नहीं है" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"जिस तरह समुद्र मैं नोका चलानें वाले केवट समुद्र की गहराई नहीं जान सक्ते इसी तरह संसार मैं साधारण रीति सै मिलनें भेटनें वाले इधर उधर की निरर्थक बातों सै कुछ फ़ायदा नहीं उठा सक्ते बाहर की सज धज और ज़ाहिर की बनावट सै सच्ची सज्जनताका कुछ संबंध नहीं है वह तो दरिद्री धनवान और मूर्ख विद्वान का भेद भाव छोड़ कर सदा मन की निर्मलता के साथ रहती है और जिस जगह रहती है उस्को सदा प्रकाशित रखती है" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"तो क्या लोगों के साथ आदर सत्कार सै मिलना जुलना और उन्का यथोचित शिष्टाचार करना सज्जनता नहीं है?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"सच्ची सज्जनता मन के संग है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. कुछ दिन हुए जब अपनें गवर्नर जनरल मारक्किस आफ़ रिपन साहब नें अजमेर के मेयो कालिज मैं बहुत से राजकुमारों के आगे कहा था कि "‡ ‡ हम चाहे जितना प्रयत्न करैं परंतु तुम्हारी भविष्यत अवस्था तुम्हारे हाथ है. अपनी योग्यता बढ़ानी, योग्यता की क़द्र करनी, सत्कर्मों मैं प्रवृत्त रहना, असत्कर्मों सै ग्लानि करना तुम यहां सीख जाओगे तो निस्सन्देह सरकार मैं प्रतिष्ठा, और प्रजा की प्रीति लाभ कर सकोगे. तुममैं सै

बहुत से राजकुमारोंको बड़ी जोखोंके काम उठानें पड़ेंगे और तुम्हारी कर्तव्यता पर हज़ारों लाखों कनुष्योंके सुख दुःख का बल्कि जीनें मरनें का आधार रहैगा. तुम बड़े कुलीन हो और बड़े विभववान हो. फ्रेंच भाषा मैं एक कहावत है कि जो अपनें सत्कुल का अभिमान रखता हो उस्को उचित है कि अपनें सत्कर्मों सै अपना बचन प्रमाणिक कर दे. तुम जान्ते हो कि अंग्रेज लोग बड़े, बड़े ख़िताबों के बदले सज्जन (Gentleman) जैसे साधारण शब्दोंको अधिक प्रिय समझते हैं इस शब्द का साधारण अर्थ ये है कि मर्यादाशील, नम्र और सुधरे बिचार का मनुष्य हो, निस्सन्देह ये गुण यहांके बहुत सै अमीरों मैं हैं परंतु इसके अर्थपर अच्छी तरह दृष्टि की जाय तो इस्का आशय बहुत गंभीर मालूम देता है. जिस मनुष्य की मर्यादा, नम्रता और सुधरे बिचार केवल लोगों को दिखानें के लिये न हों बल्कि मन सै हो. अथवा जो सच्चा प्रतिष्ठित, सच्चा बीर और पक्षपात रहित न्यायपरायण हो, जो अपनें शरीर को सुख देनें के लिये नहीं बल्कि धर्म सै औरों के हक़ मैं अपना कर्त्तव्य सम्पादन करने के लिये जीता हो; अथवा जिस्का आशय अच्छा हो जो दुष्कर्मों सै सदैव बचता हो वह सच्चा सज्जन है * *"

"निस्सन्देह सज्जनता का यह कल्पित चित्र अति बिचित्र है परन्तु ऐसा मनुष्य पृथ्वी पर तो कभी कोई काहेको उत्पन्न हुआ होगा" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

हमलोग जहां खड़े हों वहां सै चारों तरफ़ को थोड़ी थोड़ी दूर पर पृथ्वी और आकाश मिले दिखाई देते हैं परंतु हकीक़त मैं वह नहीं मिले इसी तरह संसार के सब लोग अपनी, अपनी

प्रकृतिके अनुसार और मनुष्यों के स्वभाव का अनुमान करते हैं परंतु दर असल उन्मैं बड़ा अंतर है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "देखो :—

"एथेन्स का निवासी आरिस्टाईडीज एक बार दो मनुष्यों का इन्साफ करनें बैठा तब उन्मैं सै एकनें कहा कि "प्रतिपक्षीनें आप को भी प्रथम बहुत दुख दिया है आरिस्टाईडीजनें जवाब दिया कि "मित्र! इस्नें तुमको दुख दिया हो वह बताओ क्योंकि इस्समय मैं अपना नहीं; तुम्हारा इन्साफ़ करता हूं"

"ग्रीवरनमके लोगोंने रूमके बिपरीत बलवा उठाया उस्समय रूमकी सेना ने वहांके मुखिया लोगोंको पकड़कर राज सभामैं हाज़िर किया उस्समय प्लाटीनियस नामी सभासदनें एक बंधुए सै पूछा कि "तुम्हारे लिये कौन्सी सज़ा मुनासिब है?" बंधुएनें जवाब दिया कि "जो अपनी स्वतंत्रता चाहनें वालोंके वास्ते मुनासिब हो" इस उत्तरसै और सभासद अप्रसन्न हुए पर प्लाटीनियस प्रसन्न हुआ और बोला "अच्छा! राजसभा तुम्हारा अपराध क्षमा कर दे तो तुम कैसा बरताव रक्खो?" "जैसा हमारे साथ राजसभा रक्खे" बंधुआ कहनें लगा "जो राजसभा हमसे मानपूर्वक मेल करेगी तो हम सदा ताबेदार बने रहैंगे परंतु हमारे साथ अन्याय और अपमान सै बरताव होगा तो हमारी वफ़ादारी पर सर्वथा बिश्वास न रखना" इस जवाब सै और सभासद अधिक चिड़ गए और कहनें लगे कि "इस्मैं राजसभा को धमकी दी गई है" प्लाटीनियसनें समझाया कि इस्मैं धमकी कुछ नहीं दी गई यह एक स्वतंत्र मनुष्य का सच्चा

जवाब है" निदान प्लाटीनियस के समझानें से राजसभा का मन फिर गया और उस्नें उन्हें क़ैद्सै छोड़ दिया.

"मैसीडोनके पाद्शाह पीरसनें रूमके कैदियोंको छोड़ा उस्समय फेब्रीशियस नामी एक रूमी सरदारको एकांतमैं लेजा कर कहा "मैं जान्ता हूं कि तुम जैसा बीर, गुणवान स्वतंत्र, और सच्चा मनुष्य रूमके राजभरमैं दूसरा नहीं है जिस्पर तुम ऐसे दरिद्री बनरहे हो यह बड़े खेदकी बात है ! सच्ची योग्यताकी क़दर करना राजाओं का प्रथम कर्तव्य है इस लिये मैं तुमको तुम्हारी पदवी के लायक़ धनवान बनाया चाहता हूं परंतु मैं इस्मैं तुम्हारे ऊपर कुछ उपकार नहीं करता अथवा इसके बदले तुमसै कोई अनुचित काम नहीं लिया चाहता. मेरी केवल इतनी प्रार्थना है कि उचित रीतिसै अपना कर्तव्य सम्पादन किये पीछै न्याय पूर्वक मेरी सहायता होसके सो करना." फेब्रीशियसनें उत्तर दिया कि "निस्संदेहमैं धनवान नहीं हूं मैं एक छोटे से मकानमैं रहता हूं और ज़मीन का एक छोटासा क़िता मेरे पास है. परंतु ये मेरी जरूरत के लिये बहुत है और ज़रूरत सै ज्याद: लेकर मुझको क्या करना है ? मेरे सुखमैं किसी तरह का अंतर नहीं आता मेरी इज्जत और धनवानों सै बढ़कर है, मेरी नेकी मेरा धन है मैं चाहता तो अबतक बहुतसी दौलत इकट्ठी करलेता परंतु दौलतकी अपेक्षा मुझको अपनी इज्जत प्यारी है इस लिये तुम अपनी दौलत अपनें पास रक्खो और मेरी इज्जत मेरे पास रहनें दो."

"नोशेरवां अपनी सेना का सेनापति आप था एक बार उस्की मंज़ूरी सै ख़ज़ान्चीनें तन्ख्वाह बांटनेके वास्तै सब सेना

को हथियार बंद होकर हाज़िर होनेका हुक्म दिया पर नोशेरवां इस हुक्मसै हाज़िर न हुआ इस लिये ख़ज़ान्चीनें क्रोध करके सब सेनाको उलटा फेर दिया और दूसरी बार भी ऐसा ही हुआ तब तीसरी बार ख़ज़ान्चीनें डोंड़ी पिटवाकर नोशेरवांको हाज़िर होनेका हुक्म दिया. नोशेरवां उस हुक्म के अनुसार हाज़िर हुआ परंतु उस्की हथियार बंदी ठीक न थी. ख़ज़ान्चीने पूछा "तुम्हारे धनुषकी फाल्तू प्रत्यंचा कहां है ?" नोशेरवांनें कहा "महलोंमैं भूल आया" ख़ज़ान्चीनें कहा "अछा ! अभी जा कर ले आओ" इस्पर नोशेरवां महलोंमैं जाकर प्रत्यंचा ले आया तब सब की तनख़्वाह बटी परंतु नोशेरवां ख़ज़ान्चीके इस अप-क्षपात काम से ऐसा प्रसन्न हुआ कि उसे निहाल कर दिया. इस प्रकार सची सज्जनता के इतिहासमैं सैकड़ों दृष्टांत मिल्ते हैं परंतु समुद्रमैं गोता लगाए बिना मोती नहीं मिलता "

"आप बार, बार सची सज्जनता कहते हैं सो क्या सज्जनता सज्जनतामैं भी कुछ भेद भाव है ?" लाला मदनमोहननें पूछा.

"हां सज्जनता के दो भेद हैं एक स्वभाविक होती है जिस का बर्णन मैं अब तक करता चला आया हूं. दूसरी ऊपरसै दिखानें की होती है जो बहुधा बड़े आदमियों मैं और उन्के पास रहनें-वालों मैं पाई जाती है बड़े आदमियों के लिये वह सज्जनता सुन्दर वस्त्रों के समान समझनी चाहिए जिस्को वह बाहर जाती बार पहन जाते हैं और घर मैं आते ही उतार देते हैं स्वाभाविक सज्जनता स्वच्छ स्वर्ण के अनुसार है जिस्को चाहे जैसे तपाओ, गलाओ परंतु उस्मैं कुछ अंतर नहीं आता. ऊपर सै दिखानें-वालों की सज्जनता गिल्टी के समान है जो रगड़ लगते ही उतर

जाती है ऊपर के दिखाने वाले लोग अपना निज स्वभाव छिपा-कर सज्जन बन्ने के लिये सच्चे सज्जनों के स्वभाव की नक़ल करते हैं परंतु परीक्षा के समय उन्की कलई तत्काल खुल जाती उन्के मन मैं बिकास के बदले संकुचित भाव, सादगी के बदले बनावट, धर्म्म प्रवृत्ति के बदले स्वार्थ परता और धैर्य के बदले घबराट इत्यादि प्रगट दिखने लगते हैं उन्का सब सद्भाव अपने किसी गूढ प्रयोजन के लिये हुआ करता है परंतु उन्के मन को सच्चा सुख इस्सै सर्बथा नहीं मिल सक्ता."

प्रकरण १२.

सुखदु:ख +

आत्मा को आधार अरु साक्षी आत्मा जान
निज आत्मा को भूलहू करिये नहिं अपमान *

मनुस्मृतिः

"सुख दु:ख तो बहुधा आदमी की मानसिक बृत्तियों और शरीर की शक्ति के आधीन है. एक बात सै एक मनुष्य को अत्यंत दु:ख और क्लेश होता है वही बात दूसरे को खेल तमाशे की सी लगती है इस लिये सुख दु:ख होने का कोई नियम नहीं मालूम होता" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

---

* आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी गति रात्मा तथात्मनः
मावसंस्थाः स्वमात्मानं नृणां साक्षिण मुत्तमम् ॥

"मेरे जान तो मनुष्य जिस बात को मन सै चाहता है उस्का पूरा होना ही सुख का कारण है और उस्मैं हर्ज पडनें ही सै दुःख होता है" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"तो अनेक बार आदमी अनुचित काम कर के दुःख मैं फँस जाता है और अपनें किये पर पछताता है इस्का क्या कारण? असल बात यह है कि जिस्समय मनुष्य के मन मैं जो बृत्ति प्रबल होती है वह उसी के अनुसार काम किया चाहता है और दूर-अंदेशी की सब बातों को सहसा भूल जाता है परंतु जब वो बेग घटता है तबियत ठिकानें आती है तो वो अपनी भूल का पछतावा करता है और न्याय बृत्ति प्रबल हुई तो सब के साम्हनें अपनी भूल अंगीकार कर कै उस्के सुधारनें का उद्योग करता है पर निकृष्ट प्रवृत्ति प्रबल हुई तो छल कर के उस्को छिपाया चाहता है अथवा अपनी भूल दूसरे के सिर रक्खा चाहता है और एक अपराध छिपानें के लिये दूसरा अपराध करता है परंतु अनुचित कर्म्म सै आत्मग्लानि और उचित कर्म्म सै आत्मप्रसाद हुए विना सर्बथा नहीं रहता" लाला ब्रजकिशोर बोले.

"अपना मन मारनें सै किसी को खुशी क्यों कर हो सक्ती है? लाला मदनमोहन आश्चर्य सै कहनें लगे.

"सब लोग चित्तका सन्तोष और सच्चा आनन्द प्राप्त करनें के लिये अनेक प्रकार के उपाय करते हैं परन्तु सब बृत्तियों के अबिरोध सै धर्म्मप्रवृत्ति के अनुसार चलनेंवालों को जो सुख मिल्ता है वह और किसी तरह नहीं मिल सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मनुस्मृति मैं लिखा है "जाको मन अरु बचन शुचि बिध सों रक्षित होय॥ अति दुर्लभ वेदान्त फल

जगमैं पावत सोय + जो लोग ईश्वर के बांधे हुए नियमों के अनुसार सदा सत्कर्म्म करते रहते हैं उन्को आत्मप्रसाद का सच्चा सुख मिलता है उन्का मन विकसित पुष्पों के समान सदा प्रफुल्लित रहता है जो लोग कह सक्ते हैं कि हम अपनी सामर्थ्य भर ईश्वर के नियमों का प्रतिपालन करते हैं, यथा शक्ति परोपकार करते हैं, सब लोगों के साथ अनीत छोड़कर नीति पूर्बक सुहृद्भाव रखते हैं, अतिशय भक्ति और बिश्वास पूर्बक ईश्वर की शरणागति हो रहे हैं वही सच्चे सुखी हैं. वह अपनें निर्मल चरित्रों को बारम्बार याद कर के परम सन्तोष पाते हैं. यद्यपि उन्का सत्कर्म्म मनुष्य मात्र न जान्ते हों इसी तरह किसी के मुख सै एक बार भी अपनें सुयश सुन्नें की सम्भावना न हो, तथापि वह अपनें कर्तव्य काम मैं अपनें को कृतकार्य देखकर अद्वितीय सुख पाते हैं उचित रीति सै निष्प्रयोजन होकर किसी दुखिया का दुःख मिटानें को, किसी मूर्ख को ज्ञानोंपदेश करनें की एक, एक बात याद आनें सै उन्को जो सुख मिल्ता है वह किसी को बड़े सै बड़ा राज मिलनें पर भी नहीं मिल सक्ता. उन्का मन पक्षपात रहित होकर सबके हितसाधन मैं लगा रहता है इस्कारण वह सब के प्यारे होनें चाहियें परन्तु मूर्ख जलन सै, हटसै स्वार्थपरता सै अथवा उन्का भाव जानें बिना उन्सै द्वेषकरै, उन्का बिगाड़ करना चाहें तो क्या कर सक्ते हैं? उन्का सर्बस्व नष्ट होजाय तो भी वह नहीं घबराते; उन्के हृदय मैं जो धर्म्म का ख़ज़ाना इकट्ठा हो रहा

+ यस्य वाङ्मनसी शुद्धे सम्यग्गुप्ते च सर्वदा ॥
स वै सर्व मवाप्नोति वेदान्तोपगतम्फलम् ॥

है उस्के छूनें की किस को सामर्थ्य है ? आपनें सुना होगा कि:—

"महाराज रामचन्द्रजी को राजतिलक के समय चौदह वर्ष का बनबास हुआ उस्समय उन्के मुखपर उदासी के बदले प्रसन्नता चमकनें लगी.

"इंगलेन्ड की गद्दी बाबत एलीज़ाबेथ और मेरी के बीच बिबाद हो रहा था उस्समय लेडी जेनग्रे को उस्के पिता, पति और स्वसुरनें गद्दीपर बिठाना चाहा परंतु उस्को राज का लोभ न था वह होशियार, बिद्वान और धर्मात्मा स्त्री थी. उस्नें उन्को समझाया कि "मेरी निस्बत मेरी और एलिजाबेथ का ज्याद: हक़ है और इस काम सै तरह, तरहके बखेड़े उठनें की संभा-वना है मैं अपनी वर्तमान अवस्था मैं बहुत प्रसन्न हूं इस लिये मुझको क्षमा करो" पर अंत मैं उस्को अपनी मरज़ी के उपरांत बड़ों की आज्ञा सै राजगद्दी पर बैठना पड़ा परंतु दस दिन नहीं बीते इतनेंमैं मेरी नें पकड़ कर उसै क़ैद किया और उस के पति समेत फांसी का हुक्म दिया. वह फांसी के पास पहुंची उस्समय उस्नें अपनें पति को लटकते देख कर तत्काल अपनी याददाश्त मैं यह तीन बचन लाटिन, यूनानी, और अंग्रेजी मैं क्रम सै लिखे कि "मनुष्य जाति के न्याय नें मेरी देह को सज़ा दी परंतु ईश्वर मेरे ऊपर कृपा करेगा. और मुझ को किसी पाप के बदले यह सज़ा मिली होगी तो अज्ञान अवस्था के कारण मेरे अपराध क्षमा किये जायेंगे. और मैं आशा रखती हूं कि सर्ब शक्तिमान परमेश्वर और भविष्यत काल के मनुष्य मुझ पर कृपा दृष्टि रक्खेंगे" उस्नें फांसी पर चढ़कर सब लोगों के आगे एक

वक्तृता की जिस्मैं अपने मरनें के लिये अपने सिवाय किसी को दोष न दिया वह बोली कि " इङ्गुलेन्ड की गद्दी पर बैठनें के वास्तै उद्योग करनें का दोष मुझ पर कोई नहीं लगावेगा परंतु इतना दोष अवश्य लगावेगा कि "वह औरों के कहनेंसै गद्दीपर क्यों बैठी ? उस्नें जो भूल की वह लोभ के कारण नहीं, केवल बड़ों के आज्ञावर्ती होकर की थी " सो यह करना मेरा फर्ज़ था परन्तु किसी तरह करो जिस्के साथ मैंनें अनुचित व्यवहार किया उस्के साथ मैं प्रसन्नतासे अपनें प्राण देनें को तयार हू" यह कहकर उस्नें बड़े धैर्यसे अपनी जान दी "

"दुखिया अपनें मन को धैर्य देनेके लिये चाहे जैसे समझा करैं परन्तु साधारण रीति तो यह है कि उचित उपायसै हो अथवा अनुचित उपायसै हो जो अपना काम निकाल्लेता है वही सुखी समझा जाता है . आप विचार कर देखैंगे तो मालूम हो जायगा कि आज भूमंडल मैं जितने अमीर और रहीस दिखाई देते हैं उन्के बड़ों मैं सं बहुतों नें अनुचित कर्म करकै यह बैभव पाया होगा "मुनशी चुन्नीलाल नें कहा .

" कभी अनुचित कर्म करनेसै सच्चा सुख नहीं मिलता प्रथम तो मनु महाराज और लोमश ऋषि एक स्वरसै कहते हैं कि "कर अधर्म पहले बढ़त सुख पावत बहु भांत ॥ शत्रुन जय कर आप पुन मूलसहित बिनसात ॥ *" फिर जिस तरह सत्कर्म का फल

*अधर्मैणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति ॥
ततः सपत्नान् जयति समुलस्तू विनश्यति ॥
वर्द्धत्य धर्मेण नरस्ततो भद्राणि पश्यति ॥
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति ॥

आत्म प्रसाद है इसी तरह दुष्कर्म का फल आत्मग्लानि, आंतरिक दुःख अथवा पछतावा हुए बिना सर्वथा नहीं रहता मनुस्मृति मैं लिखा है " पापी समुझत पाप कर काहू देख्यो नाहिं ॥ पैसुर अरुनिज आतमा निस दिन देखत जाहिं ॥ +" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जिस्समय कोई निकृष्टप्रवृत्ति अत्यंत प्रबल होकर धर्म्मप्रवृत्ति की रोक नहीं मान्ती उस्समय हम उस्की इच्छा पूरी कर नेंके लिये पाप करते हैं परन्तु उस काम सै निवृत्ति होतेही हमारे मन मैं अत्यंत ग्लानि होती है हमारी आत्मा हम को धिक्कारती है और लोक परलोक के भयसै चित्त बिकलरहता है जिस्नें अपनें अधर्म्म सै किसीका सुख हर लिया है अथवा स्वार्थपरता के बसबर्ती होकर उपकार के बदले अपकार किया है, अथवा छल बलसै किसी का धर्म्म भ्रष्ट कर दिया है, जो अपनें मन मैं समझता है कि मुझसै फ़लानें का सत्यानाश हुआ, अथवा मेरे कारण फ़लानेंके निर्मल कुल मैं कलंक लगा, अथवा संसार मैं दुःख के सोते इतनें अधिक हुए मैं उत्पन्न न हुआ होता तो पृथ्वी पर इतना पाप कम होता, केवल इन बातों की याद उस्का हृदय विदीर्ण करनेंके लिये बहुत है और जो मनुष्य ऐसी अवस्था मैं भी अपनें मनका समाधान रख सकै उस्को मैं बज्रहृदय समझता हूं जिस्नें किसी निर्धन मनुष्य के साथ छल अथवा बिश्वासघात कर के उस्की अत्यंत दुर्दशा की है उस्की आत्मग्लानि और आंतरिक दुःखका बरणन् कोन करसक्ता है ? अनेक प्रकार के भोगबिलास करनेंवालों को भी समय पाकर अवश्य

+ मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीतिन: ॥
तांस्तु देवा: प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तर पूरुष:

पछतावा होता है. जो लोग कुछ काल श्रद्धा और यत्न पूर्वक धर्म्मका आनंद लेकर इस दलदल मैं फस्ते हैं उन्सै आत्मग्लानि और आंतरिक दाहका क्लेश पूछना चाहिये."

"टरकी का खलीफ़ा मौन्तासर अपनें बापको मरवाकर उस्के महल का क़ीमती सामान देख रहा था उस्समय एक उम्दा तस्वीर पर उसकी द्रष्टि पड़ी जिस मैं एक सुशोभित तरुण पुरुष घोड़े पर सवार था और रत्नजटित "ताज" उस्के सिरपर शोभायमान था. उस्के आसपास फारसी मैं बहुतसी इबारत लिखी थी ख़लीफ़ा नें एक मुनशी को बुला कर वह इबारत पढ़वाई उस्मैं लिखा था कि "मैं सीरोज़ खुसरोका बेटा हूं मैंनें अपनें बापका ताज लेनेंके वास्तै उसे मरवाडाला पर उस्के पीछै वह ताज मैं सिर्फ छ महीने अपनें सिर पर रखसका" यह बात सुन्तेही ख़लीफ़ा मौन्तासर के दिल पर चोट लगी और अपनें आंतरिक दु:खसै वह केवल तीन दिन राजकर कै मर गया."

"यह आत्मग्लानि अथवा आंतरिक क्लेश किसी नए पंछी को जाल मैं फसनेसै भलेही होताहो परानें खिलाड़ियों को तो इस्की ख़बर भी नहीं होती संसार मैं इस्समय ऐसे बहुत लोग मोजूद हैं जो दूसरे के प्राण लेकर हाथ भी नहीं धोते" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"यह बात आपनें दुरुस्त कही निस्संदेह जो लोग लगातार दुष्कर्म करते चलेजाते हैं और एक अपराधी सै बदला लेनेंके लिये आप अपराधी बनजाते हैं अथवा एक दोष छिपानें के लिये दूसरा कूपितकर्म करनें लगते हैं या जिन्को केवल अपनें मतलब सै ग़र्ज़् रहती है उन्के मन से धीरे, धीरे अधर्म की अरुचि उठती जाती

है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जैसै दुर्गंध मैं रहनें वाले मनुष्यों के मस्तक मैं दुर्गंध समा जाती है तब उन्को वह दुर्गंध नहीं मालूम होती अथवा बार बार तरवार को पत्थर पर मारनें सै उस्की धार अपनें आप भोंटी होती जाती है इसी तरह ऐसे मनुष्यों के मन सै अभ्यास बस अधर्म की ग्लानि निकल कर उन्के मन पर निकृष्टप्रवृत्तियों का पूरा अधिकार होजाता है बिदुरजी कहते हैं "तासों पाप न करत बुध किये बुद्धि कौ नाश॥ बुद्धि नासते बहुरि नर पापै करत प्रकाश *॥ यह अवस्था बड़ी भयंकर है और सन्निपात के समान इस्सै आरोग्य होनें की आशा बहुत कम रहती है. ऐसी अवस्था मैं निस्संदेह शिंभूदयाल के कहनें मूजब उन्को अनुचित रीति सै अपनी इच्छा पूरी करनें मैं सिवाय आनन्द के कुछ पछतावा नहीं होता परन्तु उन्को पछतावा हो या न हो ईश्वर के नियमानुसार उन्हे अपनें पापों का फल अवस्य भोगना पड़ता है मनुस्मृति मैं लिखा है "बेद, यज्ञ, तप, नियम, अरु बहुत भांति के दान॥ दुष्ट हृदय को जगत मैं करत न कुछ कल्यान॥ +" ऐसे मनुष्यों को समाज की तरफ़ सै, राज की तरफ सै अथवा ईश्वर की तरफ़ सै अवश्य दंडमिल्ता है और बहुधा वह अपना प्राण देकर उस्सै छुट्टी पाते

---

* तस्मात् पापं न कुर्वीत पुरुष: शंसितव्रत ॥
पापं प्रज्ञां नाशयति क्रियमाणं पुन: पुन: ॥

वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्च तपांसिच ॥
नविप्रभावदुष्टस्य सिद्धि गच्छन्ति कर्हिचित् ॥

\+ अकस्मा देव कुप्यंति प्रसीदंत्यनिमित्तत: ॥
शीलमेतदसाधूनामभ्रं पारिप्लवं यथा ॥

हैं इस लिये सुख दुःखका आधार इच्छा फल की प्राप्ति पर नहीं बल्कि सत्कर्म और दुष्कर्म पर है.

इस्तरह पर अनेक प्रकार की बात चीत करते हुए लाला मदन मोहन की बग्गी मकान पर लोटआई और लाला ब्रजकिशोर वहां सै रुखसत होकर अपने घर गए.

प्रकरण १३

बिगाड़कामूल-विवाद.

कोपै बिन अपराध। रीझै बिन कारन जुनर ॥
ताको शील असाध। शरदकालके मेघ जों ॥ ❀

बिदुर-प्रजागरे.

लाला मदनमोहन हवा खाकर आए उस्समय लाला हरकिशोर साठन की गठरी लाकर कमरे मैं बैठे थे.

"कल तुमने लाला हरदयाल साहब के साम्ने बड़ी ढिठाई की परन्तु मैं पुरानी बातोंका बिचार करके उस्समय कुछ नहीं बोला" लाला मदनमोहन ने कहा.

"आपने बड़ी दया की पर अब मुझ को आप सै एकान्त मैं कुछ कहना है, अवकाश हो तो सुन लीजिये" लाला हरकिशोर बोले.

"यहां तो एकांत ही है तुम को जो कुछ कहना हो निस्संदेह कहो" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

"मुझ को इतना ही कहना है कि मैंनें अब तक अपनी समझ मुजिब आप को अप्रसन्न करनें की कोई बात नहीं की परंतु मेरी सब बातें आपको बुरी लगती हैं तो मैं भी ज्यादः आवा जाई रखनें मैं प्रसन्न नहीं हूं. किसी ने सच कहा है "जब तो हम गुल थे मियां लगते हजारों के गले ॥ अब तो हम खार हुए सब सै किनारे ही भले ॥ " संसार मैं प्रीति स्वार्थ परता का दूसरा नाम है समय निकले पीछे दूसरे सै मेल रखनें की किसी को क्या ग़रज़ पड़ी है? अच्छा! महरबानी कर के मेरे माल की कीमत मुझ को दिलवा दें." हरकिशोर नें रुखाई सै कहा-

"क्या तुम कीमत का तकाजा कर के लाला साहब को दबाया चाहते हो?" मुन्शी चुन्नी लाल बोले.

" हरगिज नहीं मेरी क्या मजाल?" हरकिशोर कहनें लगे- "सब जान्ते हैं कि मेरे पास गांठ की पूंजी नहीं है, मैं जहां तहां सै माल लाकर लाला साहब के हुक्म की तामील कर देता था परंतु अब की बार रुपे मिलनें मैं देर हुई कई एक़रार झूटे हो गए इसलिये लोगों का बिश्वास जाता रहा अब आज कल मैं उन्के माल की कीमत उन्के पास न पहुंचेगी तो वे मेरे ऊपर नालिश कर देंगे और मेरी इज़्ज़त धूल मैं मिल जायगी"

"तुम कुछ दिन धैर्य धरो तुह्मारे रुपे का भुगतान हम बहुत जल्दी कर देंगे" लाला मदनमोहन ने कहा.

"जब मेरे ऊपर नालिश हो गई और मेरी साख जाती रही तो फिर रुपे मिलने सै मेरा क्या काम निकला? "देखो अबसर को भलो जासों सुधरे काम। खेती सूखे बरसबो घन को निपट निकाम ॥" मैं जानता हूं कि आप को अपने कारण किसी ग़रीब

की इज़्ज़त मैं बट्टा लगाना हरगिज़ मंज़ुर न होगा" लाला हर-किशोर नें कुछ नरम पड़ कर कहा.

"तुह्मारा रुपया कहां जाता है ? तुम ज़रा धैर्य रक्खो. तुम-नें यहां सै बहुत कुछ फायदा उठाया है, फिर अबकी बार रुपे मिलनें मैं दो, चार दिनकी देर होगई तो क्या अनर्थ होगया ? तुमको ऐसा कड़ा तक़ाज़ा करनें मैं लाज नहीं आती ? क्या संसार सैं मेल मुलाहज़ा बिल्कुल उठगया ? " मुन्शी चुन्नीलालनें कहा.

"मैंभी इसी चारा बिचार मै हूं" हरकिशोर नें जबाब दिया "मैंतो माल देकर मोल चाहता हूं. ज़रूरत के सबब सै तक़ाज़ा करता हूं पर न जानें 'और लोगों को क्या होगया जो बेसबब मेरे पीछै पडरहे हैं ? मुझसै उन्को बहुत कुछ लाभ हुआ होगा परन्तु इस्समय वे सब 'तोता चश्म' होगए. उन्हींके कारण मुझको यह तक़ाज़ा करना पडता है. जो आजकल मैं मेरे लेनदा-रोंका रुपया न चुका, तो वे निस्संदेह मुझपर नालिश करदेंगे और मै ग़रीब अमीरोंकी तरह दवाव डालकर उन्को किसी तरह न रोक सकूंगा. ?

"तुह्मारी ठगविद्या हम अच्छी तरह जान्ते हैं., तुह्मारी ज़िद सै इस्समय तुमको फूटी कौड़ी न मिलेगी, तुह्मारे मन मैं आवे सो करो." मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"जनाब ज़बान सह्माल कर बोलिये. माल देकर क़ीमत मांगना ठगविद्या है ? गिरधर सच कहता है " साई नदी समु-द्रसों मिली बडप्पन जानि ॥ जात नास भयो आपनो मान महत की हानि ॥ मान महत की हानि कहो अब कैसी कीजै ॥ जलखरी

ह्वैगयो ताहि कहो कैसैं पीजै ॥ कह गिरधर कबिराय कच्छ मच्छ न सकुचाई ॥ बडो फ़जीहत चार भयो नदियन को साईं ॥ ”

“ बस अब तुम यहां सै चल दो. ऐसे बाज़ारू आदमियोंका यहां कुछ काम नहीं है ” मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

“ मैंने किसी अमीर के लडकेको बहका कर बद्चलनी सिखाई ? या किसी अमीर के लडकेको भोगविलास मैं डाल-कर उस्की दौलत ठग ली जो तुम मुझे बाज़ारू आदमी बताते हो ? ”

“ तुम कपडा बेचनें आएहो या झगडा करनें आएहो ? ” मुन्शी चुन्नीलाल पूछनें लगे.

“ न मैं कपडा बेचनें आया न मैं झगडा करनें आया. मैंतो अपना रुपया वसूल करनें आया हूं मेरा रुपया मेरी झोली मैं डालिये फिर मैं यहां क्षण भर न ठैरूंगा ”

“ नहीं जी, तुमको ज़बरदस्ती यहां ठैरनें का कुछ अखत्यार नहीं है रुपे का दावा हो तो जाकर अदालत मैं नालिश करो ” मास्टर शिंभूदयाल बोले.

“ तुम लोग अपनी गलीके शेरहो यहां चाहे जो कहलो परंतु अदालत मैं तुम्हारी गीद्ड भपकी नहीं चल सक्ती. तुम नहीं जान्ते कि ज्याद: घिसने पर चंदन सै भी आग निकलती है अच्छे आद-मी को ख़ातर शिष्टाचारी सै चाहे जितना दबालो परन्तु अभिमान और धमकी सै वह कभी नहीं दबता ”

“ तो क्या तुम हमको इनबातों सै दबा लोगे ?” लाला मद-नमोहन नें त्योरी चढाकर कहा.

“ नहीं साहब, मेरा क्या मक़्दूर है ? मै ग़रीब, आप अमीर.

मुझको दिनभर रोजगार धंधा करना पड़ता है, आपका सबदिन हंसी दिल्लगी की बातों मैं जाता है. मैं दिन भर पैदल भटकता हूं, आप सवारी विना एक क़दम नहीं चल्ते. मेरे रहनें की एक झोंपडी, आप के बड़े बड़े महल. मुल्क मैं अकालहो, ग़रीब बिचारे भूखों मरतेहों, आप के यहां दिन रात ये ही हाहा, हीही, रहैगी. सच है आप पर उन्का क्या हक़ है ? उन्सै आपका क्या संबन्ध है ? परमेश्वर नें आप को मनमानी मोज करने के लिये दौलत देदी फिर औरों के दुख दर्द मैं पड़ने की आप को क्या ज़रूरत रही ? आपके लिये नीति अनीति की कोई रोक नहीं है आप—"

"क्यों जी ! तुम अपनी बकवाद नहीं छोड़ते अच्छा जमादार इन्को हाथ पकड़ कर यहां सै बाहर निकालदो और इन्की गठरी उठाकर गली मैं फेंकदो" मुन्शी चुन्नीलाल नें हुक्म दिया.

"मुझको उठानें की क्या ज़रूरत है ? मै आप जाता हूं परंतु तुमनें बेसबब मेरी इज्जत ली है इस्का परिणाम थोड़े दिन मैं देखोगे जिस तरह राजा द्रुपद नें बचपन मैं द्रोणाचार्य सै मित्रता करके राज पानें पर उन्का अनादर किया तब द्रोणाचार्य नें कौरव पांडवों को चढ़ा ले जाकर उस्की मुश्कें बंधवा ली थीं और चाणक्य नें अपनें अपमान होने पर नन्द वंश का नाश करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर दिखाई थी, पृथ्वीराज नें संयोगता के बसवर्ती होकर चन्द और हाहुली राय को लौंडियों के हाथ पिटवाया तब हाहुली राय नें उस्का बदला पृथ्वीराज सै लिया था, इसी तरह परमेश्वर नें चाहातो मैं भी इस्का बदल आप सै लेकर रहूंगा"

यह कह कर हरकिशोर नें तत्काल अपनी गठरी उठाली और गुस्सै मैं मूछोंपर ताव देता चला गया.

" ये बदला लेंगे ! ऐसे बदला लेनेंवाले सैकड़ों झकमारते फिरते हैं " हरकिशोर के जाते ही मुन्शी चुन्नीलाल नें मदनमोहन को दिलासा देनें के लिये कहा.

" जो यों किसी के बैर भाव सै किसी का नुक्सान होजाया करै तो बस संसार के काम ही वन्द होजायं " मास्टर शिंभूदयाल बोले.

" सूर्य चंद्रमा की तरफ़ धूल फैंकनें वाले अपनेही सिर पर धूल डालते हैं " पंडित पुरुषोत्तमदास नें कहा. पर इनबातों सै लाला मदनमोहन का संतोष न हुआ.

" मैं हरकिशोर को ऐसा नहीं जान्ता था, वह तो आज आपे सै बाहर होगए. अच्छा ! अब वह नालिश कर दें तो उस्की जबाब दिही किस तरह करनी चाहिये ? मैं चाहता हूं कि चाहे जितना रुपया ख़र्च होजाय परन्तु हरकिशोर के पल्लै फूटी कौड़ी न पड़े " लाला मदनमोहन नें अपनें स्वभावानुसार कहा.

" मदन मोहन के निकटवर्ती जान्ते थे कि मदनमोहन जैसै हठीले हैं वैसे ही कमहिम्मत हैं, जिस्समय उन्को किसी तरह का घबराट हो हरेक आदमी दिलजमई की झूंटी सच्ची बातैं बनाकर उन्को अपनें काबू पर चढ़ा सक्ता है और मन चाहा फ़ायदा उठासक्ता है इस लिये अब चुन्नीलाल नें वह चाल डाली.

" यह मुकद्दमा क्या चीज है ! ऐसे सैंकडो मुकद्दमें आप के पुन्य प्रताप सै चुटकियों मैं उड़ा सक्ता हूं परन्तु इस्समय मेरे

चित्त को ज़रा उद्वेग होरहा है इसी सै अक़ल काम नहीं देती" मुनशी चुन्नीलाल नें कहा,

"क्यों तुह्मारे चित्त के उद्वेग का क्या कारण है? क्या हरकिशोर की धमकी सै डरगए? ऐसा हो तो बिश्वास रक्खो कि मेरी सब दौलत ख़र्च होजायगी तो भी तुह्मारे ऊपर आंच न आनें दूंगा" लाला मदनमोहन नें कहा.

"नहीं, महाराज! ऐसी बातोंसै मैं कब डरता हूं? और आपके लिये जो तक़लीफ़ मुझको उठानी पड़े उस्मैं तो और मेरी इज्ज़त है. आपके उपकारोंका बदला मैं किसी तरह नहीं दे सक्ता, परन्तु लडकीके ब्याहके दिन बहुत पास आ गये, तयारी अबतक कुछ नहीं हुई, ब्याह आपकी नामवरीके मूजिब करना पडेगा, इस्सै इन दिनों मेरी अक़ल कुछ गुमसी हो रही है" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा.

"तुम धैर्य रक्खो तुह्मारी लडकीके ब्याहका सब ख़र्च हम देंगे" लाला मदनमोहन नें एकदम हामी भर ली.

"ऐसी सहायता तो इस सरकार सै सब को मिलती ही है परन्तु मेरी जीविका का बृत्तान्त भी आपको अच्छी तरह मालूम है और घर गृहस्थका ख़र्च भी आपसै छिपा नहीं है, भाई ख़ाली बैठे हैं जब आपके यहांसै कुछ सहायता होगी तो ब्याहका काम छिड़ैगा कपड़े लत्ते वग़ैरे की तैयारी मैं महीनों लगते हैं" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा.

"लो; ये दो सो रुपेके नोट लेकर इस्समय तो काम चलता करो, और बातोंके लिये बंदोबस्त पीछैसै कर दिया जायगा" लाला मदनमोहननें नोट देकर कहा.

"जी नहीं, हुजूर ! ऐसी क्या जल्दी थी" मुन्शी चुन्नीलाल नोट जेबमैं रखकर बोले.

"यह भी अच्छी विद्या है" पंडितजीनें भरमा भरमी सुनाई."

"मैं जान्ता हूं कि प्रथम तो हरकिशोर नालिश ही नहीं करैंगे और की भी तो दमभर मैं खारिज करा दी जायगी" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा.

निदान लाला मदनमोहन बहुत देरतक इस प्रकारकी बातों सै अपनी छातीका बोझ हल्का करके भोजन करनें गए और गुपचुप बैजनाथके बुलानेंके लिये एक आदमी भेज दिया.

प्रकरण १४.

पत्रव्यवहार.

अपनें अपनें लाभकों बोलतबैन बनाय
बेस्या बरस घटावही जोगी बरस बढ़ाय.

वृंद.

लाला मदनमोहन भोजन करके आए उस्समय डाकके चपरासीनें लाकर चिट्ठियां दीं.

उन्मैं एक पोस्टकार्ड महरोलीसै मिस्टर बेलीनें भेजा था उस्मैं लिखा था कि "मेरा बिचार कल शामको दिल्ली आनेंका है आप महरबानी करके मेरे वास्तै डाकका बंदोबस्त कर दें और लोटती डाकमैं मुझको लिख भेजैं" लाला मदनमोहननें तत्काल उस्का प्रबंध कर दिया.

दूसरी चिट्ठी कलकत्तेसै हमल्टीन कंपनी जुएलर (जोहरी) की आई थी उस्मैं लिखा था "आपके आरडरके बमूजिब हीरोंकी पाकट चेन बनकर तैयार हो गई है, एक दो दिनमैं पालिश करके आपके पास भेजी जायगी और इस्पर लागत चार हज़ार अंदाज रहैगी. आपनें पन्नेकी अंगूठी और मोतियोंकी नेकलेसके रुपे अबतक नहीं भेजे सो महरबानी करके इन तीनों चीज़ोंके दाम बहुत जल्द भेज दीजिये"

तीसरा फ़ारसी ख़त अह्लीपूरसे अब्दुर्रहमान मेटका आया था उस्मैं लिखा था कि "रुपे जल्दी भेजिये नहीं तो मेरी आबरूमैं फ़र्क़ आ जायगा और आपका बडा हर्ज होगा कंकरवालेका रुपया बहुत चढ़ गया इस लिये उस्नें खेप भेजनी बंद कर दी. मज्दूरोंका चिट्ठा एक महीनेंसै नहीं बटा इस लिये वह मेरी इज्ज़त लिया चाहते हैं. इस ठेके बाबत पांच हज़ार रुपे सरकारसै आपको मिलनें वाले थे वह मिले होंगे, महरबानी करके वह कुल रुपे यहां भेज दीजिये जिस्सै मेरा पीछा छूटे. मुझको बडा अफसोस है कि इस ठेकेमैं आपको नुक्सान रहैगा परन्तु मैं क्या करूं ? मेरे बसकी बात न थी. ज़मीन बहुत ऊंची नीची निकली, मज्दूर दूर, दूरसै दूनी मज्दूरी देकर बुलानें पड़े, पानी का कोसों पता न था मुझसै हो सका जहांतक मैंनें अपनी जान लड़ाई. ख़ैर इस्का इनाम तो हुज़ूरके हाथ है परन्तु रुपे जल्दी भेजिये, रुपयोंके बिना यहांका काम घडी भर नहीं चल सक्ता"

लाला मदनमोहन नोकरोंको काम बतानें, और उन्की तनू-ख्वाहका ख़र्च निकालनेंके लिये बहुधा ऐसे ठेके वग़ैरा ले लिया

करते थे. नोकरोंके विषयमैं उन्का बरताव बडा बिलक्षण था, जो मनुष्य एक बार नोकर हो गया वह हो गया. फिर उस्सै कुछ काम लिया जाय या न लिया जाय, उस्के लायक़ कोई काम हो या न हो. वह अपना काम अच्छी तरह करे या बुरी तरह करे, उस्के प्रतिपालन करनेंका कोई हक़ अपनें ऊपर हो या न हो, वह अलग नहीं हो सक्ता और उस्पर क्या है ? कोई ख़र्च एक बार मुक़र्रर हुए पीछै कम नहीं हो सक्ता, संसारके अयशका ऐसा भय समा रहा है कि अपनी अवस्थाके अनुसार उचित प्रवंध सर्बथा नहीं होनें पाता. सब नोकर सब कामोंमैं दख़ल देते हैं परंतु कोई किसी कामका ज़िम्मेवार नहीं है, और न कोई सम्हाल रखता है, मामूली तनख्वाह तो उन लोगोंनें बादशाही पेन्शन समझ रक्खी है. दस पंद्रह रुपे महीनेंकी तनख्वाहमैं हज़ार पांच सो रुपे पेशगी ले रखना, दो, चार हज़ार पैदा कर लेना कौन बड़ी बात है ? पांच रुपे महीनेंके नोकर हों, या तीन रुपे महिनेंके नोकर हों विवाह आदिका ख़र्च लाला साहब के जिम्में समझते हैं, और क्यों न समझैं ? लाला साहब की नोकरी करें तब बिवाह आदिका ख़र्च लेने कहां जांय ? मदत का दारोग़ा मदत मैं, चीज़बस्त लानेंवाले चीज़बस्त मैं दुकान के गुमाश्ते दुकान मैं, मनमानाकाम बनारहे हैं जिसनें जिसकाम के वास्तै जितना रुपया पहले ले लिया वह उस्के बाप दादे का होचुका, फिर हिसाब कोई नहीं पूछता. घाटे नफ़े और लेन देन की जांच परताल करनें के लिये काग़ज कोई नहीं देखता. हाल में लाला मदनमोहन नें अपनें नोकरों के प्रतिपालन के लिये अलीपुर रोड का ठेका ले रक्खा था जिस्मैं सरकार सै ठेका लिया उस्से दून

रुपे अब तक ख़र्च हो चुके थे पर काम आधा भी नहीं बना था और ख़र्चके वास्तै वहां सै ताकीदपर ताकीद चली आती थी परमेश्वर जानें अबदुर्रहमान को अपनें घर ख़र्चके वास्तै रुपे की ज़रूरत थी या मदत के वास्तै रुपेकी ज़रूर थी.

चोथा ख़त एक अख़बार के एडीटर का था उस्मैं लिखा था कि "आपनें इस महीनें की तेन्हवीं तारीख़ का पत्र देखा होगा उस्मैं कुछ बृत्तान्त आपका भी लिखा गया है इस्समय के लोगों को ख़ुशामद बहुत प्यारी है और ख़ुशामदी चैन करते हैं परन्तु मेरा यह काम नहीं. मैंनें जो कुछ लिखा वह सच, सच लिखा है. आप से बुद्धिमान, योग्य, सच्चे अभिज्ञ, उदार और देशहितैषी हिन्दुस्थान मैं बहुत कम हैं इसी सै हिन्दुस्थान की उन्नति नहीं होती, विद्याभ्यास के गुण कोई नहीं जान्ता, अख़बारों की क़दर कोई नहीं करता, अखबार जारी करनेंवालों को नफ़ेके बदले नुक्सान उठाना पडता है. हम लोग अपना दिमाग़ खिपा कर देश की उन्नति के लिये आर्टिकल लिखते हैं, परन्तु अपनें देशके लोग उस्की तरफ़ आंख उठाकर भी नहीं देखते इस्सै जी टूटा जाता है. देखिये अख़बार के कारण मुझपर एक हज़ार रुपे का कर्ज़ होगया और आगे को छापे खानें का ख़र्च निकलना भी बहुत कठिन मालूम होता है. प्रथम तो अख़बार के पढ़नेवाले बहुत कम, और जो हैं उन्मैं भी बहुधा कारस्पोन्डेन्ट बनकर बिना दाम दिये पत्र लिया चाहते हैं और जो गाहक बनते हैं उन्मैं भी बहुधा दिवालिये निकल जाते हैं. छापेखानें का दो हज़ार रुपया इस्समय लोगों मैं बाकी है परन्तु फूटी कौड़ी पटनें का भरोसा नहीं. कोई आपसा साहसी पुरुष देशका हित बिचार कर इस डूबती

नाव को सहारा लगावे तो बेडा पार होसक्ता है नहीं तो ख़ैर जो इच्छा परमेश्वर की. "

एक अख़बार के एडीटर की इस लिखावट सै क्या, क्या बातें मालूम होती हैं? प्रथम तो यह कि हिन्दुस्थान मैं बिद्या का, सर्व साधारण की अनुमति जान्नें का, देशान्तर के बृत्तान्त जान्नें का, और देशोन्नति के लिये देश हितकारी बातों पर चर्चा करनें का व्यसन अभी बहुत कम है. वलायत की वस्ती हिन्दुस्थान की बस्ती सै बहुत ही थोड़ी है तथापि वहां अख़वारों की इतनी बृद्धि है कि वहुतसे अख़बारों की डेढ़ डेढ़ दो, दो लाख कापियां निकलती हैं. वहां के स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बालक, गरीब, अमीर, सब अपनें देश का वृत्तान्त जान्ते हैं और उस्पर वादा विवाद करते हैं किसी अख़ बार मैं कोई बात नई छपती है तो तत्काल उस्की चर्चा सब देश मैं फैल जाती है और देशान्तर को तार दोड़ जाते हैं परन्तु हिन्दुस्थान मैं ये बात कहां? यहां बहुतसे अख़बारों की पूरी दो, दो सौ कापियां भी नहीं निकलतीं! और जो निकलती हैं उन्मैं भी जान्नें के लायक़ बातैं बहुत ही कम रहती हैं क्योंकि बहुतसे एडीटर तो अपना कठिन काम सम्पादन करनें की योग्यता नहीं रखते और वलायत की तरह उन्को और बिद्वानों को सहायता नहीं मिल्ती, वहुतसे जान बूझ कर अपना काम चलानें के लिये अजान बनजाते हैं इस लिये उचित रीति सै अपना कर्तव्य सम्पादन करनेंवाले अख़बारों की संख्या बहुत थोड़ी है पर जो है उस्को भी उत्तेजन देनेंवाला और मन लगा कर पढ़नें वाला कोई नहीं मिल्ता. बड़े, बड़े अमीर, सौदागर, साहूकार, ज़मींदार, दस्तकार जिन्की हानि लाभ का और देशों सै बड़ा

संवन्ध है वह भी मन लगा कर अख़बार नहीं देखते बल्कि कोई कोई तो अख़बार के एडीटरों को प्रसन्न रखनें के लिये अथवा गाहकों के सूचीपत्र मैं अपना नाम छपानें के लिये, अथवा अपनी मेज़ को नए, नए, अख़बारों सै सुशोभित करनें के लिये, अथवा किसी समय अपना काम निकाललेनें के लिये अख़बार ख़रीद्ते हैं! जिस्पर अख़बार निकालनें वालों की यह दशा है! लाला मदनमोहन इस ख़त को पढ़ कर सहायता करनें के लिये बहुत ललचाये परन्तु रुपे की तंगी के कारण तत्काल कुछ न कर सके.

" हुजूर! मिस्टर रसलके पास रुपे आज भेजनें चाहियें" मुन्शी चुन्नीलाल नें डाक देखे पीछै याद दिवाई.

हां! मुझको बहुत ख़याल है परन्तु क्या करूं? अबतक कोई बानक नहीं बना " लाला मदनमोहन बोले.

" थोडी बहुत रक़मतो मिस्टर ब्राइट के यहां भी ज़रूर भेजनी पडेगी " मास्टर शिंभूदयाल नें अवसर पाकर कहा.

" हां, और हरकिशोर नें नालिश करदी तो उस्सै जवाब दिही करनें के लिये भी रुपे चाहियेंगे " लाला मदनमोहन चिंता करनें लगे.

" आप चिन्ता न करें, जोतिष सै सब होनहार मालूम हो सक्ता है. चाणक्य नें कहा है " का ऐश्वर्य बिशाल मैं का मोटेदुख पाहिं। रस्सी बांध्यो होय जों पुरुष दैव बस माहिं ॥×" इस लिये आपको कुछ आगे का बृत्तान्त जान्ना हो, तो आप प्रश्न करि

× ऐश्वर्ये वासुविस्तीर्णे व्यसनें वापि दारुणे ॥
रज्जेव पुरषो बद्ध: कृतांतेनोपनीयते ॥

थे. जोतिष सै बढ़ कर होनहार जान्नें का कोई सुगम मार्ग नहीं है" पंडित पुरुषोत्तमदास नें लाला मदनमोहन को कुछ उदास देख कर अपना मतलब गांठनें के लिये कहा. वह जान्ता था कि निर्बल चित के मनुष्य सुख मैं किसी बात की ग़र्ज़ नहीं रखते परन्तु घबराट के समय हर तरफ़ को सहारा तकते फिरते हैं.

"विद्याका प्रकाश प्रति दिन फैल्ता जाता है इस लिये अब आपकी बातोंमैं कोई नहीं आवेगा" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"यह तो आजकलके सुधरे हुओंकी बात है परंतु वे लोग जिस विद्याका नाम नहीं जान्ते उस्मैं उन्की बात कैसे प्रमाण हो ?" पंडितजीने जबाब दिया.

"अच्छा ! आप करेलेके सिवाय और क्या जान्ते हैं ? आपको मालूम है कि नई तहक़ीक़ात करनें वालोंनें कैसी, कैसी दूरबीनें बनाकर ग्रहोंका हाल निश्चय किया है ?" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"किया होगा, परंतु हमारे पुरखोंनें भी इस विषयमैं कुछ कसर नहीं रक्खी" पंडित पुरुषोत्तमदास कहनें लगे. "इस समय के बिद्वानोंनें बडा खर्च करके जो कलैं ग्रहों का बृतान्त निश्चय करनें के लिये बनाई हैं हमारे बडों नें छोटी, छोटी नालियों और बांसकी छडियों के द्वारा उन्सै बढ़कर काम निकाला था. संस्कृत की बहुतसी पुस्तकें नष्ट हो गईं, योगाभ्यास आदि बिद्याओं का खोज नहीं रहा परंतु फिर भी जो पुस्तकें अब मौजूद हैं उन्मैं ढूंढनें वालों के लिये कुछ थोडा खज़ाना नहीं है. हां आप की तरह कोई कुछ ढूंढभाल करे बिना दूर ही सै "कुछ नहीं" "कुछ नहीं" कहकर बात उड़ा दे तो यह जुदी बात है"

"संस्कृत विद्या की तो आजकल के सब विद्वान एक स्वर होकर प्रशंसा करते हैं परंतु इस्समय जोतिष की चर्चा थी सो निस्सन्देह जोतिष मैं फलादेश की पूरी बिध नहीं मिल्ती शायद बतानेंवालों की भूल हो. तथापि मैं इस विषय मैं किसी समय तुम सै प्रश्न करूंगा और तुम्हारी बिध मिल जायगी तो तुम्हारा अच्छा सत्कार किया जायगा" लाला मदनमोहन नें कहा और यह बात सुनकर पंडितजी के हर्ष की कुछ हद न रही.

प्रकरण १५.

प्रिय अथवा पिय् ?

दमयन्ति बिलपतहुती बनमैं अहि भय पाइ
अहि बध बधिक अधिक भयो ताहूते दुखदाइ

नलोपाख्याने.

ज्योतिष की बिध पूरी नही मिल्ती इसलिये उस्पर विश्वास नहीं होता परंतु प्रश्न का बुरा उत्तर आवे तो प्रथम हीसै चित्त ऐसा व्याकुल हो जाता है कि उस काम के अचानक होनें पर भी वैसा नहीं होता, और चित्त का असर ऐसा प्रबल होता है कि जिस बस्तु की संसार मैं सृष्टि ही न हो वह भी वहम समाजानें सै तत्काल दिखाई देनें लगती है. जिस्पर जोतिषी ग्रहों को उलट पुलट नहीं कर सक्ते, अच्छे बुरे फल को बदल नहीं सक्ते, फिर प्रश्न करनें सै लाभ क्या ? कोइ ऐसी बात

करनी चाहिये जिस्सै कुछ लाभ हो" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"आप हुक्म दें तो मैं कुछ अर्ज़ करूं ?" बिहारी बाबू बहुत दिन सै अवसर देख रहे थें वह धीरे सै पूछनें लगे.

"अच्छा कहो" मुन्शी चुन्नीलाल नें मदनमोहन के कहने सै पहले ही कह दिया.

"भोजला पहाड़ी पर एक बड़े धनवान जागीरदार रहते हैं उन्को ताश खेलनें का बड़ा ब्यसन है वह सदा बाज़ी बद कर खेल्ते हैं और मुझको इस खेल के पत्ते ऐसी राह सै लगानें आते हैं कि जब खेलैं तब अपनी ही जीत हो. मैंनें उन्को कितनी ही बार हरादिया इसलिये अब वह मुझको नहीं पतियाते परंतु आप चाहैं तो मैं वह खेल आप को सिखा दूं फिर आप उन्सै निधड़क खेलैं आप हार जायंगे तो वह रक़म मैं दूंगा और जीतें तो उस्मैं सै मुझको आधी ही दें" बिहारी बाबू नें जुए का नाम छिपा कर मदनमोहन को आसामी बनानें के वास्ते कहा.

"जीतेंगे तो चोथाई देंगे परंतु हारनें के लिये रक़म पहले जमा करा दो" मुन्शी चुन्नीलाल लालामदनमोहन की तरफ़ सै मामला करनें लगे.

"हारनें के लिये पहले पांच सौ की थैली अपनें पास रख लीजिये परंतु जीतमें मैं आधा हिस्सा लूंगा" बिहारी बाबू हुज्जत करनें लगे.

"नहीं, जो चुन्नीलाल नें कह दिया वह हो चुका, उस्सै अधिक हम कुछ न देंगे" लाला मदनमोहन नें कहा.

और बडी मुश्किल से बिहारी बाबू उस्पर कुछ, कुछ राज़ी

हुए परंतु सौभाग्य बस उस्समय बाबू बैजनाथ आ गए इस्सै सब काम जहां का तहां अटक गया.

"बिहारी बाबू सै किस बात का मामला हो रहा है?" बाबू बैजनाथ नें पहुंचते ही पूछा.

"कुछ नहीं, यह तो ताश के खेल का ज़िक्र था" मुन्शी चुन्नीलाल नें साधारण रीति सै कहा.

"बिहारी बाबू कहते हैं कि "मैं पत्ते लगानें सिखा दूं जिस्तरह पत्ते लगाकर आप एक धनवान जागीरदार सै ताश खेलैं. और बाज़ी बद लें जो हारेंगे तो सब नुक्सान मैं दूंगा. और जीतेंगे तो उस्मैं सै चौथाई ही मैं लूंगा" लाला मदनमोहन नें भोले भाव सै सच्चा वृत्तान्त कह दिया.

"यह तो खुला जुआ है और बिहारी बाबू आप को चाट लगानें के लिये प्रथम यह सब्ज़ बाग दिखाते हैं" बाबू बैजनाथ कहनें लगे "जिस तरह सै पहलै एक मेवनें आप को गडी दौलतका तांबेपत्र दिखाया था, और वह सब दौलत गुप चुप आप के यहां ला डालनें की हामी भरता था परंतु आप सै खोदनें के बहानें सो, पचास रुपे मार लेगया तब सै लोट कर सूरत तक न दिखाई! आप को याद होगा कि आप के पास एक बदमाश स्याम का शाहजादा बनकर आया था, और उस्नें कहा था कि "मैं हिन्दुस्थान की सैर करनें आया हूं मेरे जहाज़ ने कलकत्ते मैं लंगर कर रक्खा है मुझ को यहां ख़र्च की ज़रूरत है आप अपनें आढ़तिये का नाम मुझे बता दें मैं अपनें नोकरों को लिखकर उस्के पास रुपे जमा करा दूंगा जब उस्की इत्तला आप के पास आजाय तब आप रुपे मुझे देदें" निदान आप के आढ़तिये के

नाम सै तार आप के पास आगया और आपनें रुपे उस्को दे दिये, परंतु वह तार उन्हीं के किसी साथी नें आप के आढ़तिये के नाम सै आप को दे दिया था इसलिये यह भेद खुला उस्समय शाहज़ादे का पता न लगा! एकवार एक मामला करानेंवाला एक मामला आप के पास लाया था जब उस्नें कहा था कि "सरकार मैं रसद के लिये लकडियों की ख़रीद है और तहसील मैं ढाई मन का भाव है. मैं सरकारी हुक्म आप को दिखा दूंगा आप चार मन के भाव मैं मेरी मारफ़त एक जंगलवाले की लकडी लेनी कर ले" यह कहकर उस्नें तहसील सै निर्ख़नामे की दस्तख़ती नक़ल लाकर आप को दिखा दी पर उस भाव मैं सरकार की कुछ ख़रीददारी न थी! इन्सै सिवाय जिस्तरह बहुत से रसायनी तरह, तरह का धोका देकर सीधे आदमियों को ठगते फिरते हैं इसी तरह यह भी जुआरी बनानें की एक चाल है. जिस काम मैं बे लागत और बे महनत बहुतसा फ़ायदा दिखाई दे उस्मैं बहुधा कुछ न कुछ धोकेबाज़ी होती है ऐसे मामलेवाले ऊपर सै सब्ज़बाग़ दिखाकर भीतर कुछ न कुछ चोरी जरूर रखते हैं"

"बाबू साहब! मैंनें जिस राह सै ताश खेलनें के वास्ते कहा था वह हरगिज जुए मैं नहीं गिनी जा सकती परंतु आप उस्को जुआ ही ठैराते हैं तो कहिये जुए मैं क्या दोष है?" बिहारी बाबू मामला बिगडता देखकर बोले "दिवाली के दिनों मैं सब संसार जुआ खेल्ता है और असल मैं जुआ एक तरह का व्यापार है जो नुक्सान के डर सै जुआ बर्जित हो तो और सब तरहके व्यापार भी बर्जित होनें चाहियें. और व्यापार मैं घाटा देनें

के समय मनुष्य की नीयत ठिकानें नहीं रहती परंतु जुए के लेन देन बाबत अदालत की डिक्री का डर नहीं है तोभी जुआरी अपना सब माल अस्बाब बेचकर लेनदारों की कौडी, कौडी चुका देता है उस्के पास रुपया हो तो वह उस्के लुटानें मैं हाथ नहीं रोकता और अपनें काम मैं ऐसा निमग्न हो जाता है कि उसै खानें पीनें तक की याद नहीं रहती. उस्के पास फूटी कौडी न रहे तोभी वह भूखों नहीं मरता फडपर जाते ही जीते जुआरी दो, चार गंडे देकर उस्का काम अच्छी तरह चला देते हैं"

"राम! राम! दिवाली पर क्या? समझवार तो स्वप्न मैं भी जुए के पास नहीं जाते जुए से व्यापार का क्या संबंध? उस्की कुछ सूरत मिलती है तो बदनी सै मिलती है पर उस्को जुए सै अलग कौन समझता है? उस्को प्रतिष्ठित साहूकार कब करते हैं? सरकार मैं उस्की सुनाई कहां होती है? निरी बातों का जमा ख़र्च व्यापार मैं सर्वथा नहीं गिना जाता. व्यापार के तत्वही जुदे हैं. भविष्यत काल की अवस्था पर दृष्टि पहुंचाना परता लगाना, माल का ख़रीदना, बेचना या दिसावर को बीजक भेजकर माल मंगाना और माल भेजकर बदला भुगताना, व्यापार है परंतु जुए मैं यह बातें कहां? जुआ तो सब अधर्मों की जडहै. मनु और बिदुरजी एक स्वर सै कहते हैं "सुनी पुरातन बात जुआ कलह को मूल है॥ हांसीहूं मैं तात तासों नहीं खेलैं चतुर॥ *" बाबू बैजनाथ नें कहा.

"आप बृथा तेज़ होते हैं मैं खुद जुए का तरफ़दार नहीं हूं

* द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैरकरम् महत्॥
तस्मात् द्यूतन्नसेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान्॥

परंतु विवाद के समय अच्छी, अच्छी युक्तियों सै अपना पक्ष प्रबल करना चाहिये. क्रोध करके गाली देनें से जय नहीं होती. आप की दृष्टिमें मैं झूंटा हूं परंतु मेरी सदुक्तियों को आप झूंठा नहीं ठैरा सक्ते मुझ पर किसी तरह का दोषारोप किया जाय तो उस्को युक्ति पूर्बक साबित करना चाहिये और और बातों मैं मेरी भूल निकालनें सै क्या वह दोष साबित हो जायगा ?"

"जुए का नुक्सान साबित करनें के लिये बिशेष परिश्रम नहीं करना पडेगा देखो नल और युधिष्ठिरादि की बरबादी इस्का प्रत्यक्ष प्रमाण है" बाबू बैजनाथ बोले.

"मैं आप सै कुछ अर्ज़ नहीं कर सक्ता परंतु—"

"बसजी ! रहनें दो बाबू साहब कुछ तुम सै बहस करनें के लिये इस्समय यहां नहीं आए" यह कहकर लाला मदनमोहन बाबू बैजनाथ को अलग लेगए और हरकिशोर की तकरार का सब बृत्तान्त थोडे मैं उन्हैं सुना दिया.

"मैं पहले हरकिशोर को अच्छा आदमी समझता था परंतु कुछ दिन सै उस्की चाल बिल्कुल बिगड गई उस्को आप की प्रतिष्ठा का बिल्कुल बिचार नहीं रहा और आज तो उस्नें ऐसी ढिठाई की कि उस्को अवश्य दंड होना चाहिये था सो अच्छा हुआ कि वह अपनें आप यहां सै चला गया, उस्के चले जानें सै उस्के सब हक़ जाते रहे अब कुछ दिन धक्के खानें सैं उस्की अक्ल अपनें आप ठिकानें आ-जायगी"

"और उसनें नालिश कर दी तो ?" लाला मदनमोहन घबराकर बोले.

"क्या होगा ? उस्के पास सबूत क्या है ? उस्का गवाह कौन है ? वह नालिश करैगा तो हम क़ानूनी पाइन्ट सै उस्को पलट देंगे परंतु हम जान्ते हैं कि यहांतक नोबत न पहुंचेगी अच्छा ! उस्के पास आप की कोई सनद है ?"

"कोई नहीं"

"तो फ़िर आप क्यों डरते हैं ? वह आप का क्या कर सक्ता है ?"

" सच है उस्को रुपे की ग़र्ज होगी तो वह नाक रगडता आप चला आयगा हम उस्के नीचे नहीं दबे वही कुछ हमारे नीचे दब रहा है "

" आप इस विषय मैं बिल्कुल निश्चिन्त रहैं "

" मुझको थोडासा खटका लाला ब्रजकिशोर की तरफ़ का है यह हरबात मैं मेरा गला घोटते हैं और मुझको तोतेकी तरह पिंजरे मैं बंद रक्खा चाहते हैं "

" वकीलों की चाल ऐसीही होती है वह प्रथम धरती आकाशके कुलाबे मिलाकर अपनी योग्यता जताते हैं फिर दूसरे को तरह, तरह का डर दिखाकर अपना आधीन बनाते हैं और अंत मैं आप उस्के घरबार के मालक बन बैठते हैं परन्तु चाहे जैसा फ़ायदा हो मैंतो ऐसी परतन्त्रता सै रहने को अच्छा नहीं समझता "

„ मेरा भी यही विचार है मै जोंजों दबता हूं वह ज्यादः दबाते जाते हैं इसलिये अब मैं नहीं दबा चाहता "

" आपको दबने की क्या ज़रूरत है ? जबतक आप इन को मुंहतोड जबाब न देंगे यह सीधे न होंगे, लाला ब्रजकिशोर

आपके घर के टुकडे खाखा कर बडे हुए थे वह दिन भूल गए ! ”

लाला मदनमोहन नें बाबू बैजनाथ की नेकसलाहों का बहुत उपकार माना और वह लाला मदनमोहन सै रुख़सत होकर अपनें घर गए.

प्रकरण १६.

सुरा (शराब)

जेनिंदितकर्मनडरहिं करहिंकाज शुभजान ॥
रह्नैं मंत्र प्रमाद तज करहिं न ते मदपान ॥*

बिदुरनीति.

“ अब तो यहां बैठे, बैठे जी उखताता है चलो कहीं बाहर चलकर दस, पांच दिन सैर कर आवैं ” लाला मदनमोहन नें कमरे में आकर कहा.

“ मेरे मन मैं तो यह बात कई दिन से फिर रही थी परन्तु कहनें का समय नहीं मिला ” मास्टर शिंभूदयाल बोले.

“ हुज़ूर ! आजकल कुतब मैं बडी बहार आरही है थोड़े-दिन पहलै एक छींटा होगया था इस्सै चारों तरफ़ हरियाली छागई इस्समय झरनें की शोभा देखनें लायक़ है ” मुनशी चुन्नी-लाल कहनें लगे.

---

* अकार्यं कारणा द्भीत: कार्याणांच विवर्जनात् ॥
अकाले मंत्र भेदाच्च येनमाद्येन्नतत्पिबे त् ॥

"आहा ! वहां की शोभाका क्या पूछना है ? आमके मौर की सुगंधी सै सब अमरैयें महक रही हैं उन्की लहलही लताओं पर बैठकर कोयल कुहुकती रहती है घनघोर वृक्षों की घटासी छटा देखकर मोर नाचा करते हैं नीचै झरनाझरता है ऊपर बेल और लताओं के मिलनें सै तरह, तरह की रमणीक कुंजैं और लता मंडप बन गये हैं रंग, रंग के फूलों की बहार जुदी ही मनको लुभाती है फूलोंपर मदमाते भौरों की गुंजार और भी आनंद बढ़ाती है शीतल मंद सुगन्धित हवा सै मन अपनें आप खिला जाता है निर्मल सरोवरों के बीच बारहदरी मैं बैठकर चद्दर और फुआरों की शोभा देखनें सै जी कैसा हरा हो जाता है ? वृक्षों की गहरी छाया मैं पत्थर के चटानों पर बैठकर यह बहार देखनें सै कैसा आनंद आता है ?" पंडित पुरुषोत्तमदास नें कहा.

"पहाड़ की ऊंची चोटियों पर जानें सै कुछ और विशेष चमत्कार दिखाई देता है जब वहां सै नीचे की तरफ़ देखते हैं कहीं बर्फ़, कहीं पत्थर की चटानें, कहीं बड़ी, बड़ी कंदराएँ, कहीं पानी बहनें के घाटों मैं कोसोंतक वृक्षों की लंगतार, कहीं सूअर, रीछ, और हिरनों के झुंड, कहीं ज़ोर सै पानी का टकराकर छींट, छींट हो जाना और उन्मैं सूर्य की किर्णों के पड़नें सै रंग, रंग के प्रतिबिंबों का दिखाई देना, कहीं बादलों का पहाड़ सै टकराकर अपनें आप बरस जाना, बरसा की झड़, अपनें आस पास बादलों का लूम झूम कर घिर आना अति मनोहर दिखाई देता है" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"कुतब मैं ये बहार नहीं है तोभी वो अपनी दिल्लगी के लिये बहुत अच्छी जगह है" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"रात को चांद अपनी चांदनी सै सब जगत को रुपहरी बना देता है उस्समय दरया किनारे हरियाली के बीच मीठी तान कैसी प्यारी लगती है ?" हकीम अहमदहुसैन नें, कहा. "पानी के झरनें की झनझनाहट; पक्षियों की चहचहाहट, हवा की सन् सनाहट, बाजे के सुरों सै मिलकर गानेंवाले की लयको चौगुना बढ़ा देते हैं. आहा ! जिस्समय यह समा आंख के साम्नें हो स्वर्ग का सुख तुच्छ मालूम देता है"

"जिस्मैं यह बसंतऋतु तो इसके लिये सब सै बढ़कर है" पंडितजी कहनें लगे "नई कोंपल, नये पत्ते, नई कली, नए फूलों सै सज सजाकर वृक्ष ऐसे तैयार हो जाते हैं जैसै बुड्ढो मैं नए सिर सै जवानी आजाय"

"निस्संदेह. , वहां कुछ दिन रहना हो, सुख भोगकी सब सामग्री मौजूद हो, और भीनी, भीनी रात मैं तालसुर के साथ किसी पिकबयनी की आवाज आकर कान मैं पडे तो पूरा आनन्द मिले" मास्टर शिंभूदयालनें कहा.

"शराब की चसबिना यह सब मज़ा फीका है" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"इसमैं कुछ संदेह नहीं" मास्टर शिंभूदयाल नें सहारा लगाया "मनकी चिन्ता मिटानें के लिये तो ये अक्सीर का गुण रखती है इस्की लहरों के चढाव उतार मैं स्वर्ग का सुख तुच्छ मालूम होता है इस्के जोश मैं बहादुरी बढती है बनावट और छिपाव दूर हो जाता है हरेक काम मैं मन खूब लगता है.

"बस ; बिशेष कुछ न कहो ऐसी बुरी चीज़ की तुम इतनी तारीफ़ करते हो इस्सै मालूम होता है कि तुम इस्समय भी

उसी के बसवर्ती ही रहे हो" बाबू बैजनाथ कहनें लगे. "मनुष्य बुद्धि के कारण और जीवों सै उत्तम है फिर जिस्के पान सै बुद्धि मैं विकार हो, किसी काम के परिणाम की खबर न रहै हरेक पदार्थका रूप और सै और जाना जाय, स्वेच्छाचार की हिम्मत हो काम क्रोधादि रिपु प्रबल हों, शरीर जर्जर हो वह कैसे अच्छी समझी जाय?

"यों तो गुणदोष सै ख़ाली कोई चीज़ नहीं है परंतु थोडी शराब लेनें सै शरीर मैं बल और फुर्ती तो ज़रूर मालूम होती है" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"पहले थोडी शराब पीनें सै निःसंदेह रुधिर की गति तेज़ होती है, नाडी बलवान होती है और शरीर मैं फुर्ती पाई जाती है परंतु पीछै उतनी शराब का कुछ असर नहीं मालूम होता इस लिये वह धीरे धीरे बढानी पडती है उस्के पानकिये बिना शरीर शिथिल हो जाता है, अन्न हजम नहीं होता, हात पांव काम नहीं देते पर बढानें सै बढते, बढते वोही शराब प्राणघातक हो जाती है. डाक्टर पेरेरा लिखते है कि शराब सै दिमाग़ और उदर आदि के अनेक रोग उत्पन्न होते हैं डाक्टर कार्पेन्टर नें इस बाबत एक पुस्तक रची है जिस्मैं बहुत सै प्रसिद्ध डाक्टरों की राय सै साबित किया है कि शराब सै लक़वा, मंदाग्नि, बात, मूत्ररोग, चर्मरोग, फोडाफुन्सी, और कंपवायु आदि अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, शराबियों क़ी दुर्दशा प्रतिदिन देखी जाती है, कभी, कभी उनका शरीर सूखे काठ की तरह अपनें आप भभक उठता है, दिमाग मैं गर्मी बढनें सै बहुधा लोग बावले हो जाते हैं"

"शराब मैं इतनें दोष होते तो अंग्रेजों मै शराब का इतना रिवाज हरगिज न पाया जाता" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"तुम को मालुम नहीं है बलायत के सैकडों डाक्टरों नें इस्के विपरीत राय दी है और वहां सुरापान निवारणी सभा के द्वारा बहुत लोग इसे छोडते जाते हैं परंतु वह छोडें तो क्या और न छोडें तो क्या ? इन्द्र के परस्त्री (अहिल्या) गमन सै क्या वह काम अच्छा समझ लिया जायगा ? अफसोस ! हिन्दुस्थान मैं यह दुराचार दिन दिन बढता जाता है यहां के बहुत सै कुलीन युवा छिप छिपकर इसमैं शामिल होनें लगे हैं पर जब इङ्गलैंड जैसै ठंडे मुल्क मैं शराब पीनें सै लोगों की यह गत होती हैं तो न जानें हिन्दुस्थानियों का क्या परिणम होगा और देश की इस दुर्दशा पर कौन्से देश हितैषी की आंखों सै आंसू न टपकैंगे."

"अब तो आप हदसै आगे बढ चले" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"नहीं, हरगिज़ नहीं मैं जो कुछ कहता हूं यथार्थ कहता हूं देखो इसी मदिरा के कारण छप्पन कोटि यादवों का नाश घडी-भर मैं हो गया, इसी मदिरा के कारण सिकंदर नें भर जवानी मैं अपनें प्राण खो दिये मनुस्मृति मैं लिखा है "द्विजघाती, मद्यप बहुरि चोर, गुरु, स्त्री, मीत ॥ महापातकी है सोउ जाकी इनसों प्रीति ॥ × इसी तरह कुरान मैं शराब के स्पर्शतक का महा दोष लिखा है"

"आज तो बाबू साहब नें लाला ब्रजकिशोर की गद्दी दबा ली" मुन्शी चुन्नीलाल नें मुस्करा कर कहा.

"राम, राम उन्का ढंग तो दुनिया सै निराला है वह क्या अपनी बात चीत मैं किसी को एक अक्षर बोलनें देते हैं" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"उन्की कहन क्या है अर्गन बाजा है एक बार चाबी देदी ; घंटों बजता रहा. मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"मैंने तो कल ही कह दिया था कि ऐसे फिलासफर बिद्या संबंधी बातों मैं भलेही उपकारी हों संसारी बातों मैं तो किसी काम के नहीं होते" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"मुझ को तो उन्का मन भी कुछ अच्छा नहीं मालूम देता" लाला मदनमोहन आपही बोल उठे.

"आप उन्सै ज़रा हरकिशोर की बाबत बातचीत करैंगे तो रहासहा भेद और खुल जायगा देखैं इस विषय मैं वह अपनें भाई की तरफ़दारी करते हैं या इन्साफ़ पर रहते हैं" मुन्शी चुन्नीलाल नें पेच सै कहा.

"क्या कहैं ? हमारी आदत निन्दा करनें की नहीं है परसों शाम को लाला साहब मुझ सै चांदनीचौक मैं मिले थे आंख की सैन मारकर कहनें लगे "आजकल तो बड़े गहरों मैं हो हम पर भी थोडी कृपादृष्टि रक्खा करो" मास्टर शिंभूदयाल नें मदन-मोहन का आशय जान्ते ही जड दी.

"हैं ! तुम से ये बात कही ?" लाला मदनमोहन आश्चर्य सै बोले.

"मुझ सै तो सैकड़ों बार ऐसी नोक झोक हो चुकी है परंतु मैं कभी इन्बातों का विचार नहीं करता" मुन्शी चुन्नी-लाल नें मिल्ती मैं मिलाई.

"जब वह मेरे पीछे मेरा ठट्टा उड़ाते हैं तो मेरे मित्र कहां रहे? जब तक वह मेरे कामों के लिये केवल मुझ से झगडते थे मुझ को कुछ विचार न था परंतु जब वह मेरे पासवालों को छेड़नें लगे तो मैं उन्को अपना मित्र कभी नहीं समझ सक्ता" लाला मदनमोहन बोल उठे.

"सच तो ये है कि सब लोग आप की इस बरदाश्त पर बडा आश्चर्य करते हैं" मुन्शी चुन्नीलाल नें अवसर पाकर बात आगे बढाई.

" आपको लाला ब्रजकिशोर का इतना क्या दबाव है? उन्सै आप इतनें क्यों दबते हैं? " मास्टर शिंभूदयाल ने कहा.

" सच है मैं अपनी दौलत खर्च करता हूं इस्में उन्की गांठ का क्या जाता है? और वह बीच, बीच मैं बोलनेवाले कौन हैं? " लाला मदनमोहन तेज़ होकर कहनें लगे.

" इस्तरह पर हर बात मैं रोक टोक होनें सै बात का गुमर नहीं रहता; नोकरों को मुक़ाबला करनें का होसला बढ़ता जाता है और आगे चल कर कामकाज मैं फ़र्क़ आनें की सूरत हो चली है " मुनूशी चुन्नीलाल लै बढ़ानें लगे.

" मैं अब उन्सै हरगिज नहीं दबूंगा मैंनें अब तक दब, दब कर वृथा उन्को सिर चढ़ा लिया " लाला मदनमोहन नें प्रतिज्ञा की.

" जो वह झरनें के सरोवरों मैं अपना तैरना और तिबारी के ऊपर सै कलामुंडी खा खाकर कूदना देखैंगे तो फिर घंटों तक उन्का राग काहेको बन्द होगा? " पंडित पुरुषोत्तमदास बडो देर सै बोलनें के लिये उमाह रहे थे वह झट पट बोल उठे.

" उन्का वहां चलनें का क्या काम है ? उन्को चार दोस्तों मैं बैठ कर हंसनें बोलनें की आदतही नहीं है वह तो शाम सवेरे हवा खा लेते हैं और दिन भर अपनें काम मैं लगे रहते हैं या पुस्तकों के पत्रे उलट पुलट किया करते हैं ! वह संसारका सुख भोगनें के लिये पैदा नहीं हुए फिर उन्हें लेजाकर हम क्या अपना मज़ा मट्टी करैं ? " लाला मदनमोहन नें कहा.

" बरसात मैं तो वहां झूलों की बडी बहार रहती है " हकीम अहमदहुसैन बोले.

" परन्तु यह ऋतु झूलों की नहीं है आज कल तो होली की बहार है " पंडित पुरुषोत्तमदास नें जवाब दिया.

" अच्छा फिर कब चलनें की ठैरी और मैं कितनें दिन की रुख़सत ले आऊं " मास्टर शिंभूदयाल नें पूछा.

" वृथा देर करने सै क्या फ़ायदा है ? चलनाही ठैरा तो कल सवेरे यहां सै चलदैंगे और कम सै कम दस बारह दिन वहां रहैंगे " लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

लाला मदनमोहन केवल सैर के लिये कुतब नहीं जाते ऊपर सै यह केवल सैर का बहाना करते हैं परन्तु इन्के जी मैं अब तक हरकिशोर की धमकी का खटका बनरहा है मुन्शी चुन्नीलाल और बाबू बैजनाथ वग़ैरै नें इन्को हिम्मत बंधानें मैं कसर नहीं रक्खी परन्तु इन्का मन कमज़ोर है इस्सै इन्की छाती अब तक नहीं ठुकती यह इस अवसर पर दस पांच दिन के लिये यहां सै टलजाना अच्छा समझते हैं इन्का मन आज दिन भर बेचैन रहा है इसलिये और कुछ फ़ायदा हो या न हो यह अपना मन बहलानें के लिये, अपनें मनसै यह डरावनें विचार दूर करनें के लिये

दस पांच दिन यहां सै बाहर चले जाना अच्छा समझते हैं और इसी वास्तै ये झट पट दिल्ली सै बाहर जानें की तैयारी कर रहे हैं.

प्रकरण १७.

स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार.

जो कहुं सब प्राणीन सों होय सरलता भाव.
सब तीरथ अभिषेक ते ताको अधिक प्रभाव ÷

विदुरप्रजागरे.

लाला मदनमोन कुतब जानें की तैयारी कर रहे थे इतनें में लाला ब्रजकिशोर भी आपहुंचे.

÷ सर्वतीर्थेषु वा स्नानं सर्वभूतेषु चार्जवम् ॥
उभे त्वे ते समे स्याता मार्जवं वा विशिष्यते ॥

"आपनें लाला हरकिशोर का कुछ हाल सुना ?" ब्रजकिशोर के आते ही मदनमोहन नें पूछा.

"नहीं ! मैं तो कचहरी सै सीधा चला आया हूं"

"फिर आप नित्य तो घर होकर आते थे आज सीधे कैसे चले आए ?" मास्टर शिंभूदयाल नें सन्देह प्रगट करके कहा.

"इस्मैं कुछ दोष हुआ ? मुझको कचहरी मैं देर होगई थी इस्वास्तै सीधा चला आया तुम अपना मतलब कहो"

"मतलब तो आपका और मेरा लाला साहब खुद समझते होंगे परन्तु मुझको यह बात कुछ नई, नईसी मालूम होती है" मास्टर शिंभूदयाल नें सन्देह बढ़ानें के वास्तै कहा.

"सीधी बात को बे मतलब पहेली बनांना क्या ज़रूर है? जो कुछ कहना हो साफ़ कहो."

"अच्छा! सुनिये" लाला मदनमोहन कहनें लगे "लाला हरकिशोर के स्वभाव को तो आप जान्तेही हैं आपके और उन्के बीच बचपन सै झगडा चला आता है —"

"वह झगडा भी आपही की बदौलत है परन्तु खैर! इस्सम-य आप उस्का कुछ बिचार न करें अपना बृत्तान्त सुनायँ औरों के काम मैं अपनी निजकी बातोंका सम्बन्ध मिलाना बड़ी अनु-चित बात है?" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"अच्छा! आप हमारा बृत्तान्त सुनिये" लाला मदनमोहन कहनें लगे. "कई दिन सै लाला हरकिशोर रूठे रूठेसे रहते थे कल बेसबब हरगोविंद सै लड पडे उस्की जिद्दपर आप पांच, पांच रुपेके घाटेसै टोपियें देने लगे! शामको बाग़ मैं गए तो लाला हरदयाल साहब सै वृथा झगड पडे, आज यहां आए तो मुझको और चुन्नी लाल को सैंकडों कहनी न कहनी सुनागए!"

"बेसबब तो कोई बात नहीं होती आप इस्का अस्ली सबब बताइये? और लाला हरकिशोर पांच, पांच रुपेके घाटेपर प्रस-न्नता सै आपको टोपियां देते थे तो आपनें उनमैं सै दस पांच क्यों नही लेलीं? इन्मैं आप सै आप हरकिशोर पर पांच पच्चीस रुपे का जुर्माना होजाता" लाला ब्रजकिशोर नें मुस्करा कर कहा.

"तो क्या मैं हरकिशोर की जिदपर उस्की टोपियें लेलेता और दस बीस रुपेके वास्तै हरगोविंद को नीचा देखने देता? मैं हरगोविंद की भूल अपनें ऊपर लेनेंको तैयार हूं परंतु अपनें आश्रितुओं की ऐसी बेइज्ज़ती नहीं किया चाहता" लाला मदनमोहन नें ज़ोर देकर कहा.

"यह आप का झूंटा पक्षपात है" लाला ब्रजकिशोर स्वतन्त्रता सै कहनें लगे "पापी आप पाप करनें सै ही नहीं होता. पापियों की सहायता करनेंवाले, पापियों को उत्तेजन देनेंवाले, बहुत प्रकार के पापी होते हैं; कोई अपनें स्वार्थ सै, कोई अपराधी की मित्रता सै कोई औरोंकी शत्रुता सै, कोई अपराधी के संबंधियों की दया सै, कोई अपनें निजके संबंध सै, कोई खुशामद सै, महान् अपराधियों का पक्ष करनेंवाले बन जाते हैं परंतु वह सब पापी समझे जाते हैं और वह प्रगट मैं चाहे जैसे धर्मात्मा, दयालु, कोमल चित्त हों, भीतर सै वह भी बहुधा वैसे ही पापी और कुटिल होते हैं"

"तो क्या आप की राह मैं किसी की सहायता नहीं करनी चाहिये?" लाला मदनमोहन नें तेज़ होकर पूछा.

"नहीं, बुरे कामोंके लिये बुरे आदमियों की सहायता कभी नहीं करनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. "रशिया का शहन्शाह पीटर एक बार भरजवानी मैं ज्वर सै मरनें लायक़ हो गया था उस्समय उस्के वज़ीर नें पूछा कि "नो अपराधियों को अभी लूट, मार के कारण कठोरदंड दिया गया है क्या वह भी ईश्वर प्रार्थना के लिये छोड दिये जायँ?" पीटर नें निर्बल अवाज सै कहा "क्या तुम यह समझते हो कि इन अभागों को

क्षमा करनें और इन्साफ़ की राह मैं कांटे बोनें सै मैं कोई अच्छा काम करूंगा? और जो अभागे माया जाल मै फंसकर उस सर्व शक्तिमान ईश्वर कोही भूल गए हैं मेरे फायदे के लिये ईश्वर उन्की प्रार्थना अंगीकार करैगा? नहीं हरगिज़ नहीं; जो कोई काम मुझ से ईश्वर की प्रसन्नता लायक बन पड़े तो वह यही इन्साफ़ का शुभ काम है"

"मैं तो आप के कहनें से इन्साफ़ के लिये परमार्थ करना कभी नहीं छोड़ सक्ता" लाला मदनमोहन तमक कर कहनें लगे.

"जो जिस्के लिये करना चाहिये सो करना इंसाफ़ में आ गया परंतु स्वार्थ का काम परमार्थ कैसे हो सक्ता है? एक के लाभ के लिये दूसरों की अनुचित हानि परमार्थ मैं कैसै समझी जा सक्ती है? किसी तरह के स्वार्थ बिना केवल अपनें ऊपर परिश्रम उठा कर, आप दुःख सहकर, अपना मन मारकर औरों को सुखी करना सच्चा धर्म्म समझा जाता है जैसै यूनान मैं कोडर्स नामी बादशाह राज करता था उस्समय यूनानियों पर हेरेकडिली लोगों नें चढाई की. उस्समय के लोग ऐसे अवसर पर मंदिर मैं जाकर हार जीत का प्रश्न किया करते थे इसी तरह कोडर्सनें प्रश्न किया तब उसै यह उत्तर मिला कि "तू शत्रु के हाथ सै मारा जायगा तो तेरा राज स्वदेशियोंके हाथ बना रहेगा और तू जीता रहैगा तो शत्रु प्रबल होता जायगा" कोडर्स देशोपकार के लिये प्रसन्नता सै अपनें प्राण देनें को तैयार था परंतु कोडर्स के शत्रु को भी यह बात मालूम हो गई इस लिये उसनें अपनी सेनामैं हुक्म दे दिया कि कोडर्स को कोई न मारे. तथापि कोडर्स नें यह बात लोग दिखाईके लिये नहीं की थी इससै वह

साधारण सिपाही का भेष बना कर लड़ाई मैं लड़ मरा परन्तु अपने देशियों की स्वतन्त्रता शत्रुके हाथ न जानें दी."

"जब आप स्वतन्त्रता को ऐसा अच्छा पदार्थ समझते हैं तो आप लाला साहब को इच्छानुसार काम करनें सै रोककर क्यों पिंजरेका पंछी बनाया चाहते हैं ?" मास्टर शिंभूदयाल ने कहा.

"यह स्वतन्त्रता नहीं स्वेच्छाचार है; और इन्को एक समझनें सै लोग बारम्बार धोखा खाते हैं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "ईश्वर नें मनुष्यों को स्वतन्त्र बनाया है पर स्वेच्छाचारी नहीं बनाया क्योंकि उस्को प्रकृति के नियमों मैं अदलबदल करनें की कुछ शक्ति नहीं दी गई वह किसी पदार्थ की स्वाभाविक शक्ति मैं तिलभर घटा बढ़ी नहीं करसक्ता जिन पदार्थों मैं अलग, अलग रहनें अथवा रसायनिक संयोग होनें सै जो, जो शक्ति उत्पन्न होनें का नियम ईश्वर नें बना दिया है बुद्धि द्वारा उन पदार्थों की शक्ति पहचानकर केवल उन्सै लाभ लेनें के लिये मनुष्य को स्वतन्त्रता मिली है इसलिये जो काम ईश्वर के नियमानुसार स्वाधीन भाव सै किया जाय वह स्वतन्त्रता मैं समझा जाता है और जो काम उस्के नियमों के विपरीत स्वाधीन भाव सै किया जाय वह स्वेच्छाचार और उस्का स्पष्ट दृष्टांत यह है कि शतरंज के खेल मैं दोनों खिलाड़ियों को अपनी मर्ज़ी मूजब चाल चलनें की स्वतन्त्रता दी गई है परंतु वह लोग घोड़े को हाथी की चाल या हाथीको घोडे की चाल नहीं चल सक्ते और जो वे इस्तरह चलैं तो उन्का चलना शतरंज के

खेल सै अलग होकर स्वेच्छाचार समझा जायगा यह स्वेच्छाचार अत्यंत दूषित है और इस्का परिणाम महा भयङ्कर होता है इस लिये बर्तमान समय के अनुसार सब के फ़ायदे की बातों पर सत् शास्त्र और शिष्टाचार की एकता सै बरताव करना सच्ची स्वतन्त्रता है और बड़े लोगों नें स्वतन्त्रता की यह हद बांध दी है. मनुमहाराज कहते हैं "बिना सताए काहु के धीरे धर्म्म बटोर ॥ जों मृत्तिका दीमक हरत क्रम क्रमसों चहु ओर ॥ *" महाभारत कर्णपर्व मैं युधिष्ठिर और अर्जुन का बिगाड़ हुआ उस्समय श्रीकृष्णनें अर्जुन सै कहा है कि "धर्म्म ज्ञान अनुमानते अतिशय कठिन लखाय ॥ एक धर्म्म है बेद यह भाषत जनसमुदाय ॥ १ तामैं कछु संशय नहीं पर लख धर्म अपार ॥ स्पष्टकरन हित कहु कहूं पंडित करत बिचार ॥ २ जहां न पीडित होय कोउ सोसुधर्म्म निरधार ॥ हिंसक हिंसा हरनहित भयो सुधर्म्म प्रचार ३ † प्राणिनकों धारण करे ताते कहियत धर्म्म ॥ जासों जन रक्षित रहैं सो निश्चय शुभकर्म ॥ ४ जे जन परसंतोष हित करैं पाप शुभजान ॥ तिनसों

* धर्मं शनैः संचिनुयाद्वल्मीक मिव पुत्तिका ॥
परलोक सहायार्थं सर्व भूतान्य पीडयन् ॥

† दुष्करं परमं ज्ञानं तर्केणानु व्यवस्यति ॥
श्रुतेर्धर्म इतित्येके वदंति बहवोजनाः ॥ १
तत्तेन प्रत्यसूयामि नचसर्वं विधीयते ॥
प्रभवार्थाय भूतानां धर्म प्रवचनं कृतं ॥ २
यतस्यादहिंसा संयुक्तं सधर्मइति निश्चयः ॥
अहिंसार्थाय हिंस्राणां धर्म प्रवचनं कृतं ॥ ३

कबहुं न बोलिये श्रुति विरुद्ध पहिचान ॥ ५" × इसलिये दूसरेकी प्रसन्नता के हेतु अधर्म्म करनें का किसी को अधिकार नहीं है इसी तरह अपनें या औरों के लाभ के लिये दूसरे के वाजवी हकों मैं अन्तर डालनें का भी किसी को अधिकार नहीं है जिस्समय महाराज रामचन्द्रजी नें निर्दोष जनकनंदनी का परित्याग किया जानकीजी को कुछ थोड़ा दुःख था ? परंतु वह गर्भनाश के भय से अपना शरीर न छोड़ सकीं हां जिस्तरह उन्नें अकारण अत्यंत दुःख पानें पर भी कभी रघुनाथजी के दोष नहीं विचारे थे इस तरह सब प्राणियों को अपनें विषय मैं अपराधी के अपराध क्षमा करनें का पूरा अधिकार है और इस तरह अपनें निज के अपराधों का क्षमा करना मनुष्यमात्र के लिये अच्छे से अच्छा गुण समझा जाता है परंतु औरों को किसी तरह की अनुचित हानि हो वहां यह रीति काम मैं नहीं लाई जा सक्ती"

"मैं तो यह समझता हूं कि मुझ से एक मनुष्य का भी कुछ उपकार हो सके तो मेरा जन्म सफल है" लाला मदनमोहन नें कहा.

"जिस्मैं नामवरी आदि स्वार्थका कुछ अंश हो वह परोपकार नहीं और परोपकार करनें मैं भी किसी ख़ास मनुष्य का पक्ष किया जाय तो बहुधा उस्के पक्षपात से औरों की हानि होनें का डर रहता है इसलिये अशक्त अपाहजों का पालन पोषण करना,

+ धारणाद्धर्म मित्याहु धंर्मो धारयते प्रजा: ॥
यत्स्या द्धारण संयुक्तं सधर्मइति निश्चय: ॥ ४
येन्यायेन जिहीर्षंतो धर्म्ममिच्छंति कर्हिचित् ॥
अकूजनेन मोचं वा नानुकूजेत् वाय चन ॥ ५

इन्साफ़ का साथ देना और हर तरह का स्वार्थ छोडकर सर्व साधारण के हित मैं तत्पर रहना मेरे ज्ञान सच्चा परोपकार है" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

प्रकरण १८.

क्षमा.

नरको भूषण रूप है रूपहुको गुणजान ।
गुणको भूषण ज्ञान है क्षमा ज्ञान को मान ॥ १ ॥ ॐ

सुभाषित रत्नाकरे.

"आप चाहे स्वार्थ समझैं चाहे पक्षपात समझैं हरकिशोर नें तो मुझे ऐसा चिड़ाया है कि मैं उस्सै बदला लिये बिना कभी नहीं रहूंगा" लाला मदनमोहन नें गुस्से सै कहा.

"उस्का कसूर क्या है ? हरेक मनुष्य सै तीन तरह की हानि हो सक्ती है एक अपवाद करके दूसरे के यश मैं धब्बा लगाना, दूसरे शरीर की चोट, तीसरे माल का नुक्सान करना इन्मैं हरकिशोर नें आप की कौनसी हानि की?" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

लाला मदनमोहन के मन मैं यह बात निश्चय समा रही थी कि हरकिशोर नें कोई बड़ा भारी अपराध किया है परंतु ब्रजकिशोर नें तीन तरह के अपराध बताकर हरकिशोर का अपराध पूछा तब वह कुछ न बता सके क्योंकि मदनमोहन की वाक़फियत मैं ऐसा कोई अपराध हरकिशोर का न था. मदनमोहन

को लोगों नें आस्मान पर चढ़ा रक्खा था इसलिये केवल हरकिशोर के जवाब देनें सै उस्के मन मैं इतना गुस्सा भर रहा था.

"उस्नें बड़ी ढिटाई की वह अपनें रुपे तत्काल मांगनें लगा और रुपया लिये विना जानें सै साफ़ इन्कार किया" लाला मदनमोहन नें बड़ी देर सोच बिचार कर कहा.

"बस उस्का यही अपराध है ? इस्मैं तो उस्नें आप की कुछ हानि नहीं की मनुष्य को अपना सा जी सबका समझना चाहिये. आप का किसी पर रुपया लेना हो और आप को रुपे की ज़रूरत हो अथवा उस्की तरफ़ सै आप के जीमैं किसी तरहका शक आजाय अथवा आप के और उस्के दिल मैं किसी तरह का अन्तर आजाय तो क्या आप उस्सै व्यवहार बंद करनें के लिये अपनें रुपेका तक़ाज़ा न करेंगे ? जब ऐसी हालतों मैं आप को अपनें रुपे के लिये औरों पर तक़ाज़ा करनें का अधिकार है तो औरों को आप पर तक़ाज़ा करनें का अधिकार क्यों न होगा ? आप तो बेसबब ज़रा, ज़रासी बातों पर मुंह बनाएं, वाजबी राह सै ज़रासी बात दुलख देनें पर उस्को अपना शत्रु समझनें लगें और दूसरे को वाजबी बात कहनें का भी अधिकार न हो !" लाला ब्रजकिशोर नें ज़ोर देकर कहा.

"साहब ! उस्नें लाला साहब को तंग करनें की नीयत सै ऐसा तक़ाज़ा किया था" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

पेज १२४ * नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः ॥
गुणस्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभरणं क्षमा

"लाला साहब को उस्का स्वभाव पहचान्कर उस्सै व्यवहार डालना चाहिये था अथवा उस्का रुपया बाकी न रखना चाहिये था. जब उसका रुपया बाक़ी है तो उस्को तक़ाज़ा करनें का निस्संदेह अधिकार है और उस्नें कड़ा तक़ाज़ा करनें मैं कुछ अपराध भी किया हो तो उस्के पहले कामोंका संबंध मिलाना चाहिये" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. "प्रल्हादजीनें राजा बलिसैं कहा है "पहलो उपकारी करै जो कछु अतिशय हान ॥ तोहू ताकों छोड़िये पहले गुण अनुमान ॥ १ ॥ बिन समझे आश्रित करै सोऊ क्षमिये तात ॥ सब पुरुषनमैं सहज नहिं चतुराई की बात ॥ २ ॥" + यह सच है कि छोटे आदमी पहले उपकार करकै पीछे उसका बदला बहुधा अनुचित रीतिसे लिया चाहते हैं परंतु यहां तो कुछ ऐसा भी नहीं हुआ."

"उपकार हो या न हो ऐसे आदमियोंको उन्की करनी का दंड तो अवश्य मिलना चाहिये" मास्टर शिंभूदयाल कहनें लगे. जो उन्को उन्की करनीका दंड न मिलेगा तो उन्की देखा देखी और लोग बिगड़ते चले जायँगे और भय बिना किसी बातका प्रबंध न रह सकेगा सुधरे हुए लोगों का यह नियम है कि किसीको कोई नाहक न सतावै और सतावै तो दंड पावै. दंडका प्रयोजन किसी अपराधी सै बदला लेनेंका नहीं

+ पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराधगरीयसि ॥
उपकारेण तत्तस्य क्षंतव्य मपराधिन:
अबुद्धिमाश्रितानांतु क्षंतव्यमपराधिनां ॥
नहि सर्वत्र पांडित्यं सुलभं पुरुषेणवै

है बल्कि आगेके लिये और अपराधों सै लोगों को बचानें का है"

"इसी वास्तै मैं चाहता हूं कि मेरा चाहै जितना नुक्सान हो जाय परंतु हरकिशोर के पल्ले फूटी कौड़ी न पड़नें पावे" लाला मदनमोहन दांत पीसकर कहनें लगे.

"अच्छा! लाला साहबनें कहा इस रीति से क्या मास्टर साहब के कहनें का मतलब निकल आवैगा ?" लाला ब्रजकिशोर पूछनें लगे. "आप जान्ते हैं कि दंड दो तरह का है एक तो उचित रीति सै अपराधी को दंड दिवाकर औरोंके मनमैं अपराधकी अरुचि अथवा भय पैदा करना, दूसरे अपराधी सै अपना वैर लेना और अपनें जी का गुस्सा निकालना. जिस्नें झूंटी निंदा करके मेरी इज्जत ली उस्को उचित रीति सै दंड करानेंमैं मैं अपनें देशकी सेवा करता हूं परंतु मैं यह मार्ग छोड़कर केवल उस्की बरबादी का विचार करूं अथवा उस्का बैर उसके निर्दोष संबंधियों सै लिया चाहूं, आधीरात के समय चुपके सैं उस्के घर मैं आग लगा दूं और लोगों को दिखाने के लिये हाथ मैं पानी लेकर आग बुझानें जाऊं तो मेरी बराबर नीच कौन होगा ? बिदुरजी नें कहा है "सिद्ध होत बिनहू जतन मिथ्या मिश्रित काज। अकर्तब्यते स्वप्नहू मन न धरो महाराज ॥ १" ऐसी काररवाई करनेंवाला अपनें मन मैं प्रसन्न होता है कि मैंनें अपनें बैरीको दुखी किया परंतु वह आप महापापी बन्ता है और देश का पूरा नुक्सान करता है मनु महाराज नें कहा है "दुखित होय

१ मिथ्योपेतानि कर्माणि सिद्ध्रयुर्यानि भारत ॥
अनुपायप्रयुक्तानि मास्म तेषु मनः कृथाः ॥

भाखै न तौ मर्म बिभेदक बैन ॥ द्रोह भाव राखै न चित करै न परहि अचैन ॥ २"

जो अपराध केवल मन को सतानेंवाले हों और प्रगट मैं साबित न हो सकैं तो उन्का बदला दूसरे से कैसे लिया जाय ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"प्रथम तो ऐसा अपराध होही नहीं सक्ता और थोड़ा बहुत हो भी तो वह ख़याल करनें लायक़ नहीं है क्योंकि संदेह का लाभ सदा अपराधी को मिल्ता है इस्के सिवाय जब कोई अपराधी सच्चे मन सै अपनें अपराध का पछताव कर ले तो वह भी क्षमा करनें योग्य हो जाता है और उस्सै भी दंड देनें के बराबर ही नतीजा निकल आता है"

"पर एक अपराधी पर इतनी दया करनी क्या ज़रूर है ?" लाला मदनमोहन नें ताज्जुब सै पूछा.

"जब हम लोग सर्व शक्तिमान परमेश्वर के अत्यंत अपराधी होकर उस्सै क्षमा करानें की आशा रखते हैं तो क्या हम को अपनें निजके कामों के लिये, अपनें अधिकार के कामों के लिये, आगे की राह दुरुस्त हुए पीछें, अपराधी के मन मैं शिक्षा की बराबर पछतावा हुए पीछै, क्षमा करना अनुचित है ? यदि मनुष्यके मन मैं क्षमा ओर दया का लेश भी न हो तो उस्मैं और एक हिंसक जंतु मैं क्या अन्तर है ? पोप कहता है "भूल करना मनुष्य का स्वभाव है परंतु उस्को क्षमा करना ईश्वर का गुण है" ×

---

२ नारुन्तुद: स्यादार्तोंपि न परद्रोहकर्म्मधी: ॥

ययास्योद्विजते वाचा नालोक्यान्तमुदीरयेत् ॥

+ To err is human, to forgive divine.

एक अपराधी अपना कर्तव्य भूल जाय तो क्या उस्की देखा देखी हम को भी अपना कर्तव्य भूल जाना चाहिये सादीनें कहा है "होत हुमा याही लिये सब पक्षिन को राय ॥ अस्थिभक्ष रक्षे तनहि काहू कों न सताय ॥" * दूसरे का उपकार याद रखना वाजबी बात है परंतु अपकार याद रखनें मैं या यों कहो कि अपनें कलेजे का घाव हरा रखनें मैं कौन्सी तारीफ़ है? जो दैव योग सै किसी अपराधी को औरों के फ़ायदे के लिये दंड दिवानें की ज़रूरत हो तो भी अपनें मन मैं उस्की तरफ़ दया और करुणा ही रखनी चाहिये"

"ये सब बातें हँसी ख़ुशी मैं याद आती हैं क्रोध मैं बदला लिये बिना किसी तरह चित्त को सन्तोष नहीं होता" लाला मदनमोहन नें कहा.

"बदला लेनें का तो इस्सै अच्छा दूसरा रस्ता ही नहीं है कि वह अपकार करे और उस्के बदले आप उपकार करो" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जब वह अपनें अपराधों के बदले आप की महेरबानी देखेगा तो आप लज्जित होगा और उस्का मन ही उस्को धिःकारनें लगेगा. बैरी के लिये इस्सै कठोर दंड दूसरा नहीं है परंतु यह बात हर किसी सै नहीं हो सक्ती. तरह, तरह का दुःख, नुक्सान और निन्दा सहनें के लिये जितनें साहस, धैर्य और गंभीरता की जरूरत है बैरी सै बैर लेनें के लिये उन्की कुछ भी ज़रूरत नहीं होती. यह काम बहुत थोड़े आदमियों सैं बन पड़ता है पर जिनसै बन पड़ता है वही सच्चे धर्मात्मा हैं:—

* हुमाय बरसरे मुर्गां अज़ां शरफ़ दारद ॥
किउस्तुख्वां खुरदो तायरे नयाज़ारद ॥

"जिस्समय साइराक्यूज़वालों ने एथेन्स को जीत लिया साइराक्यूज़ की कौन्सिल मैं एथीनियन्स को सजा देनें की बाबत बिबाद होनें लगा इतनें मैं निकोलास नामी एक प्रसिद्ध गृहस्थ बुढ़ापे के कारण नौकरों के कंधेपर बैठकर वहां आया और कौन्सिल को समझाकर कहनें लगा "भाइयो ! मेरी ओर दृष्टि करो मैं वह अभागा बाप हूं जिस्की निस्बत ज्यादः नुक्सान इस लड़ाई मैं शायद ही किसी को हुआ होगा मेरे दो जवान बेटे इस लड़ाई मैं देशोपकार के लिये मारे गए उन्सै मानो मेरे सहारे की लकड़ी छिन गई, मेरे हाथ पांव टूट गए, जिन एथेन्सवालों नें यह लड़ाई की उन्को मैं अपनें पुत्रों के प्राणघातक समझ कर थोड़ा नहीं धिक्कारता तथापि मुझको अपनें निज के हानि लाभ के बदले अपनें देश की प्रतिष्ठा अधिक प्यारी है. बैरियों सै बदला लेनें के लिये जो कठार सलाह इस्समय हुई है वह अपनें देश के यश को सदा सर्बदा के लिए कलंकित कर देगी. क्या अपनें बैरियों को परमेश्वर की ओर सै कठिन दण्ड नहीं मिला ? क्या उन्को युद्ध मैं इस तरह हारनें सै अपना बदला नहीं भुगता ? क्या शत्रुओं नें अपनें प्राणरक्षा के भरोसे पर तुमको हथियार नहीं सोंपे ? और अब तुम उन्सै अपना बचन तोड़ोगे तो क्या तुम बिश्वासघाती न होगे ? जीतनें सै अबिनाशी यश नहीं मिल सक्ता परंतु जीते हुए शत्रुओं पर दया करनें सै सदा सर्बदा के लिये यश मिलता है" साइराक्यूज़ की कौन्सिल के चित्त पर निकोलास के कहनें का ऐसा असर हुआ कि सब एथीनियन्स तत्काल छोड़ दिये गए"

"आप जान्ते हैं कि शरीर के घाव औषधि सै रूज जाते हैं

परंतु दुखती बातों का घाव कलेजे पर सै किसी तरह नहीं मिटता" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"क्षमाशील के कलेजे पर ऐसा घाव क्यों होनें लगा है? वह अपनें मन मैं समझता है कि जो किसी नें मेरा सच्चा दोष कहा तो बुरे मान्नें की कौन्सी बात हुई? और मेरे मतलब को विना पहुंचे कहा तो नादान के कहनें सै बुरा माननें की कौन्सी बात रही? और जान बूझ कर मेरा जी दुखानें के वास्तै मेरी झूंटी निन्दा की तो मैं उचित रीति सै उस्को झूंटा डाल सक्ता हूं सज़ा दिवा सक्ता हूं फिर मन मैं द्वेष और प्रगट मैं गाली गलौज लड़नें की क्या ज़रूरत है? आप बुरा हो और लोग अच्छा कहैं इस्की निस्बत आप अच्छा हो और लोग बुरा कहैं यह बहुत अच्छा है" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

प्रकरण १६.

स्वतन्त्रता.

"स्तुति निन्दा कोऊ करहि लक्ष्मी रहहि कि जाय
मरै कि जियै न धीरजन धरैं कुमारग पाय ॥ *

प्रसंगरत्नावली.

"सच तो यह है कि आज लाला ब्रजकिशोर साहब नें बहुत अच्छी तरह भाईचारा निभाया इन्की बात चीत मैं यह बडी तारीफ़ है कि जैसा काम किया चाहते हैं वैसा ही असर सब के चित्त पर पैदा कर देते हैं" मास्टर शिंभूदयाल नें मुस्करा कर कहा.

"हरगिज़ नहीं हरगिज़ नहीं, मैं इन्साफ के मामले मैं भाईचारे को पास नहीं आनें देता जिस रीति सै बरतनें के लिये मैं और लोगों को सलाह देता हूं उस रीति सै बरतना मैं अपनें ऊपर फ़र्ज़ समझता हूं. कहना कुछ और, करना कुछ और नालायकों का काम है और सचाई की अमिट दलीलों को दलील करनेंवाले पर झूंटा दोषारोप करके उड़ा देनेंवाले और होते हैं,, लाला ब्रजकिशोर नें शेर की तरह गरज कर कहा और क्रोध के मारे उन्की आंखें लाल होगईं.

लाला ब्रजकिशोर अभी मदनमोहन को क्षमा करनें के लिये सलाह देरहे थे इतनें मैं एका एक शिंभूदयाल की ज़रासी बात

---

* निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदिवा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

पर गुस्से मैं कैसे भर गए? शिंभूदयाल नें तो कोई बात प्रगट मैं ब्रजकिशोर के अप्रसन्न होनें लायक़ नहीं कही थी? निस्सन्देह प्रगट मैं नहीं कही परन्तु भीतर सै ब्रजकिशोर का हृदय बिदीर्ण करनें के लिये यह साधारण बचन सबसै अधिक कठोर था. ब्रजकिशोर और सब बातों मैं निरभिमानी थे परन्तु अपनी ईमानदारी का अभिमान रखते थे इस लिये जब शिंभूदयाल नें उन्की ईमानदारी मैं बट्टा लगाया तब उन्को क्रोध आए बिना न रहा. ईमानदार मनुष्य को इतना खेद और किसी बात सै नहीं होता जितनां उस्को बेईमान बतानें सै होता है.

"आप क्रोध न करें. आप को यहां की बातों मैं अपना कुछ स्वार्थ नहीं है तो आप हरेक बात पर इतना ज़ोर क्यों देते हैं? क्या आप को ये सब बातें किसी को याद रह सक्ती हैं? और शुभचिन्तकी के विचार सै हानि लाभ जतानें के लिये क्या एक इशारा काफ़ी नहीं है?" मुन्शी चुन्नीलाल नें मास्टर शिंभूदयाल की तरफ़दारी करके कहा.

"मैंनें अबतक लाला साहब सै जो स्वार्थ की बात की होगी वह लाला साहब और तुम लोग जान्ते होंगे. जो इशारे मैं काम होसक्ता तो मुझको इतनें बढ़ा कर कहनें सै क्या लाभ था? मैंनें कही हैं वह सब बातें निस्सन्देह याद नहीं रह सक्तीं परन्तु मन लगा कर सुन्नें सै बहुधा उन्का मतलब याद रह सक्ता है और उससमय याद न भी रहै तो समय पर याद आ जाता है. मनुष्य के जन्म सै लेकर वर्तमान समय तक जिस, जिस हालत मैं वह रहता है उस सबका असर बिना जाने उस्की तबियत मैं बना रहता है इस वास्ते मैंनें ये बातें जुदे, जुदे अवसर पर यह

समझ कर कह दीं थीं कि अब कुछ फायदा न होगा तो आगे चल कर किसी समय काम आवेंगी" लाला ब्रजकिशोरने जवाब दिया.

"अपनी बातोंको आप अपने ही पास रहने दिजिये क्योंकि यहां इन्का कोई गाहक नहीं है" लाला मदनमोहन कहने लगे "आपके कहनेका आशय यह मालूम होता है कि आपके सिवाय सब लोग अनसमझ और स्वार्थपर हैं."

"मैं सबके लिये कुछ नहीं कहता परंतु आपके पास रहने वालों मैं तो निस्संदेह बहुत लोग नालायक़ और स्वार्थपर हैं" लाला ब्रजकिशोर कहने लगे "ये लोग दिनरात आपके पास बैठे रहते हैं, हरबात मैं आपकी बड़ाई किया करते हैं, हर काम मैं अपनी जान हथेली पर लिये फिरते हैं पर यह आपके नहीं; आपके रुपे के दोस्त हैं, परमेश्वर न करे जिस दिन आपके रुपे जाते रहैंगे इन्का कोसों पता न लगेगा. जो इज्ज़त दौलत, और अधिकार-के कारण मिल्ती है वह वह उस मनुष्य की नहीं होती. जो लोग रुपेके कारण आपको झुक, झुक कर सलाम करते हैं वही अपने घर बैठकर आपकी बुद्धिमानीका ठठ्ठा उडाते हैं! कोई काम पूरा नहीं होता जबतक उस्मैं अनेक प्रकारके नुक्सान होनेकी संभा-वना रहती है पूरे होने की उम्मेद पर दस काम उठाये जाते हैं जिन्मैं मुश्किल सै दो पूरे पड़ते हैं परंतु आपके पास वाले खाली उम्मेद पर बल्कि भीतरकी नाउम्मेदी पर भी आपको नफ़े का सब्ज़ बाग़ दिखा कर बहुतसा रुपया ख़र्च करा देते हैं! मैं पहले कह चुका हूं कि आदमी की पहचान जाहिरी बातों सै नहीं होती उस्के बरतावसै होती है. इन्मैं आपका सच्चा शुभचिंतक कौन

है ? आपके हानि लाभका दर्सानें वाला कौन है ? आपके हानि लाभ का बिचार करनें वाला कौन है ? क्या आपकी हांमैं हां मिलानै सै सब होगया ? मुझको तो आपके मुसाहिबोंमैं सिवाय मसख़रापनके और किसी बातकी लियाक़त नहीं मालूम होती कोई फबतियां कहकर इनाम पाता है, कोई छेड़छाड़कर गालियें खाता है, कोई गानें बजानें का रङ्ग जमाता है, कोई धोलधप्पे लड़कर, हंसता हंसाता है पर ऐसे आदमियोंसे किसी तरह की उम्मेद नहीं हो सक्ती"

"मेरी दिल्लगी की आदत है मुझसै तो हंसी दिल्लगी बिना रोती सूरत बना कर दिनभर नहीं रहा जाता परन्तु इन बातोंसै कामकी बातोंमैं कुछ अन्तर आया हो तो बताईये" लाला मदन-मोहननें पूछा.

"आपके पिताका परलोक हुआ जबसै आपकी पूंजीमैं क्या घटाबढ़ी हुई? कितनी रकम पैदा हुई ? कितनी अहंड हुई कितनी ग़लत हुई, कितनी ख़र्च हुई इनबातोंका किसीनें विचार किया है ? आमदनीसे अधिक ख़र्च करनें का क्या परिणाम है ? कौन्सा ख़र्च वाजबी है, कौन्सा ग़ैरवाजबी है, मामूली ख़र्चके बराबर बंधी आमदनी कैसे होसक्ती है ? इनबातों पर कोई दृष्टि पहुंचाता है ? मामूली आमदनी पर किसीकी निगाह है ? आमदनी देखकर मामूली ख़र्चके वास्ते हरेक सीगेका अन्दाजा पहलेसै कभी किया गया है, ग़ैर मामूली ख़र्चोंके वास्ते मामूली तौरपर सीगेवार कुछ रक़म हरसाल अलग रक्खी जाती है ? बिनाजानें नुक्सान, खर्च और आमदनी कमहोनेंके लिये कुछ रक़म हरसाल बचाकर अलग रक्खी जाती है ? पैदावार बढ़ानेंके लिये बर्तमान समयके

अनुसार अपनें बराबर वालों की काररवाई, देशदेशांतर का बृत्तान्त और होनहार बातों पर निगाह पहुंचाकर अपनें रोज़गार धंदेकी बातोंमैं कुछ उन्नति की जाती है ? व्यापारके तत्व क्या हैं. थोड़े ख़र्च, थोड़ी महनत और थोड़े समयमैं चीज तैयार होनेंसैकितना फ़ायदा होता है, इन बातोंपर किसीनें मन लगाया है ? उगाहीमैं कितनें रुपे लेनें हैं, पटनेंकी क्या सूरत है, देनदारों की कैसी दशा है, मयादके कितनें दिन बाक़ी है इन बातोंपर कोई ध्यान देता है ? व्योपार सिगाके मालपर कितनी रक़म लगती है, माल कितना मोजूद है किस्समय बेचनेंमैं फ़ायदा होगा इन बातों पर कोई निगाह दौड़ाता है ? खर्च सीगाके मालकी कभी विध मिलाई जाती है ? उस्की कमीबेशीके लिये कोई जिम्मेदार है ? नौकर कितनें हैं, तनख्वाह क्या पाते हैं, काम क्या करते हैं, उन्की लियाक़त कैसी है, नीयत कैसी है, काररवाई कैसी है, उन्की सेवाका आप पर क्या हक़ है, उन्के रखनें न रखनेंमैं आपका क्या नफ़ा नुक्सान है इनवातोंको कभी आपनें मन लगा कर सोचा है ?"

"मैं पहले ही जान्ता था कि आप हिर फिरकर मेरे पासके आदमियोंपर चोट करेंगे परन्तु अब मुझको यह बात असह्य है. मैं अपना नफ़ा नुक्सान समझता हूं आप इस बिषयमैं अधिक परिश्रम न करैं" लाला मदनमोहननें रोककर कहा.

"मैं क्या कहूंगा पहलेसै बुद्धिमान कहते चले आए हैं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "वलियम कूपर कहता है. :—

"जिन नृपनको शिशुकालसै सेवहिं छली तनमनदिये ॥
तिनकी दशा अबिलोक करुणाहोत अति मेरे हिये ॥

आजन्मसों अभिषेकलों मिथ्या प्रशंसा जनकरैं ॥
बहु भांत अस्तुति गाय, गाय सराहि सिर स्हेरा धरैं ॥
शिशुकालते सीखत सदा सजधज दिखावन लोक मैं ॥
तिनको जगावत मृत्यु बहुतिक दिनगए इहलोक मैं ॥
मिथ्या प्रशंसी बैठ घुटनन, जोड़कर, मुस्कावहीं ॥
छलकी सुहाती बातकहि पापहि धरम दरसावहीं ॥
छबिशालिनी, मृदुहासिनी अरुधनिक नितघेरैं रहैं ॥
झूंटी झलक दरसाय मनहि लुभाय कछु दिनमैं लहैं ॥
जे हेम चित्रित रथन चढ़, चंचल तुरंग भजावहीं ॥
सेना निरख अभिमानकर, यों व्यर्थ दिवस गमावहीं ॥
'तिनकी दशा अबिलोक भाखत फेरहूं मनदुख लिये ॥
नृपकी अधमगति देख 'करुणा होत अति मेरे हिये' ॥" *

"लाला साहब अपनें सरल स्वभाव सै कुछ नहीं कहते इस वास्ते आप चाहे जो कहते चले जांय परन्तु कोई तेज़ स्वभाव का मनुष्य होता तो आप इक तरह हर्गिज न कहनें पाते" मास्टर शिंभूदयाल नें अपनी ज़ात दिखाई.

---

* I pity kings whom worship waits upon,
Obsequious from the cradle to the throne;
Before whose infant eyes the flatterer bows.
And binds a wreath about their baby brows;
Whom education stiffens into state,
And death awakens from that dream too late.
Oh ! if servility with supple knees,
Whose trade it is to smile, to crouch, to please;
If smooth dissimulation, skill'd to grace,
A devil's purpose with an angel's face;

"सच है ! विदुरजी कहते हैं "दयावन्त लज्जा सहित मृदु अरु सरल सुभाई ॥ ता नर को असमर्थ गिन लेत कुबुद्धि दबाइ ॥+" इस लिये इन गुणोंके साथ सावधानी की बहुत ज़रूरत है सादगी और सीधेपन से रहनें मैं मनुष्यकी सच्ची अशराफ़त मालूम होती है मनुष्य की उन्नति का यह सीधा मार्ग है परन्तु चालाक आदमियोंकी चालाकी से बचनें के लिये हर तरह की वाक़फ़ियत भी ज़रूर होनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया,

"दोषदर्शी मनुष्यों के लिये सब बातों मैं दोष मिल सक्ते हैं क्योंकि लाला साहबके सरल स्वभाव की बड़ाई सब संसार मैं हो रही है परन्तु लाला ब्रजकिशोर को उस्मैं भी दोष ही दिखाई दिया !" पंडित पुरुषोत्तमदास बोले.

"द्रव्य के लाल्चियों की बड़ाई पर मैं क्या विश्वास करूं ?

If smiling peeresses, and simp'ring peers,
Encompassing his throne a few short years;
If the gilt carriage, and the pamper'd steed,
That wants no driving, and disdains the lead ;
If guards, mechanically form'd in ranks,
Playing, at beat of drum, their martial pranks,
Should'ring and standing as if stuck to stone,
While condescending majesty looks on—
If monarchy consist in such base things,
Sighing I say again, I pity kings, !

William Cowper.

+ आर्जवन नरं युक्त मार्जवात् सव्यपत्रपम् ॥
अशक्तं मन्यमानास्तु धर्षयन्ति कुबुद्धय: ॥

बिदुरजी कहते हैं कि "जाहि सराहत हैं सब ज्वारी। जाहि सराहत चंचल नारी॥ जाहि सराहत भाट वृथा ही। मानहु सो नर जीवत नाही॥‡" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"मैं अच्छा हुं या बुरा हूं आपका क्या लेता हूं? आप क्यों हात धोकर मेरे पीछे पड़े हैं? आपको मेरी रीति भांति अच्छी नहीं लगती तो आप मेरे पास न आंय" लाला मदनमोहन नें बिगड़ कर कहा.

"मैं आपका शत्रु नहीं; मित्र हूं परन्तु आपको ऐसा ही जचता है तो अब मैं भी आपको अधिक परिश्रम नहीं दिया चाहता मेरी इतनी ही लालसा है कि आपके बड़ों की बदौलत मैंनें जो कुछ पाया है वह मैं आपकी भेट करता जाऊं" लाला ब्रजकिशोर लायक़ी सै कहनें लगे "मैंनें आपके बड़ोंकी कृपा से बिद्या धन पाया है जिस्का बड़ा हिस्सा मैं आपके सन्मुख रख चुका तथापि जो कुछ बाकी रहा है उस्को आप कृपा करके और अंगीकार कर लें. मैं चाहता हूं कि मुझसै आप भले ही अप्रसन्न रहें मुझको हरगिज़ अपनें पास न रक्खें परन्तु आपका मंगल हो. यदि इस बिगाड़ सै आपका कुछ मंगल होता हो तो मैं इसै ईश्वर की कृपा समझूंगा. आप मेरे दोषोंकी ओर दृष्टि न दें मेरी थोथी बातों मैं जो कुछ गुण निकल्ता हो उसे ग्रहण करें. हज़रत सादी कहते हैं "भींत लिख्यो उपदेशजु कोऊ॥ सादर ग्रहण कीजिये सोऊ॥+" इस लिये आप स्वपक्ष और बिपक्ष का

‡ यं प्रशंसन्ति कितव: यं प्रशंसन्ति चारणा: ॥
यं प्रशंसन्ति बन्धक्यो न सजीवति मानव: ॥

+ मर्द्दं बायद कि गीरद अन्दरगोश ॥
बर नविश्तस्द पन्दबर दीवार

विचार छोड़ कर गुण संग्रह करनें पर दृष्टि रक्खैं. आपका बरताव अच्छा होगा तो मैं क्या हूं ? बड़े, बड़े लायक़ आदमी आपको सहज मैं मिल जायँगे परन्तु आपका बरताव अच्छा न हुआ तो जो होंगे वह भी जाते रहैंगे. एक छोटेसे पखेरू की क्या है ? जहां रात हो जाय वहीं उस्का रैन बसेरा हो सक्ता है परन्तु वह फलदार बृक्ष सदा हरा भरा रहना चाहिये जिस्के आश्रय बहुत से पक्षी जीते हों"

"बहुत कहनें से क्या है ? आपको हमसै संबन्ध रखना हो तो हमारी मर्ज़ी के मूजिब बरताव रक्खो नहीं तो अपना रस्ता लो हमसै अब आपके तानें नहीं सहे जाते लाला मदन-मोहन नें ब्रजकिशोर को नरम देख कर ज्यादः दबानें की तजबीज़ की.

"बहुत अच्छा ! मैं जाता हूं बहुत लोग जाहरी इज्ज़त बनानें के लिये भीतरी इज्ज़त खो बैठते हैं परन्तु मैं उन्मैंका नहीं हू तुल-सीकृतरामायण मैं रघुनाथजीनें कहा है "जो हम निदरहि बिप्र-बद्ध सत्यसुनहु भृगुनाथ ॥ तो अस को जग सुभटतिहिं भय बस नावहिं मांथ ॥" सोई प्रसंग इस्समय मेरे लिये बर्तमान है. एथेन्समैं जिन दिनों तीस अन्याइयोंकी कौन्सिल का अधिकार था एकबार कौन्सिलनें सेक्रिटीज़ को बुलाकर हुक्मदिया कि तुम लिओं नामी धनवान को पकड़लाओ जिस्सै उस्का माल ज़प्त किया जाय" सेक्रिटीज़नें जबाब दिया कि "एक अनुचित काममैं मैं अपनी प्रसन्नतासै कभी सहायता न करूंगा" कौन्सि-लके प्रेसिडन्टनें धमकी दी कि "तुम को आज्ञा उल्लंघन करनेके कारण कठोर दंड मिलेगा" सेक्रिटीज़नें कहा कि "यह तो मैं

पहलेही सैं जान्ता हूं परन्तु मेरे निकट अनुचित काम करनेके बराबर कोई कठोर दंड नहीं है" लाला ब्रजकिशोर बोले.

"जब आप हमको छोड़नेहीका पक्का बिचार कर चुके तो फिर इतना बादाविवाद करने सै क्या लाभ है? हमारे प्रारब्धमैं होगा वह हम भुगतलेंगे, आप अधिक परिश्रम न करैं" लाला मदनमोहनने त्योरी बदल कर कहा.

"अब मै जाता हूं ईश्वर आपका मंगल करे. बहुत दिन पास रहनेके कारण जाने बिना जाने अवतक जो अपराध हुए हों वह क्षमा करना" यह कह कर लाला ब्रजकिशोर तत्काल अपने मकानको चले गए.

लाला ब्रजकिशोरके गए पीछे मदनमोहनके जीमैं कुछ, कुछ पछतावासा हुआ वह समझे कि "मैं अपने हटसै आज एक लायक़ आदमीको खो बैठा परन्तु अब क्या? अब तो जो होना था हो चुका. इस्समय हार मान्नेसै सबके आगे लज्जित होना पड़ेगा और इस्समय ब्रजकिशोरके बिना कुछ हर्ज भी नहीं, हां ब्रजकिशोरनें हरकिशोरको सहायता दी तो कैसी होगी? क्या करैं? हमको लज्जित होना न पड़े और सफाई की कोई राह निकल आवे तो अच्छा हो" लाला मदनमोहन इसी सोच विचार मै बड़ी देर बैठे रहे परन्तु मनकी निर्बलता सै कोई बात निश्चय न कर सके.

प्रकरण २०

कृतज्ञता.

तृणहु उतारे जनगनत कोटि मुहर उपकार
प्राण दियेहू दुष्टजन करत बैर व्यवहार ॥ +

भोजप्रबंधसार.

लाला ब्रजकिशोर मदनमोहन के पास सै उठकर घर को जानें लगे उस्समय उन्का मन मदनमोहन की दशा देखकर दुःख सै बिबस हुआ जाता था वह बारम्बार सोचते थे कि मदनमोहन नें केवल अपना ही नुक्सान नहीं किया. अपनें बाल बच्चों का हक़ भी डबो दिया मदनमोहन नें केवल अपनी पूंजी ही नहीं खोई अपनें ऊपर क़र्ज़ भी कर लिया.

भला ! लाला मदनमोहनको क़र्ज़ करनेंकी क्या ज़रूरत थी? जो यह पहलै ही सै प्रबंध करनें की रीति जान्कर तत्काल अपनें आमद ख़र्च का बंदोबस्त कर लेते को इन्को क्या ? इन्के बेटे पोतों को भी तंगी उठानें की कुछ ज़रूरत न थी. मैं आप तकलीफ़ सै रहनें को, निर्लज्जता सै रहनें को, बदइन्तज़ामी सै रहनें को, अथवा किसी हक़दार के हक़ मैं कमी करनें को पसंद नहीं करता, परंतु इन्को तो इन बातों के लिये उद्योग करनें की भी कुछ ज़रूरत न थी यह तो अपनी आमदनी का बंदोबस्त

+ सन्त स्तृणोत्तारणमुत्तमांगात् सुवर्णकोट्यर्पणमामनन्ति ॥
प्राणव्ययेनापि कृतोपकाराः खलाः परम्वैरमिवोद्वहन्ति ॥

करके असल पूंजी के हाथ लगाए बिना अमीरी ठाठ सै उमरभर चैन कर सक्ते थे. बिदुरजी नें कहा है "फल अपक्क जो बृक्ष ते तोर लेत नर कोय ॥ फल को रस पावै नहीं नास बीजको होय ॥ नासबीज को होय यहै निज चित्त बिचारै ॥ पके, पके फललेइ समय परिपाक निहारै ॥ पके, पके फललेइ स्वाद रस लहै बुद्धिबल ॥ फलते पावै बीज, बीजते होइ बहुरिफल ॥ †" यह उपदेश सब नीतिका सार है परन्तु जहां मालिक को अनुभव न हो, निकटवर्ती स्वार्थपर हों वहां यह बात कैसे हो सक्ती है? "जैसे माली बाग को राखत हितचित चाहि ॥ तैसै जो कोला करत कहा दरद है ताहि? ॥"

लाला मदनमोहन अबतक क़र्ज़दारी की दुर्दशा का वृत्तान्त नहीं जान्ते.

जिस्समय क़र्ज़दार वादे पर रुपया नहीं दे सक्ता उसी समय सै लेनदार को अपनें क़र्ज़ के अनुसार क़र्ज़दार की जायदाद और स्वतन्त्रता पर अधिकार हो जाता है. वह क़र्ज़दार को कठोर से कठोर वाक्य "बेईमान" कह सक्ता है, रस्ता चल्ते मैं उस्का हाथ पकड़ सक्ता है. यह कैसी लज्जा की बात है कि एक मनुष्य को देखते ही डर के मारे छाती धड़कनें लगे और शर्म के मारे आंखें नीची हो जायं, सब लोग लाला मदनमोहन की तरह फ़िज़ूल ख़र्ची और झूंठी ठसक दिखानें मैं बरबाद नहीं होते सौ

---

† वनस्पतेरपक्वानि फलानिप्रचिनोति यः ॥
सनाप्नोति रसं तेभ्यो बीजं चास्य विनश्यति
यस्तु पक्वमुपादत्ते काले परिणतं बलं ॥
फलाद्रसं सलभते बीज च्चैव फलं पुनः ॥

मैं दो, एक समझवार भी किसी का काम बिगड़ जानें सै, या किसी की जामनी कर दे़नें सै या किसी और उचित कारण सै इस आफ़त मैं फंस जाते हैं परंतु बहुधा लोग अमीरों कीसी ठसक दिखानें मैं और अपनें बूते सै बढ़कर चलनें मैं क़र्ज़दार होते हैं.

क़र्ज़दारी मैं सबसै बड़ा दोष यह है कि जो मनुष्य धर्मात्मा होता है वह भी क़र्ज़ मैं फंसकर लाचारी सै अधर्म्म की राह चलनें लगता है. जब सै कर्ज़ लेनें की इच्छा होती है तब ही सै कर्ज़ लेनेंवाले को ललचानें, और अपनी साहूकारी दिखानें के लिये तरह, तरह की बनावट की जाती है. एकबार क़र्ज़ लिये पीछे क़र्ज़ लेनें का चस्का पड़ जाता है और समय पर कर्ज़ नहीं चुका सका तब लेनदार को धीर्य देनें और उस्की दृष्टि मैं साहूकार दीखनें के लिये ज्यादा: ज्यादा: क़र्ज़ मैं जकड़ता जाता है और लेनदार का कड़ा तकाज़ा हुआ तो उस्का क़र्ज़ चुकानें के लिये अधर्म्म करनें की भी रुचि हो जाती है कर्ज़दार झूंट बोलनें सै नहीं डरता और झूंट बोले पीछे उस्की साख नहीं रहती वह अपनें बाल बच्चों के हक़ मैं दुश्मन सै अधिक बुराई करता है. मित्रों को तरह, तरह की जोखों मैं फंसाता है अपनी घड़ी भर की मौज के लिये आप जन्मभर के बंधन मैं पड़ता है और अपनी अनुचित इच्छा को सजीवन करनें के लिये आप मर मिटता है.

बहुत सै अविचारी लोग क़र्ज़ चुकानें की अपेक्षा उदारता को अधिक समझते हैं इस्का कारण यह है कि उदारता सै यश मिल्ता है, लोग जगह, जगह उदार मनुष्य की बड़ाई करते फिरते

हैं परंतु क़र्ज़ चुकाना केवल इन्साफ़ है इसलिये उस्की तारीफ़ कोई नहीं करता इन्साफ़ को लोग साधारण नेकी समझते हैं इस कारण उस्की निस्वत उदारता की ज्याद: क़द्र करते हैं जो बहुधा स्वभाव की तेज़ी और अभिमान सै प्रगट होती है परंतु बुद्धिमानी सै कुछ संबंध नहीं रखती किसी उदार मनुष्य सै उस्का नौकर जाकर कहै कि फ़लाना लेनदार अपनें रुपेका तकाज़ा करनें आया है और आप के फ़लानें ग़रीब मित्र अपनें निर्बाह के लिये आप की सहायता चाहते हैं.तो वह उदार मनुष्य तत्काल कह देगा कि लेनदार को टाल दो और उस ग़रीब को रुपे देदो क्योंकि लेनदार का क्या ? वह तो अपनें लेनें लेता इस्के देनें सै वाह वाह होगी.

परंतु इन्साफ़ का अर्थ लोग अच्छी तरह नहीं समझते क्योंकि जिस्के लिये जो करना चाहिये वह करना इन्साफ़ है इसलिये इन्साफ़ मैं सब नेकियें आगईं इन्साफ़ का काम वह है जिस्मैं ईश्वर की तरफ़ का कर्तव्य, संसार की तरफ़ का कर्तव्य, और अपनी आत्मा की तरफ़ का कर्तव्य अच्छी तरह सम्पन्न होता हो. इन्साफ़ सब नेकियों की जड़ है और सब नेकियां उस्की शाख़ा प्रशाखा हैं इन्साफ़ की सहायता बिना कोई बात मध्यम भाव सै न होगी तो सरलता अविवेक, बहादरी दुराग्रह, परोपकार अन्समझी और उदारता फिज़ूलखर्ची हो जायँगीं.

कोई स्वार्थ रहित काम इन्साफ़ के साथ न किया जाय तो उस्की सूरत ही बदल जाती हैं और उस्का परिणाम बहुधा भयंकर होता है. सिवाय की रकम मैं सै अच्छे कामों मैं लगाए

पीछै कुछ रुपया बचै और वो निर्दोष दिल्लगी की बातों मैं ख़र्च कियाजाय तो उस्को कोई अनुचित नहीं बता सक्ता परन्तु कर्तव्य कामों को अटका कर दिल्लगी की बातों मैं रुपया या समय ख़र्च करना कभी अच्छा नहीं हो सक्ता. अपनें बूते मूजब उचित रीति सै औरों की सहायता करनी मनुष्य का फ़र्ज़ है परन्तु इस्का यह अर्थ नहीं है कि अपनें मन की अनुचित इच्छाओं को पूरी करनें का उपाय करै अथवा ऐसी उदारता पर कमर बांधे कि आगै को अपना कर्तव्य संपादन करनें के लिये और किसी अच्छे काम मैं ख़र्च करनें के लिये अपनें पास फूटी कौड़ी न बचे बल्कि सिवाय मैं क़र्ज़ होजाय.

अफ़सोस! लाला मदनमोहन की इस्समय ऐसी ही दशा हो रही है. इन्पर चारों तरफ़ सै आफत के बादल उमड़े चले आते हैं परन्तु इन्हें कुछ ख़बर नहीं है बिदुरजी नें सच कहा है:—

"बुद्धिभ्रंशते लहत बिनासहि ॥ ताहि अनीति नीतिसी भासहि ॥+"

इस तरह सै अनेक प्रकार के सोच बिचार मैं डूबे हुए लाला ब्रजकिशोर अपनें मकान पर पहुंचे परन्तु उन्के चित्त को किसी बात सै ज़रा भी धैर्य न हुआ.

लाला ब्रजकिशोर कठिन सै कठिन समय मैं अपनें मन को स्थिर रख सक्ते थे परंतु इस्समय उन्का चित्त ठिकानें न था उन्नें यह काम अच्छा किया कि बुरा किया? इस बात का निश्चय वह आप नहीं कर सक्ते थे वह कहते थे कि इस दशा मैं मदन-मोहन का काम बहुत दिन नहीं चलेगा और उस्समय ये सब

+ बुद्धौ कलुषभूतायां बिनाशे प्रत्युपस्थिते ॥
अनयो नयसंकाशो हृदयान्नापसर्पति ॥

रुपे के मित्र मदनमोहन को छोड़कर अपनें, अपनें रस्ते लगेंगे परंतु मैं क्या करूं ? मुझको कोई रस्ता नहीं दिखाई देता और इस्समय मुझ सै मदनमोहन की कुछ सहायता न हो सकी तो मैंनें संसार मैं जन्म लेकर क्या किया ?

फ्रान्स के चौथे हेन्री नें डी ला ट्रेमाइल को देशनिकाला दिया था और काउन्ट डी आविग्नी उस्सै मेल रखता था इस्पर एक दिन चौथे हेन्री नें डी आविग्नी सै कहा कि "तुम अबतक डी ला ट्रेमाइल की मित्रता कैसे नहीं छोडते"? डी आविग्नी नें जवाब दिया कि "मैं ऐसी हालत मैं उस्की मित्रता नहीं छोड सक्ता क्योंकि मेरी मित्रता के उपयोग करनें का काम तो उस्को अभी पडा है."

पृथ्वीराज महोबेकी लड़ाई मैं बहुत घायल होकर मुर्दों के शामिल पडे थे और संजमराय भी उन्के बराबर उसी दशा मैं पडा था. उस्समय एक गिद्ध आके पृथ्वीराज की आंख निकालनें लगा पृथ्वीराजको उसके रोकनेंकी सामर्थ्य न थी इसपर संजमराय पृथ्वीराजको बचानेंके लिये अपनें शरीर का मांस काट, काट कर गिद्धके आगे फैंकनें लगा जिस्सै पृथ्वीराजकी आंखैं बच गईं और थोडी देरमैं चन्द वगैरे आ पहुंचे.

हेन्री रिचमन्ड पीटरके भयसै ब्रीटनी छोड कर फ्रान्सको भागनें लगा उस्समय उस्के सेवक सीमारनें उस्के वस्त्र पहन कर उस्की जोखों अपनें सिर ली और उस्को साफ निकाल दिया.

क्या इस्तरहसै मैं मदनमोहन की कुछ सहायता इस्समय नहीं कर सक्ता ! यदि इस काममैं मेरी जान भी जाती रहै तो

कुछ चिन्ता नहीं जब मैं उन्को अनसमझ जान कर उन्के कहनें सै उन्हैं छोड आया तो मैंनें कौन्सी बुद्धिमानी की? पर मैं रह कर क्या करता? हां मैं हां मिला कर रहना रोगी को कुपथ्य देनें सै कम न था और ऐसे अवसर पर उन्का नुक्सान देख कर चुप हो रहना भी स्वार्थ परता सै क्या कम था? मेरा बिचार सदैव सै यह रहता है कि काम करना तो बिधी पूर्बक करना. न होसके तो चुप हो रहना, बेगार तक को बेगार न समझना परन्तु वहां तो मेरे वाजबी कहनें सै उल्टा असर होता था और दिनपर दिन जिद् बढ़ती जाती थी मैंनें बहुत धैर्य सै उन्को राह पर लानें के अनेक उपाय किये पर उन्नें किसी हालत मैं अपनी हद्द सै आगै बढ़ना मंजूर न किया.

असल तो ये है कि अब मदनमोहन बच्चे नहीं रहे उन्की उम्र पक गई, किसीका दबाव उन्पर नहीं रहा लोगोंनें हां मैं हां मिला कर उन्की भूलों को और द्रढ कर दिया रुपे के कारण उन्को अपनी भूलों का फल न मिला और संसारके दुःख सुखका अनुभव भी न होनें पाया बस रंग पक्का होगया बिदुरजी कहते हैं कि "सन्त असन्त तपस्वी चोर। पापी सुकृती हृदय कठोर॥ तैसो होय बसे जिहि संग। जैसो होत बसन मिल रंग॥" *

यदि वह सावधान हों तो अंगद हनुमान की तरह उन्की आज्ञा पालन करनें मैं सब कर्तव्य संपादन हो जाते हैं परन्तु जहां ऐसा नहीं होता वहां बड़ी कठिनाई पड़ती है. सकड़ी गली मैं हाथी नहीं चल्ता तब महावत कूद़ बाजता है वृन्द कहता है

* यदि सन्तं सेवति यद्यसन्तं तपस्विनं यदि वा स्तनमेव॥
वासो यथा रंगवशं प्रयाति तथा सतेषां वशमभ्युपैति॥

कि "ताकों त्यों समझाइये जो समझे जिहिं बानि ॥ बैन कहत मग अन्धकों अरु बहरेको पानि ॥" जिस तरह सुग्रीव भोग बिलास मैं फंस गया तब रघुनाथजी केवल उस्को धमकी देकर राह पर ले आए थे इस तरह लाला मदनमोहन के लिये क्या कोई उपाय नहीं होसक्ता ? हे जगदीश ! इस कठिन काम मैं तूं मेरी सहायता कर.

लाला ब्रजकिशोर इन्बातों के विचार मैं ऐसे डूबे हुए थे कि उन्को अपना देहानुसन्धान न था. एक बार वह सहसा कलम उठा कर कुछ लिखने लगे ओर किसी जगह को पूरा महसूल देकर एक ज़रूरी तार तत्काल भेज दिया. परन्तु फिर उन्हीं बातों के सोच विचार मैं मग्न होगए. इस्समय उन्के मुखसै अनायास कोई, कोई शब्द बेजोड़ निकल जाते थे जिन्का अर्थ कुछ समझ मैं नहीं आता था. एक बार उन्नें कहा "तुलसीदासजी सच कहते हैं "षट्रस बहु प्रकार ब्यंजन कोउ दिन अरु रैन बखानें ॥ बिन बोले सन्तोष जनित सुख खाय सोई पै जानें ॥" थोड़ी देर पीछै कहा "मुझको इस्समय इस वचन पर बरताव रखना पड़ेगा (बृन्द) झूंटहु ऐसो बोलिये सांच बराबर होय ॥ जो अंगुरी सों भीत पर चन्द्र दिखावे कोए ॥" परन्तु पानी जैसा दूध सै मिल जाता है तेल सै नहीं मिल्ता. विक्रमोर्वशी नाटक मैं उर्वशी के मुख सै सच्ची प्रीति के कारण पुरुषोत्तम की जगह पुरूरवा का नाम निकल गया था इसी तरह मेरे मुख सै कुछका कुछ निकल गया तो क्या होगा ? थोड़ी देर पीछै कहा "लोक निन्दा सै डरना तो बृथा है जब वह लोग जगत जननी जनक नन्दिनी की झूंटी निन्दा किये बिना नहीं रहे ! श्रीकृष्णचन्द्र को जाति वालों के अपवाद

का उपाय नारदजी सै पूछना पड़ा ! तो हम जैसे तुच्छ मनुष्यों की क्या गिन्ती है ? सादीनें लिखा है "एक विद्वान सै पूछा गया था कि कोई मनुष्य ऐसा होगा जो किसी रूपवान सुन्दरी के साथ एकांत मैं बैठा हो दरवाज़ा बन्द हो, पहरे वाला सोता हो मन ललचा रहा हो काम प्रबल हो + + और वह अपनें शम दम के बल सै निर्दोष बच सकै ?" उसनें कहा कि "हां वह रूपवान सुन्दरी सै बच सक्ता है परन्तु निन्दकों की निन्दासै नहीं बच सक्ता" फिर लोक निन्दा के भय सै अपना कर्तव्य न करना बड़ी भूल है धर्म्म औरों के लिये नहीं अपनें लिये और अपनें लिये भी फल की इच्छा सै नहीं, अपना कर्तव्य पूरा करनें के लिये करना चाहिये परन्तु धर्म्म अधर्म होजाय, नेकी करते बुराई पल्ले पड़े, औरों को निकालती बार आप गोता खाने लगें तो कैसा हो ? रुपेका लालच बड़ा प्रबल है और निर्धनोंको तो उन्के काम निकालनें की चाबी होनें के कारण बहुत ही ललचाता है" थोड़ी देर पीछै कहा "हलधरदास नें कहा है "बिन काले मुख नहिं पलाश को अरुणाई है ॥ बिन बूड़े न समुद्र काहु मुक्ता पाई है ॥ इसी तरह गोल्ड स्मिथ कहता है कि "साहस किये बिना अलभ्य वस्तु हाथ नहीं लग सक्ती" इसलिये ऐसे साहसी कामों मैं अपनी नीयत अच्छी रखनी चाहिये यदि अपनी नीयत अच्छी होगी तो ईश्वर अवश्य सहायता करैगा और डूब भी जाँयगे तो अपनी स्वरूप हानि न होगी."

प्रकरण २१.

पतिव्रता.

पतिके संग जीवन मरण पति हर्षे हर्षाय
स्नेहमई कुलनारि की उपमा लखी न जाय †

शारंगधरे.

लाला ब्रजकिशोर न जानें कब तक इसी भँवर जाल मैं फंसे रहते परन्तु मदनमोहन की पतिव्रता स्त्री के पास सै उस्के दो नन्हें, नन्हें बच्चों को लेकर एक बुढ़िया आ पहुंची इस्सै ब्रजकिशोर का ध्यान बट गया.

उन बालकों की आंखों मैं नींद घुलरही थी उन्को आतेही ब्रजकिशोर नें बड़े प्यार सै अपनी गोद मैं बिठा लिया और बुढिया सै कहा "इन्को इस्समय क्यों हैरान किया? देख इन्की आंखों मैं नींद घुल रही है जिस्सै ऐसा मालूम होता है कि मानो यह भी अपनें बाप के काम काज की निर्बल अवस्था देखकर उदास हो रहे हैं" उन्को छाती सै लगा कर कहा "शाबास! बेटे शाबास! तुम अपनें बाप की भूल नहीं समझते तोभी उदास मालूम होते हो परन्तु वह सब कुछ समझता है तोभी तुम्हारी हानि लाभ का कुछ बिचार नहीं करता झूंटी ज़िद अथवा हठधर्मी सै तुम्हारा वाजबी हक़ खोए देता है तुम्हारे बाप को लोग बड़ा

† जीवति जीवति नाथे मृतेमृता या मुदायुता मुदिते ॥
सहजस्नेह रसाला कुलबनिता केन तुल्यास्यात् ॥

उदार और दयालु बताते हैं परन्तु वह कैसा कठोर चित्त है कि अपनें गुलाब जैसे कोमल, और गंगाजल जैसे निर्मल बालकों के साथ बिश्वासघात करके उन्को जन्म भर के लिये दरिद्री बनाए देता है वह नहीं जान्ता कि एक हकदार का हक़ छीन कर मुफ्त-ख़ोरों को लुटा देनें मैं कितना पाप है! कहो अब तुम्हारे वास्ते क्या मंगवायँ ?"

"खिनोंनें" (खिलौनें) छोटे नें कहा "वप्फी" (बर्फी) बड़े बोले और दोनों ब्रजकिशोर की मूंछें पकड़ कर खेंचनें लगे. ब्रजकिशोर नें बड़े प्यार सै उन्के गुलाबी गालों पर एक, एक मीठी चूमी लेली और नौकरों को आवाज़ देकर खिलौनें और बरफी लानें का हुक्म दिया.

"जी! इन्की मानें ये बच्चे आप के पास भेजे हैं" बुढ़िया बोली "और कह दिया है कि इन्को आप के पांओं मैं डाल कर कह देना कि मुझ को आप के क्रोधित होकर चले जानें का हाल सुन्कर बड़ी चिन्ता हो रही है मुझ को अपनें दुःख सुख का कुछ विचार नहीं मैं तो उन्के साथ रहनें मैं सब तरह प्रसन्न हू' परंतु इन छोटे, छोटे बच्चों की क्या दशा होगी ? इन्को बिद्या कौन पढ़ायगा ? नीति कौन सिखायगा ? इन्की उमर कैसे कटेगी ? मैं नहीं जान्ती कि आप को इस कठिन समय मैं अपना मन मार कर उन्की बुद्धि सुधारनी चाहिये थी अथवा उन्को अधर धार मैं लटका कर चले जाना चाहिये था ? ख़ैर! आप उन्पर नहीं तो अपनें कर्तव्य पर दृष्टि करें, अपनें कर्तव्य पर नहीं तो इन छोटे, बच्चों पर दया करें ये अपनी रक्षा आप नहीं कर सक्ते इन्का बोझ आपके सिर है आप इन्की ख़बर न लेंगे तो संसार

मैं इन्का कहीं पता न लगेगा और ये बिचारे योंही झुर कर मर जायँगे ?"

यह बात सुनकर ब्रजकिशोर की आंखें भर आईं थोड़ी देर कुछ नहीं बोला गया फिर चित्त स्थिर कर के कहनें लगे "तुम बहन सै कह देना कि मुझको अपना कर्तव्य अच्छी तरह याद है परन्तु क्या करूं ? मैं विवस हूं काल की कुटिल गति सैं मुझ को अपनें मनोर्थ के विपरीति आचरण (बरताव) करना पड़ता है तथापि वह चिन्ता न करे. ईश्वर का कोई काम भलाई सै ख़ाली नहीं होता उस्नें इस्मैं भी अपना कुछ न कुछ हित ही सोचा होगा" लड़कों की तरफ़ देखकर कहा "बेटे ! तुम कुछ उदास मत हो जिस तरह सूर्य चन्द्रमा को ग्रहण लग जाता है इसी तरह निर्दोष मनुष्यों पर भी कभी, कभी अनायास बिपत्ति आपड़ती है परंतु उस समय उन्हें अपनी निर्दोषता का विचार कर के मन मैं धैर्य रखना चाहिये"

उन अनसमझ बच्चों को इन बातों की कुछ परवा न थी बरफ़ी और खिलोनों के लालच सै उन्की नींद उड़ गई थी इस वास्तै वह तो हरेक चीज़ की उठाया धरी मैं लग रहे थे और ब्रजकिशोर पर तक़ाजा जारी था.

थोड़ी देर मैं बरफ़ी और खिलोनें भी आपहुंचे इस्समय उन्की खुशी की हद न रही. ब्रजकिशोर दोनों को बरफ़ी बांटा चाहते थे इतनें मैं छोटा हाथ मार कर सब ले भागा और बड़ा उस्सै छीन्नें लगा तो सब की सब एकबार मुंह मैं रख गया. मुंह छोटा था इसलिये वह मुंह मैं नहीं समाती थी परन्तु यह खुशी भी कुछ थोडी न थी कनअंखियों सै बड़े की तरफ़ देखकर

मुस्कराता जाता था और नाचता जाता था वह भोली, भोली सूरत, ठुमक, ठुमक कर नाचना, छिप, छिप कर बड़े की तरफ़ देखना, सैन मारना. उस्के मुस्करानें मैं दूध के छोटे. छोटे दांतों की मोंती की सी झलक देखकर थोड़ी देर के लिये ब्रजकिशोर अपनें सब चारा विचार भूल गए परन्तु इस्को नाचता कूदता देखकर अब लडा मचल पडा उस्नें सब खिलोनें अपनें कब्ज़े में कर लिये और ठिनक, ठिनक कर रोनें लगा. ब्रजकिशोर उस्को बहुत समझाते थे कि "वह तुम्हारा छोटा भाई है तुम्हारे हिस्से की बरफ़ी खाली तो क्या हुआ? तुम ही जानें दो" परन्तु यहां इन्बातों की कुछ सुनाई न थी इधर छोटे खिलोनों की छीना झपटी मैं लग रहे थे! निदान ब्रजकिशोर को बड़े के वास्तै बरफ़ी और छोटे के वास्तै खिलोनें फिर मगानें पड़े. जब दोनों की रज़ामन्दी हो गई तो ब्रजकिशोर नें बड़े प्यार सै दोनों की एक, एक मिट्ठी (मीट्ठी चूमी) लेकर उन्हें विदा किया और जांती बार बुढ़िया को समझा दिया कि "बहन को अच्छी तरह समझा देना वह कुछ चिन्ता न करे."

परन्तु बुढिया मकान पर पहुंची जितनें वहां की तो रंगत ही बदल गई थी मदनमोहन के साले जगजीवनदास अपनी बहन को लिवा लेजानें के लिये मेरठ सै आए थे वह अपनी मा अर्थात् (मदनमोहन की सास) की तवियत अच्छी नहीं बताते थे और आज ही रात की रेल मैं अपनी बहनको मेरठ लिवा ले जानें की तैयारी करा रहे थे मदनमोहन की स्त्री के मनमैं इस्समय मदनमोहन को अकेले छोड़ कर जानें की बिल्कुल न थी परन्तु एक तो वह अपनें भाई सै लज्जाके मारे कुछ नहीं कह सक्ती थी दूसरे

मा की मांदगीका मामला था तीसरे मदनमोहन हुक्म दे चुके थे इस लिये लाचार होकर उस्नें दो, एक दिन के वास्ते जानें की तैयारी की थी.

मदनमोहन की स्त्री अपनें पतिकी सच्ची प्रीतिमान, शुभचिंतक, दुःख सुखकी साथन, और आज्ञा मैं रहनेंवाली थी और मदनमोहन भी प्रारंभ मैं उस्सै बहुत ही प्रीति रखता था परन्तु जबसै वह चुन्नीलाल और शिंभूदयाल आदि नए मित्रोंकी संगति मैं बैठनें लगा नाचरंग की धुनलगी, बेश्याओंके झूटे हावभाव देखकर लोट पोट होगया ? "अय ! सुभानअल्लाह ! क्या जोबन खिलरहा है ! " "वल्लाह ! क्या बहार आरही है ? " "चश्म बद्दूर क्या भोली, भोली सूरत है ! " "अय ! परे हटो ! " " मैं सदकै ! मैं कुर्बान मुझे न छेड़ो ! " " खुदाकी क़सम ! मेरी तरफ़ तिरछी नज़र सै न देखो ! " बस यह चोचलेकी बातें चित्तमैं चुभगईं किसी बातका अनुभव तो था ही नहीं तरुणाई की तरंग, शिंभूदयाल और चुन्नीलाल आदिकी संगति, द्रव्य और अधिकार के नशे मैं ऐसा चकचूर हुआ कि लोक परलोक की कुछ ख़बर न रही.

यह बिचारी सीधी सादी सुयोग्य स्त्री अब गंवारी मालूम होनें लगी पहले, पहले कुछ दिन यह बात छिपी रही परन्तु प्रीति के फूलमैं कीड़ा लगे पीछै वह रस कहां रहसक्ता है ? उस्समय परस्पर के मिलाप सै किसी का जी नहीं भरताथा, बातोंकी गुलझटी कभी सुलझनें नहीं पातीथी, आधी बात मुख मैं और आधी होटोंही मैं हो जातीथी, आंखसै आंख मिल्तेही दोनोंको अपनें आप हँसी आजाती थी केवल हँसी नहीं उस हँसी मैं धूप छाया

की तरह आधी प्रीति और आधी लज्जाकी झलक दिखाई देती थी और सच्ची प्रीतिके कारण संसार की कोई बस्तु सुन्दरतामैं उस्सै अधिक नहीं मालूम होती थी. एककी गुप्त द्रृष्टि सदा दूसरे की ताक झाक मैं लगी रहती थी क्या चित्रपट देखनें मैं, क्या रमणीक स्थानों की सैर करनें मैं, क्या हँसी दिल्लगी की बातों मैं कोई मौक़ा नोक झोक सै ख़ाली नहीं जाताथा और संसार के सब सुख अपनें प्राण जीवन बिना उन्को फीके लगते थे परन्तु अब वह बातें कहां हैं? उस्की स्त्री अबतक सब बातों मैं वैसोही द्रृढ है बल्कि अज्ञान अवस्था की अपेक्षा अब अधिक प्रीति रखती है परन्तु मदनमोहन का चित्त वह न रहा वह उस बिचारी सै कोसों भागता है उस्को आफ़त समझता है क्या इन् बातों सै अनसमझ तरुणों की प्रीति केवल आंखों मैं नहीं मालूम होती? क्या यह उस्की बेक़द्री और झूंटी हिर्सका सबसै अधिक प्रमाण नहीं है? क्या यह जानें पीछै कोइ बुद्धिमान ऐसे अनसमझ आदमियों की प्रतिज्ञाओंका बिश्वास कर सक्ता है? क्या ऐसी पवित्र प्रीतिके जोड़े मैं अंतर डालनेंवालों को बाल्मीकि ऋषि का शाप + भस्म न करेगा? क्या एक हक़दार की सच्ची प्रीति के ऐसे चोरों को परमेश्वर के यहां सै कठिन दंड न होगा?

मदनमोहन की पतिव्रता स्त्री अपनें पतिपर क्रोध करना तो सीखीही नहीं है मदनमोहन उस्की द्रृष्टि मैं एक देवता है वह अपनें ऊपर के सब दुःखों को मदनमोहन की सूरत देखते ही भूल जाती है और मदनमोहन के बड़े सै बड़े अपराधों को सदा

\+ मानिषाद प्रतिष्ठां त्वपगम: साम्वती: समा: ॥
यत्क्रौंचमिथु्ना देकमवधी: काममोहितम् ॥

जाना न जाना करती रहती है मदनमोहन महीनों उस्की याद नहीं करता परंतु वह केवल मदनमोहन को देखकर जीती है वह अपना जीवन अपनें लिये नहीं ; अपनें प्राणपति के लिये समझती है जब वह मदनमोहन को कुछ उदास देखती है तो उस्के शरीर का रुधिर सूख जाता है जब उस्को मदनमोहन के शरीर में कुछ पीड़ा मालूम होती है तो वह उस्की चिन्ता सै बावली बन जाती है मदनमोहन की चिन्ता सै उस्का शरीर सूखकर कांटा हो गया है उस्को अपनें खानें पीनें की बिल्कुल लालसा नहीं है परंतु वह मदनमोहन के खानें पीनें की सब सै अधिक चिन्ता रखती है वह सदा मदनमोहन की बड़ाई करती रहती है और जो लोग मदनमोहन की ज़रा भी निन्दा करते हैं वह उन्की शत्रु बन जाती है वह सदा मदनमोहन को प्रसन्न रखनें के लिये उपाय करती है उस्के सन्मुख प्रसन्न रहती है अपना दुःख उस्को नहीं जताती और सच्ची प्रीति सै बड़प्पन का विचार रखकर भय और सावधानी के साथ सदा उस्की आज्ञा प्रतिपालन करती रहती है.

थोड़े ख़र्च मैं घर का प्रबंध ऐसी अच्छी तरह कर रक्खा है कि मदनमोहन को घर के कामों मैं ज़रा परिश्रम नहीं करना पड़ता जिस्पर फ़ुर्सत के समय ख़ाली बैठकर और लोगों की पंचायत और स्त्रिओं के गहनें गांठे की थोथी बातों के बदले कुछ, कुछ लिखनें पढ़नें, कसीदा काढ़नें और चित्रादि बनानें का अभ्यास रखती है बच्चे बहुत छोटे हैं परंतु उन्को खेल ही खेल मैं अभी सै नीति के तत्व समझाए जाते हैं ओर बेमालूम रीति सै धीरे, धीरे हरेक वस्तु का ज्ञान बढ़ाकर ज्ञान बढ़ानें की उन्की

स्वाभाविक रुचिको उत्तेजन दिया जाता है परंतु उन्के मनपर किसी तरह का बोझ नहीं डाला जाता उन्के निर्दोष खेलकूद और हंसनें बोलनें की स्वतन्त्रता मैं किसी तरहकी बाधा नहीं होनें पाती.

मदनमोहन की स्त्री अपनें पतिको किसी समय मौकेसै नेक सलाह भी देती है परन्तु बडोंकी तरह दबाकर नहीं ; बराबर वालों की तरह झगड़ कर नहीं, छोटों की तरह अपनें पतीकी पदवीका बिचार करके, उन्के चित्त दुःखित होनेंका बिचार करके, अपनी अज्ञानता प्रगट करके, स्त्रिओंकी ओछी समझ जता कर धीरजसै अपना भाव प्रगट करती है परन्तु कभी लोटकर जवाव नहीं देती, विवाद नहीं करती. वह बुद्धिमती चुन्नीलाल और शिंभूदयाल इत्यादि की स्वार्थपरतासै अच्छी तरह भेदी है परन्तु पतिकी ताबेदारी करना अपना कर्तव्य समझ कर समयकी बाट देख रही है और ब्रजकिशोर को मदनमोहनका सच्चा शुभ-चिंतक जान्कर केवल उसी सै मदनमोहनकी भलाईकी आशा रखती है. वह कभी ब्रजकिशोर सै सन्मुख होकर नहीं मिली परन्तु उस्को धर्म्मका भाई मान्ती है और केवल अपनें पतिकी भलाईके लिये जो कुछ नया बृतान्त कहलानें के लायक़ मालूम होता है वह गुपचुप उस्सै कहला भेजती है. ब्रजकिशोर भी उस्को धर्म्म की बहन समझता है इस कारण आज ब्रजकिशोरके अनायास क्रोध करके चले जानेंपर उस्नें मदनमोहनके हक़मैं ब्रजकिशोरकी दया उत्पन्न करनें के लिये इस्समय अपनें नन्हें बच्चोंको टहलनीके साथ ब्रजकिशोरके पास भेज दिया था परन्तु वह लोटकर आए जितनें अपनी ही मेरठ जाने की तैयारी होग[ई] और रातों रात वहां जाना पड़ा.

प्रकरण २२.

संशय

अज्ञपुरुष श्रद्धा रहित संशय युत बिनशाय ॥
बिनाश्रद्धा दुहुं लोकमैं ताकों सुख न लखाय ॥ *

श्रीमद्भगवद्गीता ॥

लाला ब्रजकिशोर उठकर कपड़े नहीं उतारनें पाए थे इतनें मैं हरकिशोर आ पहुंचा.

"क्यों ! भाई ! आज तुम अपनें पुरानें मित्रसै कैसै लड़ आए ?" ब्रजकिशोरनें पूछा.

"इस्सै आपको क्या ? आपके हां तो घीके दिए जल गए होंगे" हरकिशोरने जवाब दिया.

"मेरे हां घीके दिये जलनें की इस्मैं कौन्सी बात थी ?" ब्रजकिशोरनें पूछा.

"आप हमारी मित्रता देखकर सदैव जला करते थे आज वह जलन मिट गई"

"क्या तुह्मारे मनमैं अबतक यह झूंटा वहम समा रहा है ?" ब्रजकिशोरने पूछा.

"इस्मैं कुछ संदेह नहीं" हरकिशोर हुज्जत करनें लगा. "मैं डेठसै देखता आता हूं कि आप मुझको देखकर जलते हैं मेरी

---

* अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ॥
नायंलोकोस्तिनपरो नसुखं संशयात्मनः ॥

और मदनमोहनकी मित्रता देखकर आपकी छातीपर सांप लोटता है. आपनें हमारा परस्पर बिगाड़ करानेंके लिये कुछ थोड़े उपाय किये ? मदनमोहनके पिताको थोड़ा भड़काया ? जिस दिन मेरे लड़के की बरातमैं शहरके सब प्रतिष्ठित मनुष्य आए थे उन्को देखकर आपके जीमैं कुछ थोड़ा दुःख हुआ ? शहरके सब प्रतिष्ठित मनुष्योंसै मेरा मेल देखकर आप नहीं कुढ़ते ? आप मेरी तारीफ़ सुनकर कभी अपनें मनमैं प्रसन्न हुए ? आपनें किसी काममैं मुझको सहायता दी जब मैंनें अपनें लड़के के बिवाहमैं मजलिस की थी आपनें मजलिस करनेंसै मुझे नहीं रोका ? लोगोंके आगे मुझको बावला नहीं बताया ? बहुत कहनें सै क्या है ? आज ही मदनमोहनका मेरा बिगाड़ सुन्कर कचहरीसै वहां झटपट दोड़गए और दो घंटे एकांतमैं बैठकर उस्को अपनी इच्छानुसार पट्टी पढ़ा दी परन्तु मुझको इन बातोंकी क्या परवा है ? आप और वह दोनों मिल्कर मेरा क्या करसक्ते हो ? मैं सब समझलूंगा"

लाला ब्रजकिशोर ये बातें सुन, सुनकर मुस्कराते जाते थे. वह अब धीरज सै बोले "भाई ! तुम बृथा वहम का भूतबनाकर इतना डरते हो. इस बहमका कुछ ठिकाना है ? तुम तत्काल इन बातोंकी सफ़ाई करते चलेजाते तो मनमैं इतना वहम सर्वथा नहीं रहता. क्या स्वच्छ अंतःकरण का यही अर्थ है ? मुझको जलन किस बात पर होती ? तुम अपना सब काम छोड़कर दिन भर लोगोंकी हाज़री साधते फिरोगे, उन्की चाकरी करोगे, उन्को तोहफ़ा तहायफ़ दोगे ? दस, दस बार मसाल लेकर उन्के घर बुलानें जाओगे तो वह क्यों न आवेंगे ? अपनें गांठ की

दौलत ख़र्च करके उन्को नाच दिखाओगे तो वह क्यों न तारीफ़ करेंगे ? परन्तु यह तारीफ़ कितनी देरकी, वाह वाह कितनी देर की ? कभी तुमपर आफ़त आ पड़ेगी तो इन्मैंसै कोई तुह्मारी सहायता को आवेगा ? इस ख़र्चसै देशका कुछ भला हुआ ? तुह्मारा कुछ भला हुआ ? तुह्मारी संतान का कुछ भला हुआ ? यदि इस फ़िज़ूल ख़र्चीके बदले लड़के के पढ़ाने लिखाने मैं यह रुपया लगाया जाता, अथवा किसी देश हितकारी काममैं ख़र्च होता तो निस्संदेह बड़ाई की बात थी परन्तु मैं इस्मैं क्या तारीफ़ करता, क्या प्रसन्न होता क्या सहायता करता मुझको तुह्मारी भोली, भोली बातोंपर बडा आश्चर्य था इसी वास्ते मैंनें तुमको फ़िज़ूल ख़र्ची सै रोका था, तुमको बावला बताया था परन्तु तुह्मारी तरफ़की मेरी मनकी प्रीतिमैं कुछ अंतर कभी नहीं आया, क्या तुम यह बिचारते हो कि जिस्सै संबंध हो उस्की उचित अनुचित हरेक बातका पक्षपात करना चाहिये ? इन्साफ़ अपनें वास्ते नहीं केवल औरोंके वास्ते है ? क्या हाथ मैं डिमडिमी लेकर सब जगह डोंडी पीटे बिना सच्ची प्रीति नहीं मालूम होती ? इन सब बातोंमैं कोइ बात तुह्मारी बडाईके लायक़ हो तो घर फूंक तमाशा देखना है. इसी तरह इन सब बातोंमैं कोई बात मेरे प्रसन्न होनें लायक़ हो तो तुमको प्रसन्न देखकर प्रसन्न होना है मैं यह नहीं कहता कि मनुष्य ऐसे कुछ काम न करे समय, समय पर अपनें बूते मूजिब सबकाम करनें योग्य हैं परंतु यह मामूली कारवाई है जितना वैभव अधिक होता है उतनी ही धूमधाम बढ़ जाती है इस लिये इस्में कोई ख़ास बात नहीं पाई जाती है. मैं चाहता हूं कि तुम सै कोई देश हितैषी ऐसा

काम बनें जिस्मैं मैं अपनें मन की उमंग निकाल सकूं मनुष्य को जलन उस मौके पर हुआ करती है जब वह आप उस लायक न हो परन्तु तुम को जो बडाई बड़े परिश्रम सै मिली है वह ईश्वर की कृपा सै मुझ को बेमहनत मिल रही है फिर मुझ को जलन क्यों हो ? तुम्हारी तरह खुशामद कर के मदनमोहन सै मेल किया चाहता तो मैं सहज मैं करलेता परन्तु मैंनें आप यह चाल पसंद न की तो अपनी इच्छा सै छोड़ी हुई बातों के लिये मुझ को जलन क्यों हो ? जलन की वृत्ति परमेश्वर नें मनुष्य को इसलिये दी है कि वह अपनें सै ऊंची पदवी के लोगों को देखकर उचित रीति सै अपनी उन्नति का उद्योग करे परन्तु जो लोग जलन के मारे औरों का नुक्सान कर के उन्हें अपनी बराबर का बनाया चाहते हैं वह मनुष्य के नाम को धब्बा लगाते हैं. मुझ को तुम सै केवल यह शिकायत थी और इसी विषय मैं तुम्हारे विपरीत चर्चा करनी पड़ी थी कि तुमनें मदनमोहन सै मित्रता कर के मित्र के करनें का काम न किया तुम को मदन-मोहन के सुधारनें का उपाय करना चाहिये था परन्तु मैंनें तुम्हारे बिगाड की कोई बात नहीं की. हां इस वहम का क्या ठिकाना है ? खाते, पीते, बैठते, उठते, बिना जानें ऐसी सैंकड़ों बातें बन जाती हैं कि जिन्का विचार किया करें तो एक दिन मैं बावले बन जायँ. आए तो आए क्यों, गए तो गए क्यों, बैठे क्यों बैठे क्यों हँसे तो हँसे क्यों, फलानें सै क्या बात की फ़लानें सै क्यों मिले ? ऐसी निरर्थक बातों का विचार किया करें तो एक दिन काम न चले. छुटभैये सैकडों बातें बीच की बीच मैं बनाकर नित्य लड़ाई करा दिया करें पर नहीं अपनें मन को

सदैव दृढ रखना चाहिये निर्बल मन के मनुष्य जिस तरह की ज़रा जरासी बातों मैं बिगड़ खड़े होते हैं दृढ मन के मनुष्य को वैसी बातों की ख़बर भी नहीं होती इसलिये छोटी, छोटी बातों पर विशेष विचार करना कुछ तारीफ़ की बात नहीं है और निश्चय किए बिना किसी की निंदित बातों पर बिश्वास न करना चाहिये. किसी बात मैं संदेह पड़ जाय तो स्वच्छ मन सै कह सुन-कर उस्की तत्काल सफ़ाई कर लेनी अच्छी है क्योंकि ऐसे झूंटे, झूंटे वहम संदेह और मनःकल्पित बातों सै अबतक हज़ारों घर बिगड़ चुके हैं,,

"खैर ! और बातों मैं आप चाहैं जो कहैं परन्तु इतनी बात तो आप भी अंगीकार करते हैं कि मदनमोहन की और मेरी मित्रता के बिषय मैं आप नें मेरे विपरीत चर्चा की बस इतना प्रमाण मेरे कहनें की सचाई प्रगट करनें के लिये बहुत है" हर-किशोर कहनें लगा "आप का यह बरताव केवल मेरे संग नहीं है बल्कि सब संसार के संग है आप सब की नुक्तेचीनी किया करते हैं"

"अब तो तुम अपनी बात को सब संसारके साथ मिलानें लगे परंतु तुम्हारे कहनें सै यह बात अंगीकार नहीं हो सक्ती जो मनुष्य आप जैसा होता है वैसाही सब संसार को समझता है मैंनें अपना कर्तव्य समझकर अपनें मन के सच्चे, सच्चे विचार तुम सैं कह दिए अब उन्को मानों या न मानों तुम्हैं अधिकार है" लाला ब्रजकिशोर नें स्वतन्त्रता सै कहा.

"आप सच्ची बात के प्रगट होनैं सै कुछ संकोच न करैं सम्ब-न्धी हो अथवा बिगाना हो जिस्सै अपनी स्वार्थ हानि होती है

उस्सै मन मैं अन्तर तो पडही जाता है" हरकिशोर कहनें लगा "स्यमन्तक मणि के सन्देह पर श्रीकृष्ण बलदेव जैसे भाईयों मैं भी मन चाल पड़ गई ब्रह्मसभा मैं अपमान होनें पर दक्ष और महादेव (ससुर जँवाई) के बीच भी विरोध हुए बिना न रहा."

"तो यों साफ़ क्यों नहीं कहते कि मेरी तरफ़ सै अबतक तुम्हारे मन मैं वही बिचार बन रहे हैं. मुझको कहना था वह कह चुका अब तुम्हारे मन मैं आवे जैसे समझते रहो" लाला ब्रजकिशोर नें बेपरवाई सै कहा.

"चालाक आदमियों की यह तो रीति ही होती है कि वह जैसी हवा देखते हैं वैसी बात करते हैं. अबतक मदनमोहन सै आप की अनबन रहती थी अब मुकदमों का समय आते ही मेल हो गया ! अबतक आप मदनमोहन सै मेरी मित्रता छुड़ानें का उपाय करते थे अब मुझको मित्रता रखनें के लिये समझानें लगे ! सच है बुद्धिमान मनुष्य जो करना होता है वही करता है परन्तु औरों का ओलंभा मिटानें के लिये उन्के सिर मुफ़्त का छप्पर ज़रूर धर देता है. अच्छा ! आप को लाला मदनमोहन की नई मित्रता के लिये बधाई है और आप के मनोर्थ सफल करनें का उपाय बहुत लोग कर रहे हैं" हरकिशोर नें भरमा भरमी कहा.

"यह तुम क्या बक्ते हो मेरा मनोर्थ क्या है ? और मैंने हवा देखकर कौन्सी चाल बदली ?" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "जैसे नाव मैं बैठनें वाले को किनारे के बृक्ष चल्ते दिखाई देते हैं इसी तरह तुम्हारी चाल बदल जानें सै तुमको मेरी चाल मैं अन्तर मालूम पड़ता है. तुम्हारी तबियत को जाचनें के लिये तुमनें पहले सै कुछ नियम स्थिर कर रक्खे होते तो तुमको ऐसी भ्रान्ति कभी न

होती मैं ठेठ सै जिस्तरह मदन मोहन को चाहता था, जिस तरह तुमको चाहता था, जिस्तरह तुम दोनों की परस्पर प्रीति चाहता था उसी तरह अब भी चाहता हूं परन्तु तुम्हारी तबियत ठिकानें नहीं है इस्सै तुम को बारबार मेरी चाल पर सन्देह होता है सो ख़ैर ! मुझै तो चाहै जैसा समझते रहो परन्तु मदनमोहन के साथ बैर भाव मत रक्खो तुच्छ बातों पर कलह करना अनुचित है और बैरी सै भी वैर बढ़ानें के बदले उस्के अपराध क्षमा करनें मैं बड़ाई मिल्ती है."

"जी हां ! पृथ्वीराज नें शहाबुद्दीन ग़ोरीको क्षमा करके जैसी बड़ाई पाई थी वह सब को प्रगट है" हरकिशोर नें कहा.

"आगे की हानि का सन्देह मिटे पीछे पहले के अपराध क्षमा करनें चाहियें परन्तु पृथ्वीराज नें ऐसा नहीं किया था इसी सै धोका खाया और—"

"बस, बस यहीं रहनें दीजिये. मेरा मतलब निकल आया आप अपनें मुख से ऐसी दशा मैं क्षमा करना अनुचित बता चुके उस्सै आगै सुन्कर मैं क्या करूंगा ?" यह कह कर हरकिशोर, ब्रजकिशोर के बुलाते, बुलाते उठ कर चला गया.

और ब्रजकिशोर भी इनही बातों के सोच विचार मैं वहां सै उठ कर पलंगपर जा लेटे.

प्रकरण २३.

प्रामाणिकता.

"एक प्रामाणिक मनुष्य परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना है" ÷

पोप.

ब्रजकिशोर कौन् हैं ? मदनमोहन की क्यों इतनी सहानुभूति (हमदर्दी) करते हैं ?

अच्छा ! अब थोड़ी देर और कुछ काम नहीं है जितनें थोडा सा हाल इन्का सुनिये.

लाला ब्रजकिशोर गरीब मा बाप के पुत्र हैं परन्तु प्रामाणिक, सावधान, विद्वान और सरल स्वभाव हैं इन्की अवस्था छोटी है तथापि अनुभव बहुत है यह जो कहते हैं उसी के अनुसार चलते हैं इन्की बहुत सी बातें अब तक इस पुस्तक में आचुकी हैं इसलिये कुछ विशेष लिखनें की जरूरत नहीं है तथापि इतना कहे बिना नहीं रहा जाता कि यह परमेश्वर की सृष्टि का एक उत्तम पदार्थ हैं यह वकील हैं परन्तु अपनी तरफ़ के मुक़द्मेवालों का झूंटा पक्षपात नहीं करते झूंटे मुकद्मे नहीं लेते बूते से ज्याद काम नहीं उठाते, परन्तु जो मुक़द्मे लेते हैं उन्की पैरवी बाजबी तौर पर बहुत अच्छी तरह करते हैं. और बहुधा अन्याय से सताए हुए ग़रीबों के मुक़द्मों में बे महन्ताना लिये पैरवी किया

× An honest man's the noblest work of God.

Alexander Pope

करते हैं हाकिम और नगरनिवासियों को इन्की बात पर बहुत विश्वास है. यह स्वतन्त्र मनुष्य हैं परन्तु स्वेच्छाचारी और अहंकारी नहीं हैं अपनी स्वतन्त्रता को उचित मर्यादा सै आगे नहीं बढ़नें देते परमेश्वर और स्वधर्म पर दृढ़ विश्वास रखते हैं. बात सच कहते हैं परन्तु ऐसी चतुराई सै कहते हैं कि इन्का कहना किसी को बुरा नहीं लगता और किसी की हक़ तल्फ़ी भी नहीं होनें पाती. यह थोथी बातों पर विवाद नहीं करते और इन्के कर्तव्य मैं अन्तर न आता हो तो ये दूसरे की प्रसन्नता के लिये अकारण भी चुप हो रहते हैं अथवा केवल संकेत सा कर देते हैं. जहां तक औरों के हक़ मैं अन्तर न आय; ये अपनें उपर दुःख उठा कर भी परोपकार करते हैं वैरी सै सावधान रहते हैं परन्तु अपनें मन मैं उस्की तरफ़ का वैर भाव नहीं रखते. अपनी ठसक किसी को नहीं दिखलाया चाहते. यह मध्यम भाव सै रहनें को पसन्द करते हैं और इन्की भलमनसात सै सब लोग प्रसन्न हैं परन्तु मदनमोहन को इन्की बातें अच्छी नहीं लगतीं और लोगों सै यह केवल इतनी बात करते हैं जिस्मैं वह प्रसन्न रहैं और इन्हें झूंट न बोलनी पड़े परन्तु मदनमोहन सै ऐसा सम्बन्ध नहीं है. उस्की हानि लाभ को यह अपनी हानि लाभ सै अधिक समझते हैं इसी वास्तै इन्की उस्सै नहीं बन्ती. यह कहते हैं कि "जब तक कुछ काम न हो; अपने पल्ले मैं किसी तरह का दाग लगाए बिना हर तरह के आदमी सै अच्छी तरह मित्रता निभ सक्ती है परन्तु काम पडे पर उचित रीति बिना काम नहीं चलता"

यह अपनी भूल जान्ते ही प्रसन्नता सै उस्को अंगीकार करके उस्के सुधारनें का उद्योग करते हैं इसी तरह जो बात नहीं

जान्ते उस्मैं अपनी झूंटी निपुणता दिखाने पर काम पड़नें पर उस्का अभ्यास करके जेम्सवाट की तरह अपनी सच्ची सावधानी सै लोगों को आश्चर्य मैं डालते हैं.

(बहुधा लोग जान्ते होंगे कि जेम्सवाट कलों के काम मैं एक प्रसिद्ध मनुष्य हो गया है उस्के समान काल मैं उस्की अपेक्षा बहुत लोग अधिक बिद्वान् थे परन्तु अपने ज्ञान को काम मैं लानें के वास्ते जेम्सवाट नें जितनी महनत की उतनी और किसी ने नहीं की. उस्नें हरेक पदार्थ की बारीकियों पर दृष्टि पहुंचानें के लिये खूब अभ्यास बढ़ाया वह बढई का पुत्र था जब वह बालक था तब ही अपनें खिलोनों मैं सै बिद्या विषय ढूंड निकालता था. उस्के बाप की दुकान मैं ग्रहों के देखने की कलें रक्खी थीं जिस्सै उस्को प्रकाश और जोतिष बिद्या का ब्यसन हुआ. उस्के शरीर मैं रोग उत्पन्न होनें सै उस्को बैद्यक सीखनें की रुचि हुई. और बाहर गांव मैं एकान्त फिरनें की आदत सै उस्नें बनस्पति बिद्या और इतिहास का अभ्यास किया. गणित शास्त्र के औजार बनाते, बनाते उस्को एक आर्गन बाजा बनानें की फ़र्मायश हुई परन्तु उस्को उस्समय तक गाना नहीं आता था इसलिये उस्नें प्रथम संगीत बिद्या का अभ्यास करके पीछे सै एक आर्गन बाजा बहुत अच्छा बना दिया. इसी तरह एक बाफ़ की कल उस्की दुकान पर सुधरनें आई तब उस्नें गर्मी और बाफ़ विषयक वृतान्त् सीखनें पर मन लगाया और किसी तरह की आशा अथवा किसी के उत्तेजन बिना इस काम मैं दस बरस परिश्रम करके बाफ़ की एक नई कल ढूंड निकाली जिस्सै उस्का नाम सदा के लिये अमर होगया ।

लाला ब्रजकिशोर को संसारी सुख भोगनें की तृष्णा नहीं है और द्रव्य की आवश्यकता यह केवल सांसारिक कार्य निर्वाह के लिये समझते हैं इस्वास्तै संसारी कामों की ज़रूरत के लायक़ परिश्रम और धर्म्म सै रुपया पैदा किये पीछे बाक़ी का समय यह विद्याभ्यास और देशोपकारी वातों मैं लगाते हैं.

इन्के निकट उन ग़रीवों की सहायता करनें मैं सच्चा पुन्य है जो सचमुच अपना निर्वाह आप नहीं कर सक्के, या जिन रोगियों के पास इलाज करानेके लिये रुपया अथवा सेवा करनें के लिये कोइ आदमी नहीं होता. ये उन अन्समझ वच्चों को पढ़ानें लिखानें मैं, अथवा कारीगरी इत्यादि सिखा कर कमानें खानें के लायक वना देनें मैं, सच्चा धर्म समझते हैं जिन्के मा वाप दरिद्रता अथवा मूर्खता सै कुछ नहीं कर सक्के. ये अपनें देश मैं उपयोगी विद्याओं की चर्चा फैलानें, अच्छी, अच्छी पुस्तकों का और भाषाओं सै अनुवाद करवा कर अथवा नई वनवा कर अपनें देश मैं प्रचार करनें, और देश के सच्चे शुभचिन्तक और योग्य पुरुषों को उत्तेजन देनें, और कलों की अथवा खेती आदि की सच्ची देश हितकारी बातों के प्रचलित करनें मैं सच्चा धर्म्म समझते हैं. परन्तु शर्त यह है कि इन सव वातों मैं अपना कुछ स्वार्थ न हो, अपनी नामवरी का लालच न हो, किसी पर उपकार करनें का वोझ न डाला जाय वल्कि किसी को ख़वर ही न होनें पाय.

इन्नें थोड़ी आमद मैं अपनें घरका प्रवन्ध वहुत अच्छा वांध रक्खा है इन्की आमदनी मामूली नहीं है तथापि जितनी आमदनी आती है उस्सै खर्च कम किया जाता है और उसी ख़र्च मैं

भावी बिवाह आदि का खर्च समझ कर उन्के वास्तै क्रम; क्रम सै सीग़ेवार रक़म जमा होती जाती है बिवाहादि के ख़र्चों का मामूल वन्ध रहा है उन्मैं फ़िज़ूल ख़र्ची सर्बथा नहीं होनें पाती परन्तु वाजबी बातोंमैं कसर भी नहीं रहती, इन्के सिवाय जो कुछ थोडा बहुत बचता है वह बिना बिचारे ख़र्च और नुक्सानादि के लिए अमानत रक्खा जाता है और विश्वास योग्य फायदे के कामों मैं लगानै सैं उस्की बृद्धि भी की जाती है.

इन्के दो छोटे भाइयों के पढ़ानें लिखानें का बोझ इन्के सिर है इस लिये ये उन्को प्रचलित बिद्याभ्यास की रूढ़ी के सिवाय उन्के मानसिक बिचारों के सुधारनें पर सब सै अधिक दृष्टि रखते हैं. ये कहते हैं कि "मनुष्य के मनके बिचार न सुधरे तो पढ़नें लिखनें सै क्या लाभ हुआ ?" इन्नें ईतिहास और वर्तमान काल की दशा दिखा, दिखा कर भले बुरे कामों के परिणाम और उन्की बारीकी उन्के मन पर अच्छी तरह बैठा दी है तथापि ये अपनी दूर दृष्टि सै अपनी सम्हाल मैं ग़फ़लत नहीं करते उन्हें कुसंगति मैं नहीं बैठनें देते. यह उन्के संग ऐसी युक्ति सै बरतते हैं जिस्मैं न वो उद्धत होकर ढिठाई करनें योग्य होनें पावैं न भय सै उचित बात करनें मैं संकोच करैं. ये जान्ते हैं कि बच्चों के मनमैं गुरु के उपदेश सै इतना असर नहीं होता जितना अपनें बड़ों का आचरण देखनें सै होता है इस लिये ये उन्को मुखसैं उपदेश देकर उतनी बात नहीं सिखाते जितनी अपनी चाल चलन सै उनके मन पर बैठाते हैं.

ब्रजकिशोर को सच्ची सावधानी सै हरेक काममैं सहायता मिलती है. सच्ची सावधानी मानों परमेश्वरकी तरफ़सै इन्को

हरेक कामकी राह बतानेवाली उपदेष्टा है परन्तु लोग सच्ची सावधानी और चालाकीका भेद नहीं समझते. क्या सच्ची सावधानी और चालाकी एक है. ?

मनुष्यकी प्रकृतिमें बहुतसी उत्तमोत्तम वृत्ति मोजूद हैं परन्तु सावधानीके बराबर कोई हितकारी नहीं है. सावधान मनुष्य केवल अपनी तबियत पर ही नहीं औरोंकी तबियत पर भी अधिकार रखसक्ता है वह दूसरेसै बात करते ही उसका स्वभाव पहचान जाता है और उस्सै काम निकालनें का ढंग जान्ता है. यदि मनुष्यमें और गुण साधारण हों और सावधानी अधिक हो तो वह अच्छी तरह काम चला सक्ता है परन्तु सावधानी बिना और गुणोंसे काम निकालना बहुत कठिन है.

जिस्तरह सावधानी उत्तम पुरुषोंके स्वभावमें होती है इसी तरह चालाकी तुच्छ और कमीने आदमियोंकी तबियतमें पाई जाती है. सावधानी हमको उत्तमोत्तम बातें बताती है और उन्के प्राप्त करनेके लिये उचित मार्ग दिखाती है वह हर कामके परिणाम पर दृष्टि पहुंचाती है और आगे कुछ बिगाड़की सूरत मालूम हो तो झूंटे लालचके कामों को प्रारंभ से पहले ही अटका देती है परन्तु चालाकी अपने आसपास की छोटी, छोटी चीजों को देख सक्ती है और केवल वर्तमान समयके फ़ायदोंका विचार रखती है. वह सदा अपनें स्वार्थ की तरफ झुकती है और जिस तरह हो सके, अपनें काम निकाल लेनेंपर दृष्टि रखती है. सावधानी आदमी की दृढ बुद्धिको कहते हैं और वह जों, जों लोगोंमें प्रगट होती जाती है, सावधान मनुष्यकी प्रतिष्ठा बढ़ती जाती है परन्तु चालाकी प्रगट हुए पीछै उसकी बातका असर नही रहता.

चालाकी होशियारीकी नक़ल है और वह बहुधा जान्वरों की सी प्रकृतिके मनुष्योंमैं पाई जाती है इस लिये उस्मैं मनुष्य जन्मको भूषित करनेके लायक़ कोई बात नहीं है वह अज्ञानियोंके निकट ऐसी समझी जाती है जैसे ठट्ठेबाजी, चतुराई और भारी भरकम पना बुद्धिमानी समझे जायं.

लाला ब्रजकिशोर सच्ची सावधानी के कारण किसी के उपक़ार का बोझ अपनें ऊपर नहीं उठाया चाहते, किसी सै सिफ़ारश आदि की सहायता नहीं लिया चाहते, कोई काम अपनें आग्रह सै नहीं कराया चाहते, किसी को कच्ची सलाह नहीं देते, ईश्वर के सिवाय किसी भरोसे पर काम नहीं उठाते, अपनें अधिकार सै बढ़कर किसी काम मैं दस्तंदाज़ी नहीं करते. औरों की मारफ़त मामला करनें के बदले रोबरू बातचीत करनें को अधिक पसंद करते हैं वह लेनदेन मैं बड़े खरे हैं परंतु ईश्वर के नियमानुसार कोई मनुष्य सब के उपकारों सै उऋण नहीं हो सक्ता. ईश्वर, गुरु और माता पितादि के उपकारों का बदला किसी तरह नहीं दिया जा सक्ता परंतु ब्रजकिशोर पर केवल इन्हीं के उपकार का बोझ नहीं हैं वह इस्सै सिवाय एक और मनुष्य के उपकार मैं भी बँध रहे हैं.

ब्रजकिशोर का पिता अत्यंत दरिद्री था अपनें पास सै फ़ीस देकर ब्रजकिशोर की मदरसे मैं पढ़ानें की उस्की सामर्थ्य न थी और न वह इतनें दिन खाली रखकर ब्रजकिशोर को बिद्या मैं निपुण किया चाहता था परन्तु मदनमोहन के पिता नें ब्रजकिशोर की बुद्धि और आचरण देखकर उसै अपनी तरफ़ सै ऊंचे दर्जे तक बिद्या पढ़ाई थी उस्की फ़ीस अपनें पास सै दी थी

उस्की पुस्तकैं अपनें पास सै ले दी थीं बल्कि उस्के घर का ख़र्च तक अपनें पास सै दिया था और यह सब बातैं ऐसी गुप्त रीति सै हुईं कि इन्का हाल स्पष्ट रीति सै मदनमोहन को भी मालूम न होनें पाया था ब्रजकिशोर उसी उपकार के बंधन सै इस्समय मदनमोहन के लिये इतनी कोशिश करते हैं.

प्रकरण २४.

हाथसै पैदा करनें वाले
और पोतड़ों के अमीर

अमिल द्रव्यहू यत्नतें मिलै सु अवसर पाय ।
संचितहू रक्षाबिना स्वतः नष्ट होजाय ॥÷

हितोपदेशे.

मदनमोहन का पिता पुरानी चाल का आदमी था वह अपना बूता देखकर काम करता था और जो करता था वह कहता नहीं फिरता था उस्नें केवल हिन्दी पढ़ी थी वह बहुत सीधा सादा मनुष्य था परन्तु व्यापार मैं बड़ा निपुण था साहूकारे मैं उस्की बड़ी साख थी. वह लोगों की देखा देखी नहीं ; अपनी बुद्धि सैं व्यापार करता था उस्नें थोड़े व्यापार मैं अपनी सावधानी सै

÷ अलब्धमिच्छतोर्थं योगादर्थस्य प्राप्तिरेव ॥
लब्धस्या प्यरक्षितस्य निधे रपिस्वयं विनाशः ॥

बहुत दौलत पैदा की थी इस्समय जिस्तरह बहुधा मनुष्य तरह, तरह की बनावट और अन्याय सै औरों की जमा मारकर साहूकार बन बैठते हैं सोनें चान्दी के जगमगाहट के नीचे अपनें घोर पापों को छिपाकर सज्जन बन्नें का दावा करते हैं धनको अपनी पाप बासना पूरी करनें का एक साधन समझते हैं ऐसा उस्नें नहीं किया था. वह व्यापार मैं किसी को कसर नहीं देता था पर आप भी किसी सै कसर नहीं खाता था. उन दिनों कुछ तो मार्ग की कठिनाई आदि के कारण हरेक धुने जुलाहे को व्यापार करनें का साहस न होता था इसलिये व्यापार मैं अच्छा नफ़ा था दूसरे वह वर्तमान दशा और होनहार बातों का प्रसंग समझकर अपनी सामर्थ्य मूजिब हरबार नए रोज़गार पर दृष्टि पहुंचाया करता था इसलिये मक्खन उस्के हाथ लग जाता था, छाछ मैं और रह जाते थे. कहते हैं कि एकबार नई खानके पन्नेंकी खड़ बाज़ार मैं बिकनें आई परन्तु लोग उस्की असलियत को न पहचान सके और उस्सै ख़रीद कर नगीना बनवानें का किसी को हौसला न हुआ परन्तु उस्की निपुणाई सै उस्की दृष्टि मैं यह माल जच गया था इसलिये उस्नें बहुत थोड़े दामों मैं ख़रीद लिया और उस्के नगीनें बनावाकर भली भांत लाभ उठाया उसी समय सै उस्की जडजमी और पीछै वह उसै और, और व्यापार मैं बढ़ाता गया. परन्तु वह आप कभी बढ़कर न चला. वह कुछ तकलीफ़ सै नहीं रहता था परन्तु लोगों को झूंटी भड़क दिखानें के लिये फ़िज़ूलखर्ची भी नहीं करता था उस्की सवारी मैं नागोरी बैलोंका एक सुशोभित तांगा था और वह ख़ासे मलमल सै बढ़कर कभी वस्त्र नहीं पहनता था वह अपनें स्थान

को झाड़ पोंछकर स्वच्छ रखता था परन्तु झाड़फ़नूस आदि को फ़िज़ूलखर्ची मैं समझता था उस्के हां मकान और दुकानपर बहुत थोड़े आदमी नोकर थे परन्तु हरेक मनुष्य का काम बट रहा था इसलिये बड़ी सुगमता सै सब काम अपनें अपनें समय पर होता चला जाता था. वह अपनें धर्म्म पर दृढ था ईश्वर मैं बड़ी भक्ति रखता था. प्रतिदिन प्रात:काल घंटा डेढ़ घंटा कथा सुन्ता था और दरिद्री, दुखिया, अपाहजों की सहायता करनें मैं बड़ी अभिरुचि रखता था परन्तु वह अपनी उदारता किसी को प्रगट नहीं होनें देता था. वह अपनें काम धंदे मैं लगा रहता था इसलिये हाकिमों और रईसों सै मिलनें का उसे समय नहीं मिल सक्ता था परन्तु वह वाजबी राह सै चलता था इसलिये उसै बहुधा उन्सै मिलनें की कुछ आवश्यकता भी न थी क्योंकि देशोन्नतिका भार पुरानी रूढी के अनुसार केवल राजपुरुषों पर समझा जाता था. वह महन्ती था इसलिये तन्दुरुस्त था वह अपनें काम का बोझ हरगिज़ औरों के सिर नहीं डालता था ; हां यथाशक्ति वाजबी वातों मैं औरों की सहायता करनें को तैयार रहता था.

परन्तु अब समय बदल गया इससमय मदनमोहन के विचार और ही होरहे हैं, जहां देखो ; अमीरी ठाठ, अमीरी कारख़ानें. बाग़की सजावट का कुछ हाल हम पहले लिख चुके हैं मकान मैं कुछ उस्सै अधिक चमत्कार दिखाई देता है, बैठक का मकान अंग्रेज़ी चालका बनवाया गया है उस्मैं बहुमूल्य शीशे बरतन के सिवाय तरह, तरह का उम्दा सै उम्दा सामान मिसल सै लगा हुआ है. सहन इत्यादि मैं चीनीकी ईटोंका सुशोभित फ़र्श कश्मोर

के ग़लीचोंको मात करता है. तबेलेमैं अच्छी से अच्छी विलायती गाड़ियें और अरबी, केप, वेलर, आदिकी उम्दा उम्दा जोड़ियें अथवा जोनसवारी के घोड़े बहुतायत सै मौजूद हैं. साहब लोगों की चिठियें नित्य आती जाती हैं. अंग्रेजी तथा देसी अख़बार और मासिकपत्र वहुतसे लिये जाते हैं और उन्मैं सै ख़बरें अथवा आर्टिकलों को कोई देखे या न देखे परन्तु सौदागरों के इश्तहार अवश्य देखे जाते हैं, नई फ़ैशन की चीज़ें अवश्य मंगाई जाती हैं, मित्रोंका जल्सा सदैव बना रहता है और कभी कभी तो अंग्रेजों को भी बाल दिया जाता है, मित्रोंके सत्कार करनें मैं यहां किसी तरह को कसर नहीं रहती और जो लोग अधिक दुनियादार होते हैं उन्की तो पूजा बहुतही बिश्वास पूर्बक की जाती है ! मदनमोहन की अवस्था पच्चीस, तीस बरस सै अधिक न होगी. वह प्रगट मैं वड़ा विवेकी और बिचारवान मालूम होता है नए आदमियों सैं वड़ी अच्छी तरह मिल्ता है उस्के मुखपर अमीरी झलकती है वह वस्त्र सादे परन्तु बहुमूल्य पहनता है उस्के पिता को व्यापारी लोगोंके सिवाय कोई नहीं जान्ता था परन्तु उस्की प्रशंसा अखबारों मैं बहुधा किसी न किसी बहानें छपती रहती है और वह लोग अपनी योग्यता से प्रतिष्ठित होनेंका मान उसे देते हैं.

अच्छा ! मदनमोहन नें उन्नति की अथवा अवनति की इस बिषय मैं हम इस्समय बिशेष कुछ नहीं कहा चाहते परन्तु मदनमोहन नें यह पदवी कैसे पाई ? पिता पुत्र के स्वभाव मैं इतना अन्तर कैसे होगया ? इस्का कारण इस्समय दिखाया चाहते हैं.

मदनमोहन का पिता आप तो हरेक बात को बहुत अच्छी तरह समझता था परन्तु अपनें विचारों को दूसरे के मन मैं (उस्का स्वभाव पहिचान कर) बैठादेनें की सामर्थ्य उसे न थी उस्नें मदनमोहन को बचपन मैं हिन्दी, फारसी, और अंग्रेजी भाषा सिखानें के लिये अच्छे, अच्छे उस्ताद नौकर रख दिये थे परन्तु वह क्या जान्ता था कि भाषा ज्ञान विद्या नहीं ; विद्या का दरवाजा है विद्या का लाभ तो साधारण रीति सै बुद्धि के तीक्ष्ण होनें पर और मुख्य कर के बिचारों के सुधरनें पर मिलता है. जब उस्को यह भेद प्रगट हुआ उस्नें मदनमोहन को धमका कर राह पर लानें की युक्ति बिचारी परन्तु वह नहीं जान्ता था कि आदमी धमकानें सै आंख और मुख बन्द कर सक्ता है, हाथ जोड़ सक्ता है, पैरों मैं पड़ सक्ता है, कहो जैसे कह सक्ता है, परन्तु चित्त पर असर हुए बिना चित्त नहीं बदलता और सत्संग बिना चित्त पर असर नहीं होता जब तक अपनें चित्त मैं अपनी हालत सुधारनें की अभिलाषा न हो औरों के उपदेश सै क्या लाभ हो सक्ता है ? मदनमोहन का पिता मदनमोहन को धमका कर उस्के चित्त का असर देखनें के लिये कुछ दिन चुप हो जाता था परन्तु मदनमोहन के मन दुखनें के विचार सै आप प्रबन्ध न करता था और इस देरदार का असर उल्टा होता था. हरकिशोर, शिंभूदयाल, चुन्नीलाल, वगैरे मदनमोहन की बाल्यावस्था को इसी झमेल मैं निकाला चाहते थे क्योंकि एक तो इस अवकाश मैं उन लोगों के संग का असर मदनमोहन के चित्त पर दृढ़ होता जाता था दूसरे मदनमोहन की अवस्था के संग उस्की स्वतन्त्रता बढ़ती जाती थी इसलिये मदनमोहन के सुधरनें का

के ग़लीचोंको मात करता है. तबेलेमैं अच्छी से अच्छी विलायती गाड़ियें और अरबी, केप, वेलर, आदिकी उम्दा उम्दा जोड़ियें अथवा जोनसवारी के घोड़े बहुतायत से मौजूद हैं. साहब लोगों की चिठियें नित्य आती जाती हैं. अंग्रेजी तथा देसी अख़बार और मासिकपत्र बहुतसे लिये जाते हैं और उन्मैं से ख़बरें अथवा आर्टिकलों को कोई देखे या न देखे परन्तु सौदागरों के इश्तहार अवश्य देखे जाते हैं, नई फ़ैशन की चीज़ें अवश्य मंगाई जाती हैं, मित्रोंका जल्सा सदैव बना रहता है और कभी कभी तो अंग्रेजों को भी बाल दिया जाता है, मित्रोंके सत्कार करने मैं यहां किसी तरह को कसर नहीं रहती और जो लोग अधिक दुनियादार होते हैं उन्की तो पूजा बहुतही विश्वास पूर्बक की जाती है! मदनमोहन की अवस्था पच्चीस, तीस बरस से अधिक न होगी. वह प्रगट मैं बड़ा विवेकी और विचारवान मालूम होता है नए आदमियों सैं बड़ी अच्छी तरह मिल्ता है उस्के मुखपर अमीरी झलकती है वह वस्त्र सादे परन्तु बहुमूल्य पहनता है उस्के पिता को व्यापारी लोगोंके सिवाय कोई नहीं जान्ता था परन्तु उस्की प्रशंसा अखबारों मैं बहुधा किसी न किसी बहाने छपती रहती है और वह लोग अपनी योग्यता से प्रतिष्ठित होनेका मान उसे देते हैं.

अच्छा! मदनमोहन नें उन्नति की अथवा अवनति की इस विषय मैं हम इस्समय विशेष कुछ नहीं कहा चाहते परन्तु मदनमोहन नें यह पदवी कैसे पाई? पिता पुत्र के स्वभाव मैं इतना अन्तर कैसे होगया? इस्का कारण इस्समय दिखाया चाहते हैं.

मदनमोहन का पिता आप तो हरेक बात को बहुत अच्छी तरह समझता था परन्तु अपने विचारों को दूसरे के मन मैं (उस्का स्वभाव पहिचान कर) बैठादेनें की सामर्थ्य उसे न थी उस्नें मदनमोहन को बचपन मैं हिन्दी, फारसी, और अंग्रेजी भाषा सिखानें के लिये अच्छे, अच्छे उस्ताद नौकर रख दिये थे परन्तु वह क्या जान्ता था कि भाषा ज्ञान विद्या नहीं; विद्या का दरवाजा है विद्या का लाभ तो साधारण रीति सै बुद्धि के तीक्ष्ण होनें पर और मुख्य कर के विचारों के सुधरनें पर मिल्ता है. जब उस्को यह भेद प्रगट हुआ उस्नें मदनमोहन को धमका कर राह पर लानें की युक्ति बिचारी परन्तु वह नहीं जान्ता था कि आदमी धमकानें सै आंख और मुख बन्द कर सक्ता है, हाथ जोड़ सक्ता है, पैरों मैं पड़ सक्ता है, कहो जैसे कह सक्ता है, परन्तु चित्त पर असर हुए बिना चित्त नहीं बदलता और सत्संग बिना चित्त पर असर नहीं होता जब तक अपनें चित्त मैं अपनी हालत सुधारनें की अभिलाषा न हो औरों के उपदेश सै क्या लाभ हो सक्ता है? मदनमोहन का पिता मदनमोहन को धमका कर उस्के चित्त का असर देखनें के लिये कुछ दिन चुप हो जाता था परन्तु मदनमोहन के मन दुखनें के विचार सै आप प्रबन्ध न करता था और इस देरदार का असर उल्टा होता था. हरकिशोर, शिंभूदयाल, चुन्नीलाल, वगैरे मदनमोहन की बाल्यावस्था को इसी झमेल मैं निकाला चाहते थे क्योंकि एक तो इस अवकाश मैं उन लोगों के संग का असर मदनमोहन के चित्त पर दृढ़ होता जाता था दूसरे मदनमोहन की अवस्था के संग उस्की स्वतन्त्रता बढ़ती जाती थी इसलिये मदनमोहन के सुधरनें का

यह रस्ता न था. मदनमोहन के बिचार प्रति दिन दृढ़ होते जाते थे परन्तु वह अपनें पिता के भय सै उन्हें प्रगट न करता था. खुलासा यह है कि मदनमोहन के पिता नें अपनी प्रीति अथवा मदनमोहन की प्रसन्नता के बिचार सै मदनमोहन के बचपन मैं अपनें रक्षक भाव पर अच्छी तरह बरताव नहीं किया अथवा यों कहो कि अपना कुदरती हक़ छोड़ दिया इसलियें इन्के स्वभाव मैं अन्तर पड़नें का मुख्य ये ही कारण हुआ.

ब्रजकिशोर ठेठ सै मदनमोहन के विरुद्ध समझा जाता था. ब्रजकिशोर को वह लोग कपटी, चुग़ल, द्वेषी और अभिमानी बताते थे उन्के निकट मदनमोहन के पिता का मन बिगाड़नें वाला वह था. चुन्नीलाल और शिंभूदयाल उस्की सावधानी सै डर कर मदनमोहन का मन उस्की तरफ़ सै बिगाड़ते रहते थे और मदनमोहन भी उस्पर पिता की कृपा देखकर भीतर सै जल्ता था हरकिशोर जैसे मुंह फट तो कुछ, कुछ भरमा भरमी उस्को सुना भी दिया करते थे परन्तु वह उचित जवाब देकर चुप हो जाता था और अपनी निर्दोष चाल के भरोसे निश्चिन्त रहता था हां उस्को इन्की चाल अच्छी नहीं लगती थी और इन्के मन का पाप भी मालूम था इसलिये वह इन्सै अलग रहता था इन्का वृत्तान्त जान्नें सै जान बूझ कर बेपरवाई करता था उस्नें मदनमोहन के पिता सै इस बिषय मैं बात चीत करना बिल्कुल बन्द कर दिया था मदनमोहन के पिता का परलोक हुए पीछे निस्सन्देह उस्को मदनमोहन के सुधारनें की चटपटी लगी उस्नें मदनमोहन को राह पर लानें के लिये समझानें मैं कोई बात

बाकी नहीं छोड़ी परन्तु उस्का सब श्रम व्यर्थ गया उस्के समझानें सै कुछ काम न निकला.

अब आज हरकिशोर और ब्रजकिशोर दोनों इज्जत खोकर मदनमोहन के पास सै दूर हुए हैं इन्मैं सै आगै चलकर देखैं कौन् कैसा बरताव करता है ?

प्रकरण १८.

साहसी पुरुष.

सानुबन्ध कारज करे सब अनुबन्ध निहार
करै न साहस, बुद्धि बल पंडित करै बिचार †

बिदुरप्रजागरे.

हम प्रथम लिख चुके हैं कि हरकिशोर साहसी पुरुष था और दूर के सम्बन्ध मैं ब्रजकिशोर का भाई लगता था अब तक उस्के काम उस्की इच्छानुसार हुए जाते थे वह सब कामों मैं बडा उद्योगी और दृढ़ दिखाई देता था उस्का मन बढ़ता जाता था और वह लड़ाई झगडे वगैरे के भयंकर और साहसिक कामों मैं बड़ी कारगुजारी दिखलाया करता था. वह हरेक काम के अंग प्रत्यंग पर द्रृष्टि डालनें या सोच विचार के कामों मैं माथा खाली करनें और परिणाम सोचनें या कागज़ी और हिसाबी

---

† अनुबन्धान पेक्षेत सानुबन्धेषु कर्म्मसु ।
संप्रधार्य्यं च कुर्वीत न वेगेन समाचरेत् ॥

मामलों मैं मन लगानें के बदले ऊपर, ऊपर सै इन्को देख भाल कर केवल बड़े, बड़े कामों मैं अपने तांईं लगाये रखनें और बड़े आदमियों मैं प्रतिष्ठा पानें की बिशेष रुचि रखता था. उस्नें हरेक अमीर के हां अपनी आवा जाई कर ली थी और वह सबसै मेल रखता था. उस्के स्वभाव मैं जल्दी होनें के कारण वह निर्मूल बातों पर सहसा बिश्वास कर लेता था और झट पट उन्का उपाय करनें लगता था उस्के बिना बिचारे कामों सै जिस्तरह बिना बिचारा नुक्सान होजाता था इसी तरह बिना बिचारे फ़ायदे भी इतनें हो जाते थे जो बिचार कर करनें सै किसी प्रकार संभव न थे. जब तक उस्के काम अच्छी तरह सम्पन्न हुए जाते थे, उस्को प्रति दिन अपनी उन्नति दिखाई देती थी, सब लोग उस्की बात मान्ते थे, उस्का मन बढ़ता जाता था और वो अपना काम सम्पन्न करनें के लिये अधिक, अधिक परिश्रम करता था परन्तु जहां किसी बात मैं उस्का मन रुका उस्की इच्छानुसार काम न हुआ किसीनें उस्की बात दुलख दी अथवा उस्को शाबासी न मिली वहां वह तत्काल आग हो जाता था हरेक काम को बुरी निगाह सै देखनें लगता था उस्की कारगुज़ारी मैं फ़र्क़ आजाता था और वह नुकसान सै खुश होनें लगता था इसलिये उस्की मित्रता भय सै ख़ाली न थी.

कोई साहसी पुरुष स्वार्थ छोड़ कर संसार के हितकारी कामों मैं प्रबृत्त हो तो कोलम्बसकी तरह बहुत उपयोगी होसक्ता है और अब तक संसार की बहुत कुछ उन्नति ऐसे ही लोगों सै हुई है इस लिये साहसी पुरुष परित्याग करनें के लायक़ नहीं

हैं परन्तु युक्ति सै काम लेनें के लायक हैं हां ! ऐसे मनुष्यों सै काम लेनें मैं उन्का मन बराबर बढ़ाते जांय तो आगै चल कर काबू सै बाहर होजानें का भय रहता है इसलिये कोई बुद्धिमान तो उन्का मन ऐसी रीति सै घटाते बढ़ाते रहते हैं कि न उन्का मन बिगडनें पावै न हद्सै आगै बढ़नें पावै कोई अनुभवी मध्यम प्रकृति के मनुष्यों को बीचमैं रखते हैं कि वह उन्को वाजबी राह बताते रहैं. परन्तु लाला मदनमोहन के यहां ऐसा कुछ प्रबन्ध न था दूसरे उस्के बिचार मूजिब मदनमोहन नें अपनें झूंटे अभिमान सै भलाई के बद्ले जान बूझ कर उस्की इज्ज़त ली थी इस्कारण हरकिशोर इस्समय क्रोध के आवेश मैं लाल होरहा था और बद्ला लेनेंके लिये उस्के मनमैं तरंगैं उठती थीं. उस्नें मदनमोहन के मकान सै निकलते ही अपनें जी का गुबार निकालना आरम्भ किया.

पहले उस्को निहालचन्द मोदी मिला उस्नें पूछा "आज कितनें की बिक्री की ?"

"ख़रीदारी की तो यहां कुछ हद ही नहीं है परन्तु माल बेच कर दाम किस्सै लें जिस्को बहुत नफ़े का लालच हो वह भले ही बेचै मुझको तो अपनी रक़म डबोनी मंज़ूर नहीं" हरकिशोरनें जवाब दिया.

"हैं ! यह क्या कहते हो ? लाला साहब की रक़म मैं कुछ धोका है ?"

"धोके का हाल थोड़े दिंन मैं खुल जायगा मेरे जान तो होना था वह हो चुका."

"तुम यह बात क्या समझ कर कहते हो ?" मोदीनें घबरा

कर पूछा "कम सै कम लाख, पचास हज़ार का तो शीशा बर्तन इस्समय इन्के मकान मैं होगा"

"समय पर शीशे बर्तन को कोई नहीं पूछता उस्की लागत मैं रुपे के दो आनें नहीं उठते इन्हीं चीजों की ख़रीदारी मैं तो सब दौलत जाती रहा मैंने निश्चय सुना है कि इन चीजों की क़ीमत बाबत पचास हज़ार रुपे तो ब्राइट साहबके देनें हैं और कल एक अंग्रेज दस हज़ार रुपे मागनें आया था न जानें उस्के लेनें थे कि कर्ज़ मांगता था परन्तु लाला साहब नें किसी सै उधार मंगा कर देनें का क़रार किया है ? फिर जहां उधार के भरोसे सब काम भुगतनें लगा वहां बाक़ी क्या रहा ? मैंने अपनी रक़म के लिये अभी बहुत तक़ाज़ा किया पर वे फूटी कौड़ी नहीं देते इसलिये मैं तो अपनें रुपों की नालिश अभी दायर करता हूं तुह्मारी तुम जानों."

यह बात सुन्ते ही मोदी के होश उड़ गए वह बोला "मेरे भी पांच हज़ार लेनें हैं मैंनें कई बार तगादा किया पर कुछ सुनाई न हुई मैं अभी जाकर अपनी रक़म मांगता हूं जो सूधी तरह देदैंगे तो ठीक है नहीं तो मैं भी नालिश कर दूंगा. ब्योहार मैं मुलाहिज़ा क्या ?

इस्तरह बतला कर दोनों अपनें, अपनें रस्ते लगे. आगे चल कर हरकिशोर को मिस्टर ब्राइट का मुन्शी मिला वह अपनें घर भोजन करनें जाता था उसै देख कर हरकिशोर अपनें आप कहने लगा "मुझे क्या है ? मेरे तो थोड़ेसे रुपे हैं मैं तो अभी नालिश करके पटा लूंगा. मुश्किल तो पचास, पचास हज़ार वालों की है देखैं वह क्या करते हैं ?"

"लाला हरकिशोर किस्पर नालिश की तैयारी कर रहे हैं ?" मुन्शी नें पूछा.

"कुछ नहीं साहब ! मैं आप सै कुछ नहीं कहता. मैं तो विचारे मदनमोहन का विचार कर रहा हूं हा ! उस्की सब दौलत थोड़े दिन मैं लुट गई अब उस्के काम मैं हल चल हो रही है लोग नालिश करनें को तैयार हैं मैंनें भी कम्बख्ती के मारे हज़ार दो एक का कपड़ा दे दिया था इसलिये मैं भी अपनें रुपे पटाने की राह सोच रहा हूं. बिचारा मदनमोहन कैसा सीधा आदमी था ?"

"क्या सचमुच उस्पर तक़ाज़ा हो गया ? उस्पर तो हमारे साहब के भी पचास हज़ार रुपे लेनें हैं आज सवेरे तो लाला मदनमोहन की तरफ़ सै बड़े काचों सी एक जोड़ी ख़रीदनें के लिये मास्टर शिंभूदयाल हमारे साहब के पास गए थे फिर इतनी देर मैं क्या होगया ? तुमनें यह बात किस्सै सुनी ?"

"मैं आप वहां सै आता हूं कल सै गड़बड़ हो रही है कल एक साहब दस हज़ार रुपे मांगनें आए थे इस्पर मदनमोहन नें स्पष्ट कह दिया कि मेरे पास कुछ नहीं है मैं कहीं सै उधार लेकर दो एक दिन मैं आप का बंदोबस्त कर दूंगा. मैंनें अपनें रुपे के लिये बहुत ताकीद की पर मुझको भी कोरा जवाब ही मिला अब मैं नालिश करनें जाता हूं और निहालचन्द मोदी अभी पांच हज़ार के लिये पेट पकड़े गया है वह कहता था कि मेरे रुपे इस्समय न दैंगे तौ मैं भी अभी नालिश कर दूंगा जिस्की नालिश पहलै होगी उस्को पूरे रुपे मिलैंगे."

"तो मैं भी जाकर साहब सै यह हाल कह दूं तुम्हारी रक़म

तो खेरीज है परंतु साहब'का क़र्ज़ा बहुत बड़ा है जो साहब की इस रक़म मैं कुछ धोका हुआ तो साहब का काम चलना कठिन हो जायगा." ये कहकर मिस्टर ब्राइट का मुन्शी घर जानें के बदले साहब के पास दोड़ गया.

लाला हरकिशोर आगे बढ़े तो मार्ग मैं लाला मदनमोहन की पचपनसो की ख़रीद के तीन घोड़े लिये हुए आग़ाहसनजान लाला मदनमोहन के मकान की तरफ़ जाता मिला उस्को देख-कर हरकिशोर कहनें लगे "ये ही घोड़े लाला मदनमोहन नें कल ख़रीदे थे माल तो बड़े फ़ायदे से बिका पर दाम पट जायं तब जानिये."

"दामों की क्या है ? हमारा हज़ारों रुपे का काम पहलै पड़ चुका है" आग़ाहसनजान नें जवाब दिया और मन मैं कहा "हमारी रक़म तो अपनें लालच सै चुन्नीलाल और शिंभूदयाल घर बैठे पहुंचा जायंगे"

"वह दिन गए आज लाला मदनमोहन का काम डिगमिगा रहा है. उस्के ऊपर लोगों का तगादा जारी है जो तुम किसी के भरोसे रहोगे तो धोका खाओगे जो काम करो ; अच्छी तरह सोच समझकर करना."

"कल शाम को तो लाला साहब नें हमारे यहां आकर ये घोड़े पसंद किये थे फिर इतनी देर मैं क्या होगया ?"

जब तेल चुक जाता है तो दिये बुझनें मैं क्या देर लगती है ? चुन्नीलाल, शिंभूदयाल सब तेल चाट गए ऐसे चूहों की घात लगे पीछे भला क्या बाकी रह सक्ता था ?"

"मैं जान्ता हूं कि लाला साहब का बहुतसा रुपया लोग

खागए परंतु उन्के काम बिगडनें की बात मेरे मन मैं अबतक नहीं बैठती तुमनें यह हाल किस्सै सुना है ?"

"मैं आप वहां सै आया हूं मुझको झूंट बोलने सै क्या फायदा है ? मैं तो अभी जाकर नालिश करता हूं निहालचन्द मोदी नालिश करनें को तैयार है ब्राइट साहब का मुन्शी अभी सब हक़ीक़त निश्चय करके साहब के पास दौड़ा गया है तुमको भरोसा न हो निस्संदेह न मानो तुम न मानोगे इस्सै मेरी क्या हानि होगी" यह कहकर हरकिशोर वहां सै चल दिया."

पर अब मदनमोहन की तरफ़ सै आग़ाहसनजान को धैर्य न रहा. असल रुपे का लालच उस्को पीछै हटाता था और नफेका लालच आगे बढाता था पहले रुपे के बिचार सै तबियत और भी घबराई जाती थी निदान यह राह ठैरी कि इस्समय घोड़ों को फेर ले चलो मदनमोहन का काम बना रहैगा तो पहले रुपे वसूल हुए पीछे ये घोड़े पहुंचा दैंगे नहीं तो कुछ काम नहीं."

इधर हरकिशोरको मार्गमैं जो मिल्ता था उस्सै वह मदनमोहन के दिवाले का हाल बराबर कहता चला जाता था और यह सब बातैं बाज़ार मैं होती थीं इसलिये एक सैं कहनें मैं पांच और सुन लेते थे और उन पांच के मुख सै पचासों को यह हाल तत्काल मालूम हो जाता था फिर पचास सै पांच सौ मैं और पांच सौ सै पांच हज़ार मैं फैलते क्या देर लगती थी ? और अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि हरेक आदमी अपनी तरफ सै भी कुछ, न कुछ नोंन मिर्च लगाही देता था जिस्को एक के कहनें सै भरोसा न आया दो के कहनें सै आगया, दो के कहनेंसै

न आया चार के कहनें सै आगया मदनमोहन के चाल चलन सै अनुभवी मनुष्य तो यह परिणाम पहले ही सै समझ रहे थे जिस्पर मास्टर शिंभूदयाल नें मदनमोहन की तरफ़ सै एक दो जगह उधार लेनें की बात चीत की थी इसलिये इस चर्चा मैं किसी को संदेह न रहा. बारूद बिछ रही थी बत्ती दिखाते ही तत्काल भभक उठी.

परंतु लाला मदमोहन या ब्रजकिशोर वग़ैरे को अबत इस्का कुछ हाल मालूम न था.

प्रकरण २६.

दिवाला.

कीजे समझ, न कीजिए बिन बिचार ब्यवहार ॥
आय रहत जानत नहीं? सिरको पायन भार ॥

बृंद.

लाला मदनमोहन प्रातःकाल उठते ही कुतब जानें की तैयारी कर रहे थे. साथ जानेंवाले अपनें, अपनें कपड़े लेकर आते जाते थे इतनें मैं निहालचन्द मोदी कई तक़ाजगीरों को साथ लेकर आ पहुंचा.

इस्नें हरकिशोर सै मदनमोहन के दिवाले का हाल सुना था उसी समय सै इस्को तलामली लग रही थी कल कई बार यह मदनमोहन के मकान पर आया पर किसी नें इस्को मदनमोहन के पास तक न जानें दिया और न इस्के आनें की इत्तला की.

संध्या समय मदनमोहन के सवार होनें के भरोसे वह दरवाज़े पर बैठा रहा परंतु मदनमोहन सवार न हुए इस्सै इस्का संदेह और भी दृढ़ होगया. शहर मैं तरह, तरह की हज़ारों बातें सुनाई देती थीं इस्सै वह आज सवेरे ही कई लेनदारों को साथ लेकर एकदम मदनमोहन के मकान मैं घुस आया और पहुंचते ही कहनें लगा "साहब! अपना हिसाब करके जितने रुपे हमारे बाकी निकलैं हम को इसी समय दे दीजिये हमें आप का लेन देन रखना मंजूर नहीं है कल से हम कई बार यहां आए परंतु पहरे वालों नें आप के पास तक नहीं पहुंचनें दिया."

"हमारा रुपया ख़र्च करके हमारे तक़ाजे सै बचनें के लिये यह तो अच्छी युक्ति निकाली!" एक दूसरे लेनदार नें कहा "परंतु इस्तरह रक़म नहीं पच सक्ती नालिश करके दमभर मैं रुपया धरा लिया जायगा."

"बाहर पहरे चोकी का बंदोवस्त करके भीतर आप अस्वाब बांध रहे हैं!" तीसरे मनुष्य नें कहा "जो दो, चार घड़ी हम लोग और न आते तो दरवाज़े पर पहरा ही पहरा रह जाता लाला साहब का पता भी न लगता."

"इस्मैं क्या संदेह है? कल रात ही को लाला साहब अपनें बाल बच्चों को तो मेरठ भेज चुके हैं" चोथे नें कहा "इन्साल-वन्सी के सहारे सै लोगों को जमा मारनें का इन दिनों बहुत होसला होगया है"

"क्या इस जमानें मैं रुपया पैदा करने का लोगों नें यही ढंग समझ रक्खा है" एक और मनुष्य कहनें लगा "पहले अपनी साहूकारी, मातबरी, और रसाई दिखाकर लोगों के चित्त मैं

विश्वास बैठाना, अन्त मैं उन्की रक़म मारकर एक किनारे हो बैठना"

"मेरी तो जन्म भर की कमाई यही है मैंनें समझा था कि थोड़ीसी उमर बाकी रही है सो इस्मैं आराम सै कट जायगी परंतु अब क्या करूं?" एक बुड्ढा आंखों मैं आंसू भरकर कहनें लगा "न मेरी उमर महनत करनें की है न मुझको किसी का सहारा दिखाई देता है जो तुम सै मेरी रक़म न पटेगी तो मेरा कहां पता लगेगा?"

"हमारे तो पांच हज़ार रुपे लेनें हैं परंतु लाओ इस्समय हम चार हज़ार मैं फैसला करते हैं" एक लेनदार नें कहा.

औरों की जमा मारकर सुख भोगनें मैं क्या आनन्द आता होगा?" एक और मनुष्य बोल उठा.

इतनें मैं और बहुतसे लोगों की भीड़ आगई. वह चारों तरफ़ सै मदनमोहन को घेरकर अपनी, अपनी कहनें लगे. मदन-मोहन की ऐसी दशा कभी काहे को हुई थी? उस्के होश उड़ गए, चुन्नीलाल, शिंभूदयाल वगैरे लोगों को धैर्य देनें की कोशिश करते थे परंतु उन्को कोई बोलनें ही नहीं देता था जब कुछ देर खूब गड़बड़ हो चुकी लोगों का जोश कुछ नरम हुआ तब चुन्नीलाल पूछनें लगा "आज क्या है? सब के सब एका एक ऐसी तेजी मैं कैसे आ गए? ऐसी गड़बड़ सै कुछ भी लाभ न होगा जो कुछ कहना हो धीरे सै समझा कर कहो"

"हम को और कुछ नहीं कहना हम तो अपनी रक़म चाहते हैं" निहालचन्द नें जवाब दिया.

"हमारी रक़म हमारे पल्ले डालो फिर हम कुछ गड़बड़ न करेंगे" दूसरे नें कहा.

"तुम पहले अपनें लेनें का चिट्ठा बनाओ, अपनी. अपनी दस्तावेज़ दिखाओ, हिसाब करो, उस्समय तुम्हारा रुपया तत्काल चुका दिया जायगा" मुन्शी चुन्नीलाल नें जवाब दिया.

"यह लो हमारे पास तो यह रुक्का है" "हमारा हिसाब यह रहा" "इस रसीद को देखिये" "हमनें तो अभी रक़म भुगताई है" इस तरह पर चारों तरफ से लोग कहनें लगे.

"देखो जी! तुम बहुत हल्ला करोगे तो अभी पकड़ कर कोतवाली मैं भेज दिए जाओगे और तुम पर हतक इज़्ज़त की नालिश की जायगी नहीं तो जो कुछ कहना हो धीरज से कहो" मास्टर शिंभूदयाल नें अवसर पाकर दवानें की तजवीज की.

"हम को लड़नें झगड़नें की क्या ज़रूरत है? हम तो केवल जवाब चाहते हैं जवाब मिले पीछे आप से पहले हम नालिश कर देंगे" निहालचन्द नें सब की तरफ़ से कहा.

"तुम वृथा घबराते हो हमारा सब माल मता तुम्हारे साम्हनें मौजूद है हमारे घर में घाटा नहीं है ब्याज समेत सब को कौड़ी, कौड़ी चुका दी जायगी" लाला मदनमोहन नें कहा.

"कोरी बातोंसे जी नहीं भरता" निहालचन्द कहनें लगा "आप अपना वही खाता दिखादें. क्या लेना है? क्या देना है? कितना माल मौजूद है? जो अच्छी तरह हमारा मन भर जायगा तो हम नालिश नहीं करेंगे"

"कागज़ तो इस्समय तैयार नहीं है" लाला मदनमोहन नें लजा कर कहा.

" तो ख़ातरी कैसे हो ? ऐसी अँधेरी कोठरी मैं कोन रहै ? (बृन्द) जो पहले करिये जतन तो पीछे फल होय। आग लगे खोदे कुआ कैसे पावे तोय ॥ इस काठ कबाड़ के तो समय पर रुपे मैं दो आनें भी नहीं उठते " एक लेनदार नें कहा.

" ऐसे ही अनसमझ आदमी जल्दी करके बेसबब दूसरों का काम बिगाड़ दिया करते हैं " मास्टर शिंभूदयाल कहनें लगे.

इतनें मैं हरकिशोर अदालत के एक चपरासी को लेकर मद्‌नमोहन के मकान पर आ पहुंचे और चपरासी नें सम्मन पर मदनमोहन सै क़ायदे मूजिब इत्तला लिखा ली.

उस्को गए थोड़ी देर न बीतने पाई थी कि आग़ा हसनजान के वकील की नोटिस आ पहुंची उस्मैं लिखा था कि " आग़ा हसनजान की तरफ़ सै मुझको आपके जतानें के लिये यह फ़र्मायश हुई है कि आप उस्के पहले की ख़रीद के घोड़ों की क़ीमत का रुपया तत्काल चुका दें और कल की ख़रीद के तीन घोड़ों की क़ीमत चौबीस घन्टे के भीतर भेज कर अपनें घोड़े मंगवालें जो इस मयाद के भीतर कुल रुपया न चुका दिया जायगा तो ये घोड़े नीलाम कर दिये जायँगे और इन्की क़ीमत मैं जो कमी रहेगी पहले की बाक़ी समेत नालिश करके आप सै वसूल की जायगी "

थोडी देर पीछे मिस्टर ब्राइट का सम्मन और कच्ची कुरकी एक साथ आ पहुंची इस्सै लोगों के घबराहट की कुछ हद न रही घर मैं मामला होनें की आशा जाती रही सबको अपनी, अपनी रक़म ग़लत मालूम होनें लगी और सब नालिश करनें के लिये कचहरी को दोड गए.

"यह क्या है ? किस दुष्ट की दुष्टता सै हम पर यह गज़ब का गोला एक साथ आ पड़ा ?" लाला मदनमोहन आंखों मैं आंसू भर कर बड़ी कठिनाई सै इतनी बात कह सके.

"क्या कहूं ? कोई बात समझ मैं नहीं आती" मुन्शी चुन्नी-लाल कहनें लगे "कल लाला ब्रजकिशोर यहां सै ऐसे बिगड़ कर गए थे कि मेरे मन मैं इसी समय खटका हो गया था शायद उन्हीं नें यह बखेड़ा उठाया हो बाज़े आदमियों को अपनी बात का ऐसा पक्ष होता है कि वह औरों की तो क्या ? अपनी बर-बादी का भी कुछ विचार नहीं करते. परमेश्वर ऐसे हटीलों सै बचाय. हरकिशोर का ऐसा होसला नहीं मालूम होता और वह कुछ बखेड़ा करता तो उस्का असर कल मालूम होना चाहिये था अब तक क्यों न हुआ ?"

प्रथम तो निहालचन्द कल सै अपनें मन मैं घबराहट होनेंका हाल आप कह चुका था, दूसरे हरकिशोर की तरफ़ सै नालिश दायर होकर सम्मन आगया, तीसरे चुन्नीलाल ब्रजकिशोर के स्वभाव को अच्छी तरह जान्ता था इस्लिये उस्के मन मैं ब्रजकि-शोर की तरफ़ सै ज़रा भी संदेह न था परन्तु वह हरकिशोर की अपेक्षा ब्रजकिशोर सै अधिक डरता था इसलिये उस्नें ब्रजकिशोर ही को अपराधी ठैरानें का विचार किया अफ़सोस ! जो दुरा-चारी अपनें किसी तरह के स्वार्थ सै निर्दोष और धर्मात्मा मनुष्यों पर झूंटा दोष लगाते हैं अथवा अपना क़सूर उन्पर बरसाते हैं उन्के बराबर पापी संसार मैं और कौन होगा ?

लाला मदनमोहन के मन मैं चुन्नीलाल के कहनें का पूरा विश्वास होगया उस्नें कहा "कि मैं अपनें मित्रों को रुपे की

सहायता के लिये चिट्ठी लिखता हूं मुझको विश्वास है कि उन्की तरफ़ सै पूरी सहायता मिलेगी परन्तु सब सै पहले ब्रजकिशोर के नाम चिट्ठी लिखूंगा कि अब वह मुझको अपना काला मुंह जन्म भर न दिखलाय" यह कह कर लाला मदनमोहन चिट्ठियां लिखनें लगे.

प्रकरण २७.

लोक चर्चा (अफ़वाह)

निन्दा, चुगली, झूंठ अरु पर दुखदायक बात।
जे न करहिं तिन पर द्रवहिं सर्वेश्वर बहुभांत॥ +

विष्णुपुराणे.

उस तरफ़ लाला ब्रजकिशोर नें प्रातःकाल उठ कर नित्य नियम सै निश्चिन्त होतेही मुन्शी हीरालाल को बुलानें के लिये आदमी भेजा.

हीरालाल मुन्शी चुन्नीलाल का भाई है यह पहले बंदोबस्त के महकमे मैं नौकर था जब सै वह काम पूरा हुआ; इस्की नौकरी कहीं नहीं लगी थी.

"तुमनें इतनें दिन सै आकर सूरत तक नहीं दिखाई घर बैठे क्या किया करते हो?" हीरालाल को आते ही ब्रजकिशोर कहनें

+ परापवादपैशुन्य मनृतं च न भाषते।
अन्योद्वेगकरं चापि तोष्यते तेन केशवः॥

लगे "दफ्तर मैं जाते थे जब तक तो ख़ैर अवकाश ही न था परन्तु अब क्यों नहीं आते ?"

"हुज़ूर ! मैं तो हरवक्त हाज़िर हूं परन्तु बेकाम आनें मैं शर्म आती थी आज आपनें याद किया तो हाज़िर हुआ फ़रमाइये क्या हुक्म है ?" हीरालाल नें कहा.

"तुम ख़ाली बैठे हो इस्की मुझे बड़ी चिन्ता है तुह्मारे बिचार सुधरे हुए हैं इस्सै तुमको पुरानें हक़ का कुछ ख़याल हो या न हो (!) परन्तु मैं तो नहीं भूल सक्ता तुह्मारा भाई जवानी की तरंग मैं आकर नौकरी छोड़ गया परन्तु मैं तो तुम्हैं नहीं छोड सक्ता. मेरे यहां इन दिनों एक मुहर्रिर की चाह थी सब सै पहले मुझको तुह्मारी याद आई (मुस्करा कर) तुह्मारे भाई को दस रुपे महीना मिल्ता था परन्तु तुम उस्सै बड़े हो इसलिये तुम को उस्सै दूनी तनख्वाह मिलेगी"

"जी हां ! फिर आप को चिन्ता न होगी तो और किस्को होगी ? आप के सिवाय हमारा सहायक कौन है ? चुन्नीलाल नें निस्संदेह मूर्खता की परन्तु फ़िर भी तो जो कुछ हुआ आप ही के प्रताप सै हुआ."

"नहीं मुझको चुन्नीलाल की मूर्खता का कुछ विचार नहीं है मैं तो यही चाहता हूं कि वह जहां रहै प्रसन्न रहै. हां मेरी उपदेश की कोई, कोई बात उस्को बुरी लगती होगी परन्तु मैं क्या करूं ? जो अपना होता है उस्का दर्द आता ही है"

"इस्मैं क्या सन्देह है ? जो आप को हमारा दर्द न होता तो आप इस समय मुझको घर सै बुलाकर क्यों इतनी कृपा करते ? आपका उपकार मान्नें के लिये मुझ को कोई शब्द नहीं

मिल्ते परन्तु मुझ को चुन्नीलाल की समझ पर बड़ा अफ़सोस आता है की उस्नें आप जैसे प्रतिपालक के छोड़ जानें की ढिठाई की. अब वह अपनें किये का फल पावेगा तब उस्की आखें खुलेंगी ”

“ मैं उस्के किसी, किसी काम को निस्सन्देह नापसन्द करता हूं परन्तु यह सर्बथा नहीं चाहता कि उस्को किसी तरह का दुःख हो ”

“ यह आप की दयालुता है परन्तु कार्य कारण के सम्बन्ध को आप कैसे रोक सक्ते हैं ? आज लाला मदनमोहन पर तकाज़ा होगया. जो ये लोग आप का उपदेश मान्ते तो ऐसा क्यों होता ? ”

“ हाय ! हाय ! तुम यह क्या कहते हो ? मदनमोहन पर तकाज़ा होगया ! तुमनें यह बात किस्सै सुनी ? मैं चाहता हूं कि परमेश्वर करे यह बात झूंट निकले ” लाला ब्रजकिशोर इतनी वात कह कर दुःख सागर मैं डूब गए उन्के शरीर मैं बिजली का सा एक झटका लगा, आखों मैं आंसू भर आए, हाथ पांव शिथिल होगए. मदनमोहन के आचरण सै बड़े दुःख के साथ वह यह परिणाम पहले ही समझ रहे थे इस लिये उन्को उस्का जितना दुःख होना चाहिये पहले होचुका था तथापि उन्को ऐसी जल्दी इस दुखदाई ख़बर के सुन्नें की सर्बथा आशा न थी इस लिये यह ख़बर सुन्ते ही उन्का जी एक साथ उमड आया परन्तु वह थोड़ी देर मैं अपनें चित्तका समाधान करके कहनें लगे:-

“ हा ! कल क्या था ! आज क्या होगया ! ! ¡ शृंगाररसका सुहावनां समां एका एक करुणा सै बदलगया ! बेलजिअम की

राजधानी ब्रसेलस पर नैपोलियन नें चढाई कीथी उस्समय की दुर्दशा इस्समय याद आती है, लार्डबायरन लिखता है:--

"निशि मैं बरसेलस गाजि रह्यो ॥
बल, रूप बढाय बिराजि रह्यो
अति रूपवती युवती दरसैं ॥
बलवान सुजान जवान लसैं
सब के मुख दीपनसों दमकैं ॥
सब के हिय आनँद सों धमकैं
बहुभांति बिनोद प्रमोद करैं ॥
मधुरे सुर गाय उमंग भरैं
जब रागन की मृदु तान उड़ैं ॥
प्रियप्रीतम नैनन सैन जुड़ैं
चहुं ओर सुखी सुख छायरह्यो ॥
जनु ब्याहन घंट निनाद भयो
पर मौनगहो ! अविलोक इतै ! ॥
यह होत भयानक शब्द कितै ?
डरपौ जिन चंचल बायु बहै ॥
अथवा रथ दौरत आवत है
प्रिय ! नाचहु, नाचहु ना ठहरो ॥
अपनें सुख की अवधी न करो
जब जोबन और उमंग मिलैं ॥
सुख लुटन को दुहु दोर चलैं
तब नींद कहूं निशआवतै है ? ॥
कुछ औरहु बात सुहावत है ?

पर कान लगा ; अब फेर सुनो ॥
वह शब्द् भयानक है दुगनो !
घनघोरघटा गरजी अब ही ॥
तिहँ गूंज मनो दुहराय रही
यह तोप दनादन आवत हैं ॥
ढिंग आवत भूमि कँपावत हैं
"सब शस्त्रसजो, सब शस्त्रसजो" ॥
घबराट बढो सुख दूर भजो
दुखसों बिलपैं कलपैं सबही ॥
तिनकी करुणा नहिं जाय कही
निज कोमलता सुनि लाज गए ॥
सुकपोल ततक्षण पीत भए
दुखपाय कराहि बियोग लहैं ॥
जनु प्राण बियोग शरीर सहैं
किहिं भांति करों अनुमान यहू ॥
प्रिय प्रीतम नैन मिलैं कबहू ?
जब वा सुख चैनहि रात गई ॥
इहिं भांत भयंकर प्रात भई ! ! !" +
हां यह खबर तुमनें किस्सै सुनी ?"

× There was a sound of revelry by night,
And Belgium's capital had gathered then
Her Beauty and her Chivalry, and bright
The lamps shone o'er fair women and brave men ;
A thousand hearts beat happily ; and when
Music arose with its voluptuous swell,

"चुन्नीलाल अभी घर भोजन करने आया था वह कहता था" "वह अबतक घर हो तो उसे एक बार मेरे पास भेज देना हम लोग खुशी प्रसन्नतामैं चाहे जितने लडते झगडते रहें परन्तु दुःख दर्द सबमैं एक हैं. तुम चुन्नीलाल, सै कह देना कि मेरे पास आने मैं कुछ संकोच न करे मै उस्सै ज़रा भी अप्रसन्न नहीं हू"

Soft eyes look'd love to eyes which spake again,
And all went merry as a marriage bell ;
But, hush ! hark ! a deep sound strikes like a rising knell !
Did ye not hear it ?—No;'t was but the wind,
Or the car rattling o'er the stony street ;
On with the dance ! let joy be unconfined,
No sleep till morn, when, Youth and Pleasure meet
To chase the glowing hours with flying feet-
But hark !-that heavy sound breaks in once more,
As if the clouds its echo would repeat ;
And nearer, clearer, deadlier, than before !
Arm ! arm ! it is- it is- the cannon's opening roar !
Ah ! then and there was hurrying to and fro,
And gathering tears and tremblings of distress,
And cheeks all pale, which but an hour ago
Blush'd at the praise of their own loveliness ;
And there were sudden partings, such as press
The life from out young hearts, and choking sighs
Which ne'er might be repeated: who would guess
If ever more should meet those mutual eyes,
Since upon night so sweet such awful morn should rise !

Lord Byron.

"राम, राम ! यह हज़ूर क्या फरमाते हैं ? आप की अप्रसन्नता का बिचार कैसे हो सक्ता है ? आप तो हमारे प्रतिपालक है. मैं जाकर अभी चुन्नीलाल को भेजता हूं वह आकर अपना अपराध क्षमा करायगा और चला गया होगा तो शामको हाजिर होगा" हीरालालनें उठते उठते कहा.

"अच्छा ! तुम कितनी देर मैं आओगे ?"

"मैं अभी भोजन करके हाजिर होता हू" यह कह कर हीरालाल रुखसत हुआ.

लाला ब्रजकिशोर अपने मनमैं बिचारने लगे कि "अब चुन्नीलाल सै सहज मैं मेल हो जायगा परन्तु यह तक़ाज़ा कैसे हुआ ? कल हरकिशोर क्रोधमैं भर रहा था इस्सै शायद उसीनें यह अफ़्वा फैलाई हो उस्ने ऐसा किया तो उस्के क्रोधनें बड़ा अनुचित मार्ग लिया और लोगोंने उस्के कहने मैं आकर बडा धोका खाया.

"अफ़्वा वह भयंकर बस्तु है जिस्सै बहुत से निर्दोष दूषित बन जाते हैं. बहुत लोगोंके जोमैं रंज पड जाते हैं बहुत लोगों के घर बिगड जाते हैं. हिन्दुस्थानियोंमैं अबतक बिद्याका ब्यसन नहीं है समय की क़द्र नहीं है भले बुरे कामों की पूरी पहचान नहीं है इसी सै यहांके निवासी अपना बहुत समय औरों के निज की बातों पर हाशिया लगाने मैं और इधर उधरकी ज़टल्ल हांकने मैं खो देतेहैं जिस्से तरह, तरह की अफ़्वाएं पैदा होती हैं और भलेमानसोंकी झूंटी निंदा अफ़्वाकी ज़हरी पवन मैं मिल्कर उन्के सुयशको घूंधला करती है इन अफवा फैलानें वालोंमैं कोई, कोई दुर्जन खानें कमानें वाले हैं कोई कोई दुष्ट बैर और जलन सै

औरों की निन्दा करने वाले हैं और कोई पापी ऐसे भी हैं जो आप किसी तरह की योग्यता नहीं रखते इस लिये अपना भरम बढाने को बडे बडे योग्य मनुष्यों की साधारण भूलों पर टीका करकै आप उन्के बराबर के बना चाहते हैं अथवा अपना दोष छिपाने के लिये दुसरे के दोष ढुंडते फिरते हैं या किसी की निंदित चर्चा सुन्कर आप उस्सै जुदे बन्नेके लिये उस्की चर्चा फैलाने में शामिल होजाते हैं या किसी लाभदायक वस्तु सै केवल अपना लाभ स्थिर रखनेके लिये औरों के आगे उस्की निंदा किया करते हैं पर बहुतसै ठिलुए अपना मन बहलाने के लिये औरों की पंचायत ले बैठते हैं बहुतसै अन्समझ भोले भावसै बात का मर्म जाने बिना लोगोंकी बनावट में आकर धोका खाते हैं जो लोग औरों की निंदा सुन्कर कांपते हैं वह आप भी अपनें अजानपनें में औरोंकी निंदा करते हैं ! जो लोग निर्दोष मनुष्यों की निंदा सुन्कर उन्पर दया करते हैं वह आप भी धीरे सै, कान में झुककर, औरों सै कहने के वास्तै मनै करकर, औरोंकी निंदा करते हैं ! जिन लोगोंके मुख सै यह वाक्य सुनाई देते हैं कि "बड़े खेद की बात है" "बड़ी बुरी बात है" बड़ी लज्जा की बात है" "यह बात मान्नें योग्य नहीं" "इस्में बहुत संदेह है" "इन्बातों सै हाथ उठाओ" वह आप भी औरों की निंदा करते हैं ! वह आप भी अफ़वाह फैलानें वालोंकी बात पर थोड़ा बहुत विश्वास रखते हैं ! झूंटी अफ़वासै केवल भोले आदमियों के चित्त पर ही बुरा असर नहीं होता वह सावधान सै सावधान मनुष्यों को भी ठगती है. उस्का एक, एक शब्द भले मानसों की इज्जत लूटता है कल्पद्रुम में कहा है "होत चुगल संसर्ग ते सज्जन मनहुं विकार ॥

कमल गंध वाही गलिन धूर उड़ावत ब्यार ॥ १ * ” जो लोग असली बात निश्चय किये बिना केवल अफ़्वाके भरोसे किसी के लिये मत बांध लेते हैं वह उस्के हक़ मैं बडी बेइन्साफ़ी करते हैं. अफ़्वा के कारण अबतक हमारे देशको बहुत कुछ नुक्सान हो चुका है नादिरशाहसै हारमान्कर मुहम्मदशाह उस्‍ै दिल्ली मैं लिवा लाया तब नगर निवासियोंनें यह झूंटी अफ़्वा उड़ा दी की नादिरशाह मरगया. नादिरशाह नें इस झूंटी अफ़्वा को रोकनें के लिये बहुत उपाय किये परन्तु अफ़्वा फैले पीछै कब रुकसक्ती थी ! लाचार होकर नादिरशाहनें बिज़न बोल दिया. दोपहरके भीतर भीतर लाख मनुष्यों सै अधिक मारे गए ! तथापि हिन्दुस्थानियों की आंख न खुली.

“हिन्दुस्थानियों को आज कल हर बात मैं अंग्रेजों की नक़ल करनें का चस्का पड रहा है तो वह भोजन बस्त्रादि निरर्थक बातों की नक़ल करनें के बदले उन्के सच्चे सद्गुणों की नक़ल क्यों नहीं करते ? देशोपकार, कारीगरी और ब्यापारादि मैं उन्की सी उन्नति क्यों नहीं करते ? अपना स्वभाव स्थिर रखनें मैं उन्का दृष्टांत क्यों नहीं लेते ? अंग्रेजों की बात चीत मैं किसी की निजकी बातों का चर्चा करना अत्यंत दूषित समझा जाता है. किसीकी तन्ख्वाह या किसी की आमदनी, किसी का अधिकार या किसी का रोज़गार, किसी की सन्तान या किसी के घर का वृतान्त पूछनें मैं, पूछा होय तो कहनें मैं कहा होय तो सुन्नें मैं वह लोग आनाकानी करते हैं और किसी समय तो किसी का

* सुजनाना मपितृहृदयं पिशुनपरिषवंगलि्त मिह भवति।
पवनः परागवाही रथ्यासुवहन् रजस्वलो भवति ॥

नाम, पता और उम्र पूछना भी ढिटाई समझा जाता है अपनें निज के सम्बन्धियों की निज की बातों सै भी अजान रहना वह लोग बहुधा पसंद करते हैं रेल मैं, जहाज़ मैं खानें पीनें के जलसों मैं, पास बैठनें मैं और बात चीत करनें मैं जान पहचान नहीं समझी जाती. वह लोग किराए के मकान मैं बहुत दिन पास रहनें पर बल्कि दुःख दर्द मैं साधारण रीति सै सहायता करनें पर भी दूसरे की निज बातों सै अजान रहते हैं. जबतक जान पहचान स्थिर रखनें के लिये दूसरे की तरफ़ सै सवाल न हो, अथवा किसी तीसरे मनुष्य नें जान पहचान न कराई हो, नित्य की मिला भेटी और साधारण रीति सै बात चीत होनें पर भी जान पहचान नहीं समझी जाती और जान पहचान हुए पीछै भी मित्रता होनें मैं बडी देर लगती है क्योंकि वह लोग स्वभाव पहचानें बिना मित्रता नहीं करते पर मित्रता हुए पीछै भी दूसरे की निज की बातों सै अजान रहना अधिक पसन्द करते हैं. उन्के यहां निज की बातों के पूछनें की रीति नहीं है उन्को देश सम्बन्धी बातैं करनें का इतना अभ्यास होता है कि निज के बृतान्त पूछनें का अवकाश ही नहीं मिलता परंतु निज की बातों सै अजान रहनें के कारण उन्की प्रीति मैं कुछ अन्तर नहीं आता. मनुष्य का दुराचार साबित होनें पर वह उसै तत्काल छोड देते हैं परंतु केवल अफ़वा पर वह कुछ ख्याल नहीं करते बल्कि उस्का अपराध साबित न हो जबतक वह उस्को अपना बचाव करनें के लिये पूरा अवकाश देते हैं और उचित रीति सै उस्का पक्ष करते हैं."

प्रकरण २८.

—

फूटका काला मुंह.

फूट गए हीरा की बिकानी कनी हाट, हाट ॥
काहू घाट मोल काहू बाढ मोल कों लयो ॥
टूट गई लंका फूट मिल्यो जो बिभीषण है ॥
रावन समेत बंस आसमान को गयो ॥
कहे कविगंग दुर्योधन सो छत्रधारी ॥
तनक के फूटेते गुमान वाको नै गयो ॥
फूटेते नर्द उठ जात बाजी चौपर की ॥
आपस के फूटे कहु कौन को भलो भयो ॥ ? ॥

गंग.

थोडी देर पीछै मुन्शी चुन्नीलाल आ पहुंचा परन्तु उस्के चहरे का रंग उड़ रहा था लाज सै उस्की आंख ऊंची नहीं होती थी प्रथम तो उस्की सलाह सै मदनमोहन का काम बिगड़ा दूसरे उस्की कृतघ्नता पर ब्रजकिशोर नें उस्के साथ ऐसा उपकार किया इसलिये वह संकोच के मारे धरती मैं समाया जाता था.

"तुम इतनें क्यों लजाते हो ? मैं तुम सै ज़रा भी अप्रसन्न नहीं हूं बल्कि किसी, किसी बात मैं तो मुझको अपनी ही भूल मालूम होती है मैं लाला मदनमोहनकी हरेक बातपर हदसै ज्यादा: ज़िद करनें लगता था परन्तु मेरी वह ज़िद अनुचित थी. हरेक मनुष्य अपनें बिचार का आप धनी है मैं चाहता हूं कि आगे को ऐसी सूरत न हो और हम सब एक चित्त होकर रहैं परन्तु मैंनें

तुम को इस्समय इस सलाह के लिये नहीं बुलाया इस विषय मैं तो जब तुम्हारी तरफ़ सै चाहना मालूम होगी देखा जायगा" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "इस्समय तो मुझको तुम सै हीरा-लाल की नौकरी बाबत सलाह करनी है यह बहुत दिन सै ख़ाली है और मुझको अपनें यहां इस्समय एक मुहर्रिर की जरूरत मालूम होती है तुम कहो तो इन्हैं रख लूं ?"

"इस्मैं मुझ सै क्या पूछते हैं ? इसके लिये आप मालिक हैं" मुन्शी चुन्नीलाल कहनें लगा "मेरी तो इतनी ही प्रार्थना है कि आप "मेरी मूर्खता पर दृष्टि न करैं अपनें बडप्पन का विचार रक्खें. पहली बातों के याद करनें सै मुझको अत्यन्त लज्जा आती है आप नें इस्समय लाला हीरालाल को नौकर रखकर मुझे मात कर दिया."

"मैं तुम को लज्जित करनें के लिये यह बात नहीं कहता मैंनें अपनें मन का निज भाव तुम को इसलिये समझा दिया है कि तुम मुझे अपना शत्रु न समझो" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "हिन्दुस्थान के सत्यानाश की जड प्रारम्भ सै यही फूट है इसी के कारण कौरव पांडवों का घोर युद्ध हुआ, इसी के कारण नन्द वंश की जड़ उखडी, पृथ्वीराज और जयचन्द की फूट सै हिन्दु-स्थान मैं मुसल्मानों का राज आया और मुसल्मानों का राज भी अन्त मैं इसी फूट के कारण गया. सौ सवा सौ बरस सै लेकर अबतक हिन्दुस्थानमैं कुछ ऐसे अप्रबन्ध, फूट और स्वेच्छाचारकी हवा चली कि बहुधा लोग आपस मैं कट मरे. साहूजी नें ईस्ट इन्डियन कपनी को देवी कोटे का किला और ज़िला देकर उस्के द्वारा अपनें भाई प्रताप सिंह सै तंजोर का राज छीन लिया.

बंगाल के सूबेदार सिराजुद्दौला सै अधिकार छीन्नें के लिये उस्के बखशी मीर जाफ़र और दीवान राय दुर्लभ आदि नें कंपनी को दक्षिण कालपी तक की जमीदारी एक किरोड़ रुपया नक़द और कलकत्ते के अंग्रेजों को पचास लाख, फ़ौज को पचास लाख और और लोगों को चालीस लाख अनुमान देनें किये. जब मीर जाफ़र सूबेदार हुआ तब उस्सै अधिकार छीन्नें के लिये उस्के जँवाई क़ासम अलीखां नें कंपनी को बर्द्वान मेदनीपुर, चट गांव के ज़िले, पांच लाख रुपे नक़द, और कौन्सिल वालों को बीस लाख रुपे देनें किये. जब क़ासम अलीखां सूबेदार होगया और महसूल बाबत उस्का कंपनी सै बिगाड हुआ तब मीर जाफर नें कंपनी को तीस लाख रुपे नक़द और बारह हज़ार सवार और बारह हजार पैदलों का खर्च देकर फिर अपना अधिकार जमा लिया. उधर अवध का सूबेदार शुजाउद्दौला कंपनी को चालीस लाख रुपे नक़द और लड़ाई का खर्च देना करके उस्की फौज़ रुहेलों पर चढा लेगया. दखन मैं बालाजी राव पेशवा के मरते ही पेशवाओं के घरानें मैं फूट पडी दो थोक होगए. अब तक पंजाब बच रहा था रणजीत-सिंह की उन्नत्ति होती जाती थी परन्तु रणजीतसिंह के मरते ही वहां फूटनें ऐसे पांव फैलाए कि पहले सब झगड़ों को मात कर दिया. राजा ध्यानसिंह मन्त्री और उस्के बेटे हीरासिंह आदि की स्वार्थपरता, लहनासिंह और अजीतसिंह सिंधां वालों का छल अर्थात् कुंवर शेरसिंह और राजा ध्यानसिंहके जी मैं एक दूसरे की तरफ सै सन्देह डालकर बिरोध बढ़ाना, और अन्त मैं दोनों के प्राण लेना राजकुमार खड़गसिंह उस्का बेटा नोनिहालसिंह

राजकुमार शेरसिंह उस्का बेटा प्रतापसिंह आदिकी अनूसमझी सै आपस मैं वह कटमकटा हुई कि पांच बरस के भीतर भीतर उस्के बंश मैं सिवाय दिलीपसिंह नामी एक बालक के कोई न रहा और उस्का राज भी कंपनी के राज मैं मिलगया. किसी नें सच कहा है, " अलपसार हू बहुत मिल करैं बड़ो सो जोर ॥ जों गजको बंधन करै तृणकी निर्मित डोर ॥ " + इसलिये मैं आपस की फूटको सर्वथा अच्छी नहीं समझता तुम मेरे पास सै गए थे इसलिये मुझ को तुह्मारे कामों पर बिशेष दृष्टि रखनी पड़ती थी परन्तु तुम अपनें जीमैं कुछ और ही समझते रहे. चलो खैर ! अब इन बातों की चर्चा करनें सै क्या लाभ है "

"आप यह क्या कहते हैं ? आप मेरे बड़े हैं मैं आप का बरताव और तरह कैसे समझ सक्ता था ? " चुन्नी लाल कहनें लगा " आप नें बचपन सै मेरा पालन किया, मुझ को पढ़ा लिखा कर आदमी बनाया इस्सै बढ़ कर कोई क्या उपकार करेगा ? मैं अच्छी तरह जान्ता हूं कि आप नें मुझ सै जो कुछ भला बुरा कहा; मेरी भलाई के लिये कहा. क्या मैं इतना भी नहीं जान्ता कि दंगा करनें सै मां अपनें बालक को मारती है दूसरे सै कुछ नहीं कहती यदि आप को हमारे प्रतिपालन की चिन्ता मन सै न होती तो ऐसे कठिन समय मैं लाला हीरा लाल को घर सै बुला कर क्यों नौकर रखते ? "

" भाई ! अब तो तुम नें वही खुशामद की लच्छेदार बातें छेड़ दीं " लाला ब्रजकिशोर नें हँस कर कहा.

+ बहूनामल्प साराणां समवायोहि दुर्जयः ॥
तृणै र्विधीयते रज्जुर्बध्यन्ते दन्तिनस्तया ॥

"आप के जी में मेरी तरफ का संदेह हो रहा है इस्सै आप को ऐसा ही भ्यासता होगा परन्तु इन्मैं सै कौन्सी बात आप को खुशामद की मालूम हुई ?"

"मनुस्मृति मैं कहा है "आकृति, चेष्टा, भाव, गति, बचन रीति, अनुमान ॥नैन सेन, मुखकांति लख मन की रुचि पहिचान ॥ १ ‡" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "तुम कहते हो कि "आप नें जो कुछ भला बुरा कहा मेरी भलाई के लिये कहा" परन्तु उस्समय तुम यह सर्वथा नहीं समझते थे तुह्मारे कामों सै यह स्पष्ट जाना जाता था कि तुम मेरी बातोंसै अप्रसन्न हो और तुह्मारा अप्रसन्न होना अनुचित न था क्योंकि मेरी बातों सै तुह्मारा नुक्सान होता था मुझको इस्बातका पीछै विचार आया मुझको इस्समय इन बातों के जतानें की ज़रूरत न थी परन्तु मैंनें इसलिये जतादी कि मैं भी सच झूंट को पहचान्ता हूं सचाई बिना मुझ सै सफाई न होगी"

"आप की मेरी सफाई क्या ? सफाई और बिगाड बराबर वालों मैं हुआ करता है, आप तो मेरे प्रतिपालक हैं आप की बराबरी मैं कैसे कर सक्ता हूं ?" मुन्शी चुन्नीलाल नें गंभीरता सै कहा.

यह तो बहानें साजी की बातैं हैं सफाई के ढंग और ही हुआ करते हैं मुझको तुम्हारा सब भेद मालूम है परन्तु तुमनें अबतक कौन्सी बात खुल के कही ?" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैं पूछता हूं कि तुमनें मदनमोहन के यहां सै सिवाय तन-

‡ आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च ॥
नेत्रवक्त्र विकारैश्च गृह्यतेन्त र्गतम्मनः ॥

ख्वाह के और कुछ नहीं लिया तो तुम्हारे पास आठ दस हज़ार रुपे कहां सै आगए? मिस्टर ब्राइट इत्यादि सै तुम जो कमीशन लेते हो उस्का हाल मैं उन्के मुख सै सुन चुका हूँ तुम्हारी और शिंभूदयाल की हिस्सा पत्ती का हाल मुझे अच्छी तरह मालूम है. हरकिशोर और निहालचन्द गली, गली तुम्हारी धूल उड़ाते फिरते हैं. मैं नहीं जान्ता कि जब इस्की चर्चा अदालत तक पहुंचेगी तो तुम्हारे लिये क्या परिणाम होगा? मैंनें केवल तुम सै सलाह करनें के लिये यह चर्चा छेड़ी थी परन्तु तुम इस्के छिपानें मैं अपनी सब अकलमंदी ख़र्च करनें लगे तो मुझको पूछनें सै क्या प्रयोजन है? जो कुछ होना होगा समय पर अपनें आप हो रहैगा"

"आप क्रोध न करैं मैंनें हर काम मैं आप को अपना मालिक और प्रतिपालक समझ रक्खा है मेरी भूल क्षमा करैं और मुझको इस्समय सै अपना सच्चा सेवक समझते रहैं" मुन्शी चुन्नीलाल नें कुछ, कुछ डरकर कहा "आप जान्ते हैं कि कुन्बे का बड़ा ख़र्च है इस्के वास्तै मनुष्य को हज़ार तरह के झूंट सच बोलनें पड़ते हैं (बृन्द) "उदर भरन के कारनें प्राणी करत इलाज॥ नाचे, बांचे, रणभिरे, राचे काज अकाज॥"

"संसार की यही रीति है. प्रसंग रत्नावली मैं लिखा है "ज्ञान बृद्ध तपबृद्ध अरु बयके बृद्ध सुजान॥ धनवानन के द्वार कों सेवैं भृत्य समान॥ +" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "तुमको मेरी एकाएक राय पलटनेंका आश्चर्य होगा परन्तु आश्चर्य न करो. जिस

+ वयोवृद्धास्तपोवृद्धा ज्ञानवृद्धा स्तथापरे॥
तेसर्वे धनवृद्धस्य द्वारि तिष्टंति किंकरा:

तरह शतरंज मैं एक, एक चाल चलनेंसै बाज़ीका नक्शा पलटता जाता है इसी तरह संसार मैं हरेक बात मैं काम काज की रीति भांति बद्लती रहती है अबतक यह समझता था कि मुझको मदन-मोहनसै अवश्य इन्साफ मिलेगा परंतु वह समय निकल गया अब मैं फ़ायदा उठाऊं या न उठाऊं मदनमोहन को फ़ायदा पहुंचाना सहज नहीं. मेरा हाल तुम अच्छी तरह जान्ते हो मैं केवल अपनी हिम्मत के सहारे सब तरह का दुःख झेल रहा हूं परन्तु मेरे कर्त-ब्य काम मुझको ज़रा भी नहीं उभरनें देते. कहते हैं कि अत्यंत बिपत्तिकाल मैं महर्षि बिश्वामित्र नें भी चंडाल के घर सै कुत्ते का मांस चुराया था! फिर मैं क्या करूं? क्या न करूं कुछ बुद्धि काम नहीं करती"

"समय बीते पीछै आप इन सब बातों की याद करते हैं अब तो जो होना था हो चुका यदि आप पहले इन बातों को बिचार करते तो केवल आप को ही नहीं आप के कारण हम लोगों को भी बहुत कुछ फ़ायदा हो जाता"

"तुम अपनें फ़ायदे के लिये तो बृथा खेद करते हो!" लाला ब्रजकिशोर नें हंस कर जवाब दिया "अलबत्ता मैं मदनमोहन सै साफ़ जवाब पाए बिना कुछ नहीं कर सक्ता था क्योंकि मुझ को प्रतिज्ञा भंग करना मंजूर न था क्या तुम को मेरी तरफ सै अब तक कुछ संदेह है?"

"जी नहीं, आप की तरफ़ का तो मुझ को कुछ संदेह नहीं है परन्तु इतना ही विचार है कि खल मैं सै तेल आप किस तरह निकालैंगे!" मुन्शी चुन्नीलाल नें जीमैं संदेह कर के कहा.

"इस्की चिन्ता नहीं, ऐसे काम के लिये लोग यह समय बहुत अच्छा समझते हैं"

"बहुत अच्छा ? अब मैं जाता हूं परन्तु ― ― ―" मुन्शी चुन्नीलाल कहते, कहते रुक गया.

"परन्तु क्या ? स्पष्ट कहो, मैं जान्ता हूं कि तुम्हारे मन का संदेह अब तक नहीं गया. तुम्हारी हज़ार वार राज़ी हो तो तुम सफ़ाई करो नहीं तो न करो अभी कुछ नहीं बिगड़ा मेरा कौन्सा काम अटक रहा हैं ? तुम अपना नफा नुक्सान आप समझ सक्तें हो"

"आप अप्रसन्न न हों, मुझको आपपर पूरा भरोसा है मैं इस कठिन समय में केवल आप पर अपनें निस्तार का आधार समझता हूं मेरी लायकी, नालायकी मेरे कामों से आप को मालूम हो जायगी परंतु मेरी इतनीही विनती है कि आप भी जरा नरम ही रहैं इन्को बातों में बढ़ावा देकर इन्से सब तरह का काम ले सक्ते हैं परंतु इन पर एतराज़ करनें सै यह चिड़ जाते हैं. कल के झगड़े कें कारण आजके तक़ाज़े का सन्देह इन्को आप पर हुआ है परन्तु अब मैं जाते ही मिटा दूंगा" मुंशी चुन्नीलाल नें बात पलटकर कहा और उठकर जानें लगा.

"तुम किया चाहोगे तो सफ़ाई होनी कौन कठिन है ? (वृन्द) प्रेरक ही ते होत है कारज सिद्ध निदान ॥ चढ़े धनुष हू ना चले बिना चलाए बान ॥ १ सुजन बीच पर दुहुनको हरत कलह रस पूर ॥ करत देहरी दीप ज्यौं घर आंगन तम दूर ॥ २" यह कहकर लाला ब्रजकिशोर नें चुन्नीलाल को रुखसत किया.

चुन्नीलाल के चित्त पर ब्रजकिशोर की कहन और हीरालाल

की नौकरी सै बड़ा असर हुआ था परन्तु अबतक ब्रजकिशोर की तरफ सै उस्का मन पूरा साफ़ न था. यह बातें ब्रजकिशोर के स्वभाव सै इतनी उल्टी थीं कि ब्रजकिशोर के इतनें समझानें पर भी चुन्नीलाल का मन न भरा. वह सन्देह के झूले मैं झोटे खारहा था और बड़ा बिचार करके उस्नें यह युक्ति सोची थी कि "कुछ दिन दोनों को दम मैं रक्खूं, ब्रजकिशोर को मदनमोहन की सफ़ाई की उम्मेद पर ललचाता रहूं और इस काम की कठिनाई दिखा, दिखाकर अपना उपकार जताता रहूं. मदनमोहन को अदालत के मुकद्दमों मैं ब्रजकिशोर सै मदद लेने की पट्टी पढाऊं पर बेपरवाई जतानें के बहानें सै दोनों मैं परस्पर काम की बात खुल कर न होनें दूं जिस्मैं दोनों का मिलाप होता रहै उन्के चित्त को धैर्य मिलनें के लिये सफाई के आसार, शिष्टाचार की बातें दिन, दिन बढ़ती जायं परन्तु चित्त की सफाई न होनें पाए, और दोनों की कुंजी मेरे हाथ रहै."

ब्रजकिशोर चुन्नीलाल की मुखचर्या सै उस्के मन की धुकड़ पुकड़ पहचान्ता था इसलिये उस्नें जाती बार हीरालाल के भेजनें की ताकीद कर दी थी वह जान्ता था कि हीरालाल बेरोज़गारी सै तंग है वह अपनें स्वार्थ सै चुन्नीलाल को सच्ची सफ़ाई के लिये बिवस करेगा और उस्की ज़िद के आगे चुन्नीलाल की कुछ न चलेगी. निदान ऐसाही हुआ. हीरालाल नें ब्रजकिशोर की सावधानी दिखाकर चुन्नीलाल को बनावट के बिचार सै अलग रक्खा, ब्रजकिशोर की प्रामाणिकता दिखाकर उसै ब्रजकिशोर सै सफाई रखनें के वास्तै पक्का किया, मदनमोहन के काम बिगडनें की सूरत बताकर आगे को ब्रजकिशोर का ठिकाना बनानें की

सलाह दी और समझाकर कहा कि "एक ठिकानें पर बैठे हुए दस ठिकानें हाथ आ सक्ते हैं जैसे एक दिया जलता हो तो उस्सै दस दिये जल सक्ते हैं परंतु जब यह ठिकाना जाता रहैगा तो कहीं ठिकाना न लगेगा" अदालत मैं मदनमोहन पर नालिश होनें सै चुन्नीलालके भेद खुलनें का भय दिखाया और अन्त मैं ब्रजकिशोर सै चुन्नीलाल नें सच्ची सफाई न की तो हीरालाल नें आप ब्रजकिशोर के साथ होकर चुन्नीलाल की चोरी साबित करनें की धमकी दी और इन बातों सै परवस होकर चुन्नीलाल को ब्रजकिशोर सै मन की सफाई रखनें के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा करनी पड़ी.

परन्तु आज ब्रजकिशोर की वह सफाई और सचाई कहां है? हरकिशोर का कहना इस्समय क्या झूंट है? इस्के आचरण सै इस्को धर्मात्मा कोन बता सक्ता है? और जब ऐसे खर्तल मनुष्यका अन्तमैं यह भेद खुला तो संसार मैं धर्मात्मा किस्को कह सक्ते हैं? काम, क्रोध, लोभ, मोह का बेग कौन रोक सक्ता है? परन्तु ठैरो! जिस मनुष्य के ज़ाहिरी बरताव पर हम इतना धोका खा गए कि सवेरे तक उस्को मदनमोहन का सच्चा मित्र समझते रहे हर जगह उस्की सावधानी, योग्यता, चित्त की सफाई, और धर्मप्रवृत्ति की बड़ाई करते रहे उस्के चित्त मैं और कितनी बातें गुप्त होंगी यह बात सिवाय परमेश्वर के और कौन जान सक्ता है? और निश्चय जानें बिना हमलोगों को पक्की राय लगानें का क्या अधिकार है?

प्रकरण २६.

—:(:*:):—

बात चीत.

सीख्यो धन धाम सब कामके सुधारिवेको
सीख्यो अभिराम बाम राखत हजूरमैं ॥
सीख्यो सराजाम गढकोटके गिराइबेको
सीख्यो समसेर बांधि काटि अरि ऊरमैं ॥
सीख्यो कुल जंत्र मंत्र तंतहूकी बात
सीख्यो पिंगल पुरान सीख बह्यौ जात कूरमैं ॥
कहै कृपाराम सब सीखवो गयो निकाम
एक बोलवो न सीख्यो गयो धूरमैं ॥

शृंगार संग्रह.

"आज तो मुझ सै एक बडी भूल हुई" मुन्शी चुन्नीलाल नें लाला मदनमोहन के पास पहुंचते ही कहा "मैं समझा था कि यह सब बखेडा लाला ब्रजकिशोर नें उठाया है परन्तु वह तो इस्सै बिल्कुल अलग निकले यह सब करतूत तो हरकिशोर की थी. क्या आपनें लाला ब्रजकिशोर के नाम चिट्ठी भेज दी ?"

"हां चिट्ठी तो मैं भेज चुका" मदनमोहन नें जवाब दिया.

"यह बडी बुरी बात हुई. जब एक निरपराधी को अपराधी समझ कर दंड दिया जायगा तो उस्के चित्त को कितना दुःख होगा" मुन्शी चुन्नीलाल नें दया करके कहा (!)

"फिर क्या करें ? जो तीर हाथ सै छुट चुका वह लौटकर नहीं आसक्ता" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

"निस्सन्देह नहीं आसक्ता परन्तु जहां तक हो सके उस्का बदला देना चाहिये" मुन्शी चुन्नीलाल कहनें लगा "कहते हैं कि महाराज दशरथ नें धोके सै श्रवण के तीर मारा परन्तु अपनी भूल जान्ते ही बडे पस्तावे के साथ उस्सै अपना अपराध क्षमा कराया उसै उठाकर उस्के माता पिता के पास पहुंचाया उन्को सब तरह धैर्य दिया और उन्का शाप प्रसन्नता सै अपनें सिर चढा लिया"

"ब्रजकिशोर की यह भूल हो या न हो परन्तु उस्नें पहले जो ढिटाई की है वह कुछ कम नहीं है. गई बला को फिर घर मैं बुलाना अच्छा नहीं माल्रूम होता जो कुछ हुआ सो हुआ चलो अब चुप हो रहो" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"इस्समय ब्रजकिशोर सै मेल करना केवल उन्की प्रसन्नताके लिये नहीं है बल्कि उन्सै अदालत मैं बहुत काम निकलनें की उम्मेद की जाती है" मुन्शी चुन्नीलाल नें मदनमोहन को स्वार्थ दिखाकर कहा.

"कल तो तुमनें मुझ सै कहा था कि उन्की विकालत अपनें लिये कुछ उपकारी नही हो सक्ती" मदनमोहन नें याद दिवाई.

यह बात सुन्कर चुन्नीलाल एकबार ठिठका परंतु फिर तत्काल सम्हल कर बोला "वह समय और था यह समय और है. मामूली मुक़द्दमौं का काम हम हरेक वकील सै ले सक्ते थे परन्तु इस्समय तो ब्रजकिशोर के सिवाय हम किसी को अपना बिश्वासी नहीं बना सक्ते"

"यह तुम्हारी लायकी है परन्तु ब्रजकिशोर का दाव लगे तो

वह तुम को घडी भर जीता न रहनें दे" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"मैं अपने निज के सम्बन्ध का बिचार करके लाला साहब को कच्ची सलाह नही दे सक्ता" चुन्नीलाल खरे बनें.

"अच्छा तो अब क्या करें ? ब्रजकिशोर को दूसरी चिट्ठी लिख भेजें या यहां बुलाकर उन्की खातिर कर दें ?" निदान लाला मदनमोहन नें चुन्नीलाल की राह सै राह मिलाकर कहा.

"मेरे निकट तो आप को उन्के मकान पर चलना चाहिये और कोई कीमती चीज़ तोहफ़ा मैं देकर ऐसे प्रीति बढानी चाहिये जिस्सै उन्के मनमैं पहली गांठ बिल्कुल न रहै और आप के मुकद्दमों मैं सच्चे मन सै पैरवी करें ऐसे अवसर पर उदारता सै बडा काम निकलता है. सादी नें कहा है "द्रव्य दीजिये बीर कों तासों दे वह सीस ।। प्राण बचावेगी सदा बिनपाये बखशीस ।।" + मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"लाला साहब को ऐसी क्या गरज पड़ी है जो ब्रजकिशोर के घर जायं और कल जिसै बेइज्जत करके निकाल दिया था आज उस्की खुशामद करते फिरें ?" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"असल मैं अपनी भूल है और अपनी भूलपर दूसरे को सताना बहुत अनुचित है" मुन्शी चुन्नीलाल संकेत सै शिंभूदयाल को धमकाकर कहनें लगा "बैठनें उठनें, और आनें जानें की साधारण बातोंपर अपनी प्रतिष्ठा, अप्रतिष्ठा का आधार समझना संसार मैं अपनी बराबर किसी को न गिन्ना, एक तरह का

+ ज़रबिदह मर्दे सिपाहीरा तासर बिदिहद ॥
बगरश जर नांदिही सर ननिहद दरआलम ॥

जंगली विचार है. इस्की निस्बत सादगी और मिलनसारी सै रहनें को लोग अधिक पसंद करते हैं. लाला ब्रजकिशोर कुछ ऐसे अप्रतिष्ठित नहीं हैं कि उन्के हां जानें सै लाला साहब की स्वरूप हानि हो"

"यह तो सच है परन्तु मैंने उन्का दुष्ट स्वभाव समझ कर इतनी बात कही थी" मास्टर शिंभूदयाल चुन्नीलाल का संकेत समझ कर बोले.

"ब्रजकिशोरके मकान पर जानेमैं मेरी कुछ हानि नहीं है परन्तु इतना ही विचार है कि मेलके बदले कहीं अधिक बिगाड़ न हो जाय" लाला मदनमोहनने कहा.

"जी नहीं, लाला ब्रजकिशोर ऐसे अनसमझ नहीं हैं मैं जानता हूं कि वह क्रोधसै आग हो रहे होंगे तो भी आपके पहुंचते ही पानी हो जायंगे क्योंकि गरमीमैं धूपके सताए मनुष्य को छाया अधिक प्यारी होती है" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

निदान सबकी सलाहसै मदनमोहनका ब्रजकिशोरके हां जाना ठैर गया चुन्नीलालनें पहलेसै खबर भेजदी, ब्रजकिशोर वह खबर सुन्कर आप आनें को तैयार होते थे इतनें मैं चुन्नीलाल के साथ लाला मदनमोहन वहां जा पहुंचे ब्रजकिशोर नें बड़ी उमंगसै इन्का आदर सत्कार किया.

इस छोटोसी बात सै मालूम हो सक्ता है कि लाला मदन-मोहन की तबियत पर चुन्नीलाल का कितना अधिकार था.

"आपनें क्यों तकलीफ की? मैं तो आप आनें को था" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"हरकिशोर के धोके मैं आज आप के नाम एक चिठ्ठी

भूल सै भेज दी गई थी इसलिये लाला साहब चलाकर यह बात कहने आए हैं कि आप उस्का कुछ खयाल न करें" मुन्शी चुन्नीलाल ने कहा.

"जो बात भूल सै हो और वह भूल अंगीकार कर ली जाय तो फिर उस्में खयाल करने की क्या बात है? और इस छोटेसे काम के वास्तै लाला साहब को परिश्रम उठाकर यहां आने की क्या जरूरत थी?" लाला ब्रजकिशोर ने कहा.

"केवल इतना ही काम न था मुझ सै कल भी कुछ भूल हो गई थी और मैं उस्का भी एवज दिया चाहता था" यह कहकर लाला मदनमोहन नें एक बहुमूल्य पाकटचेन (जो थोडे दिन पहले हमल्टन कंपनी के हां सै फ़र्मायशी बनकर आई थी) अपनें हाथ सै ब्रजकिशोर की घड़ीमे लगा दी.

"जी! यह तो आप मुझ को लज्जित करते हैं मेरा एवज तो मुझ को आप के मुख सै यह बात सुन्ते ही मिल चुका. मुझ को आपके कहनें का कभी कुछ रंज नहीं होता इस्के सिवाय मुझे अवसर पर आप की कुछ सेवा करनी चाहिये थी सो मैं उल्टा आप सै कैसे लूं? जिस मामले में आप अपनी भूल वताते हैं केवल आपही की भूल नहीं है आप सै बढ़कर मेरी भूल है और मैं उस्के लिये अंतःकरणसै क्षमा चाहता हूं" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मैं हर बात मैं आप सै अपनी मर्जी मूजिब काम करानेके लिये आग्रह करता था परंतु वह मेरी बड़ी भूल थी. वृन्दनैं सच कहा है "सबको रसमैं राखिये अंत लीजिये नाहिं ॥ विष निकस्यो अति मथनते रत्नाकरहू मांहिं ॥" मुझको विकालतके कारण बढ़ाकर बात करनेंकी आदत पड़ गई है और

मैं कभी, कभी अपना मतलब समझानेंके लिये हरेक बात इतनी बढ़ाकर कहता चला जाता हूं कि सुन्नें वाले उखता जाते हैं. मुझको उस अवसरपर जितनी बातें याद आती हैं मैं सब कह डालता हूं परन्तु मैं जान्ता हूं कि यह रीति बात चीतके नियमों से बिपरीति है और इन्का छोड़ना मुझ पर फ़र्ज़ है बल्कि इन्हें छोड़नें के लिये मैं कुछ, कुछ उद्योग भी कर रहा हूं"

"क्या बातचीत के भी कुछ नियम हैं?" लाला मदनमोहन नें आश्चर्य से पूछा-

"हां! इस्को बुद्धीमानो नें बहुत अच्छी तरह वरणन किया है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "सुलभा नाम तपस्विनी नें राजा जनक से बचन के यह लक्षण कहे हैं अर्थ सहित, संशय रहित, पूर्वापर अविरोध ॥ उचित, सरल, संक्षिप्त पुनि कहों वचन परिशोध ॥ १ ॥ प्राय कठिन अक्षर रहित, घृणा, अमंगल हीन ॥ सत्य, काम, धर्मार्थयुत शुद्धनियम आधीन ॥ २ ॥ संभव कूट न अरुचिकर, सरस, युक्ति दरसाय ॥ निष्कारण अक्षर रहित खंडित न लखाय ॥ ३ ॥ * "संसार मैं देखा जाता है कि कितनें ही मनुष्यों को थोडीसी मामूली बातें याद होती हैं जिन्हें वह अदल

---

* उपेतार्थं मभिन्नार्थं न्यायवृत्तं न चाधिकं ॥
नाश्लक्ष्णं नचसंदिग्धं वक्ष्यामि परमंततः १ ॥
नगुर्वक्षर संयुक्तं पराङ्मुख सुखंनच ॥
नानृतं नत्रिवर्गेण विरुद्धं नाप्यसंस्कृतम् २ ॥
नन्यूनं कष्टशब्दं वा विक्रमाभिहितंनच ॥
नशेषमनुकल्पे न निष्कारणमहेतुकम् ३ ॥

बद्लकर सदा सुनाया करते हैं जिस्से सुन्नेवाला थोडी देरमैं उखता जाता है बातचीत करने की उत्तम रीति यह है कि मनुष्य अपनी बातको मौकेसै पूरी करके उस्पर अपना अपना, बिचार प्रगट करने के लिये औरोंको अवकाश दे और पीछेसै कोई नई चर्चा छेड़े. और किसी विषय मैं अपना विचार प्रगट करे तो उस्का कारण भी साथही समझाता जाय, कोई बात सुनी सुनाई होतो वह भी स्पष्ट कहदे हँसीकी बातों मैं भी सचाई और गंभीरता को न छोड़े, कोई बात इतनी दूरतक खेंचकर न ले जाय जिस्सै सुन्नें वालों को थकान मालूम हो धर्म, दया, और प्रबन्ध की बातों मैं दिल्लगी न करे. दूसरेके मर्मकी बातोंको दिल्लगी मैं ज़बान पर न लाय. उचित अवसर पर वाजबी राह सै पूछ पूछकर साधारण बातों का जान लेना कुछ दूषित नहीं है परन्तु टेढ़े और निरर्थक प्रश्न करके लोगों को तंग करना अथवा बकवाद करके औरोंके प्राण खा जाना, बहुत बुरी आदत है. बातचीत करनेंकी तारीफ़ यह है कि सबका स्वभाव पहिचान कर इस ढबसै बात कहै जिस्मैं सब सुन्नें वाले प्रसन्न रहैं. जची हुई बात कहना मधुर भाषण सै बहुत बढ़कर है खासकर जहां मामलेकी बात करनी हो. शब्द विन्यास के बदले सोच विचार कर बातचीत करना सदैव अच्छा समझा जाता है और सवाल जवाब बिना मेरी तरह लगातार बात कहते चले जाना कहने वाले की सुस्ती और अयोग्यता प्रगट करता है. इसी तरह असल मतलब पर आनेके लिये बहुतसी भूमिकाओं सै सुन्नें वालेका जी घबरा जाता है परन्तु थोड़ी सी भूमिका बिना भी बातका रंग नहीं जमता इसलिये अब मैं बहुतसी भूमिकाओं के बदले आप सै प्रयोजन

मात्र कहता हूं कि आप गई बीती बातोंका कुछ ख़याल न करें ? ”

“जो कुछ भी ख़याल होता तो लाला साहब इस तरह उठकर क्या चले आते ? अब तो सब का आधार आप की कारगुज़ारी (अर्थात् कार्य कुशलता) पर है” मुंशी चुन्नीलाल नें कहा.

“मेरे ऐसे भाग्य कहां ?” लाला ब्रजकिशोर प्रेम बिवस होकर बोले.

“देखो हरकिशोर नें कैसा नीचपन किया है !” लाला मदनमोहन नें आंसू भरकर कहा.

“इस्सै बढ़कर और क्या नीचपन होगा ?” लाला ब्रजकिशोर कहने लगे “मैंनें कल उस्के लिये आप को समझाया था इस्सै मैं बहुत लज्जित हूं मुझको उस्समय तक उस्के यह गुन मालूम न थे अब ये अफवा किसी तरह झूंट हो जाय तो मैं उसै मज़ा दिखाऊं”

“निस्संदेह आप की तरफ सै ऐसीही उम्मेद है ऐसे समय मैं आप साथ न दोगे तो और कौन् देगा ?” लाला मदनमोहन नें करुणा सै कहा.

“इस्समय सब सै पहले अदालत की जवाब दिहीका बंदोबस्त होना चाहिये क्योंकि मुकद्दमों की तारीखें बहुत पास, पास लगी हैं” मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

“अच्छा ! आप अपना कागज़ तैयार करानें के वास्तै तीन चार गुमाश्ते तत्काल बढ़ा दें और अदालत की कार्रवाई के वास्ते मेरे नाम एक मुख्त्यार •नामा लिखते जायं बस फिर मैं समझ लूंगा” लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

निदान लाला मदनमोहन ब्रजकिशोर के नाम मुख्त्यार नामा लिखकर अपनें मकान को रवानें हुए.

प्रकरण ३०.

नैराश्य (नाउम्मेदी).

फलहीन महीरुह कों खगवृन्द तजें बन कों मृग भस्म भए ।
मकरन्द पिए अरविन्द मिलिन्द तजें सर सारस सूख गए ॥
धन हीन मनुष्य तजें गणिका नृपकों सठ सेवक राज हए ।
बिन स्वारथ कौन सखा जग मैं ? सब कारज के हित हीत भए ॥ ÷

भर्तृहरि.

सन्ध्या समय लाला मदनमोहन भोजन करनें गए तब मुंशी चुन्नीलाल और मास्टर शिंभूदयाल को खुलकर बात करनें का अवकाश मिला. वह दोनों धीरे, धीरे बतलानें लगे.

"मेरे निकट तुमनें ब्रजकिशोरसै मेल करनें मैं कुछ बुद्धिमानी नहीं की. वैरी के हाथ मैं अधिकार देकर कोई अपनी रक्षा कर सक्ता है ?" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"क्या करूं ? इस्समय इस युक्ति के सिवाय अपनें बचाव का कोई रस्ता न था. लोगों की नालिशें हो चुकीं, अपनें भेद

÷ वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगा दग्धं वनांन्तं मृगा: ।
पुष्पं पीतरसं त्यजन्ति मधुपा शुष्कं सर: सारसा: ॥
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिका भ्रष्टं नृपं मन्त्रिण: ।
सर्व: कार्यवशाज्जनो भिरमते क: कस्यने वल्लभ: ॥

खुलनें का समय आगया. ब्रजकिशोर सब बातों सै भेदी थे इसलिये मैंनें उन्हीं के ज़िम्मे इन बातों के छिपानें का बोझ डाल दिया कि वह अपनें विपरीति कुछ न करनें पायं !" मुन्शी चुन्नी-लाल नें हीरालाल की बात उड़ा कर कहा.

"परन्तु अब ब्रजकिशोर तुम्हारा भेद खोल दें तो तुम कैसे अपना बचाव करो ? हर काम मैं आदमी को पहले अपनें निकास का रस्ता सोचना चाहिये. अभिमन्यु की तरह धुन बांध कर चकाबू मैं घुसे चले जाओगे तो फिर निकलना बहुत कठिन होगा. पतंग उड़ाकर डोर अपनं हाथ न रक्खोगे तो उस्के हाथ लगनेंकी क्या उम्मेद रहेगी ?" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"मैंनें अपनें निकास की उम्मेद केवल ब्रजकिशोर के बिश्वास पर बांधी है परन्तु उन्की दो एक बातों सै मुझको अभी सन्देह होनें लगा. प्रथम तो उन्होंनें इस गए बीते समय मैं मदन-मोहन सै मेल करनें मैं क्या फायदा बिचारा ? और महन्तानें के लालच सै मेल किया भी था तो ऐसी जलदी काग़ज़ तैयार करनें की क्या ज़रूरत थी ? मैं जान्ता हूं कि वह नालिश कर-नेंवालों सै जवाबदिही करनें के वास्तै यह उपाय करते होंगे परन्तु जब वह जवाबदिही करेंगे तो नालिश करनेंवालों की तरफ़ सै हमारा भेद अपनें आप खुल जायगा और जिस बात को हम दूर फेंका चाहतें हैं वही पास आजावेगी" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

"वकीलों के यही तो पेच होते हैं जिस बात को वह अपनी तरफ़ सै नहीं कहा चाहते उल्टे सीधे सवाल करके दूसरे के मुख सै कहा लेते हैं और आप भलेके भले बनें रहते हैं. बिचारो

तो सही हमनें ब्रजकिशोर के साथ कौन्सी भलाई की है जो वह हमारे साथ भलाई करैंगे ? वकीलों के ढंग बड़े पेचीदा होते हैं वह एक मुकद्दमे मैं तुह्मारे वकील बनते हैं तो दूसरे मैं तुम्हारे बैरी के वकील बन जाते हैं परन्तु अपना मतलब किसी तरह नहीं जानें देते."

"सच है इस काम मैं लाला ब्रजकिशोर की चाल पर अवश्य सन्देह होता है परन्तु क्या करें ? अपनें वकील न करैंगे तो वह प्रतिपक्षी के वकील हो जायँगे और अपना भेद खोलनें मैं किसी तरह की कसर न रक्खेंगे" मुन्शी चुन्नीलाल कहनें लगा "असल तो यह है कि अब यहां रहनें मैं कुछ मज़ा नहीं रहा प्रथम तो आगे को कोई बुर्द नहीं दिखाई देती फिर जिन लोगों सै हजारों रुपे खाए पीए हैं उन्हीं के सामनें होकर बिवाद करना पड़ेगा और जब हम उन्सै बिवाद करैंगे तो वह हमसै मुलाहजा क्यों रक्खेंगे, हमारा भेद क्यों छिपावेंगे ? कभी, कभी हम उन्सै लाला साहब के हिसाब मैं लिखाकर बहुतसी चीज़ें घर लेगए हैं इसी तरह उन्के यहां जमा करानें के वास्तें लाला साहब से जो रुपे लेगए थे वह उन्के यहां जमा नहीं कराए, ऐसी रक़मों की बाबत पहले, पहले तो यह बिचार था कि इस्समय अपना काम चला लें फिर जहांकी तहां पहुंचा देंगे परन्तु पीछे सै न तो अपनें पास रुपे की समाई हुई न कोई देखनें भालनें वाला मिला बस सब रक़में जहां की तहां रह गईं अब अदालत मैं यह भेद खुलेगा तो कैसी आफ़त आवेगी ? और हम लाला साहब की तरफ़ सै बिवाद करैंगे तो यह भेद कैसे छिप सकेगा ? क्या करें ? कोई सीधा रस्ता नहीं दिखाई देता"

यदि ऐसै ही पाप करके लोग बच जाया करते तो संसार मैं पाप पुण्यका विचार काहेको रहता ?

"मुझको तो अब सीधा रस्ता यही दिखाई देता है कि जो हाथ लगे ; ले लिवा कर यहां सै रफूचक्कर हो ब्रजकिशोर तुह्मारे भाग्य सै इस्समय आफसा है इस्के सिर मुफ्त का छप्पर रख कर अलग हो बैठो" मास्टर शिंभूदयाल कहने लगा "जिस तरह अलिफ़लैला मैं अबुलहसन और शम्सुल्निहार के परस्पर प्रेम बिबस हुए पीछे बखेड़ा उठने की सूरत मालूम हुई तब उन्का मध्यस्थ इब्नतायर उन्को छिटकाकर अलग हो बैठा और एक जौहरी ने मुफ्त मैं वह आफ़त अपनें सिर लेकर अपने आप को जंजाल मैं फंसा दिया. इसी तरह इस्समय तुह्मारी और ब्रजकिशोर की दशा है. ब्रजकिशोर को काम सोंप कर तुम इस्समय अलग हो जाओ तो सब बदनामी का ठीकरा ब्रजकिशोर के सिर फूटेगा और दूध मलाई चखनेवाले तुम रहोगे ! "

" यह तो बडे मज़े की बात है ब्रजकिशोर पर तो हम यह बोझ डालेंगे कि तुह्मारे लिये हम अलग होते हैं पीछे से हमारा भेद न खुलने पाय लेनदारों सै यह कहेंगे कि तुह्मारे वास्ते लाला साहब सै हमारी तकरार होगई उन्होंनें हमारा कहा नहीं माना अब तुम भी कहीं हमको धोका न देना " मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

" आज तो दोनों मैं बड़ी घूट, घूट कर बातें हो रही हैं " लाला मदनमोहन ने आतेही कहा. " तुह्मारी सलाह कभी पूरी नहीं होती न जानें कौनसे किले लेनेका बिचार किया करते हो ! "

जी हुजूर ! कुछ नहीं, मिस्टर रसल के मामले की चर्चा थी उस्की जायदाद के नीलाम की तारीख मैं केवल दो दिन बाकी हैं परन्तु अब तक रुपे का कुछ बंदोबस्त नहीं हुआ " मुन्शी चुन्नीलाल नें तत्काल बात पलट कर कहा.

"इस बिना बिचारी आफत का हाल किस्को मालूम था ? तुम उन्हें लिख दो कि जिस तरह होसके थोडे दिन की मुहलत लेलें. हम उस्के भीतर, भीतर रुपे का प्रबन्ध अवश्य कर देंगे" लाला मदनमोहन नें कहा.

"मुहलत पहले कई बार लेचुके हैं इस्सै अब मिलनी कठिन है परन्तु इस्समय कुछ गहना गिरबी रख कर रुपे का प्रबन्ध कर दिया जाय तो उस्की जायदाद बनी रहै और धीरे, धीरे रुपया चुका कर गहना भी छुडा लिया जाय " मास्टर शिंभूदयाल नें जाते जाते सिप्पा लगानें की युक्ति की. उस्का मनोर्थ था कि यह रक़म हाथ लगजाय तो किसी लेनदार को देकर भली भांति लाभ उठायें. अथवा मदनमोहन मांगनें योग्य न रहै तो सबकी सब रक़म आप ही प्रआद कर जायें. अथवा किसी के यहां गिरवी भी धरें तो लेनदारों को कुर्की करानें के लिए उस्का पता बता कर उनसै भली भांति हाथ रंगें. अथवा माल अपनें नीचे दबे पीछे और किसी युक्ति सै भर पूर फायदे की सूरत निकालें. परन्तु मदनमोहन के सौभाग्य सै इस्समय लाला ब्रजकिशोर आ पहुंचे इस लिये उस्की कुछ दाल न गली.

" क्याहै ? किस काम के लिये गहना चाहते हो ? " लाला ब्रजकिशोर नें शिंभूदयाल की उर्छटतीसी बात सुनी थी इस्पर आतेही पूछा.

"जी कुछ नहीं, यह तो मिस्टर रसल की चर्चा थी" मुन्शी चुन्नीलाल नें बात उडाने के वास्ते गोल कहा.

"उस्का क्या देनलेन है ? उस्का मामला अब तक अदालत मैं तो नहीं पहुंचा ?" लाला ब्रजकिशोर पूछनें लगे.

"वह एक नीलका सौदागर है और उस्पर बीस, पच्चीस हजार रूपे अपने लेनें हैं इस्समय उस्की नीलकी कोठी और कुछ बिस्वे बिस्वान्सी दूसरे की डिक्री मैं नीलाम पर चढे हैं और नीलाम की तारीख मैं केवल दो दिन बाकी हैं नीलाम हुए पीछे अपनें रुपे पटनें की कोई सूरत नहीं मालूम होती इस लिये ये लोग कहते थे कि गहना गिरवी रखकर उस्का कर्ज चुका दो परन्तु इतना बंदोबस्त तो इस्समय किसी तरह नहीं होसक्ता" लाला मदनमोहन नें लजाते, लजाते कहा.

"अभी आप को अपने कर्जका प्रबन्ध करना है और यह मामला केवल मुहलत लेनें सै कुछ दिन टल सक्ता है" लाला ब्रजकिशोर नें अपने मनका संदेह छिपाकर कहा.

"मैं जान्ता हूं कि मेरा कर्ज चुकाने के लिये तो मेरे मित्रों की तरफ सै आज कल मैं बहुत रुपया आ पहुंचेगा" लाला मदनमोहन नें अपनी समझ मूजिब जवाब दिया.

"और मुहलत कई बार लेली गई है इस्सै अब मिलनी कठिन है" मास्टर शिंभूदयाल बोले.

"मैं खयाल करता हूं कि अदालत के बिश्वास योग्य कारण बता दिया जायगा तो मुहलत अवश्य मिलजायगी" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"और जो न मिली ?" शिंभूदयाल हुज्जत करनें लगा.

"तो मैं अपनी ज़ामिनी देकर जायदाद नीलाम न होने दूंगा" ब्रजकिशोर नें जवाब दिया. और अब शिंभूदयाल को बोलनें की कोई जगह न रही.

" कल कई मुकद्दमों की तारीखें लगरही हैं और अबतक मैं उन्के हाल सै कुछ भेदी नहीं हूं तुमको अवकाश हो तो लाला साहब सै आज्ञा लेकर थोडी देरके लिये मेरे साथ चलो " लाला ब्रजकिशोर नें मुनूशी चुन्नीलाल सै कहा.

" हां, हां, तुम साथ जाकर सब बातें अच्छी तरह समझा आओ " लाला मदनमोहन नें मुनूशी चुन्नीलाल को हुक्म दिया.

" आप इस्समय किसी काम के लिये किसीको अपना गहना न दें ऐसे अवसरपर ऐसी बातों मैं तरह, तरहका डर रहता है " लाला ब्रजकिशोर नें जाती बार मदनमोहन सै संकेत मैं कहा और मुनूशी चुन्नीलाल को साथ लेकर रुखसत हुए.

आज लाला मदनमोहन की सभा मैं वह शोभा न थी केवल चुन्नीलाल शिंभूदयाल आदि दो चार आदमी दृष्टि आते थे परन्तु उन्के मनभी बुझे हुए थे. हँसी चुहल की बातें किसी के मुखसै नहीं सुनाई देती थीं खास्कर ब्रजकिशोर और चुन्नीलाल के गए पीछे तो और भी सुस्ती छागई मकान सुन्सान मालूम होनें लगा. शिंभूदयाल ऊपर के मन सै हँसी चुहल की कुछ, कुछ बातें बनाता था परन्तु उन्मैं मोमके फूलकी तरह कुछ रस न था. निदान थोड़ी देर इधर उधर की बातें बनाकर सब अपनें, अपनें रस्ते लगे और लाला मदनमोहन भी मुर्झाए चित्तसै पलंगपर जा लेटे.

प्रकरण ३१.

चालाक की चूक.

सुखदिखाय दुख दीजिये खलसों लरियेकाहि
जो गुर दीयेही मरै क्यों विष दीजे ताहि ?

वृन्द.

"लाला मदनमोहन का लेन देन किस्तरह पर है ?" ब्रजकिशोर नें मकान पर पहुंचते ही चुन्नीलाल सै पूछा.

"विगत वार हाल तो कागज़ तैयार होनें पर मालूम होगा परन्तु अंदाज़ यह है कि पचास हज़ार के लगभग तो मिस्टर ब्राइट के देनें होगें, पंदरह बीस हज़ार आगाहसनजान महम्मद जान वगैरे खेरीज सौदागरों के देनें होंगे, दस बारह हज़ार कलकत्ते, मुंबई के सौदागरों के देनें होंगे, पचास हजार मैं निहालचंद, हरकिशोर वगैरे बाज़ार के दुकानदार और दिसावरोंके आढतिये आ गए मुन्शी चुन्नीलाल नें जवाब दिया.

और लेने किस, किस पर हैं ? " ब्रजकिशोर नें पूछा.

" बीस पचीस हज़ार तो मिस्टर रसल की तरफ़ बाकी होंगे, दस बारह हज़ार आगरे के एक जौहरी मैं जवाहरात की बिक्रीके लेनें हैं, दस पंदरह हजार यहांके बाज़ारवालों मैं और दिसावरोंके आढ़तियों मैं• लेनें होंगे पांच, सात हजार खेरीज लोगों मैं और नौकरों मैं बाकी होंगे आठ दस हजारका व्यापार सीगे का माल मौज़ूद है, पांच हजार रुपे अलीपुर रोडके ठेके

बाबत सरकार सै मिलनेवाले हैं और रहनेंका मकान, बाग, सवारी, सर सामान वगैरे सब इन्सै अलग है" मुन्शी चुन्नीलालनें जवाब दिया.

"इस तरह अटकल पच्चू हिसाब बतानें सै कुछ काम नहीं चल्ता जबतक लेनें देनें का ठीक हाल मालूम नहीं फैस्ला किस तरह किया जाय ? तुम सबेरे लाला जवाहरलाल को मेरे पास भेज देना मैं उस्सै सब हाल पूछ लूंगा. ऐसे अवसरपर असावधानी रखनें सै देना सिरपर बना रहता है और लेना मिट्टी हो जाता है." ब्रजकिशोरनें कहा.

"कागज बहुत दिनोंका चढ रहा है और बहुत से जमा खर्च होनें बाकी हैं इस लिये कागज़ सै कुछ नहीं मालूम हो सक्ता" मुन्शी चुन्नीलालनें बात उड़ानें की तजबीज की.

"कुछ हर्ज नहीं, मैं लोगों सै जिरहके सवाल करके अपना मतलब निकाल लूंगा मुझको अदालत मैं हर तरहके मनुष्यों सै नित्य काम पड़ता है" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "तुमनें आज सबेरे मुझ सै सफ़ाई करनें की बात की थी परंतु अभी सै उस्मैं अंतर आनें लगा मैं वहां पहुंचा उस्समय तुम लोग लाला साहब सै गहना लेनें की तजबीज कर रहे थे परंतु मेरे पहुंचते ही वह बात उड़ानें लगे मुझको कुछ का कुछ समझानें लगे सो मैं ऐसा अन्समझ नहीं हूं यदि मेरा रहना तुमको असह्य है, मेरे मेलसै तुम्हारी कमाई मैं फ़र्क़ आता है, मेरे मेल करानेंका तुमको पछतावा होता है तो मैं तुम्हारी मार्फत मेल कर के तुम्हारा नुक्सान हरगिज़ नहीं किया चाहता, लाला साहब सै मेल नहीं रक्खा चाहता तुम अपना बंदोवस्त आप कर लेना."

"आप बृथा खेद करते हैं. मैंनें आप से छिप कर कोन्सा काम किया ? आप के मेल सै मेरी अप्रसन्नता कैसे मालूम हुई ? आप पहुंचे जब निस्संदेह शिंभूदयालने मिस्टर रसलके लिये गहनें की चर्चा छेड़ी थी परंतु वह कुछ पक्की बात न थी और आपकी सलाह बिना किसी तरह पूरी नहीं पड़ सक्ती थी आपसै पहले बात करनें का समय नहीं मिला था इसी लिये आपके साम्नें बात करनें मैं इतना संकोच हुआ था परंतु आप को हमारी तरफ़ सै अब तक इतना संदेह बन रहा है तो आप लाला साहबके छोड़नें का विचार क्यों करते हैं आप के लिये हमहीं अपनी आवाजाई बन्द कर देंगे" मुन्शी चुन्नीलाल नें कहा.

सादी नें सच कहा है "वृद्धा वेश्या तपस्विनी न होय तो और क्या करे ? उतरा सेनक किसीका क्या बिगाड़कर सक्ता है कि साधु न बनें ?" * लाला ब्रजकिशोर मुस्कराकर कहनें लगे "मैं किसी काम मैं किसी का उपकार नहीं सहा चाहता यदि कोई मुझपर थोड़ा सा उपकार करे तो मैं उस्से अधिक करनें की इच्छा रखता हूं फिर मुझको इस थोथे काम मैं किसी का उपकार उठानें की क्या ज़रूरत है ? जो तुम महरबानी करके मेरा पूरा महन्ताना मुझको दिवा दोगे तो मैं इसी मैं तुह्मारी बड़ी सहायता समझूंगा और प्रसन्नता सै तुह्मारा कमीशन तुह्मारी नज़र करूंगा" लाला ब्रजकिशोर इस बात चीत मैं ठेठ सै अपनी सच्ची सावधानी के साथ एक दाव खेल रहे थे

* क़हबए पीर अज़ नाबकारी चे कुनद कि तौबां नकुद ? व शह्नए माज़ूल अज़ मर्दुम आजारी.

उन्नें इस युक्ति सै बात चीत की थी जिस्सें उन्का कुछ स्वार्थ न मालूम पड़े और चुन्नी लाल आप सै आप मदनमोहन को छोड़ जानें के लिये तैयार हो जाय, पास रहनें मैं अपनी हानि, और छोड़ जानें मैं अपना फ़ायदा समझे बल्कि जाते, जाते अपनें फ़ायदे के लालच सै ब्रजकिशोर का महन्ताना भी दिवाता जाय.

"आप अपना महन्ताना भी लें और लाला मदनमोहन के यहां कुल अख्त्यार भी लें हमको तो हर भांति आपकी प्रसन्नता करनी है हमनें तो आपकी शरण ली है हमारा तो यही निवेदन है कि इस्समय आप हमारी इज्जत बचालें" मुन्शी चुन्नीलाल नें हार मान कर कहा. वह भीतर सै चाहे जैसा पापी था परंतु प्रगट मैं अपनी इज्जत खोनें सै बहुत डरता था संसार मैं बडा भला मानस बना फिरता था और इसी भलमनसात के नीचे उस्नें अपनें सब पाप छिपा रक्खे थे.

"इन बातोंसै इज्जतका क्या संबन्ध है! मुझसै होसकेगा जहां तक मैं तुह्मारी इज्जतपर धब्बा न आनें दूंगा परन्तु इस कठिन समय मैं तुम मदनमोहन के छोडनें का बिचार करते हो इस्मैं मुझको तुह्मारी भूल मालूम होती है ऐसा न होकि पीछै सै तुम्हें पछताना पड़े चारों तरफ दृष्टि रखकर बुद्धिमान मनुष्य काम किया करते हैं" लाला ब्रजकिशोर नें युक्तिसै कहा.

"तो क्या इस्समय आपकी राय मैं लाला मदनमोहनके पास सै हमारा अलग होना अनुचित है?" मुन्शी चुन्नीलालनें ब्रजकिशोर पर बोझ डालकर पूछा.

"मैं साफ कुछ नहीं कह सक्ता क्योंकि औरों की निस्बत

वह अपना हानि लाभ आप अधिक समझ सक्ते हैं" लाला ब्रजकिशोर नें भरम मैं कहा.

"तो शौर मेरी तुच्छ बुद्धि मैं इस्समय हमारी निस्वत आप लाला मदनमोहन की अधिक सहायता कर सकते हैं और इसी मैं हमारी भी भलाई है" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"तुमनें इन दिनों मैं नवल और जुगल (ब्रजकिशोर के छोटे भाई) की भी परीक्षा ली या नहीं ! तुम गए तब वह बहुत छोटे थे परंतु अब कुछ, कुछ होशियार होते चले हैं" लाला ब्रजकिशोरनें पहली बात बदलकर घरबिधकी चर्चा छेड़ी,.

"मैंने आज उनको नहीं देखा परंतु मुझको उन्की तरफ सै भली भांत विश्वास है भला आपकी शिक्षा पाए पीछै किसी तरह की कसर रह सकती है ?" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा,

"भाई ! तुम तो फिर खुशामद की बातें करने लगे यह रहनें दो घर मैं खुशामद की क्या ज़रूरत है ?" लाला ब्रजकिशोर नें नरम ओलंभा दिया और चुन्नीलाल उन सै रुखसत होकर अपनें घर गया.

प्रकरण ३२.

अदालत.

काम परेही जानिये जो नर जैसो होय॥
बिन ताये खोटो खरो गहनों लखै न कोय॥

बृन्द.

अदालत हाकिम कुर्सीपर बैठे इजलास कर रहे हैं. सब अहलकार अपनी, अपनी जगह बैठे हैं निहालचंद मोदी का मुकद्दमा हो रहा है उस्की तरफ़ सै लतीफ़ हुसैन वकील हैं. मदनमोहनकी तरफ सै लाला ब्रजकिशोर जवाबदिही करते हैं. ब्रजकिशोर नें बचपन मैं मदनमोहन के हां बैठकर हिंदी पढ़ी थी इस वास्तै वह सराफी कागज की रीति भांति अच्छी तरह जान्ता था और उस्नें मुकद्दमा छिड़नें सै पहले मामूली फ़ीस देकर निहालचंद के बही खाते अच्छी तरह देख लिए थे. इस मुकद्दमें मैं कानूनी बहस कुछ न थी केवल लेन देनका मामला था.

ब्रजकिशोर नें निहालचंदको गवाह ठैराकर उस्सै जिरहके सवाल पूछनें शुरू किये "तुह्मारा लेन देन रुक्के पर्चों सै है!"

जवाब " नहीं "

"तो तुम किस तरह लेन देन रखते हो ?

ज० "नोकरों की मारफत"

"तुमको कैसे मालूम होता है कि यह आदमी लाला मदनमोहन की तरफ सै माल लेनें आया है और उन्हींके हां ले जायगा !"

"हम यह नहीं जान सक्ते परंतु लाला साहब का हुक्म है कि वह लोग जो, जो सामान मांगें तत्काल दे दिया करो"

"अच्छा ? वह हुक्म दिखाओ !"

ज० "वह हुक्म लिखकर नहीं दिया था ज़बानी है"

"अच्छा ! वह हुक्म किस्के आगे दिया था–?" "किस किसके लिये दिया था !" "कितनें दिन हुए ?"-"कौन्सा समय था ?" "कौन्सी जगह थी ?" "क्या कहा था ?"

"बहुत दिनकी बात है मुझको अच्छी तरह याद नहीं"

"अच्छा ? जितनी बात याद हो वही बतलाओ ?"

ज० "मैं इस्समय कुछ नहीं कह सक्ता"

"तो क्या किसीसै पूछकर कहोगे ?"

ज० "जी नहीं याद करके कहूंगा"

"अच्छा ! तुम्हारा हिसाब होकर बीच मैं बाकी निकल चुकी है ?

ज० "नहीं"

"तो तुमनें सालकी साल बाक़ी निकालकर ब्याजपर ब्याज कैसे लगा लिया ?"

"साहूकारेका दस्तूर यही है,"

"साहूकारेमैं तो सालकी साल हिसाब होकर ब्याज लगाया जाता है फिर तुमनें हिसाब क्यों नहीं किया ?"

ज० "अवकाश नहीं मिला"

"तुम्हारी बहियोंमैं उदन्त खाते सै क्या मतलब है ?"

"लाला मदनमोहनके लेन देन सिवाय आप और किसी खातेका सवाल न करें" निहालचंदके वकीलनें कहा.

"मुझको इस सै लाला मदनमोहन के लेन देनका विशेष संबंध मालूम होता है इसी सै मैंने यह सवाल किया है" लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया, और परिणाम मैं हाकिम के हुक्म सै यह सवालपूछा गया.

"जो रक़में बही खाते मैं हिसाब पक्का करके लिखी जानेंके लायक होती हैं और तत्काल उन्का हिसाब पक्का नहीं हो सक्ता वह रक़में हिसाबकी सफाई होनें तक इस खाते मैं रहती हैं और सफाई होनें पर जहांकी तहां चली जाती हैं" निहालचंदनें जवाब दिया,

"अच्छा! तुम्हारे हां जिन मितियों मैं बहुत करके लाला मदनमोहन के नाम बड़ी, बड़ी रक़में लिखी गई हैं उनहीं मितियों मैं उदरत खाते कुछ रक़म जमा की गई है और फिर कुछ दिन पीछे उदरत खाते नाम लिखकर वह रक़में लोगोंको हाथों हाथ दे दी गई हैं या उन्के खाते मैं जमा कर दी गई हैं इस्का क्या सबब है?" लाला ब्रजकिशोरनें पूछा।

"मैं पहले कह चुका हूं कि जिन लोगों की रक़में अलल हिसाब आती जाती हैं या जिन्का लेन देन थोड़े दिनके वास्तै हुआ करता है उन्की रक़म कुछ दिनके लिये इस तरह पर उदरत खाते मैं रहती है परंतु मैं किसी ख़ास रक़मका हाल बही देखे बिना नहीं बता सक्ता" निहालचंदनें जवाब दिया।

"और यह भी ज़रूर है कि जिस दिन लाला मदनमोहन का काम पड़े उस दिनकी यह काररवाई अयोग्य समझी जाय?" निहालचंदके वकीलनें कहा.

"तो ये क्या ज़रूर है कि जिस मितीमैं लाला मदनमोहनके

नाम बड़ी रकम लिखी जाय उसी मितीमैं कुछ रकम उद्रत खाते जमा हो और थोड़े दिन पीछै वह रकम जैसीकी तैसी लोगों को बांट दी जाय ?" लालाब्रजकिशोरनें जवाब दिया।

"देखो जी ! इस मुकद्मेमैं किसी तरह का फ़रेब साबित होगा तो हम उसै तत्काल फ़ौजदारी सुपुर्द कर देंगे" हाकिमनें संदेह करके कहा.

"हजूर हमको एक दिनकी मुहलत मिल जाय हम इन सब बातोंके लिये लाला ब्रजकिशोर साहबकी दिलजमई अच्छी तरह कर देगें" निहालचंदके वकीलनें हाकिम सै अर्ज की और ब्रजकिशोरनें इस बातको खुशी सै मंजूर किया.

उद्रत खाते सै लाला मदनमोहनके नोकरों की कमीशन वगैरे का हाल खुलता था जहां रकम जमा थी किस्सै आई ? किस बाबत आई इसका कुछ पता न था परंतु जहां रकम दी गई मदनमोहनके नोकरोंका अलग, अलग नाम लिखा था और हिसाब लगानें सै उसका भेद भाव अच्छी तरह मिल सक्ता था। जिन नोकरोंके खाते थे उन्के खातोंमैं यह रकमें जमा हुईं थीं और कानूनके अनुसार ऐसे मामलोंमैं रिश्वत लेनें देनें वाले दोनों अपराधी थे परंतु ब्रजकिशोरके मनमैं इन्के फंसानें की इच्छा न थी वह केवल नमूना दिखाकर लेनदारों की हिम्मत घटाया चाहता था. उस्नें ऐसी लपेटसैं सवाल किये थे कि हाकिम को भारी न लगे और लेनदारोंके चित्तमैं गढ़ जांय सो ब्रजकिशोर की इतनी ही पकडसै बहुतसे लेनदारोंके छक्के छूट गए।

कितनें ही छिपे लुच्चे मदनमोहनकी बेखरची और कागजका अंधेर, लेनदारोंका हुल्लड, मुकद्मोंके झटपट हो जानेकी उम्मेद

मदनमोहनके नोकरोंकी स्वार्थपरता के भरोसे पर कुछ कुछ बढ़ाकर दावे कर बैठे थे यह सूरत देखतेही उन्के पांव तलेकी जमीन निकल गई। मिस्टर ब्राइट की कुर्की मैं सब माल अस्बाबके कुर्क हो जाने से लेनदारोंको अपनी रकमके पटनेका संदेह तो पहलेही हो गया था. अब किसी तरहकी लपेट आजाने पर अपनी इज्जत खो बैठनेका डर मालुम होने लगा "नमाजको गए थे रोजे गले पड़े"।

सिवायमैं यह चर्चा सुनाई दी कि मदनमोहन को और, और दिसावरोंका बहुत देना है यदि सब माल जायदाद नीलाम होकर हिस्सै रसदी सब लेनदारोंको दिया गया तो भी बहुत थोड़ी रकम पल्ले पड़ेगी, ब्रजकिशोरसै लोग इस्का हाल पूछते थे तब वह अजान बन्कर अलग हो जाता था इस्सै लोगोंकी और भी छाती बैठी जाती थी जिस्तरह पलभरमैं मदनमोहनके दिवालेकी चर्चा चारों तरफ फैल गई थी इसी तरह अब यह सब बातें अफवाकी जहरी हवामैं मिलकर चारों तरफ उड़ने लगीं।

मोदीके मुकद्दमें सिवाय आज कोई पेचदार मुकद्दमा अदालतमैं न हुआ जिन्के मुकद्दमोंमैं आजकी तारीख लगी थी उन्ने भी निहालचंदके मुकद्दमें का परिणाम देखनेके लिये अपने मुकद्दमें एक, एक दो, दो दिन आगे बढ़वा दिये।

जब इस कामसै अवकाश मिला तो लाला ब्रजकिशोरने अदालतसै अर्ज करके मिस्टर रसलकी जायदाद नीलाम होनेकी तारीख आगे बढ़वा दी परंतु यह बात ऐसी सीधी थी कि इस्के लिये कुछ विशेष परिश्रम न उठाना पड़ा।

लाला ब्रजकिशोर की चाल देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। सब लेनदार चारों तरफसै निराश होकर उस्के पास आते हैं परंतु वह आप उस्सै अधिक निराश मालूम होता है वह उन्के साथ बड़ी बेपरवाई सै बातचीत करता है उन्को हर तरहके चढ़ाव उतार दिखाता है जब वह लोग अपना पीछा छुटानें के लिये उस्सै बहुत आधीनता करते हैं तो वह बड़ी बेपरवाईसै उन्के साथ लगाव की बात करता है परन्तु जब वह किसी बात पर जमते हैं तो वह आप कच्चा पक्का होनें लगता है उल्टी सीधी बात करके अपनी बातसै निकला चाहता है और जब कोई बात मंजूर करता है तो बड़ी आनाकानीसै ज़बान निकलनेंके कारण उस्को यह बोझ उठाना पड़ता हो ऐसा रूप दिखाई देता है। कचहरी से लौटती बार उस्ने घंटे डेढ घंटे मिस्टर ब्राइटसै एकांतमैं बातचीत की ! अदालतके कामोंमें उस्का वैसाही उद्योग दिखाई देता है परंतु दरअसल वह किसी अत्यंत कठिन काममैं लग रहा हो ऐसा ढंग मालूम होता है उस्के पहले सब काम नियमानुसार दिखाई देते थे परंतु इस समय कुछ क्रम नहीं रहा इस्समय उस्के सब काम परस्पर बिपरीत दिखाई देते हैं इसलिये उस्का निज भाव पहचान्ना बहुत कठिन है परंतु हम केवल इतनी बातपर संतोष बांध बैठे हैं कि जब उस्की काररवाईका परिणाम प्रकट हो जायगा तो वह अपना भाव सर्व साधारण की दृष्टिसे कैसे गुप्त रख सकेगा ?

प्रकरण ३३.

मित्रपरीक्षा ।

धन न भयेहू मित्रकी सज्जन करत सहाय ॥
मित्र भाव जाचे बिना कैसे जान्यो जाय ॥ †

बिदुरप्रजागरे.

आज तो लाला ब्रजकिशोर की बातोंमैं लाला मदनमोहन की बात ही भूल गए थे !

लाला मदनमोहन के मकानपर वैसी ही सुस्ती छा रही है केवल मास्टर शिंभूदयाल और मुन्शी चुन्नीलाल आदि तीन, चार आदमी दिखाई देते हैं परन्तु उन्का भी होना न होना एकसा है वह भी अपनें निकासका रस्ता ढूंढ रहे हैं हम अबतक लाला मदनमोहनके बाकी मुसाहबोंकी पहचान करानेके लिये अबकाश देख रहे थे इतनेमैं उन्नें मदनमोहन का साथ छोड़कर अपनी पहिचान आप बतादी. हरगोबिन्द और पुरुषोत्तमदासनें भी कलसै सूरत नही दिखाई थी. बाबू बैजनाथ को बुलानेके लिये आदमी गया था परन्तु उन्हैं आनें का अवकाश न मिला लाला हरदयाल साहबके नाम कुछ दिन के लिये थोड़े रुपे हाथ उधार देनें को लिखा गया था परन्तु उन्का भी जवाब नहीं आया लाला मदन-मोहन का ध्यान सबसै अधिक डाककी तरफ़ लग रहा था उन्को

† अर्चयेदेव मित्राणि सतिवासतिवा धने
नानर्थयन् प्रजानाति मित्राणां सारफल्गुतां ॥

विश्वास था कि मित्रों की तरफ़सै अवश्य अवश्य सहायता मिलेगी बल्कि कोई, कोई तो तारकी मारफ़त रुपे भिजवायंगे.

"क्या करें? बुद्धि काम नहीं करती" मास्टर शिंभूदयालनें समय देखकर अपनें मतलब की बात छेड़ी "इन्हीं दिनोंमैं यहां काम है और इन्हीं दिनों मदरसे मैं लड़कोंका इमतहान है कल मुझको वहां पहुंचनेमैं पाव घण्टे की देर हो गई थी इस्पर हेड-मास्टर सिर होगए. वहां न जायं तो रोज़गार जाता है यहां न रहैं तो मन नहीं मान्ता (मदनमोहनसै) आप आज्ञा दें जैसा किया जाय?"

"ख़ैर? यहांका तो होना होगा सो हो रहैगा तुम अपना रोज़गार न खोओ" लाला मदनमोहननें रुखाई सै जवाब दिया.

क्या करूं? लाचार हूं" मास्टर शिंभूदयाल बोले "यहां आए बिना तो मन नहीं मानेंगा परन्तु हां कुछ कम आना होगा आठ पहर की हाजरी न सध सकेगी मेरी देह मदरसेमैं रहेगी परन्तु मेरा मन यहां लगा रहैगा"

"बस आपकी इतनी ही महरबानी बहुत है" लाला मदनमोहननें ज़ोर देकर कहा.

निदान मास्टर शिंभूदयाल मदरसे जानें का समय बताकर रुख़सत हुए.

"आज निहालचन्दका मुकद्दमा है देखैं ब्रजकिशोर कैसी पैरवी करते हैं" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा" कल आपके पाकटचेन देनेंसै उन्का मन बहुत बढ़गया. परन्तु वह उसै अपनें महन्तानें मैं न समझैं मेरे निकट अब उन्का महन्ताना तत्काल भेज देना चाहिये जिस्सै उन्को यह संदेह न रहै और मन लगाकर अपनें

मुकद्दमों मैं अच्छी जवाब दिही करैं. मैं इन्के पास रहकर देख चुका हूं कि यह अपनें मुख सै तो कुछ नहीं कहते परन्तु इन्के साथ जो जितना उपकार करता है यह उस्सै बढ़कर उस्का काम कर देते हैं"

"अच्छा! तो आज शाम को कोई क़ीमती चीज़ इन्के महन्ताने मैं दे देंगे और काम अच्छा किया तो शुक्राना जुदा देंगे" लाला मदनमोहननें कहा.

इतनें मैं डाक आई उस्मैं एक रजिस्ट्री चिट्ठी मेरठसै एक मित्रकी आई थी जिस्मैं दस हज़ार की दर्शनी हुंडी निकली और यह लिखा था कि "जितनें रुपे चाहियें और मंगा लेना. आपका घर है" लाला मदनमोहन यह चिठ्ठी देखते ही उछल पडे और अपनें मित्रों की बड़ाई करनें लगे. हुंडी तत्काल सकरानें को भेज दी परन्तु जिस्के नाम हुंडी थी उस्नें यह कहकर हुंडी सिकारनेंसै इन्कार किया कि जिस साहूकार के हां सै लाला मदनमोहनके पास हुंडी आई है उसीनें तार देकर मुझको हुंडी सिकारनें की मनाई की है इस्सै सब भेद खुल गया. असल बात यह थी कि जिस्समय मदनमोहन की चिठ्ठी उस्के पास पहुंची उस्को मदनमोहनके बिगडने का जरा भी संदेह न था इसलिये मदनमोहन की चिठ्ठी पहुंचते ही उस्नें सच्ची प्रीति दिखानेंके लिये दस हज़ार की हुंडी खामदी परन्तु पीछेसै और लोगोंकी जबानी मदनमोहन के बिगड़नें का हाल सुन्कर घबराया और तत्काल तार देकर हुंडी खड़ी रखवादी.

लाला मदनमोहन इस तरह अपनें एक मित्रके छलसै निराश होकर तीसरे पहर अपनें शहरके मित्रोंसै सहायता मांगनेंके

लिये आप सवार हुए. पहलै रस्ते मैं जो लोग झुक, झुक कर सलाम करते थे वही आज इन्हैं देखकर मुख फेरनें लगे बल्कि कोई, कोई तो आवाज़े कसनें लगे. मदनमोहन को सबसै अधिक बिश्वास लाला हरदयाल का था इसलिये वह पहलै उसीके मकानपर पहुंचे.

हरदयाल को मदनमोहनके काम बिगडनें का हाल पहले मालूम हो चुका था और इसी वास्तै उस्नें मदनमोहन की चिट्ठी का जवाब नहीं भेजा था. अब मदनमोहनके आनें का हाल सुन्ते ही वह जरासी देरमैं मदनमोहन के पास पहुंचा और बड़े सत्कारसै मदनमोहनको लिवा लेजा कर अपनी बैठकमैं बिठाया.

लाला मदनमोहननें कल सहायता मांगनेके लिये चिट्ठी भेजी थी उस्को पहलै उस्नें हंसीकी बात ठैराई और जवाब न भेजनेंका भी यही कारण बताया परन्तु जब मदनमोहननें वह बात सच्ची बताई और उस्के पीछे का सब वृत्तान्त कहा तो लाला हरदयाल अत्यन्त दुखित हुए और बड़ी उमंगसै अपनी सब दौलत लाला मदनमोहन पर न्योछावर करनें लगे, लाला हरदयाल की यह बातें केवल कहनेंके लिये न थी वह दौड़कर अपनें गहनें का कलमदान उठा लाए और उस्मैं सै एक, एक रकम निकाल कर लाला मदनमोहन को देनें लगे इतनेंमैं एकाएक दरवाजा खुला हरदयालका पिता भीतर पहुंचा और वह हरदयाल को जवाहरातकी रकमें मदनमोहनके हाथमें देते देख कर क्रोध सै लाल हो गया!

"अभागे हटधर्मी! मैंने तुझको इतनी बार बरजा परन्तु तू अपना हट नहीं छोड़ता आजकल के कपूत लड़के इतनी बातको

सच्ची स्वतंत्रता समझते हैं कि जहां तक हो सके बडों का निरादर और अपमान किया जाय, उन्को मूर्ख और अनसमझ बताया जाय, परन्तु मैं इन बातों को कभी नहीं सहूंगा मेरे बैठे तुझको घर बरबाद करने का क्या अधिकार है? निकल यहांसै काला मुंहकर तेरी इच्छा होय जहां चला जा मेरा तेरा कुछ सम्बन्ध नहीं रहा" यह कह कर एक तमाचा जड़ दिया और गहना सम्हाल, सम्हालकर संदूक मैं रखने लगा. थोड़ी देर पीछे लाला मदनमोहन की तरफ देखके कहा. "संसारके सब काम रुपै सै चलते हैं फिर जो लोग अपनी दौलत खोकर बैरागी बन बैठें और औरों की दौलत उड़ाकर उन्को भी अपनी तरह बैरागी बनाना चाहैं वह मेरे निकट सर्वथा दया करनेके योग्य नहीं हैं और जो लोग ऐसे अज्ञानियों की सहायता करते हैं वह मेरे निकट ईश्वर का नियम तोडते हैं और संसारी मनुष्यों के लिये बडी हानिका काम करते हैं मेरे निकट ऐसे आदमियों को उन्की मूर्खताका दण्ड अवश्य होना चाहिये जिस्सै और लोगों की आंखें खुलैं. क्या मित्रता का यही अर्थ है कि आप तो डूबें सो डूबें अपने साथ औरों को भी ले डूबें! नहीं, नहीं आप ऐसे बिचार छोड दीजिये और चुपचुपाते अपने घर की राह लीजिये यह समय अपने मित्रोंको देनेका है अथवा उल्टा उन्सै लेनेका है?"

बुरे वक्तमैं एक मित्रका जी दुखाना, और दयाके समय क्रूरता करनी, किसी की दुखती चोटपर हँसना, एक गरीब को उस्की गरीबीके कारण तुच्छ समझना, अथवा उस्की गरीबी की याद दिवाकर उसै सताना, दूसरेका बदला भुगताती बार अपने मतलब का खयाल करना, कैसा ओछापन और घोर पाप है

जहां सज्जन धनवानों की खुशामद से दूर रहकर गरीबों का साथ देनें और सहायता करने में सच्ची सज्जनता समझते हैं कठोर बचन दो तरह सै कहा जाता है जो लोग अपनायत की रीति सै कहते हैं उन्की कहनसै तो अपनें चित्तमैं वफादारी और आधी-नता बढती है पर जो अभिमान की राहसै दूसरे को तुच्छ बनाते हैं उन्की कहनसै चित्तमैं क्रोध और धिःकार बढ़ता जाता है. हर तरह का घाव ओषधिसै अच्छा होसक्ता है परन्तु मर्म वेधी बात का नासूर किसी तरह नहीं रुझता. बिदुरजी नें सच कहा है "नावक सर धनु तीर काढे कढत शरीरते ॥ कुवचन तीर गभीर कढत न क्यों हू उर गढे ॥ १"

निदान लाला मदनमोहन को यह कहना अत्यन्त असह्य हुई. वह तत्काल उठकर वहां से चल दिये परंतु बैठक से बाहर जाते, जाते उन्हें पीछेसै हरदयाल का यह बचन सुन्कर बडा आश्चर्य हुआ कि "चलो यह स्वांग (अभिनय) हो चुका अब अपना काम करो"

लाला मदनमोहन वहां से चलकर एक दूसरे मित्रके मकान पर पहुंचे और उस्से अपनें आनेंकी ख़बर कराई वह उस्समय कमरे में मोजूद था परंतु उस्नें लाला मदनमोहन को थोडी देर अपनें दरवाजे पर बाट दिखानें में और अपनें कमरे को ज़रा मेज़ कुरसी, किताब, अखबार आदि से सजाकर मिलनें में अधिक शोभा समझी इस लिये कहला भेजा कि "आप ठैरें लाला साहब भोजन करनें गए हैं अभी आकर आप सै मिलेंगे" देखिये आज-कलके सुधरे विचारोंका नमूना यह है! थोड़ी देर पीछे वह लाला मदनमोहनको लिवानें आया और बड़े शिष्टाचार से लिवा

ले जाकर उन्हैं तकियेके सहारे बिठाया. लाला मदनमोहनको थोडी देर उस्की बाट देखनी पड़ी थी इस्की क्षमा चाही और इधर उधरकी दो चार बातें करके मानों कुछ चिट्ठियां अत्यन्त आवश्यकीय लिखनी बाकी रह गई हों इस्तरह चिट्ठी लिखनें लगा परंतु दो चार पल पीछे फिर कलम रोककर बोला "हां यह तो कहिये आपनें इस्समय किस्तरह परिश्रम किया ?"

"क्यों भाई ! आनें जानें का कुछ डर है ? क्या मैं पहले कभी तुम्हारे यहां नहीं आया ? या तुम मेरे यहां नहीं गए ?" लाला मदनमोहननें कहा.

"आपनें यह तो बड़ी कृपा की परन्तु मेरे पूछनें का मतलब यह था कि कुछ ताबेदारी बताकर मुझे अधिक अनुग्रहीत कीजिये" उस मनुष्यनें अजानपनें मैं कहा.

"हां कुछ काम भी है मुझको इस्समय कुछ रुपे की ज़रूरत है मेरे पास बहुत कुछ माल अस्बाब मौजूद है परन्तु लोगोंनें बृथा तकाजा करके मुझको घबरा लिया" लाला मदनमोहन भोले भाव सै बोले.

"मुझको बड़ा खेद है कि मैंनें अपना रुपया अभी एक और काम मैं लगा दिया यदि मुझको पहलै सै कुछ सूचना होती तो मैं सर्वथा वह काम न करता" उस मनुष्यनें जबाब दिया.

"अच्छा ! कुछ चिन्ता नहीं आप मेरे लेनदारोंकी जमाख़ातर ज़रा अपनी तरफ़ सै कर दें"

"इस्सै हमारी स्वरूपहानि है हम जामनी करें तो हमको रुपया उसी समय देना चाहिये" उस पुरुषनें जवाब दिया और लाला मदनमोहन वहां सै भी निराश होकर रवाने हुए.

रस्ते मैं एक और मित्र मिले वह दूर ही सै अजानकी तरह द्रुष्टि बचाकर गलीमैं जानें लगे परन्तु लाला मदनमोहननें आवाज़ देकर उन्हें ठैराया और अपनी बग्गी खडी की इस्सै लाचार होकर उन्हें ठैरना पडा परन्तु उनके मनमैं पहली सी उमंग नाम को न थी.

"आप प्रसन्न हैं ? मुझको इस्समय एक बड़ा ज़रूरी काम था इस्सै मैं लपका चला जाता था मुझको आपकी बग्गी द्रुष्टि न आई, माफ करें मैं किसी समय आपके पास हाज़िर होऊंगा" यह कहकर वह मनुष्य जानें लगा परन्तु मदनमोहननें उसै फिर रोका और कहा "हां भाई ? अब तुमको अपनें जरूरी कामोंके आगे मुझसैं मिलनें का अवकाश क्यों मिलनें लगा था ? अच्छा ? जाओ हमारा भी परमेश्वर रक्षक है"

इस तानें सै लाचार होकर उसै ठैरना पडा और उसके ठैरनें पर लाला मदनमोहन नें अपना वृत्तान्त कहा.

"यह हाल सुन्कर मुझको अत्यन्त खेद हुआ परमेश्वर आप पर कृपा करे वह सर्वशक्तिमान दीनदयाल सर्व का दुःख दूर करता है उस्पर विश्वास रखनें सै आप के सब दुःख दूर हो जायंगे आप धैर्य रक्खें. मुझको इस्समय सचमुच बहुत ज़रूरी काम है इस लिये मैं अधिक नहीं ठैर सक्ता परन्तु मैं आजकल मैं आपके पास हाजिर होऊंगा और सलाह करके जो बात मुनासिब मालूम होगी उस्के अनुसार बरताव किया जायगा" यह कहकर वह मनुष्य तत्काल वहां सै चल दिया.

लाला मदनमोहन और एक मित्रके मकानपर पहुंचे. बाहर खबर मिली कि "वह मकान के भीतर हैं" भीतर सै जवाब आया

कि "बाहर गए" लाचार मदनमोहन को वहां सै भी खाली हाथ फिरना पड़ा. और अब और मित्रोंके यहां जानें का समय नहीं रहा इस लिये निराश होकर सीधे अपनें मकान को चले गए.

प्रकरण ३४.

हीनप्रभा (बदरोबी).

नीचन के मन नीति न आवै। प्रीति प्रयोजन हेतु लखावै ॥
कारज सिद्ध भयो जब जानें। रंचकहू उर प्रीति न मानै ॥
प्रीति गए फलहू बिनसावै। प्रीति विषै सुख नैक न पावै ॥
जादिन हाथ कछू नहीं आवै। भाखि कुबात कलंक लगावै ॥
सोइ उपाय हिये अवधारै। जासु बुरो कछु होत निहारै ॥
रंचक भूल कहूं लख पावै। भांति अनेक बिरोध बढावै ॥ +

बिदुरप्रजागरे.

लाला मदनमोहन मकान पर पहुंचे उस्समय ब्रजकिशोर वहां मोजूद थे.

लाला ब्रजकिशोर नें अदालत का सब बृत्तान्त कहा उस्मैं मदनमोहन मोदी के मुकद्दमें का हाल सुन्कर बहुत प्रसन्न हुए उस्समय चुन्नीलाल नें संकेत मैं ब्रजकिशोर के महन्तानें की याद

\+ निवर्तमाने सौहार्दे प्रीति र्नीचे प्रणश्यति।
याचैव फलनिर्वृत्तिः सौहृदे चैव यत्सुखम् ॥
यतते अपवादाय यत्न मारभते चये।
अल्पे प्यपकृते मोहन् न शान्ति मधिगच्छति ॥

दिवाई जिस्पर लाला मदनमोहन ने अपनी अंगुली से हीरे की एक बहुमूल्य अंगूठी उतार कर ब्रजकिशोर को दी और कहा "आप की महनत के आगे तो यह महन्ताना कुछ नहीं है परन्तु अपना पुराना घर और मेरी इस दशा का विचार करके क्षमा करिये"

यह बात सुन्ते ही एक बार लाला ब्रजकिशोर का जी भर आया परन्तु फिर तत्काल सम्हल कर बोले "क्या आपनें मुझ को ऐसा नीच समझ रक्खा है कि मैं आप का काम महन्ताने के लालच सै करता हूं? सच तो यह है कि आप के वास्ते मेरी जान जाय तो भी कुछ चिन्ता नहीं परन्तु मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि आपनें अंगूठी दे कर मुझसै अपना मित्र भाव प्रगट किया सो मैं आपकी बराबर का नहीं बना चाहता मैं आपको अपना मालिक समझता हूं इसलिये आप मुझे अपना 'हल्क:बगोश' (सेवक) बनायं"

"यह क्या कहते हो! तुम मेरे भाई हो क्यों कि तुमको पिता सदा मुझसै अधिक समझते थे हां तुम्हैं बाली पहन्नें की इच्छा हो तो यह लो मेरी अपेक्षा तुम्हारे कानमैं यह बहुमूल्य मोती देखकर मुझको अधिक सुख होगा परन्तु ऐसे अनुचित बचन मुखसैं न कहो" यह कह कर लाला मदनमोहननें अपनें कानकी बाली ब्रजकिशोरको दे दी।

"कल हरकिशोर आदि के मुकद्मैं होंगे उन्की जवाबदिही का बिचार करना है कागज तैयार करा कर उन्सै रहत (बदर) छांटनी है इसलिये अब आज्ञा हो" यह कह कर ब्रजकिशोर रुखसत हुए और लाला मदनमोहन भोजन करनें गए।

लाला मदनमोहन भोजन करके आए उस्समय मुन्शी चुन्नीलालनें अपनें मतलब की बात छेड़ी।

"मुझको हर बार अर्ज करनेंमैं बड़ी लज्जा आती है परन्तु अर्ज किये बिना भी काम नहीं चल्ता" मुन्शी चुन्नीलाल कहनें लगा "ब्याहका काम छिड़ गया परन्तु अबतक रुपेका कुछ बन्दोबस्त नहीं हुआ आपनें दो सौके नोट दिये थे वह जाते ही चटनी हो गए। इस्समय एक हजार रुपयेका भी बन्दोबस्त हो जाय तो खैर कुछ दिन काम चल सक्ता है नहीं तो काम नहीं चल्ता"

"तुम जान्ते हो कि मेरे पास इस्समय नगद कुछ नहीं है और गहना भी बहुतसा काममें आचुका है" लाला मदनमोहन बोले "हां मुझको अपनें मित्रों की तरफ सै सहायता मिलनें का पूरा भरोसा है और जो उन्की तरफ सै कुछ भी सहायता मिली तो मैं प्रथम तुह्मारी लड़की के ब्याहका बन्दोबस्त कर दूंगा।

"और जो मित्रों सै सहायता न मिली तो मेरा क्या हाल होगा?" मुन्शी चुन्नीलालनें कहा "ब्याह का काम किसी तरह नहीं रुक सक्ता और बड़े आदमियों की नौकरी इसी वास्ते तन तोड़ कर की जाती है कि ब्याह शादी मैं सहायता मिले, बराबरवालोंमैं प्रतिष्ठा हो परन्तु मेरे मन्द भाग्य सै यहां इस्समय ऐसा मौका नहीं रहा इसलिये मैं आपको अधिक परिश्रम नहीं दिया चाहता। अब मेरी इतनी ही अर्ज है कि आप मुझको कुछ दिनकी रुख्सत देदें जिस्सै मैं इधर उधर जाकर अपना कुछ सूझता करूं"

"तुमको इस्समय रुखसत का सवाल नहीं करना चाहिये मेरे सब कामों का आधार तुम पर है फिर तुम इस्समय धोका दे कर चले जाओगे तो काम कैसे चलेगा ?" लाला मदनमोहनने कहा।

"वाह ! महाराज वाह ! आपनें हमारी अच्छी कदर की !" मुन्शी चुन्नीलाल तेज होकर कहनें लगा "धोका आप देते हैं या हम देते हैं ? हम लोग दिन रात आपकी सेवा मैं रहैं तो ब्याह शादी का खर्च लेनें कहां जाय ? आपने अपनें मुख सै इस ब्याह मैं भली भांति सहायता करनें के लिये कितनी ही बार आज्ञा की थी, परन्तु आज वह सब आस टूट गई तो भी हमनें आपको कुछ ओलंभा नहीं दिया आप पर कुछ बोझ नहीं डाला केवल अपनें कार्य निर्वाह के लिये कुछ दिन की रुख्सत चाही तो आपके निकट बड़ा अधर्म हुआ। खैर ! जब आपके निकट हम धोकेबाज ही ठरे तो अब हमारे यहां रहनें सै क्या फायदा है ? यह आप अपनी तालियां लें और अपना अस्बाब सह्माल लें पीछे घटे बढ़ेगा तो मेरा ज़िम्मा नहीं है। मैं जाता हूं।" यह कह कर तालियोंका झूमका लाला मदनमोहनके आगे फेंक दिया और मदनमोहन के ठंडा करते करते क्रोध की सूरत बना कर तत्काल वहां सै चल खड़ा हुआ।

सच है नीच मनुष्य के जन्म भर पालन पोषण करने पर भी एक बार थोड़ी कमी रहजानें सै जन्म भर का किया कराया मट्टी मैं मिल जाता है. लोग कहते हैं कि अपनें प्रयोजन मैं किसी तरह का अन्तर आनें सै क्रोध उत्पन्न होता है अपनें काम मैं सहा-

यता करने सै बिराने अपने होजाते हैं और अपने काम मैं बिघ्न करने सै अपने बिराने समझे जाते हैं परन्तु नहीं, क्रोध निर्बल पर विशेष आता है और नाउम्मेदी की हालत मैं उस्की कुछ हद नहीं रहती. मुन्शी चुन्नीलाल पर लाला मदनमोहन कितनी ही बार इस्सै बढ, बढ़ कर क्रोधित हुए थे परन्तु चुन्नीलाल को आज तक कभी गुस्सा नहीं आया ? और आज लाला मदनमोहन उस्को ठंडा करते रहे तो भी वह क्रोध करके चल दिया बृन्दनें सच कहा है " बिन स्वारथ कैसे सहे कोऊ करुए बैन। लात खाय पुचकारिए होय दुधारू धेन ॥ "

मुन्शी चुन्नीलाल के जानें सै लाला मदनमोहन का जी टूट गया परन्तु आज उन्को धैर्य देने के लिये भी कोई उन्के पास न था उन्के यहां सैंकडों आदमियों का जमघट हर घडी बना रहता था सो आज चिडिया तक न फटकी. लाला मदनमोहन इसी सोच बिचार मैं रात के नौ बजे तक बैठे रहे परन्तु कोई न आया तब निराश होकर पलंग पर जा लेटे.

अब लाला मदनमोहन का भय नोकरोंपर बिल्कुल नहीं रहा था सब लोग उन्के माल को मुफ्तका माल समझनें लगे थे किसी नें घडी हथियाई, किसी नें दुशालेपर हाथ फैंका चारों तरफ लूटसी होनें लगी. मोजे, गुलूबंद, रूमाल आदिकी तो पहलेही कुछ पूछ न थी. मदनमोहन को हर तरह की चीज खरीदनें की धत थी परन्तु खरीदे पीछे उस्को कुछ याद नहीं रहती थी और जहां सैंकडों चीजें नित्य खरीदी जायँ वहां याद क्या धूल रहे ? चुन्नीलाल, शिंभूदयाल आदि कीमत मैं दुगुनें चौगनें कराते थे परन्तु यहां असल चीजोंही का पता न था. बहुधा चीजें उधार

आती थीं इस्सै उन्का जमा खर्च उस्समय नहीं होता था और छोटी, छोटी चीजों के दाम तत्काल खर्च मैं लिख दिये जाते थे इस्सै उन्की किसी को याद नहीं रहती थी. सूची पत्र बनानें की वहां चाल न थो और चीज बस्त की झडती कभी नहीं मिलाई जाती थी नित्य प्रति की तुच्छ, तुच्छ बातोंपर कभी, कभी वहां बडा हल्ला होताथा परन्तु सब बातोंके समूह पर दृष्टि करके उचित रीतिसै प्रबन्ध करनें की युक्ति कभी नहीं सोची जाती थी और दैवयोगेन किसी नालायक सै कोई काम निकल आता था तो वह अच्छा समझ लिया जाता था परन्तु काम करनें की प्रणाली पर किसी की दृष्टि न थी. लाला साहब दो तीन वर्ष पहलै आगरे लखनऊ की सैरको गए थे वहां के रस्ते खर्च के हिसाब का जमा खर्च अबतक नहीं हुआ था और जब इस तरह कोई जमा खर्च हुए बिना बहुत दिन पडा रहता था तो अन्त मैं उस्का कुछ हिसा-ब किताब देखे बिना यों ही खर्च मैं रकम लिख कर खाता उठा दिया जाता था. कैसेही आवश्यक काम क्यों नहो लाला साहब की रुचिके बिपरीत होनें सै वह सब बेफायदे समझे जाते थे और इस ढब की वाजबी बात कहना गुस्ताखी मैं गिना जाता था. निकम्मे आदमियों के हरवक्त घेरे बैठे रहनें सै कामके आदमियों को कामकी बात करनें का समय नहीं मिलता था, " जिस्की लाठी उस्की भैंस " हो रही थी जो चीज जिस्के हाथ लगती थी वह उस्को खुर्दबुर्द कर जाताथा भाडे और उघाई आदिकी भूली भुलाई रकमों को लोग ऊपर का ऊपर चट करजाते थे आधे परदे पर कर्ज दारोंको उनकी दस्तावेज़ फेर दी जाती थी देशकाल के अनु-सार उचित प्रबन्ध करनें मैं लोक निंदाका भय था ! जो मनुष्य कृपा-

पात्रथे उनका तन्तना तो बहुतही बढ रहा था उन्के सब अपराधोंसै जान बूझकर द्रृष्टि बचाई जाती थी. वह लोग सब कामों मैं अपना पांव अडाते थे और उन्के हुक्म की तामील सबको करनी पडती थी यदि कोंई अनुचित समझकर किसी काम मैं उज्र करता तो उस्पर लाला साहब का कोप होताथा और इस दुफसली काररवाई के कारण सब प्रवन्ध बिगड रहा था (बिहारी)" दुसह दुराज प्रजान को क्यों न बढै दु:ख दुद ॥ अधिक अंधेरो जग करै मिल मावस रवि चंद ॥" ऐसी दशा मैं मदनमोहन की स्त्रीके पीछे चुन्नीलाल और शिंभूदयाल के छोड जानेपर सब माल मतेकी लूट होनें लगे जो पदार्थ जिस्के पास हो वह उस्का मालिक बन बैठे इस्मैं कौन आश्चर्य है ?

प्रकरण ३५.

स्तुति निन्दाका भेद.

बिनसत बार न लागही ओछे जनकी प्रीति ॥
अंबर डंबर सांझके अरु बारूकी भींति ॥

सभाविलास.

दूसरे दिन सवेरे लाला मोदनमोहन नित्य कृत्य सै निबटकर अपनें कमरे मैं इकल्ले बैठे थे. मन मुर्झा रहा था किसी काम मैं जी नहीं लगता था एक, एक घड़ी एक, एक बरस के बराबर बीतती थी इतनें मैं अचानक घड़ी देखनें के लिये मेज़पर दृष्टि गई तो घड़ी का पता न पाया. हैं! यह क्या हुआ! रातको सोती बार जेबसै निकालकर घड़ी रक्खी थी फिर इतनी देर मैं कहां चली गई! नौकरों सै बुलाकर पूछा तो उन्होनें साफ़ जवाब दिया कि "हम क्या जानें आपनें कहां रक्खी थी? जो मौक़ूफ़ करना हो तो यों ही करदें बृथा चोरी क्यों लगाते हैं" लाचार मदनमोहन को चुप होना पड़ा क्योंकि आप तो किसी जगह आनें जानें लायक़ ही न थे सहायता को कोई आदमी पास न रहा लाला जवाहरलाल की तलाश कराई तो वह भी घर सै अभी नहीं आए थे लाला मदनमोहनको अपाहजों की तरह अपनी पराधीन दशा देखकर अत्यंत दुःख हुआ परन्तु क्या कर सक्ते थे? उन्के भाग्य सै उन्का दुःख बटानें के लिये इस्समय बाबू बैजंनाथ आ पहुंचे उन्को देखकर लाला मदनमोहन के शरीर मैं प्राण आगया.

लाला मदनमोहननें आंखों सै आंसू बहाकर उन्सै अपना सब दु:ख कहा और अंत मैं अपनी घडी जानें का हाल कह कर इस काम मैं सहायता चाही.

"आपका हाल सुन्कर मुझको बहुत खेद होता है मुझे चुन्नीलाल आदि की तरफ सै सर्वथा ऐसा भरोसा न था इसी तरह आप अपनें काम कांज सै इतनें बे खबर होंगे यह भी उम्मेद न थी" बाबू बैजनाथ नें काम बिगड़े पीछे अपनी आदत मूजिब सबकी भूल निकालकर कहा "मैंनें तो अख़बारों मैं आपके नाम की धूम मचा दी थी परंतु आप अपनें काम ही की सम्हाल न रक्खें तो मैं क्या करूं? महाजनी काम मुझको नहीं आता और इतना अवकाश भी नहीं मिलता. मैं घडीका पता लगानें के लिए उपाय करता परंतु आजकल रेल पर काम बहुत है इस्सै मैं लाचार हूं. मेरे निकट इस्समय आपके लिये यही मुनासिब है कि आप इन्साल्वन्ट होनें की दरखास्त दे दें."

"अच्छा! बाबू साहब! आपसै और कुछ नहीं हो सक्ता तो आप केवल इतनीही कृपा करें कि मेरी घडी जानें कि रपट कोतवाली मैं लिखाते जायँ" लाला मदनमोहननें गिड़गिड़ाकर कहा.

"मैं रेलवे कम्पनी का नौकर हूं इस वास्ते कोतवाली मैं रिपोर्ट नहीं लिखा सक्ता बल्कि प्रगट होकर किसी काम मैं आपको कुछ सहायता नहीं दे सक्ता मुझ सै निज मैं आपकी कुछ सहायता हो सकेगी तो मैं बाहर नहीं हूं परंतु आप मुझ सै किसी जाहरी काम के वास्तै कहकर मुझे अधिक लज्जित न करें और अंत मैं मैं आपको इतनी ही सलाह देता हूं कि "आप

लाला ब्रजकिशोर पर विश्वास रखकर उस्के बसमें न हो जायँ बल्कि उसको अपनें बस मैं रखकर अपना काम आप करते रहैं"

"सच है यह समय किसी पर बिश्वास रखनें का नहीं है जो लोग अपने मतलब की बार सच्चे मित्र बनकर मेरे पसीनेंकी जगह खून डालने को तैयार रहते थे मतलब निकल जाने सै आज उन्की छाया भी नहीं दिखाई देती. सत्सम्मति देना तो अलग रहा मेरे पास खड़े रहनें तक के साथी नहीं होते. जो लोग किसी समय मेरी मुलाक़ात के लिये तरस्ते थे वह अब तीन; तीन बार बुलानें सै नहीं आते मेरे पास आनें जानें सै जिन् लोगों की इज्जत बढ़ती थी वह आज मुझ सै किसी तरह संबंध रखनें मैं लजाते हैं" लाला मदनमोहननें भरमा भरमी इतनी बात कहकर अपनी छाती का वोझ हल्का किया.

"यह तो सच है जिसका प्रयोजन होता है उसै उचित अनुचित बातोंका कुछ बिचार नहीं रहता" बाबू बैजनाथनें जैसे का तैसा जवाब दिया और थोड़ी देर इधर उधर की बातें करके रुखसत हुआ.

लाला मदनमोहन बड़े चकित थे कि हे! परमेश्वर! यह क्या भेद है मेरी दशा बदलते ही सब संसार के विचार कैसे बदल गए. और जिन्सै मेरा किसी तरहका संबंध न था वह भी मुझ को अकारण क्यों तुच्छ समझनें लगे? मेरे नर्म होनें पर भी बेप्रयोजन मुझ सैं क्यों लड़ाई झगड़ा करनें लगे? जिन लोगों को मेरी योग्यता और सावधानी के सिवाय अब तक कुछ नहीं दिखाई देता था उन्को अब क्यों मेरे दोष दृष्टि आनें लगे? लाला मदनमोहन इन बातों का विचार कर रहे थे इतनें मैं लाला

ब्रजकिशोर वहां जा पहुंचे और मदनमोहन नें अपनें मन का सब संदेह उन्हें कह सुनाया.

"एक तो ज़ो लोग प्रथम स्वार्थबस प्रीति करते हैं उन्की कलई ऐसे अवसर पर खुल जाती है. दूसरे साधारण लोगों की स्तुति निन्दा कुछ भरोसे लायक़ नहीं होती वह किसी बात का तत्व नहीं जान्ते प्रगट मैं जैसी दशा देखते हैं वैसा ही कहनें लगते हैं बल्कि उसीके अनुसार बरताव करते हैं इस्सै साधारण लोगों की प्रतिष्ठा योग्यताके अनुसार नहीं होती द्रब्य अथवा जाहरदारी के अनुसार होती है और द्रब्य अथवा जाहरदारीके परदे तले घोर पापी अपनें पापोंको छिपाकर क्रम, क्रम सै प्रतिष्ठित लोगों मैं मिल सकता है बल्कि प्रतिष्ठित लोगों मैं मिलना क्या ? कोई पूरा चालाक मनुष्य हो तब तो वह द्रब्य के भरम और जाहर-दारी के बरताव सै द्रब्य तक पैदा कर सकता है! ऐसा मनुष्य पहले अपनें द्रब्य अथवा योग्यता का झूटा प्रपंच फैला कर लोगोंके मनमें अपना विश्वास बैठाता है और बिश्वास हुए पीछै कमाई की अनेक राह सहज मैं उस्के हाथ आ जाती है लोग उस्को अपनें आप घीरनें लगते हैं कभी, कभी ऐसे मनुष्य अपनी धूर्तता सै सच्चे योग्य अथवा धनवानों सै बढकर काम बना लेते हैं यद्यपि अंत मैं उन्की कलई बहुधा खुल जाती है परंतु साधारण लोग केवल बर्तमान दशा पर द्रष्टि रखते हैं. जिस्समय जिसकी उन्नति देखते हैं उन्नति का मूल कारण निश्चय किये विना उस्की बडाई करनें लगते हैं उस्के सब काम बुद्धिमानी के समझते हैं इसी तरह जब किसी की प्रगट मैं अवनति दिखाई देती है तो वह उस्की मूर्खता समझते हैं और उस्के गुणों मैं भी

दोषारोप करनें लगते हैं! उस्समय उन्को उस्की भूलही भूल दृष्टि आती है सो आप प्रत्यक्ष देख लीजिये कि जब तक सर्ब साधारणको प्रगट मैं आपकी उन्नतिका रूप दिखाई देता था. आपका द्रब्य, आपका वैभव, आपका यश, आपकी उदारता, आपका सीधापन, आपकी मिलन्सारी, देखकर वह आपका आचरण अच्छा समझते थे आपकी बुद्धिमानीकी प्रशंसा करते थे आपसै प्रीति रखते थे. जब आपको यह झटका लगा प्रगट मैं आपकी अवनति का सामान दिखाई देनें लगा झट उन्की राह बदल गई आपके बडप्पन के बदले उन्के मन मैं धिक्कार उत्पन्न हुआ आप की अतिब्ययशीलता, अदूरदृष्टि, अप्रबन्ध, और आत्मसुखपरायणता आदि दोष उन्को दिखाई देनें लगे. आपके बने रहनें पर उन लोगोंको आप सै जो, जो आशाऐं थीं और उन आशाओं के कारण आपसै स्वार्थपरता की जितनी प्रीति थी वह उन आशाओं के नष्ट होते ही सहसा छाया के समान उन्के हृदयसै जाती रही बल्कि आशा भंग होनें का एक प्रकार खेद हुआ फिर जब साधारण लोगों का यह अभिप्राय हो, मुन्शी चुन्नीलाल, शिंभूदयाल आदि आपको यों अकेला छोडकर चले जायं तब आपके छोटे नौकर निडर होकर आपके मालकी लूट मचानें लगें जो चीज जिस्के पास हो वह उस्का मालिक बन बैठे इस्मैं कौन आश्चर्य है?

"अच्छा! अब आगे के लिये आप कहैं जैसे करूं इस्का कुछ प्रबन्ध तो अवश्य होना चाहिये" लाला मदनमोहन नें गिड-गिडा कर कहा.

इसपर लाला ब्रजकिशोर घर के सब नौकरों को धमका कर

बड़े क्रोधसै कहनें लगे "आज सवेरे सै इस कमरे के भीतर कौन, कौन आया था उन सबके नाम लिखवाओ मैं अभी कोतवाली को रुक्का लिखता हूं वह सब हवालात मैं भेज दिये जायंगे और उन्के मकानों की उन्के संबन्धियों समेत तलाशी ली जायगी जिन्के घर सै कोई चीज़ चोरी की निकलेगी या जिनपर और किसी तरह चोरी का अपराध साबित होगा उन्को ताजीरात हिन्द की दफ़ै ४०८ के अनुसार सात बरस तक की कैद और जुर्माने का दण्ड भी हो सकेगा"

"अजी महाराज! एक मनुष्य के अपराध सै सबको दण्ड हो यह तो बड़ा अनर्थ है" बहुतसे नौकर गिडगिडा कर कहनें लगे" हम लोग अबतक लाला साहब के यहां बेटा बेटी की तरह पले हैं इस्सै अब ऐसी ही मर्जी हो तो हमको मौकूफ कर दीजिये परन्तु बदनामी का टीका लगा कर और जगह के कमाने खाने का रस्ता तो बन्द न कीजिये."

"हां हां यह तो सफाई सै निकल जानें का अच्छा ढंग है परन्तु इस्तरह तुम्हारा पीछा नहीं छुटेगा जो तुम लाला साहब के यहां बेटा बेटी की तरह पले हो तो तुमको इस्समय यह बात कहनी चाहिये? तुम इस्समय लाला साहब सै अलग होनें मैं अपना लाभ समझते हो परन्तु यह तुम्हारी भूल है इस्मैं तुम उल्टे फस जाओगे" लाला ब्रजकिशोर नें सिंह की तरह गर्ज कर कहा.

"अच्छा! हम को सांझ तककी छुट्टी दीजिये हमसै हो सकेगा जहां तक हम घड़ी का पता लगावेंगे" नौकरोंनें जवाब दिया.

"तुम लोग यह बहाना करके अपनें घर सै चोरी का माल दूर किया चाहते हो परन्तु मैं घड़ी का पता लगाये बिना तुम को कभी ढीला नहीं छोड़ूंगा, मैं अभी कोतवाली को रुक्का लिखता हूं" यह कह कर लाला ब्रजकिशोर सचमुच रुक्का लिखनें लगे.

जिन लोगोंनें सवेरे मदनमोहन की बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया था वही इस्समय ब्रजकिशोर की ज़रा सी धमकी से मदनमोहन के पांव पकड़ कर रोनें लगे. तुलसी दासजी नें सच कहा है "शूद्र गमार ढोल पशु नारी। सकल ताड़नाके अधिकारी॥"

"भाई! इन्को सांझ तक अवकाश दे दो जो तुम अब करना चाहते हो सांझ को कर लेना" लाला मदनमोहन नें पिगल कर अथवा किसी गुप्त कारण सै दब कर कहा.

"आप को किसीकी रिआयत हो तो आप निज मैं भले ही उन्को कुछ इनाम दे दें परन्तु प्रबन्ध के कामों मैं इस तरह अपराधियों पर दया करके अपनें हाथ सै प्रबन्ध न बिगाड़ें ये लोग आपका क्या कर सक्ते हैं? मनुस्मृति मैं कहा है "दंड विषै संभ्रम भये बर्ण दोष है जाय। मचै उपद्रव देश मैं सब मर्याद नसाय॥" * सादी कहते हैं "पापिन मांहिं दया है ऐसी। सज्जन संग क्रूरता जैसी॥"† लाला ब्रजकिशोर ने कहा.

"ख़ैर! कुछ हो आज का दिन तो इन्को छोड दीजिये" लाला मदनमोहन नें दबा कर कहा.

---

* दुष्ये युः सर्ववर्णा स्व भिद्येरन् सर्वसेतवः॥
सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्दण्डस्य विभ्रमात्॥

† निकोई बाबदां कर्दन् चुनानस्त की बदकर्दन् बजाय नेकमर्दां॥

"बहुत अच्छा ! जैसी आप की मर्जी" ब्रजकिशोर नें रुखाई सै जबाब दिया.

"मुझको मित्रों की तरफ सै सहायता मिलनें का बिश्वास है परन्तु दैवयोग सै न मिली तो क्या इन्सालवन्ट होनें की दरख्वास्त देनी पड़ेगी" लाला मदनमोहननें पूछा.

"अभी तो कुछ ज़रूरत नहीं मालूम होती परन्तु ऐसा बिचार किया भी जाय तो आपके लेन देन और माल अस्बाब का कागज कहां तैयार है ?" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया. और कचहरी जाने के लिये मदनमोहन सै रुख्सत होकर रवानें हुए.

प्रकरण ३६.

धोके की टट्टी

बिपत बराबर सुख नहीं जो थोरे दिन होय
इष्ट मित्र बन्धू जिते जान परैं सब कोय ॥

लोकोक्ति,

लाला ब्रजकिशोर के गए पीछे मदनमोहन की फिर वही दशा होगई दिन पहाड सा मालूम होनें लगा खास कर डाक की बडी तला मली लगरही थी निदान राम, राम करके डाक का समय हुआ डाक आई. उस्मैं दो तीन चिट्ठी और कई अख़बार थे.

एक चिट्ठी आगरे के एक जौहरी की आई थी जिस्मैं जवाहरात की बिक्री बाबत लाला साहब के रुपे लेनें थे और वह

यों भी लाला साहव सै बड़ी मित्रता जताया करता था उस्नें लाला साहब की चिट्ठी के जबाव मैं लिखा था कि "आप की जरूरत का हाल मालूम हुआ मैं बड़ी उमंग सै रुपे भेज कर इस्समय आपकी सहायता करता परन्तु मुझको बडा खेद है कि इन दिनों मेरा बहुत रुपया जवाहरात पर लग रहा है इसलिये मैं इस्समय कुछ नहीं भेज सक्ता आपनें मुझको पहले सै क्यों न लिखा? अब जिस्समय मेरे पास रुपया आवेगा मैं प्रथम आपकी सेवा मैं जरूर भेजूंगा मेरी तरफ सै आप भलीभांति विश्वास रखना और अपनें चित्त को सर्वथा अधैर्य न होनें देना परमेश्वर कुशल करेगा" यह चिट्ठी उस कपटी नें ऐसी लपेट सै लिखी थी कि अजान आदमी को इस्के पढ़नें सै लाला मदनमोहन के रुपे लेने का हाल सर्वथा नहीं मालूम होसक्ता था वह अच्छी तरह जान्ता था कि लाला मदनमोहनका काम बिगड़ जायगा तो मुझसै रुपे मांगनें वाला कोई न रहैगा इस वास्तै उस्नें केवल इतनी ही बात पर सन्तोष न किया बल्कि वह गुप्त रीति सै मदनमोहन के बिगड़नें की चर्चा फैलानें, और उस्के बड़े, बड़े लेनदारों को भड़कानें का उपाय करनें लगा. हाय! हाय! इस असार संसार मैं कुछ दिन की अनिश्चित आयु के लिये निर्भय होकर लोग कैसे घोर पाप करते हैं!!!

दुसरी चिट्ठी मदनमोहन के और एक मित्र (!) की थी वह हर साल आकर महीनें बीस रोज़ मदनमोहन के पास रहते थे इसलिये तरह, तरह की सोगात के सिवाय उन्की खातिरदारी मैं मदनमोहन के पांच सात सौ रुपे सदैव ख़र्च होजाया करते थे. उन्नें लिखा था कि "मैंनें बहुत सस्ता समझ कर इस्समय एक

गांव साठ हज़ार रुपे मैं खरीद लिया है मेरे पास इस्समय पचास हज़ार अन्दाज मोजूद हैं इसलिये मुझको महीनें डेड़ महीनें के वास्ते दस हज़ार रुपे की ज़रूरत होगी जो आप कृपा करके यह रुपया मुझको साहूकारी व्याजपर दे देंगे तो मैं आपका बहुत उपकार मानूंगा" यह चिट्ठी लाला मदनमोहन की चिट्ठी पहुंचते ही उस्नें अगमचेती करके लिख दी थी और मिती एक दिन पहलेकी डाल दी थी कि जिस्सै भेद न खुलने पावै—

मदनमोहन के तीसरे मित्र की चिट्ठी बहुत संक्षेप थी उस्मैं लिखा था कि "आपकी चिट्ठी पहुंची उस्के पढ़नें सै बड़ा खेद हुआ. मैं रुपे का प्रबन्ध कर रहा हूं यदि हो सकेगा तो कुछ दिन मैं आपके पास अवश्य भेजूंगा" इस्के पास पत्र भेजनें के समय रुपया मोजूद था परन्तु इस्नें यह पेच रक्खा था मदनमोहन का काम बना रहैगा तो पीछे सै उस्के पास रुपया भेज कर मुफ्तमैं अहसान करेंगे और काम बिगड जायगा तो चुप हो रहैंगे अर्थात् उस्को रुपे की ज़रूरत होगी तो कुछ न देंगे और ज़रूरत न होगी तो ज़बरदस्ती गले पडेंगे!

इन्के पीछे लाला मदनमोहन एक अख़बार खोलकर देखनें लगे तो उस्मैं एक यह लेख दृष्टि आया:—

"सुसभ्यता का फल"

"हमारे शहरके एक जवान सुशिक्षित रईसकी पहली उठान देखकर हमको यह आशा होती थी बल्कि हमनें अपनी यह आशा प्रगट भी कर दी थी कि कुछ दिनमैं उस्के कामोंसै कोई देशोपकारी बात अवश्य दिखाई देगी परन्तु खेद है कि हमारी वह आशा बिल्कुल नष्ट हो गई बल्कि उस्के बिपरीत भाव प्रतीत होनें

लगा गिन्ती के दिनोंमैं तीन चार लाख पर पानी फिरगया. वलायत मैं डरमोडी नामी एक लड़का ऐसा तीक्षण बुद्धि हुआ था कि वह नो वर्ष की अवस्था मैं और विद्यार्थियों को ग्रीक और लाटिन भाषाके पाठ पढ़ाता था परन्तु आगे चलकर उस्का चाल चलन अच्छा नहीं रहा इसी तरही यहां प्रारंभ सै परिणाम विपरीत हुआ. हिन्दुस्थानियों का सुधरना केवल दिखाने के लिये है वह अपनी रीति भांति बदलने मैं सब सुसभ्यता समझते हैं परंतु असल मैं अपनें स्वभाव और विचारोंके सुधारने का कुछ उद्योग नहीं करते बचपन मैं उन्की तबियत का कुछ, कुछ लगाव इस तरफ को मालूम होता भी है तो मदरसा छोड़े पीछे नाम को नहीं दिखाई देता. दरिद्रियों को भोजन बस्त्र की फिकर पड़ती है और धनवानों को भोग विलास सै अवकास नहीं मिल्ता फिर देशोन्नति का बिचार कौन करे? विद्या और कला की चर्चा कौन फैलाय? हमको अपनें देश की दीन दशा पर द्रष्टि करके किसी धनवान का काम बिगड़ता देख कर बड़ा खेद होता है परन्तु देश के हित के लिये तो हम यही चाहते हैं कि इस्तरह पर प्रगट मैं नए सुधारे की झलक दिखा कर भीतर सै दीये तले अन्धेरा रखनेवालों का भंडा जल्दी फूट जाय जिस्सै और लोगों की आंखैं खुलें और लोग सिंहका चमड़ा ओढ़नेवाले भेड़िये को सिंह न समझैं" इस अख़बार के ऐडीटर को पहलै लाला मदनमोहन सै अच्छा फ़ायदा हो चुका था परन्तु बहुत दिन बीत जानें सै मानों उस्का कुछ असर नहीं रहा जिस तरह हरेक चीज़ के पुराने पड़नें सै उस्के बन्धन ढीले पड़ते जाते है इसी तरह ऐसे स्वार्थपर मनुष्यों के चित्त मैं किसी के उपकार पर, लेन देन पर,

प्रीति व्यवहार पर, बहुत काल बीत जानें सै मानों उस्का असर कुछ नहीं रहता जब उन्के प्रयोजनका समय निकल जाता है तब उन्की आंखैं सहसा बदल जाती है जब वह किसी लायक होते हैं तब उन्के हृदय पर स्वेच्छाचार छा जाता है जब उन्के स्वार्थ मैं कुछ हानि होती है तब वह पहले के बड़े सैं बड़े उपकारों को ताक़ पर रख कर बैर लेनें के लिये तैयार हो जाते हैं सादी नें कहा है "करत खुशामद जो मनुष्य सो कछु दे बहु लेत। एक दिवस पावै न तो दो सै दूषण देत ॥+" इस अखबार का एडीटर विद्वान था और विद्या निस्सन्देह मनुष्य की बुद्धि को तीक्ष्ण करती है परन्तु स्वभाव नहीं बदल सक्ती. जिस मनुष्यको विद्या होती है पर वह उस्पर बरताव नहीं करता वह बिना फल के वृक्षकी तरह निकम्मा है.

लाला मदनमोहन इन लिखावटों को देख कर बड़ा आश्चर्य करते थे परन्तु इस्सै भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि बहुत लोगोंनें कुछ भी जवाब नहीं भेजा उन्मैं कोई, कोई तो ऐसे थे कि बड़ों की लकीर पर फकीर बनें बैठे थे यद्यपि उन्के पास कुछ पूंजी नहीं रही थी उन्का कार व्योहार थक गया था उन्का हाल सब लोग जान्ते थे इस्सै आगे को भी कोई बुर्द हाथ लगनें की आशा न थी परन्तु फिर भी वह खर्च घटानें मैं बेइज्जती समझते थे. सन्तान को पढ़ाने लिखानें की कुछ चिन्ता न थी परन्तु ब्याह शादियोंमैं अब तक उधार लेकर द्रब्य लुटाते थे उन्सै इस अवसर पर सहायता की क्या आशा थी? कितनें ही ऐसे

+ बखा ता नग़्नवी दह सखुन गोए कि अन्दक माय: नफए अज़तो दारद ॥
अगर रोजे मुरादश बर नयारी दोसद चन्दा अयूबत बर शुमारद ॥

थे जिन्हों नें केवल अपनें फ़ायदे के लिये धनवानों का सा ठाठ बना रक्खा था इस वास्तै वह मदनमोहन के मित्र न थे उस्के द्रव्यके मित्र थे वह मदनमोहन पर किसी न किसी तरहका छप्पर रखनें के लिये उस्का आदर सत्कार करते थे इस लिये इस अवसर पर वह अपना पर्दा ढकनें के हेतु मदनमोहन के बिगाड़नें मैं अधिक उद्योग न करें इसी मैं उन्का विशेष अनुग्रह था इस्सै अधिक सहायता मिलनें की उन्सै क्या आशा हो सकती थी ? कोई, कोई धनवान ऐसे थे जो केवल हाकमों की प्रसन्नता के लिये उन्की पसन्दके कामों मैं अपनी अरुचि होनें पर भी जी खोलकर रुपया दे देते थे परन्तु सच्ची देशोन्नति और उदारताके नाम फूटी कौड़ी नहीं ख़र्ची जाती थी वह केवल हाकमों सै मेल रखनें मैं अपनी प्रतिष्ठा समझते थे परन्तु स्वदेशियों के हानि लाभ का उन्हें कुछ विचार न था, केवल हाकमों मैं आनें जानें वाले रईसों से मेल रखते थे और हाकमों की हां मैं हां मिलाया करते थे इसवास्ते साधारण लोगों की दृष्टि मैं उन्का कुछ महत्व न था. हाकमों मैं आनें जानें के हेतु मदनमोहन की उन्सै जान पहचान हो गई थी परन्तु वह मदनमोहन का काम बिगड़नें सै प्रसन्न थे क्योंकि वह मदनमोहन की जगह कमेटी इत्यादि मैं अपना नाम लिखाया चाहते थे इस वास्तै वह इस अवसर पर हाकमों सै मदनमोहन के हक़ मैं कुछ उलट पुलट न जड़ते यही उनकी बड़ी कृपा थी इस्सै बढ़ कर उन्की तरफ़ सै और क्या सहायता हो सक्ती थी ? कोई, कोई मनुष्य ऐसे भी थे जो उनकी रक़म मैं कुछ जोखों न हो तो वह मदनमोहन को सहारा देनें के लिये तैयार थे परंतु अपनें ऊपर जोखों उठा

कर इस डूबती नाव का सहारा लगानें वाला कोई न था. बिष्णु पुराण के इस वाक्य सै उन्के सब लक्षण मिल्ते थे "जाचत हू निज मित्र हित करैं न स्वारथ हानि । दस कौड़ी हू की कसर खायँ न दुखिया जानि ॥+"

निदान लाला मदनमोहन आज की डाक देखे पीछे बाहर के मित्रों की सहायता सै कुछ, कुछ निराश हो कर शहर के बाक़ी मित्रों का माजना देखनें के लिये सवार हुए

प्रकरण ३७.

बिपत्तमैं धैर्य.

प्रिय बियोग को मूढ़जन गिनत गड़ी हिय भालि ॥
ताही कों निकरी गिनत धीरपुरुष गुणशालि ॥ ❀

रघुबन्शे.

लाला ब्रजकिशोर नें अदालत मैं पहुंचकर हरकिशोर के मुकद्मे मैं बहुत अच्छी तरह बिबाद किया. निहालचन्द आदि के कई छोटे, छोटे मामलों मैं राजीनामा होगया जब ब्रजकिशोर को अदालत के काम सै अबकाश मिला तो वह वहां सै सीधे मिस्टर ब्राइट के पास चले गए.

× अभ्यर्थितोपि सुहृदा स्वार्थहानिं न मानव: ॥
पणार्धार्धार्धमात्रेण करिष्यति तदाद्विज ॥

* अवगच्छति मूढचेतन: प्रियनाशं हृदिशल्यमर्पितम् ॥
स्थिरधीस्तु तदेव मन्यते कुशलद्वारतया समुद्धृतम् ॥

हरकिशोर नें इस अवकाश को बहुत अच्छा समझा तत्काल अदालत मैं दरख्वास्त की कि "लाला मदनमोहन अपनें बाल-बच्चों को पहले मेरठ भेज चुके हैं उन्के सब माल अस्वाब पर मिस्टर ब्राइट की कुर्की हो रही है और अब वह आप भी रूपोश (अतंर्धान) हुआ चाहते हैं मैं चाहता हूं कि उन्के नाम गिरफ्तारी या वारन्ट जारी हो." इस बात पर अदालत मैं बड़ा बिबाद हुआ जवाब दिही के वास्तै लाला ब्रजकिशोर बुलाए गए परन्तु उन्का कहीं पता न लगा हरकिशोर के वकील नें कहा कि लाला ब्रजकिशोर झूंट बोलनें के भय सै जान बूझकर टल गए हैं. निदान हरकिशोर के हलफ़ी इजहार (अर्थात शपथ पूर्बक वर्णन करनें पर हाकम को बिबस होकर वारन्ट जारी करनें का हुक्म देना पड़ा हरकिशोर नें अपनी युक्ति सै तत्काल वारन्ट जारी करा लिया और आप उस्की तामील करनें के लिये उस्के साथ गया. मदनमोहन सै जिन लोगों का मेल था उन्मैं सै कोई, कोई मदनमोहन को ख़बर करनें के लिये दौड़े परन्तु मन्द भाग्य सै मदनमोहन घर न मिले.

हां मदनमोहन की स्त्री अभी मेरठ सै आई थी वह यह ख़बर सुन्कर घबरा गई उस्नें चारों तरफ़ को आदमी दौड़ा दिये. मेरठ मैं मदनमोहन के बिगड़नें की ख़बर कल सै फैल रही थी परन्तु उस्के दु:ख का विचार करके उस्के आगे यह बात करनें का किसी को साहस न हुआ आज सवेरे अनायास यह बात उस्के कान पड़ गई बस इस बात को सुन्ते ही वह मच्छी की तरह तड़पनें लगी, रेलके समय मैं दो घंटे की देर थी यह उसै दो जुग सै अधिक बीते उस्के घरके बहुत कुछ धैर्य देते थे परन्तु

उसै किसी तरह कल नहीं पडती थी. जब वह दिल्ली पहुंची तो उस्नें अपनें घरका और ही रङ्ग देखा न लोगों की भीड़, न हँसी दिल्लगी की बातें, सब मकान सूना पड़ा था और उस्मैं पांव रखते ही डर लगता था जिस्पर विशेष यह हुआ कि आते ही यह भयङ्कर ख़बर सुनी जब सै उस्नें यह ख़बर सुनी उस्के आंसू पल भर नहीं बन्द हुए वह अपनें पतिके लिये प्रसन्नता सै अपना प्राण देनें को तैयार थी.

इधर लाला मदनमोहन अपनें स्वार्थपर मित्रों सै नए, नए बहानों की बातें सुन्ते फिरते थे इतनें मैं एकाएक कान्सटेबल नें कोचमैन को पुकार कर बग्गी खड़ी कराई और नाज़िर नें पास पहुंचतेही सलाम करके वारन्ट दिखाया, लाला मदनमोहन उस्को देखते ही सफ़ेद होगए, सिर झुका लिया, चहरेपर हवा-इयां उडनें लगी, मुखसै एक अक्षर न निकला. हरकिशोर नें एक खखार मारी परन्तु मदनमोहन की आंख उस्के सामनें न हुई. निदान मदनमोहन नें नाज़िर को संकेत मैं अपनी परा-धीन्ता दिखाई इस्पर सबलोग कचहरी को चले.

मदनमोहन अदालत मैं हाकम के सामनें खड़े हुए उस्समय लाजसै उन्की आंख ऊंची नहीं होती थी. हाकम को भी इसबात का अत्यंत खेद था परन्तु वह कानून सै परबस थे,

"हमको आपकी दशा देखकर अत्यंत खेद है और इस हुक्म के जारी करनें का बोझ हमारे सिर आपड़ा इस्सै हमको और भी दुःख होता है परन्तु हमारे आपके निजके संबन्ध को हम अदालत के काम मैं शामिल नहीं कर सक्ते ताजकी वफ़ा-दारी, ईमान्दारी, मुल्क का इन्तज़ाम सब लोगों की हरक़सी,

और हरेक आदमीके फ़ायदे के लिये इन्साफ करना बहुत जरूरी हैं" हाकम नें कहा "आपसे सीधे सादे आदमियोंको अपने भोलेपन सै इतनी तक्लीफ उठानी पड़े यह बड़े खेदकी बात है और मेरा जी यह चाहता है कि मुझसै हो सके तो मैं अपने निज सै आपके कर्ज़ का इन्तजाम करके आपको छोड़ दूं परंतु यह बात मेरे बूते सै बाहर है क्या आपके कोई ऐसे दोस्त नहीं हैं जो इस्समय आपकी सहायता करें? या आप इन्साल्वन्सी वगैरे की दरख्वास्त रखते हैं।

लाला मदनमोहन के मुख सै कुछ अक्षर न निकले इस वास्तै थोड़ी देर पीछे हारकर उन्को हवालात में भेजना पड़ा.

इतनें मैं लाला ब्रजकिशोर आ गए. उन्का स्वभाव बड़ा गंभीर था परंतु बिना बादलके इस बिजली गिरनें सै तो वह भी सहम गए उन्को इतनें तूल हो जानें का स्वप्न मैं भी खयाल न था इस लिये वह थोड़ी देर कुछ न समझ सके वह कभी इन्साल्वन्सी का बिचार करते थे कभी हरकिशोर कि डिक्री का रुपया दाखिल करके मदनमोहन को तत्काल छुड़ा लिया चाहते थे परंतु इन बातों सै उनके और प्रबन्ध मैं अन्तर आता था इसलिये इन्मैं सै कोई बात उस्समय न कर सके। वह समझे कि "ईश्वर की कोई बात युक्ति सून्य नहीं होती कदाचित इसी मैं कुछ हित समझा हो ईश्वर की अपार महिमा है सेआक्सनी का हेनूरी नामी अमीर बड़ा दुष्ट, क्रूर और अन्याई था उस्के स्वेच्छाचारसैं सब प्रजा त्राहि, त्राहि कर रही थी इसलिये उस्को भी प्रजासैं बड़ा भय रहता था एकबार वह कुछ दुष्कर्म करके निद्राबस हुआ उस्समय उस्नें यह स्वप्न देखा कि वहां

का ग्राम्य देवता उस्की ओर कुछ क्रोध और दयाकी दृष्टिसै देख रहा है और यह कह रहा है कि "ले अधम पुरुष! तेरे लिये यह आज्ञा हुई है" यह कहकर उस ग्राम देवतानें एक लिपटा हुआ काग़ज़ हेन्‌री की तरफ़ फेंक दिया और आप अन्तर्धान हो गया हेनरीनें काग़ज़ खोलकर देखा तो उस्मैं ये शब्द लिखेथे कि "छ:के पश्चात्" हेन्‌रीनें जगकर निश्चय समझा कि मैं छ:पहर, छ:दिन, छ:अठवाड़े, छ:मास या छ:वर्षमैं अवश्य मरजाऊंगा इस्सै हेन्‌री को अपनें दुष्कर्मोंका बड़ा पछतावा हुआ और छ: महिने तक मृत्यु भयसै अत्यंत व्याकुल रहा परंतु फिर मृत्यु की अवधि छटे वर्ष समझकर समाधानी सै सत्कर्म करनें लगा अपनें कुकर्मोंके लिये सच्चे मनसै ईश्वर की क्षमा चाही और उस्सै पीछे केवल सत्कर्म करके प्रजा की प्रीति प्रतिदिन बढ़ाता गया उस्की पहली चालसै वह कडुआ फल उस्को मिला था कि जिस्सै बेचैन होकर वह गुमराह हुआ जाता था उस्के बदले इस्समयके आनन्दके मिठास सै उस्का चित्त प्रफुल्लित रहनें लगा और जैसै, जैसै वह पहले के कडुआपनसै इस्समयके मिठासका मुकाबला करता गया वैसे वैसे उस्का आनन्द विशेष बढ़ता गया उस्के चित्तमैं कोई बात छिपानें के लायक नहीं रही इस्सैं उस्के मन पर किसी तरह का बोझ न मालूम होता था लोगों के जीमैं उस्का विश्वास एक साथ बढ़ गया बडे, बड़े राजा उस्को अपना मध्यस्थ करनें लगे और छ: वर्ष पीछे जब वो अपनें मरनें की घड़ी समझता था ईश्वर की कृपा सै उसी स्वप्न के कारण वह जर्मनी का राज करनें के लिये सबसै योग्य पुरुष समझा जाकर राज सिंहासन पर बैठाया गया!!!" इस

लिये अब यह सूरत हो चुकी है तो लाला मदनमोहन के चित्तपर इस्का पुरा असर हो जाना चाहिये क्योंकि जो बात सौ बार समझाने से समझमें नहीं आती वह एक बार की परीक्षा सै भली भांति मनमैं बैठ जाती है और इसी वास्तै लोग "परीक्षा (को) 'गुरु' मान्ते हैं" बस इतनी बात समझमैं आते ही लाला ब्रजकिशोर मदनमोहन को धैर्य देने के लिये उस्के पास हवा-लात में गए उस्का मुंह उतर गया था, आंसू डबडबा रहे थे, लज्जाके मारे आंख उंची नहीं होती थी.

"आप इतने अधैर्य न हों इस बिना विचारी आफ़त आनेंसै मुझको भी बहुत खेद हुआ परन्तु अब गई बीती बातोंके याद करनेसै कुछ फायदा नहीं मालूम होता लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "हर बात के बन्ते बिगडते रहनें से मालूम होता है कि सर्व शक्तिमान परमेश्वरकी इच्छा संसार का नकशा एकसा बनाये रखनें की नहीं है देवताओं को भी दैत्योंसै दुःख उठाना पड़ता है, सूर्य चन्द्रमा को भी ग्रहण लगता है, महाराज रामचन्द्रजी और राजा नल, राजा हरिश्चन्द्र, राजा युधिष्ठिर आदि बड़े बड़े प्रता-पियों को भी हदसै बढकर दुःख झेलने पड़े हैं अभी तीन सौ साडे तीन सौ बर्ष पहलै दिल्ली के बादशाह महम्मद बाबर और हुमायूं नें कैसी, कैसी तक्लीफ़ें उठाईं थीं कभी वह हिन्दुस्थान के बादशाह हो जाते थे कभी उन्के पास पानी पीने तकको लोटा नहीं रहता था और वलायतों मैं देखो फ्रान्स का सुयोग्य बाद-शाह चोथा हेन्री एक बार भूखों मरनें लगा तब उस्नें एक पादरी से गवैयों में नौकर रखनें की प्रार्थना की परन्तु उस्के मन्द भाग्यसै वह भी नामंजूर हुई फ्रान्सके सातवें लूईने एक बार

अपना बूट गांठने के लिये एक चमार को दिया तब उस्की गठवाईके पैसे उस्की जेबमैं न निकले इस्सै उसे लाचार होकर वह बूट चमारके पास छोड़ देना पड़ा. अरस्ततालीस नें लोगों के ज़ुल्मसै विष पीकर अपनें प्राण दिये थे और अनेक विद्वान बुद्धिमान राजा महाराजाओं को कालचक्र की कठिनाई सै अनेक प्रकार का असह्य क्लेश झेल, झेल कर यह असार संसार छोड़ना पड़ा है इसलिये इस दुःख सागर मैं जो दुःख न भोगना पड़े उसी का आश्चर्य है जब अपने जीनेका पलभर का भरोसा नहीं तो फिर कौन्सी बातका हर्ष बिषाद किया जाय यदि संसार मैं कोई बात विचार करनें के लायक है तो यह है कि हमारी इतनी आयु बृथा नष्ट हुई इस्मैं हमनें कौन्सा शुभ कार्य किया ? परन्तु इस विषय मैं भी कोरे पछतावे के निस्बत आगै के लिये समझ कर चलना अच्छा है क्योंकि समय निकला जाता है तुलसी दास जी विनय पत्रिकामें लिखते हैं "लाभ कहा मानुष तन पाये। काय बचन मन सपने हु कबहुंक घटत न काज पराये। जो सुख सुर पुर नरक गेह बन आवत विनहिं बुलाये। तिह सुख कहुं बहु यत्न करत मन समुझत नहीं समुझाये। पर-दारा पर द्रोह मोहबस किये मूढ मन भाये। गर्भ बास दुखरासि जातना तीव्र विपति बिसराये। भय निद्रा मैथुन अहार सबके समान जग जाये। सुरदुर्लभ तन धरिन भजे हरि मद अभिमान गंवाये। गई न निज पर बुद्धि शुद्धि ह्वै रहे राम लयलाये। तुलसि दास यह अवसर बीते का पुनके पछताये ॥१" धर्म का आधार केवल द्रव्य पर नहीं है हरेक अवस्था मैं मनुष्य धर्म कर सक्ता है अलबत्ता पहले उस्को अपना स्वरूप यथार्थ जान्ना चाहिये यदि

अपने स्वरूप जान्नें मैं भूल रह जायगी तो धर्म अधर्म हो जायगा और व्यर्थ दुःख उठाना पड़ेगा. विपत्तिके समय घबराहटकी बराबर कोई बस्तु हानिकारक नहीं होती विपत्ति भंवर के समान है जों, जों मनुष्य बल करके उस्सै निकला चाहता है अधिक फंसता है और थक कर बिबस होता जाता है परन्तु धैर्य सै पानी के बहावके साथ सहज मैं बाहर निकल सक्ता है. ऐसे अवसर पर मनुष्य को धैर्य सै उपाय सोचना चाहिये और परमदयालु भगवान की कृपा दृष्टि पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये उस्को सब सामर्थ है"

"यह सब सच है परन्तु विपत्तिके समय धैर्य नहीं रहता" लाला मदनमोहन नें आंसू भर कर कहा.

"विपत्ति मनुष्य की कसोटी है नीति शास्त्र मैं कहा है "दूरहि सों डरपत रहैं निकट गए तें शूर। बिपत पड़े धीरज गहैं सज्जन सब गुण पूर ॥*" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "महाभारत मैं लिखा है कि राजा बलि देवताओं सै हार कर एक पहाड की कन्दरा मैं जा छिपे तब इन्द्र नें वहां जाकर अभिमान सै उन्को लज्जित करनेंका विचार किया इस्पर बलि शान्तिपूर्वक बोले " तुम इस्समय अपना बैभव दिखाकर हमारा अपमान करते हो परन्तु इस्मैं तुह्मारी कुछ भी बड़ाई नहीं है हारे हुए के आगे अपनी ठसक दिखानें सै पहली निर्बलता मालूम होती है जो लोग शत्रुको जीत कर उस्पर दया करते हैं वही सच्चे वीर समझे जाते हैं. जीत और हार,किसी के हाथ नहीं है यह दोनों सम-

* महतो दूरभीरुत्व मासन्ने शूरता गुण:।
विपत्तौ हि महांल्लोके धीरता मनुगच्छति।

याधीन हैं प्रथम हमारा राज था अब तुह्मारा हुआ आगे किसी और का हो जायगा. दुःख सुख सदा अदलते बदलते रहते हैं होनहार को कोई नहीं मेट सक्ता तुम भूल से इस वैभव को अपना समझते हो यह किसी का नहीं है. पृथु, ऐल, मय, और भीम आदि बहुत सें प्रतापी राजा पृथ्वी पर होगए हैं परन्तु कालने. किसी को न छोड़ा इसी तरह तुह्मारा समय आवेगा तब तुम भी न रहोगे इसलिये मिथ्याभिमान न करो. सज्जन सुख दुःख सै कभी हर्ष बिषाद नहीं करते वह सब अवस्थाओं मैं परमेश्वर का उपकार मान कर सन्तोषी रहते हैं ++ और सब मनुष्यों को अपना समय देख कर उपाय करना चाहिये सो यह समय हमारे बल करनें का नहीं है सहन करनेंका है इसीसै हम तुह्मारे कठोर बचन सहन करते हैं. दुःख के समय धैर्य रखना बहुत आवश्यक है क्योंकि अधैर्य होनें सै दुःख घटता नहीं बल्कि बढ़ता जाता है इसलिये हम चिन्ता और उद्वेग को अपनें पास नहीं आनें देते" ऐसे अवसर पर मनुष्य के मन को स्थिर रखनें के लिये ईश्वर नें कृपा करके आशा उत्पन्न की है और इसी आशा सै संसार के सब काम चल्ते हैं इसलिये आप निराश न हों परमेश्वर पर विश्वास रख कर इस दुःख की निवृत्ति का उपाय सोचें. यह बिपत्ति आप पर किस तरह एकाएक आपड़ी इस्का कारण ढूंडें ईश्वर शीघ्र कोई सुगम मार्ग दिखावेगा"

"मुझको तो इस्समय कोई राह नहीं दिखाई देती तुह्मैं अच्छा लगे सो करो" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

इतनें मैं लाला ब्रजकिशोर सै आकर एक चपरासी नें कहा कि "आप को कोई बाहर बुलाता है" इस्पर वह बाहर चले गए.

प्रकरण ३८.

सच्ची प्रीति.

धीरज धर्म्म मित्र अरु नारी ॥
आपतिकाल परखिये चारी ॥

तुलसीकृत.

लाला ब्रजकिशोर बाहर पहुंचे तो उन्को कचहरी सै कुछ दूर भीड़ भाड़सै अलग वृक्षों की छाया मैं एक सेजगाड़ी दिखाई दी. चपरासी उन्हैं वहां लिवा ले गया तो उस्मैं मदनमोहन की स्त्री बच्चों समेत मालूम हुई. लाला मदनमोहन की गिरफ्तारी का हाल सुन्ते ही वह बिचारी घबरा कर यहां दौड़ आई थी उस्की आंखों सै आंसू नहीं थमते थे और उस्को रोती देख कर उस्के छोटे, छोटे बच्चे भी रो रहे थे. ब्रजकिशोर उन्की यह दशा देख कर आप रोनें लगे. दोनों बच्चे ब्रजकिशोर के गले सै लिपट गए और मदनमोहन की स्त्रीनें अपना और अपनें बच्चोंका गहना ब्रजकिशोर के पास भेज कर यह कहला भेजा कि " आपके आगे उन्की यह दशा हो इस्सै अधिक दुःख और क्या है ? ख़ैर ! अब यह गहना लिजिये और जितनी जल्दी होसके उन्को हवालात सै छुड़ानें का उपाय करिये"

"वह समझवार होकर अनसमझ क्यों बन्ती हैं ? इस घबराहट सै क्या लाभ है ? वह मेरठ गई जब उन्हों नें आप कहवाया था कि ऐसी सूरत मैं इन अज्ञान बालकों की क्या दशा

होगी ? फिर वह आप इस बात को कैसे भूली जाती हैं ? उन्को अपनें लिये नहीं तो इन छोटे, छोटे बच्चों के लिये हिम्मत रखनी चाहिये" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "इंग्लेंड के बादशाह पहले जेम्स की बेटी इलेक्टर पेलेटीन के साथ ब्याही थी. उस्नें अपनें पति को बोहोमिया का बादशाह बनानेंकी उमंग में इन्की तरह अपना सब जेवर खो दिया इस्सै अन्तमैं उस्को अपनें निर्वाहके लिये भेष बदलकर भीख मांगनी पड़ी थी"

"अपनें पति के लिये भीख मांगनी पड़ी तो क्या चिन्ता हुई ? स्त्री को पति सै अधिक संसार मैं और कौन है ? जगत माता जानकीजीनें राज सुख छोड़ कर पति के संग बनमैं रहना बहुत अच्छा समझा था। और यह वाक्य कहा था" देत पिता परिमित सदा परिमित सुत और भ्रात। देत अमित पति तासु-पद नहीं पूजहिं किहिं भांति ? ॥+" सती शिरोमणि सावित्रीनें पतिके प्राण वियोग पर भी वियोग नहीं सहा था. मनुस्मृति मैं लिखा है " शील रहित पर नारि रत होय सकल गुण हानि। तदपि नारि पूजै पति हि देव सदृश जिय जानि ॥ १ नारिन को ब्रत यज्ञ तप और न कछु जगमाहिं। केवल पति पद पूज नित सहज स्वर्ग मैं जाहिं ॥ २ " पति के लिये गहना क्या ? प्राण

+ मितं ददाति हि पिता मितं भ्राता मितं सुत:।
अमितस्यच दातारं भर्तारं का न पूजयेत् ॥

१ विशील: कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्ज्जित:।
उपचर्य्य: स्त्रिया साध्व्या सततं देववत्पति: ॥

२ नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न ब्रतन्नाप्युपोषितम्।
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥

तक देनें पड़ैं तो मैं बहुत प्रसन्न हूं. हाय! वह कैद रहैं और मैं गहनें का लालच करूं?, वह दुःख सहें और मैं चैन करूं? हम लोगों की ज़बान नहीं है इस्सै क्या हमारे हृदय भी प्रीति शून्य है क्या कहूं? इस्समय मेरे चित्त को जो दुःख है वह मैं ही जान्ती हूं. हे धरती माता! तू क्यों नहीं फटती जो मैं अभागी उस्मैं समा जाऊं?" लाला मदनमोहन की स्त्री गद्गद स्वर और रुके हुए कण्ठ सै भीतर बैठी हुई बहुत धीरे, धीरे बोली! भाई! मैं तुमसै आज तक नहीं बोली थी परन्तु इस्समय दुःख की मारी बोल्ती हूं सो मेरी ढिठाई क्षमा करना. मुझसै यह दुःख नहीं सहा जाता मेरी छाती फटी जाती है मुझको इस्समय कुछ नहीं सूझता जो तुम अपनी बहन के और इन छोटे, छोटे बच्चों के प्राण बचाया चाहते हो तो यह गहना लो और हो सके जैसे इसी समय उन्को छुड़ा लाओ नहीं तो केवल मैं ही नहीं मरूंगी मेरे पीछे ये छोटे, छोटे बालक भी झुर, झुर कर—"

"बहन! क्या इस्समय तुम बावली होगई हो तुझैं अपनें हानि लाभका कुछ भी बिचार नहीं है?" लाला ब्रजकिशोर बाहर सै समझानें लगे "देखो शकुन्तला भी पतिव्रता थी परन्तु जब उस्के पतिनें उस्को झूंटा कलंक लगाकर परित्याग करनें का विचार किया तब उसै भी क्रोध आए बिना नहीं रहा. क्या तुम उस्सै भी बढ़कर हो जो अपनें छोटे, छोटे बच्चोंके दुःख का कुछ बिचार नहीं करतीं? थोड़ी देर धैर्य रक्खो धीरे, धीरे सब, होजायगा"

"भाई! धैर्य तो पहलैही बिदा होचुका अब मैं क्या करूं? तुम बार, बार बाल बच्चों की याद दिवाते हो परन्तु मेरे जान

पति सै अधिक स्त्रीके लिये कोई भी नहीं है" मदनमोहन की स्त्री लजा कर भीतर सैं कहनें लगी " पतिसै बिबाद करना तो बहुत बात है परन्तु शकुन्तलाके मन मैं दुष्यन्तकी अत्यंत प्रीति हुए पीछे शकुन्तला को दुष्यन्तके दोष कैसै दिखाई दिये यही बात मेरी समझ मैं नहीं आती फिर मैं शकुन्तला की अधिक नक़ल कैसे करूं ? मैं बड़ी आधीन्ता सै कहती हूं कि ऐसे मर्मबेधी वचन कहकर मेरे हृदयको अधिक घायल मत करो और यह सब गहना ले जाकर होसके जितनी जल्दी इस डूबती नावको बचानें का उपाय करो. मुझको तुह्मारे साम्नें इस विषयमें बात करते अत्यन्त लज्जा आती है हाय ! यह पापी प्राण अब भी क्यों नहीं निकलते इस्सै अधिक और क्या दुःख होगा. ?" यह बात सुन्तेही ब्रजकिशोर की आंखों सै आसू टपकनें लगे थोडी देर कुछ नहीं बोला गया उस्को उस्समय नारमण्डी के अमीरजादे रोबर्टकी स्त्री समविल्लाकी सच्ची प्रीति याद आई रोबर्टके शरीर मैं एक जहरी तीर लगनेंसै ऐसा घाव होगया था कि डाक्टरोंके बिचारमैं जबतक कोई मनुष्य उस्का जहर न चूसे रोबर्ट के प्राण बचनें की आशा न थी और जहर चूसनें सै चूसनें वा ले का प्राण भय था. रोबर्टनें अपनी प्राण रक्षाके लिये एक मनुष्यके प्राण लेनें सर्वथा अंगीकार न किये परन्तु उस्की पतिब्रता स्त्रीनें उस्के सोतेमैं उस्के घाव का बिष चूसकर उस्पर अपनें प्राण न्योछावर कर दिये.

"बहन ! मैं तुम्हारे लिये तुम सै कुछ नहीं कहता परंतु तुम्हारे छोटे, छोटे बालकोंको देखकर मेरा हृदय अकुलाता है तुम थोड़ी देर धैर्य धरो ईश्वर सब मंगल करेगा" लाला ब्रजकिशोरनें जैसे तैसे हिम्मत बांधकर कहा.

"भाई ! तुम कहते हो सो मैं भी समझती हूं यह बालक मेरी आत्मा हैं और विपत्त मैं धैर्य धरना भी अच्छा है परंतु क्या करूं ? मेरा वस नहीं चलता देखो तुम ऐसे कठोर मत बनो" मदनमोहनकी स्त्री विलाप कर कहनें लगी" महाभारत मैं लिखा है कि जिस्समय एक कपोतनें अतिथि सत्कारके विचार सै एक बधिक के लिये प्रसन्नता पूर्वक अपनें प्राण दिये तब उस्की कपोती बिलाप कर कहनें लगी" हा ! नाथ ! हमनें कभी आपका अमंगल नहीं विचारा संतानके होनेंपर भी स्त्री पति बिना सदा दुःख सागर मैं डूबी रहती है भाई बंधु भी उस्को देखकर शोक करते हैं. आप के साथ मैं सब दशाओं मैं प्रसन्न थी पर्बत, गुफा, नदी, झर्ना, वृक्ष और आकाश मैं मुझको आपके साथ अत्यन्त सुख मिल्ता था परंतु वह सुख आज कहां है? पति ही स्त्री का जीवन है पति बिना स्त्री को जीकर क्या करना है" यह कहकर वह कपोती आग मैं कूद पड़ी फिर क्या मैं एक पक्षी सै भी गई बीती हूं ? तुमसै हो सके तो सौ काम छोड़-कर पहलै इस्का उपाय करो न हो सके तो स्पष्ट उत्तर दो मुझ स्त्री की जातिसै जो उपाय हो सकेगा सो मैं ही करूंगी. हाय ! यह क्या ग़ज़ब है ! क्या अभागों को मौत भी मांगी नहीं मिल्ती !"

"अच्छा ! बहन ! तुमको ऐसा ही आग्रह है तो तुम घर जाओ मैं अभी जाकर उन्को छुड़ानें का उपाय करता हूं लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"न जानें कैसी घडीमैं मैं मेरठ गई थी कि पीछेसै यह ग़ज़ब हुआ जिस्समय मेरे पास रहनेंकी आवश्यकता थी उसी समय मैं अभागी दूर जा पड़ी ! इस दुःख सै मेरा कलेजा फटता है मुझको

तुम्हारे कहनें पर पूरा विश्वास है परन्तु मैं एकबार अपनी आंख सै भी उन्हैं देख सक्ती हूं ?" मदनमोहन की स्त्री नें रोकर कहा.

"इस्समय तो कचहरी मैं हजारों आदमियोंकी भीड़ हो रही है सन्ध्या को मौक़ा होगा तो देखा जायगा" ब्रजकिशोरनें जवाब दिया.

"तो क्या सन्ध्या तक भी वह—"मदनमोहन की स्त्री के मुख सै पूरा बचन न निकल सका कंठ रुक गया और उस्को रोते देख कर उस्के बच्चे भी रोनें लगे.

निदान बड़ी कठिनाई सै समझा कर ब्रजकिशोरनें मदनमोहन की स्त्री को घर भेजा परन्तु वह जाती बार जबरदस्ती अपना सब गहना ब्रजकिशोर को देती गई और उस्के बच्चे भी ब्रजकिशोर को छोड़कर घर न गए जब ब्रजकिशोरके साथ कचहरी मैं जाते थे तब उन्की दृष्टि एकाएक मदनमोहन पर जा पड़ी और वह उस्को वहां देखते ही उस्सै जाकर लिपट गए.

"क्यों जी ! यह कहां सै आए ?" मदनमोहननें आश्चर्यसै पूछा.

"इन्की माके साथ ये अभी मेरठसै आए हैं वह बिचारी आप का यह हाल सुन्कर यहां दौड आई थी सो मैंनें उसे बडी मुश्किलसै समझा बुझाकर घर भेजा है" ब्रजकिशोरनें जवाब दिया.

"लाला जी घर क्यों नहीं चल्ते ? यहां क्यों बैठे हो ?" एक लडकेनें गले सै लिपट कर कहा.

"मैं तो तुम्हारे छंग (संग) आज हवा खानें चलूंगा और

अपनें बाग मैं चलकर मच्छियों का तमाछा (तमाशा) देखूंगा" दूसरा लडका गोदमैं बैठकर कहनें लगा.

"लाला जी तुम बोल्ते क्यों नहीं ? यहां इकल्लै क्यों वैठे हो ? चलो छैल (सैर) करनें चलैं" एक लडका हात पकड कर खैंचनें लगा.

"जानें चुन्नीआल (लाल) कहां हैं ? विन्नें (उन्होंनें) हमें एक तछवीर (तस्वीर) देनी कही थी लाला जी ! तुम उछे (उसे) चोकटमैं लगवा दोगे ?" दूसरे लडकेनें कहा.

"छैल (सैर) करनें नहीं चन्ते तो घर ही चलो, अम्मा आज सवेरे सैं न जानें क्यों रोरही है और विन्नें आज कुछ भोजन भी नहीं किया" एक लडका बोला.

"लाला जी ! तुम बोल्ते क्यों नहीं ? गुछा (गुस्सा) हो ? चलो, घर चलो हम मेरठ छे (सै) खिलौनें लाए हैं छो (सो) तुम्हैं दिखावेंगे" दूसरा ठोडी पकड कर कहनें लगा.

"तुम तो दंगा करते हो चलो हमारे साथ चलो हम तुमको वरफ़ी मंगादेंगे यहां लालाजी को कुछ काम है" ब्रजकिशोरनें कहा.

"आं आं हमतो लालाजी के छंग (संग) छैल को जायंगे बाग मैं मच्छियोंका तमाछा देखेंगे हमको बप्फी (बरफ़ी) नहीं चाहिये हम तुम्हारे छंग नहीं चल्ते" दोनों लडके मचल गए.

"चलो हम तुम्हैं पीतल की एक, एक ऐसी मछली खरीद देंगे जो लोहेकी सलाई दिखाते ही तुम्हारे पास दौड आया करेगी" लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"हम यों नहीं चल्ते हमतो लालाजीके छंग चलेंगे."

"और जबतक लालाजी घर नहीं जायंगे हम भी नहीं जायंगे" यह कहकर दोनों लड़के मदनमोहन के गलेसे लिपट गए और रोनें लगे उस्समय मदनमोहन की आंखों सै आंसू टपक पड़े और ब्रजकिशोर का जी भर आया.

"अच्छा ! तो तुम लालाजीके पास खेल्ते रहोगे ? मैं जाउं?" लाला ब्रजकिशोरनें पूछा.

"हां हां तुम भलेई जाओ, हम अपनें लालाजी के पाछ (पास) खेला करेंगे" एक लड़केनें कहा.

"और भूक लगी तो ?" ब्रजकिशोरनें पूछा.

"यह हमें बप्फी मंगा देंगे" छोटा लड़का अंगुली सै मदन-मोहन को दिखाकर मुस्करा दिया.

"महाकवि कालिदास नें सच कहा है वे मनुष्य धन्य हैं जो अपनें पुत्रों को गोद में लेकर उन्के शरीर की धूल सै अपनी गोद मैली करते हैं और जब पुत्रों के मुख अकारण हंसी सै खुल जाते हैं तो उन्के उज्ज्वल दांतों की शोभा देखकर अपना जन्म सफल करते हैं" लाला ब्रजकिशोर बोले और उन लड़कों के पास उन्के रखवाले को छोड़कर आप अपनें काम को चले गए.

बच्चे थोडी देर प्रसन्नता सै खेल्ते रहे परन्तु उन्को भूक लगी तब वह भूकके मारे रोनें लगे पर वहां कुछ खानें को मौजूद न था इसलिये मदनमोहन का जी उस्समय बहुत उदास हुआ.

इतनें मैं सन्ध्या हुई इस्सै हवालात का दरवाज़ा बन्द करनें के लिये पोलिस आ पहुंची अबतक उस्नें दीवानी की हवालात और मदनमोहन ब्रजकिशोर आदि का काम समझकर विशेष

रोक टोक नहीं की थी परन्तु अब करनी पडी वह छोटे छोटे, बच्चे मदनमोहन के साथ घर जानें की ज़िद करते थे और ज़बरदस्ती हटानें सै फूटफूटकर रोते थे लोगोंके हाथों सै छूट, छूट कर मदनमोहन के गले सै जा लिपटते थे इसलिये इस्समय ऐसी करुणा छा रही थी कि सब की आंखो सै टप, टप आंसू टपकनें लगे.

निदान उन बच्चों को बडी कठिनाई सै रखवाले के साथ घर भेजा गया और हवालात का दरवाज़ा बन्द हुआ.

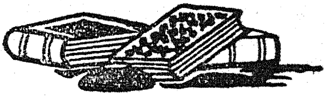

प्रकरण ३६.

प्रेत भय.

पियत रुधिर बेताल बाल निशिचरन साथ पुनि ॥
करत बमन बिकराल मत्त मन मुदित घोर धुनि ॥
मद्य मांस कर लिये भयंकर रूप दिखावत ॥
रुधिरासव मद मत्त पूतना नाचि डरावत ॥
मांस भेद बस बिबस मन जोगन नाचहिं बिबिध गति ॥
बीर जनन की बीरता बहु बिध बरणैं मन्द मति ॥ ÷

रसिकजीवने

सन्ध्या का समय है कचहरी के सब लोग अपना काम बन्द करके घर को चल्ते जाते हैं. सूर्य के प्रकाश के साथ लाला मदनमोहनके छूटनें की आश भी कम होती जाती है. ब्रजकिशोर नें अब तक कुछ उपाय नहीं किया. कचहरी बन्द हुए पीछे कल तक कुछ न हो सकेगा रात को इसी छोटीसी कोठरी में अंधेरे के बीच ज़मीन पर दुपट्टा बिछा कर सोना पडेगा. कहां मित्र मिलापियों के वह जल्से! कहां पानी प्यानें के लिये एक ख़िद्मतगार तक पास न हो! इन बातों के बिचार सै लाला

---

† रक्तं नक्तंचरौघैः पिवति चैवमति व्यग्रकुन्तः शकुन्तः
क्रव्यं नव्यं गृहीत्वा प्रगुदति मुदितो मत्तवेतालबालः ॥
क्रीडत्यक्रीड मस्मिन् रुधिर मधुवशात् पूतना कुतिसतांगी
योगिन्यो मांसमेदः प्रमुदितमनसः शूरशक्तिं स्तुवन्ति ॥

मदनमोहन का व्याकुल चित अधिक, अधिक अकुलानें लगा.

इसी बिचार मैं सन्ध्या हो गई चारों तरफ़ अंधेरा फैल गया मकान मनुष्य शून्य होगया आस पास की सब चीज़ें दिखनी बन्द हो गईं.

लाला मदनमोहन के मानसिक विचारों का प्रगट करना इस्समय अत्यन्त कठिन है जब वह अपनें बालकपन सै लेकर इस्समय तक के बैभव का विचार करता है तो उस्की आंखों के आगे अन्धेरा आ जाता है! लाला हरदयाल आदि रंगीले मित्रों की रंगीली बातें, चुन्नीलाल, शिंभूदयाल आदि की झूंटी प्रीति, रात के एक, एक बजे तक गानें नाचनें के जल्से, खुशामदियों का आठ पहर घेरे रहना, हर बात पर हां मैं हां, हर बात पर वाह वाह, हर काम मैं प्राण देनें की तैयारी के साथ अपनी इस्समय की दशा का मुक़ाबला करता है और उन लोगों की इन दिनों की कृतघ्नता पर दृष्टि पहुंचाता है तो मन मैं दुःख की हिलोरें उठनें लगती हैं! संसार केवल धोके की टट्टी मालूम होता है जिन्के ऊपर अपनें सब कार्य व्यवहार का आधार था, जिन्को बारंबार हज़ारों रुपे का फायदा कराया गया था, जो हर बात मैं पसीनें की जगह ख़ून डालनें को तैयार रहते थे वह सब इस्समय कहां हैं? क्या उन्मैं सै इस थोडे से कर्ज को चुकानें के लिये कोई भी आगे नहीं आ सक्ता? जिन्की झूंटी प्रीति मैं आ कर अपनी प्रतिव्रता स्त्री की प्रीति भूल गया, अपनें छोटे, छोटे बच्चों के लालन पालन का कुछ बिचार नहीं किया वह मुफ्त मैं चैन करनेंवाले इस्समय कहां हैं?

"मेरी इज्ज़त गई, मेरी दौलत गई, मेरा आराम गया, मेरा नाम गया, मैं लज्जा सै किसी को मुख नहीं दिखा सक्ता, किसी सै बात नहीं कर सक्ता, फिर मुझको संसार मैं जीनें सै क्या लाभ है ? ईश्वर मोत दे तो इस दुःख सै पीछा छुटे परन्तु अभागे मनुष्य को मोत क्या मांगेसै मिल सक्ती है ? हाय ! जब मुझको तीस वर्ष की अवस्था मैं यह संसार ऐसा भयङ्कर लगता है तौ साठ बर्ष की अवस्था मैं न जाने मेरी क्या दशा होगी ?

"हा ! मोत का समय किसी तरह नहीं मालूम हो सक्ता सूर्य के उदय अस्त का समय सब जान्ते हैं, चन्द्रमा के घटनें बढनें का समय सब जान्ते हैं, ऋतुओं के बदलनें का, फूलों के खिलनें का, फलों के पकनें का समय सब जान्ते हैं परन्तु मोत का समय किसी को नहीं मालूम होता. मोत हर वक्त मनुष्य के सिर पर सवार रहती है उस्के अधिकार करनें का कोई समय नियत नहीं है कोई जन्म लेते ही चल बसता है कोई हर्ष बिनोद मैं, कोई पढनें लिखनें मैं, कोई खानें कमानें मैं, कोई जवानी की उमंग मैं कोई मित्रों के रस रंग मैं अपनी सब आशाओं को साथ लेकर अचानक चल देता है परन्तु फिर भी किसी को मोत की याद नहीं रहती कोई परलोक का भय करके अधर्म नहीं छोडता ? क्या देखत भूली का तमाशा ईश्वर नें बना दिया है !"

लाला मदनमोहन के चित्त मैं मोत का बिचार आते ही भूत प्रेतादि का भय उत्पन्न हुआ वह अन्धेरी रात, छोटी सी कोठरी, एकान्त जगह, चित्त की व्याकुलता मैं यह बिचार आते ही सब सुधरे हुए बिचार हवा मैं उड गए छाती धडकनें लगी, रोमांच

ो आए, जी दहल गया और मोत की कल्पना शक्ति नें अपना चमत्कार दिखाना शुरू किया.

कोई प्रेत उन्की कोठरी मैं मोजूद है उस्के चलनें फिरनें की आवाज सुनाई देती है बल्कि कभी, कभी वह अपनी लाल, लाल आंखों से क्रोध करके मदनमोहन को घुरकता है, कभी अपना भट्टीसा मूंह फैला कर मदनमोहन की तरफ दौडता है, कभी गुस्सेसै दांत पीस्ता है, कभी अपना पहाडसा शरीर बढाकर बोझसै मदनमोहन को पीस डाला चाहता है कभी कानके पर्दे फाड डालनें वाले भयंकर स्वरसै खिल खिलाकर हंस्ता है, कभी नाचता है, कभी गाता है, कभी ताली बजाता है, और कभी जमदूत की तरह मदनमोहन को उस्के कुकर्म्मों के लिये अनेक तरहके दुर्बचन कहता है ! लाला मदनमोहननें पुकारनें का बहुत उपाय किया परन्तु उन्के मुखसै भयके मारे एक अक्षर न निकल सका वह प्रेत मानों उन्की छातीपर सवार होकर उन्का गला घोटनें लगा उस्के भयसै मदनमोहन अध मरे होगए उन्होनें हाथ पांव चलानें का बहुत उद्योग किया परन्तु कुछ न हो सका. इस्समय लाला मदनमोहन को परमेश्वर की याद आई.

जो मदनमोहन परमेश्वर की उपासना करनें वालों को और धर्मकी चर्चा करनें वालोंको नास्तिक भावसै हंसा करता था और मनुष्य देह का फल केवल संसारी सुख बताता था किसी तरह सैं छल छिद्र करकै अपना मतलब निकाल लेनें को बुद्धिमानी समझता था वही मदनमोहन इस्समय सब तरफसै निराश होकर ईश्वर की सहायता मांगता है ! हा ! आज इस रंगीले जवानकी क्या दशा हो गई ! इस्का अभिमान कहां जाता रहा !

जब इस्का कुछ बस न चल सका तो यह मूर्छित होकर पृथ्वीपर गिर पडा और कुछ देर यों ही पडा रहा.

जब थोडी देर पीछे इसै होश आया चित्त का उद्वेग कुछ कम हुआ तो क्या देखता है कि उस भयंकर प्रेतकेबदले एक स्त्री इस्का सिर अपने गोदमैं लिये बैठी हुई धीरे धीरे इस्के पांवदबा रही है अंधेरेके कारण उस्का मुख नहीं दिखाई देता परन्तु उस्की आंखोंसै गरम, गरम आंसुओं की बूंदें उस्के मुखपर गिर रहीं हैं और इन आंसुओंहीसै मदनमोहन को चेत हुआ है.

इस्समय लाला मदनमोहनके व्याकुल चित्त को दिलासा मिलने की बहुत जरूरत थी सो यह स्त्री उन्हें दिलासा देनेंके लिये यहां आ पहुंची परन्तु मदनमोहन को इस्सै कुछ दिलासा न मिला वह इसै देखकर उल्टे डरगए.

"प्राणनाथ कैसे हो! आपके चित्तमैं इस्समय अत्यंत व्याकुलता मालूम होती है इसलिये अपनें चित्तका जरा समाधान करो, हिम्मत बांधो मैं आपके लिये भोजन लाई हूं सो कुछ भोजन करकें दो घूंट पानी के पिओ जिस्सै आपके चित्तका समाधान हो इस छोटीसी कोठरीमैं अंधेरेके बीच आपको जमीन पर लेटे देखकर मेरा कलेजा फटता है" उस स्त्रीनें कहा.

"यह कौन? वही मेरी पतिव्रता स्त्री है जिस्नें मुझसै सब तरह का दुःख पानेंपर भी कभी मन मैला नहीं किया! आवा-जसै तो वैसीही मालूम होती है परन्तु उस्का आना संभव नहीं रातके समय कचहरी के बन्द मकान मैं पुलिस की पहरे चौकी के बीच वह बिचारी कैसे आ सकैगी! मैं जान्ताहूं कि मुझको

कोई छलावा छलता है" यह कहकर लाला मदनमोहन नें फिर आंखैं बन्द करलीं.

"मेरे प्राण पतिके लिये यहां क्या ? मुझको नर्कमैं भी जाना पडे तो क्या चिंता है ? सच्ची प्रीतिका मार्ग कोई रोक सक्ता है ? स्रीको पतिके संग कैद, जंगल, या समुद्रादि मैं जानें सै कुछ भी भय नहीं है परन्तु पतिके बिना सब संसार सूना है यदि सुख दुःख के समय उस्की बिवाहिता स्त्री उस्के काम न आवैगी तो और कोन आवैगा ? " उस स्त्रीनें कहा.

लाला मदनमोहन सै थोडी देर कुछ नहीं बोला गया न जानें उन्के चित्तमैं किसी तरहका भय उत्पन्न हुआ, अथवा किसी बात के सोच बिचार मैं अपना आपा भूलगए, अथवा लज्जा सै कुछ न बोलसके, और लज्जा थी तो अपनी मूर्खता सै इस दशा मैं पहुंचनें की थी, अथवा अपनी स्त्रीके साथ ऐसे अनुचित व्यावहार करनें की थी ? परन्तु लाला मदनमोहन के नेत्रों सै आंसू निस्संदेह टपकते थे वह उस स्त्रीकी गोद मैं सिर रख; फूट, फूटकर रो रहे थे.

"मेरे प्राण प्रीतम ! आप उदास न हों ज़रा हिम्मत रक्खो जो आप की यह दशा होगी तो हम लोगोंका पता कहां लगेगा ? दुःख सुख बायु के समान सदा अदलते बदलते रहते हैं इसलिये आप अधैर्य न हों आप के चित्त की स्थिरता पर हम सब का आधार है" उस स्त्री नें कहा.

"मुझ सै इस्समय तेरे सामनें आंख उठाकर नहीं देखा जाता, एक अक्षर नहीं बोला जाता, मैं अपनी करनी सै अत्यन्त लज्जित हूं जिस्पर तू अपनी लायकी सै मेरे घायल हृदय को क्यों

अधिक घायल करती है ? मुझको इतना दुःख उन कृतघ्न मित्रों की शत्रुता सै नहीं होता जितना तेरी लायकी और आधीनता सै होता है तू मुझको दुःखी करने के लिये यहां क्यों आई ? तैंनें मेरे साथ ऐसी प्रीति क्यों की ? मैंनें तेरे साथ जैसी क्रूरता की थी वैसी ही तैंनें भी मेरे साथ क्यों न की ? मैं निस्संदेह तेरी इस प्रीति लायक़ नहीं हूं फिर तू ऐसी प्रीति करके क्यों मुझको दुखी करती है ?" लाला मदनमोहन नें बडी कठिनाई सै आंसू रोककर कहा.

"प्यारे प्राणनाथ ! मैं आप की हूं और अपनी चीज़ पर उस्के स्वामी को सब तरह का अधिकार होता है जिस्पर आप इतनी कृपा करते हैं यह तो बडे ही सौभाग्य की बात है" वह स्त्री मदनमोहन की इतनी सी बात पर न्योछावर होकर बोली "महाभारत मैं एक कपोती नें एक बधिक के जाल मैं अपनें पतिके फसे पीछे उस्के मुख सै अपनी बड़ाई सुन्कर कहा था कि "आहा ! हम मैं कोई गुण हो या नहो जब हमारे पति हम सै प्रसन्न होकर हमारी बड़ाई करते हैं तो हमारे बड भागिनी होनें मैं क्या संदेह है ? जिस स्त्री सै पति प्रसन्न नहीं रहते वह झुल्सी हुई बेलके समान सदा मुर्झाई रहती है.

"तेरी ये ही तो बातें हृदय बिदीर्ण करनेंवाली हैं मुझको क्षमा कर मेरे पिछले अपराधों को भूल जा. मैं जानता हूं कि मुझसै अबतक जितनी भूलें हुई हैं उन्मैं सब सै अधिक भूल तेरे हक़ मैं हुई है मैं एक हीरा को कंकर समझा, एक बहुमूल्य हार को सर्प समझकर मैंनें अपनें पास सै दूर फैंक दिया, मेरी बुद्धिपर अज्ञानता का पर्दा छा गया परन्तु अब क्या करूं ?

ब तो पछतानें के सिवाय मेरे हाथ और कुछ भी नहीं है" लाला दनमोहन आंसू भरकर बोले.

"मुझको तो ऐसी कोई बात नहीं मालूम होती जिस्सै मेरे लेये आपको पछताना पड़े मैं आपकी दासी हूं फिर ऐसे सोचा वेचार करनें की क्या ज़रूरत है ? और मैं आपकी मर्ज़ी नहीं ख सकी उस्मैं तो उल्टी मेरी ही भूल पाई जाती है" उस स्त्रीनें के कंठ सै कहा.

"सच है सोनें की पहचान कसोटी लगाये बिना नहीं होती रन्तु तू यहां इस्समय कैसै आ सकी ? किस्के साथ आई ? कैसै पहरेवालों नें तुझे भीतर आनें दिया ? यह तो समझा-कर कह" लाला मदनमोहन नें फिर पूछा.

"मैं अपनी गाडी मैं अपनी दो टहलनियों के साथ यहां आई हूं और मुझको मेरे भाई के कारण यहां तक आनें मैं कुछ परिश्रम नहीं हुआ मैं बिशेष कुछ नहीं कह सक्ती वह आप आकर अभी आप सै सब बृत्तान्त कहैंगे" यह कहते, कहते वह स्त्री दरवाज़े के पास जाकर अन्तर्धान होगई ! ! !

प्रकरण ४०.

सुधरनें की रीति.

कठिन कलाहू आय है करत करत अभ्यास ॥
नट ज्यों चालतु बरत पर साधे बरस छमास ॥

वृन्द.

लाला मदनमोहन बड़े आश्चर्य मैं थे कि यह क्या भेद है जगजीवनदास यहां इस्समय कहां सै आए? और आए भी तो उन्के कहनें सै पुलिस कैसे मान गई! क्या उन्हों नें मुझको हवालात सै छुडानें के लिये कुछ उपाय किया? नहीं उपाय करनें का समय अब कहां है? और आते तो अब तक मुझसै मिले बिना कैसे रह जाते?

इतनें मैं दूर सै एका एक प्रकाश दिखाई दिया और लाला ब्रजकिशोर पास आ खडे हुए

"हैं! आप इस्समय यहां कहां! मैंनें तो समझा था कि आप अपनें मकान मैं आराम सै सोते होंगे" लाला मदनमोहन नें कहा.

"यह मेरा मन्द भाग्य है जो आप ऐसा समझते हैं क्या मुझ को भी आपनें उन्हीं लोगों मैं गिन लिया?" लाला ब्रजकिशोर बोले.

"नहीं, मैं आप को सच्चा मित्र समझता हूं परन्तु समय आए बिना फल नहीं होता"

“ यदि यह बात आपनें आपनें मन सै कही है तो मेरे लिये भी आप वैसाही धोका खाते हैं जैसा औरोंके लिये खाते थे. मैं पहले कहचुका हूं कि मनुष्य का स्वभाव उस्की बातों सै नहीं मालूम होता उस्के कामों सै मालूम होता है फिर आपनें मुझको किस्तरह सच्चा मित्र समझ लिया ?” लाला ब्रजकिशोर पूछनें लगे. “ मैंनें आपके मुकद्दमों मैं पैरवी की जिस्के बदले भर पेट महन्ताना ले लिया यदि आपके निकट उन्के मेरे चाल चलन मैं कुछ अन्तर हो तो इतना ही होसक्ता है कि वह कच्चे खिलाडी थे जरा सी हल चल होते ही भग निकले मैं अपना फायदा समझ कर अब तक ठैरा रहा”

“ जो लोग फ़ायदा उठा कर इस्समय मेरा साथ दें उन्को भी मैं कुछ बुरा नहीं समझता क्योंकि जिन् पर मुझको वडा बिश्वास था वह सब मुझे अधर धार मैं छोड कर चले गए और ईश्वरनें मुझको किसी लायक न रक्खा ” लाला मदनमोहन रो कर कहनें लगें.

“ ईश्वर को सर्बथा दोष न दो वह जो कुछ करता है सदा अपनें हितही की बात करता है” “लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे श्रीमद्भागवत मैं राजा युधिष्ठिर सै श्रीकृष्णचन्द्रनें कहा है “जा नर पर हम हित करें ताको धन हर लेहिं। धन दुख दुखिया को स्वतः सकल बन्धु तज देहिं ॥ *” सो निस्सन्देह सच है क्योंकि उद्योग की माता आवश्यकता है इसी तरह अनुभव सै उपदेश मिल्ता है सादी नें गुलिस्तां मैं लिखा है कि “एक बादशाह अपने

* यस्याहमनुगृह्णामि तस्य वित्तं हरायहम्
तताधनं त्यजन्त्यस्य स्वजननादुःखदुःखितम् ।

एक गुलामको साथ लेकर नाव मैं बैठा. वह गुलाम कभी नाव मैं नहीं बैठा था इस लिये भय सै रोनें लगा धैर्य और उपदेशकी बातों सै उस्के चित्त का कुछ समाधान न हुआ. निदान बादशाह सै हुक्म लेकर एक बुद्धिमान नें (जो उसी नाव मैं बैठा था) उसै पानी मैं डाल दिया और दो, चार गोते खाए पीछे नाव पर ले लिया जिस्मैं उस्के चित्तकी शान्ति हो गई. बादशाह नें पूछा इस्मैं क्या युक्ति थी? बुद्धिमान नें जवाब दिया कि पहले यह डूबनेका दुःख और नावके सहारे बचनें का सुख नहीं जान्ता था. सुखकी महिमा वही जान्ता है जिस्को दुःख का अनुभव हो"

"परन्तु इस्समय इस अनुभव सै क्या लाभ होगा घोड़ा बिना चाबुक वृथा है" लाला मदनमोहननें निराश होकर कहा.

"नहीं, नहीं ईश्वरकी कृपा सै कभी निराश न हो वह कोई बात युक्ति शून्य नहीं करता" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "मि० पारनेलनें लिखा है कि "एक तपस्वी जन्म सै बन मैं रहकर ईश्वराराधन करता था एक बार धर्मात्माओंको दुखी और पापियोंको सुखी देख कर उस्के चित्त मैं ईश्वर के इन्साफ़ बिषे शंका उत्पन्न हुई और वह इस बातका निर्धार करनें के लिये बस्ती की तरफ चला रस्ते मैं उस्को एक जवान आदमी मिला और यह दोनों साथ, साथ चलनें लगे. सन्ध्या समय इन्को एक ऊंचा महल दिखाई दिया और वहां पहुंचे जबउस्के मालिकनें इन दोनोंका हद्द सै ज्यादः सत्कार किया. प्रातःकाल जब ये चलनें लगे तो उस जवाननें एक सोनेका प्याला चुरा लिया. थोड़ी दूर आगे बढ़े इतनें मैं घनघोर घटा चढ आई और मेह

बरसने लगा इस्सै यह दोनों एक पासकी झोपड़ी मैं सहारा लेनें गए. उस झोपड़ीका मालिक अत्यन्त डरपोक और निर्दय था इसलिये उस्नें बडी कठिनाईसे इन्हैं थोड़ी देर ठैरनें दिया, अनादर सै सूखी रोटी के थोडेसे टुकड़े खानें को दिये और बरसात कम होते ही चलनें का संकेत किया. चल्ती वार उस जवाननें अपनी बगल सै सोनेका प्याला निकाल कर उसै दे दिया. जिस्पर तपस्वी को जवान की यह दोनों वातें बड़ी अनुचित मालूम हुई खैर! आगे बढ़े सन्ध्या समय एक सद्-गृहस्थ के यहां पहुंचे जो मध्यम भाव सै रहता था और बडाई-का भी भूका न था. उस्नें इन्का भलीभांति सत्कार किया और जब ये प्रातःकाल चलनें लगे तो इन्को मार्ग दिखानें के लिये एक अगुआ इन्के साथ कर दिया पर यह जवान सबकी दृष्टि बचा कर चल्ती वार उस सद् गृहस्थ के छोटेसे बालक का गला घोंट कर उसै मारता गया! और एक पुल पर पहुंच कर उस अगुए को भी धक्का दे नदीमें डाल दिया! इन्वातों सै अब तो इस तपस्वी के धिःकार और क्रोध की कुछ हद न रही. वह उस्को दुर्बचन कहा चाहता था इतनें मैं उस जवानका आकार एकाएक वदल गया उस्के मुखपर सूर्य का सा प्रकाश चमकनें लगा और सब लक्षण देवताओंकेसे दिखाई दिये. वह बोला "मैं परमेश्वरका दूत हूं और परमेश्वर तुम्हारी भक्ति सै प्रसन्न हैं इसलिये परमेश्वरकी आज्ञा सै मैं तुम्हारा संशय दूर करनें आया हूं. जिस काम मैं मनुष्यकी बुद्धि नहीं पहुंचती उस्को वह युक्ति शून्य समझनें लगाता है परन्तु यह उस्की केवल मूर्खता है. देखो मेरे यह सब काम तुमको उल्टे मालूम पड़ते

होंगे परन्तु इन्हीं से उस्के इन्साफ का विचार करो. जिस मनुष्य का प्याला मैंने चुराया वह नाम-वरी का लालच करके हद्द से ज्याद: अतिथि सत्कार करता था और इस रीति से थोड़े दिनमैं उस्के भिखारी होजानें का भय था इस कामसै उस्की वह उमंग कुछ कम होकर मुना-सिब हद्द पर आगई. जिस्को मैंनें प्याला दिया वह पहलै अत्यन्त कठोर और निठुर था इस फायदे सैं उस्को अतिथि सत्कार की रुचि हुई. जिस सद्गृहस्थ का पुत्र मैंनें मारडाला उस्को मेरे मारने का बृत्तान्त न मालूम होगा परन्तु वह इन दिनों सन्तानकी प्रीतिमैं फंस कर अपनें और कर्तव्य भूलनें लगा था इस्सै उस्की बुद्धि ठिकानें आगई. जिस मनुष्य को मैंनें अभी उठा कर नदीमैं डाल दिया वह आज रात को अपनें मालिक की चोरी करके उसै नाश किया चाहता था इसलिये परमेश्वर के सब कामों पर विश्वास रक्खो और अपना चित्त सर्वथा निराश न होनें दो"

"मुझको इस्समय इस्बात सै अत्यन्त लज्जा आती है कि मैंनें आपके पहले हितकारी उपदेशों को बृथा समझ कर उन्पर कुछ ध्यान नहीं दिया" लाला मदनमोहननें मनसै पछतावा करके कहा.

"उन सब बातोंका खुलासा इतना ही है कि सब पहलू बिचार कर हरेक काम करना चाहिये क्योंकि संसारमैं स्वार्थपर विशेष दिखाई देते हैं' लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"मैं आपके आगे इस्समय सच्चे मनसै प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अब कभी स्वार्थ पर मित्रोंका मुख नहीं देखूंगा झूंटी ठसक दिखानें का विचार न करूंगा झूंटे पक्षपात को अपनें पास न

ानें दूंगा और अपने सुखके लिये अनुचित मार्ग पर पांव न क्खूंगा" लाला मदनमोहनने बड़ी दृढतासै कहा.

"इस्समय आप यह बातें निस्संदेह मनसै कहते हैं परन्तु इस तरह प्रतिज्ञा करने वाले बहुत मनुष्य परीक्षाके समय दृढ नहीं निकलते मनुष्य का जातीय स्वभाव (आदत) वडा प्रवल है तुलसीदासजीने भगवान सै यह प्रार्थना की है:—

"मेरो मन हरिजू हठ न तजैं॥ निशिदिन नाथ देउं सिख बहुबिध करत सुभाव निजै॥ ज्यों युवति अनुभवति प्रसव अति दारुण दुख उपजै॥ व्है अनुकूल बिसारि शूलशठ पुनि खल पतिहि भजै॥ लोलुप भ्रमत गृह पशू ज्यों जहं तहं पदत्राण वजैं॥ तदपि अधम बिचरत तेहि मारग कबहुं न मूढलजै॥ हौं हार्यौं करि यत्न बिबिधि विधि अतिशय प्रबल अजै॥ तुलसिदास बस होइ तबहि जब प्रेरक प्रभु बरजै॥" आदतकी यह सामर्थ्य है कि वह मनुष्य की इच्छा न होंनें परभी अपनी इच्छानुसार काम करा लेती है, धोका दे, देकर मनपर अधिकार करलेती है, जब जैसी बात करानी मंजूर होती है तब वैसोही युक्ति बुद्धि को सुझाती है, अपनी घात पाकर बहुत काल पीछे राख में छिपीहुई अग्निके समान सहसा चमक उठती है मैं गई बीती बातों की याद दिवाकर आपको इस्समय दुखित नहीं किया चाहता परन्तु आपको याद होगी कि उस्समय मेरी ये सब बातें चिकनाई पर बूंदके समान कुछ असर नहीं करती थीं इसी तरह यह समय निकल जायगा तो मैं जान्ता हूं कि यह सब विचार भी बायु की तरह तत्काल पलट जायँगे हम लोगों का लखोटिया ज्ञान है वह आगके पास जानें सै पिगल जाता है परन्तु उस्सै अलग होतेही

फिर कठोर होजाता है इस दशा में जब इस्समय का दुःख भूल-कर हमारा मन अनुचित सुख भोगने की इच्छा करे तब हमको अपनी प्रतिज्ञा के भय सै वह काम छिपकर करने पड़ें, और उन्को छिपाने के लिये झूंटी ठसक दिखानी पड़े झूंटी ठसक दिखाने के लिये उन्हीं स्वार्थपर मित्रोंका जमघट करना पड़े, और उन स्वार्थ पर मित्रोंका जमघट करनें के लिये वही झूंटा पक्षपात करना पड़े तो क्या आश्चर्य है ?" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"नहीं, नहीं यह कभी नहीं हो सक्ता मुझको उन लोगों सै इतनी अरुचि हो गई है कि मैं वैसी साहूकारी सै ऐसी ग़रीबी को बहुत अच्छी समझता हूं क्या अपनी आदत कोई नहीं बदल सक्ता ? लाला मदनमोहन नें जोर देकर पूछा.

"क्यों नहीं बदल सक्ता ? मनुष्य के चित्त सै बढ़कर कोई वस्तु कोमल और कठोर नहीं है वह अपनें चित्त को अभ्यास करके चाहे जितना कम ज्याद: कर सक्ता है कोमल सै कोमल चित्त का मनुष्य कठिन सै कठिन समय पड़नें पर उसे भी झेल-लेता है और धीरै, धीरै उस्का अभ्यासी हो जाता है इसी तरह जब कोई मनुष्य अपनें मनमैं किसी बातकी पक्की ठान ले और उस्का हर वक्त ध्यान बना रक्खे उस्पर अन्त तक दृढ रहै तो वह कठिन कामों को सहज मैं कर सक्ता है परन्तु पक्का विचार किये बिना कुछ नहीं हो सक्ता" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे:—

"इटली का प्रसिद्ध कबि पीट्रार्क़ लौरा नामी एक परस्त्री पर मोहित हो गया इसलिये वह किसी न किसी बहानें सै उस्के सन्मुख जाता और अपनी प्रीतिभरी दृष्टि उस्पर डालता परन्तु

उस्के पतिव्रतापन सै उस्के आगे अपनी प्रीति प्रगट नहीं कर सक्ता था. लोरानें उस्के आकार सै उस्का भाव समझकर उस्को अपनें पास सै दूर रहनें के लिये कहा और पीट्रार्क नें भी अपनें चित्त सै लोरा की याद भूलनें के लिये दूर देशका सफ़र किया परन्तु लोरा का ध्यान क्षणभर के लिये उस्के चित्त सै अलग न हुआ. एक तपस्वी नें बहुत अच्छी तरह उस्को अपना चित्त अपनें बस मैं रखनें के लिये समझाया परन्तु लोरा को एक दृष्टि देखते ही पीट्रार्क के चित्त सै वह सब उपदेश हवामैं उड़ गए. लोरा की इच्छा ऐसी मालूम होती थी कि पीट्रार्क उस्सै प्रीति रक्खे परन्तु दूरकी प्रीति रक्खे. जब पीट्रार्क का मन कुछ बढ़नें लगता तो वह अत्यन्त कठोर हो जाती परन्तु जब उस्को उदास और निराश देखती तब कुछ कृपा दृष्टि करके उस्का चित्त बढ़ा देती इस तरह अपनें पातिव्रत मैं किसी तरह का धब्बा लगाए बिना लोरानें बीस बर्ष निकाल दिये. पीट्रार्क वेरोना शहर मैं था उस्समय एक दिन लोरा उसै स्वप्न मैं दिखाई दी और बड़े प्रेमसै बोली कि "आज मैंनें इस असार संसार को छोड़ दिया. एक निर्दोष मनुष्य को संसार छोड़ती वार सच्चा सुख मिल्ता है और मैं ईश्वर की कृपा सै उस सुखका अनुभव करती हूं परन्तु मुझको केवल तेरे वियोग का दुःख है" "तो क्या तू मुझ सै प्रीति रखती थी?" पीट्रार्क नें पूछा "सच्चे मन सै" लोरानें जवाब दिया और उस्का उस दिन मरना सच निकला. अब देखिये कि एक कोमल चित्त स्त्री, अपनें प्यारे की इतनी आधीनता पर बीस बर्ष तक प्रीतिकी अग्निको अपनें चित्त मैं दबा रक्की और उसे सर्वथा प्रबल न होनें दिया फिर क्या हम

लोग पुरुष होकर भी अपनें मनकी छोटी, छोटी, कामनाओं के प्रबल होनें पर उन्हैं नहीं रोक सक्ते ?

"यूनानके प्रसिद्ध बक्ता डिमास्टिनीस को पहलै पूरासा बोलना नहीं आता था उस्की जबान तोतली थी और ज़रासी बात कहनेंमैं उस्का दम भर जाता था परंतु वह बड़े, बड़े उस्तादों की वक्तृता का ढंग देखकर उन्की नक़ल करनें लगा और दरियाके किनारे या ऊंची टेकड़ियों पर मुंह मैं कंकर भरकर बड़ी देर, देर तक लगातार छन्द बोलनें लगा जिस्सै उस्का तुतलाना और दम भरनाही नहीं बन्ध हुआ बल्कि लोगों के हल्ले को दबाकर आवाज़ देनेंका अभ्यास हो गया. वह वक्तृता करनें सै पहलै अपनें चहरे का बनाव देखनें के लिये काचके सामनें खड़े होकर अभ्यास करता था और उस्को वक्तृता करती बार कंधे उचकानें की आदत पड़ गई थी इस्सै वह अभ्यास के समय दो नोकदार हथियार अपनें कन्धों सैं ज़रा ऊंचे लटकाए रखता था कि उन्के डरसै कन्धे न उचकनें पायँ उस्नें अपनी भाषा मैं प्रसिद्ध इतिहासकर्ता थ्युसीडाइगसकासा रस लानेके लिये उस्के लेख की आठ नकल अपनें हाथ सैं की थी.

"इंग्लेन्डका बादशाह पांचवां हेनूरी जब प्रेन्स आफ वेल्स (युवराज) था तब इतनी बदचलनी मैं फस गया था और उस्की संगति के सब आदमी ऐसे नालायक थे कि उस्के बादशाह होनें पर बड़े ज़ुल्म होंनें का भय सब लोगों के चित्त मैं समा रहा था. जिस्समय इंग्लेन्ड के चीफ जस्टिस गासकोइननें उस्के अपराध पर उसै कैद किया तो खास उस्के पिता नें इस बात सै अपनी प्रसन्नता प्रकट की थी कि शायद इस रीति सै वह कुछ

सुधरे परन्तु जब वह शाहज़ादा बादशाह हुआ और राजका भार उस्के सिर आ पडा तो उस्नें अपनी सब रीति भांति एकाएक ऐसी बदल डाली कि इतिहास मैं वह एक बड़ा प्रामाणिक और बुद्धिमान बादशाह समझा गया. उस्नें राज पाते ही अपनी जवानी के सब मित्रोंको बुला कर साफ कह दिया था कि मेरे सिर राजका बोझ आ पड़ा है इसलिये मैं अपना चाल चलन सुधारा चाहता हूं सो तुम भी अपना चालचलन सुधार लेना आज पीछे तुम्हारी कोई बद्चलनी मुझको मालूम होगी तो मैं तुम्हें अपनें पास न फटकनें दूंगा. उस्सै पीछे हेन्री नें बडे योग्य, धर्मात्मा, अनुभवी और बुद्धिमान आदमियोंकी एक काउन्सिल बनाई और इन्साफ की अदालतों मैं सै संदिग्ध मनुष्यों को दूर करके उन्की जगह बड़े ईमानदार आदमी नियत किये खास कर अपनें कैद करनें वाले गासकोइनकी बड़ी प्रतिष्ठा करके उस्सै कहा कि "जिस्तरह तुमनें मुझको स्वतन्त्रता सै कैद किया था इसी तरह सदा स्वतन्त्रता सै इन्साफ करते रहना"

"मेरे चित्तपर आपके कहनें का इस्समय बडा असर होता हैं और मैं अपनें अपराधोंके लिये ईश्वर सैं क्षमा चाहता हूं मुझको उस अमीरीके बदले इस कैद मैं अपनी भूलका फल पानें सै अधिक संतोष मिलता है मैं अपनें स्वेच्छाचार का मजा देख चुका अब मेरा इतना ही निवेदन है कि आप प्रेमबिवस होकर मेरे लिये किसी तरह का दुख न उठायँ और अपना नीति मार्ग न छोड़ें" लाला मदनमोहन नें दृढ़ता सै कहा.

"अब आपके विचार सुधर गए इस लिये आपके कृतकार्य्य (कामयाब) होनें मैं मुझको कुछ भी संदेह नहीं रहा ईश्वर

आपका अवश्य मंगल करेगा" यह कहकर लाला ब्रजकिशोरनें मदनमोहनको छाती सै लगा लिया.

प्रकरण ४१.

सुखकी परमावधि.

जबलग मनके बीच कछु स्वारथको रस होय ॥
सुद्ध सुधा कैसे पियै? परै बीच में तोय ॥

सभाविलास.

"मैंने सुना है कि लाला जगजीवनदास यहां आए हैं?" लाला मदनमोहननें पूछा.

"नहीं इस्समय तो नहीं आए आपको कुछ संदेह हुआ होगा लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया.

"आपके आनें सै पहलै मुझको ऐसा आश्चर्य मालूम हुआ कि जानें मेरी स्त्री यहां आई थी परंतु यह संभव नहीं कदाचित् स्वप्न होगा" लाला मदनमोहननें आश्चर्य सै कहा.

क्या केवल इतनी ही बातका आपको आश्चर्य है? देखिये चुन्नीलाल और शिंभूदयाल पहलै बराबर आपकी निन्दा करके आपका मन मेरी तरफसै बिगाड़ते रहते थे बल्कि आपके लेनदारों को बहकाकर आपके काम बिगाड़नें तकका दोषारोप मुझपर हुआ था परंतु फिर उसी चुन्नीलालनें आप सै मेरी बडाई की, आपसै मेरी सफ़ाई कराई, आपको मेरे मकान पर लिवा लाया

आपकी तरफ़ सै मुझसै क्षमा मांगी मुझे फ़ायदा पहुंचाकर प्रसन्न रखने के लिये आप को सलाह दी और अन्तमैं मेरा आपका मेल करवाकर चुन्नीलाल और शिंभुदयाल दोनों अलग हो गए ! उसी समय मेरठ सै जगजीवनदास आकर आपके घरकों को लिवा लेगया ! मैंने जन्म भर आप सै रुपे का लालच नहीं किया था सो तीन दिन मैं ऐसे कठिन अवसर पर ठगोंकी तरह पाकटचेन, हीरेकी अंगूठी और बाली ले ली ! एक छोटेसे लेनदारकी डिक्री मैं आपको इतनी देर यहां रहना पडा क्या इन बातों सै आपको कुछ आश्चर्य नहीं होता ? इन्मैं कोई बात भेद की नहीं मालूम होती ? "लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

"आपके कहनें सै इस मामले मैं इस्समय निस्संदेह बहुत सी बातें आश्चर्य की मालूम होती हैं और किसी, किसी बात का कुछ, कुछ मतलब भी समझ मैं आता है परन्तु सब बातोंके जोड़ तोड़ पूरे नहीं मिल्ते और मनभरनें के लायक़ कोई कारण समझ मैं नहीं आता यदि आप कृपा करके इनबातों का भेद समझा देंगे तो मैं आपका बडा उपकार मानूंगा " लाला मदन-मोहन नें कहा.

"उपकार मान्नेंके लायक़ मुझ सै आपकी कौन्सी सेवा बन पडी है ? " लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया और अपनी बगल सै बहुत से काग़ज़ और एक पोटली निकाल कर लाला मदन-मोहन के आगे रखदी. इन कागजों मैं मदनमोहन के लेनदारों की तरफ सै अन्दाज़न् पचास हजार रुपे के राजी नामे फारखती, और रसीद बगैरे थीं और मिस्टर ब्राइट का फैसलनामा था जिस्मैं प्रैंतीस हजार पर उस्सै फैसला हुआ था और मिस्टर

असल की रकम उस्के देनें मैं लगादी थी, और मिस्टर ब्राइट की बेची हुई चीजोंमैं सै जो चीज फेरनी चाहें बराबर दामोंमैं फेर देनें की शर्त ठैर गई थी. उस पोटली मैं पन्दरह बीस हजार का गहना था !

लाला मदनमोहन यह देखकर आश्चर्य सै थोडी देर कुछ न बोल सके फिर बडी कठिनाई सै केवल इतना कहा कि " मुझको अबतक जितनी आश्चर्य की बातें मालूम हुई थीं उन सब मैं यह बढ़कर है ! "

" जितना असर आपके चित्तपर होना चाहिये था परमेश्वर की कृपा सै हो चुका इसलिये अब छिपानें की कुछ जरूरत नहीं मालूम होती " लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे " आप किसी तरह का आश्चर्य न करैं. इन सब बातों का भेद यह है कि मैं ठेठसै आपके पिताके उपकार मैं बंधरहा हूं जब मैंनें आपकी राह बिगडती देखी तो यथा शक्ति आपको सुधारनें का उपाय किया परन्तु वह सब बृथा गया. जब हरकिशोर के झगडे का हाल आपके मुखसै सुना तो मुझको प्रतीत हुआ कि अब रुपेकी तरी नहीं रही लोगों का बिश्वास उठता जाता है और गहनें गांठे के भी ठिकानें लगनें की तैयारी है आपकी स्त्री बुद्धिमान होनेंपर भी गहनें के लिये आपका मन न बिगाडेगी लाचार होकर उसे मेरठ लेजानें के लिये जगजीवनदास को तार दिया और जब आप मेरे कहनें सै किसी तरह न समझे तो मैंनें पहलै बिभीषण और बिदुरजी के आचरण पर दृष्टि करके अलग हो बैठनें की इच्छा की परन्तु उससै चित्तको संतोष न हुआ तब मैं इस्बात के सोच बिचार मैं बडी देर डूबा रहा तथापि स्वाभाविक झटका

लगे बिना आपके सुधरनें की कोई रीत न दिखाई दी और सुधरे पीछे उस अनुभव से लाभ उठानें का कोई सुगम मार्ग न मिला. अन्तमैं सुग्रीव को धमकी देकर रघुनाथजी जिस्तरह राहपर ले आये थे इसी तरह मुझको आपके सुधारनें की रुचि हुई और मैंनें आपके वास्तै आपही से कुछ रुपया लेकर बचा रखनें का बिचार किया पर यह काम चुन्नीलाल के मिलाये बिना नहीं हो सक्ता था इसलिये तत्काल उस्के भाई (हीरालाल) को अपनें हां नोकर रख लिया. परन्तु इस अवसर पर हरकिशोर की बदोलत अचानक यह बिपत्ति सिरपर आपडी. चुन्नीलाल आदिका होसला कितना था ? तत्काल घबरा उठे और उन्सै मेल करनें के लिये फिर मुझको कुछ परिश्रम न करना पडा. वह सब रुपे के गुलाम थे जब यहां कुछ फायदे की सूरत न रही, उधर लोगोंनें आप पर अपनें लेनें की नालशैं कर दीं और आपकी तरफ सै जवाब दिही करनें मैं उन्की अपनी खायकी प्रगट होनें का भय हुआ तत्काल आपको छोड, छोड किनारे हो बैठे. मैंनें आप सै जो कुछ इनाम पाया था उस्की कीमत सै यह सब फैसले घटा, घटा कर किये गए हैं अब दिसावर वालों का कुछ जुज्वी सा देना बाकी होगा सो दो, चार हजार मैं निबट जायगा परन्तु मेरे मनकी उमंग इस्समय कुछ नहीं निकली इस्सै मैं अत्यंत लज्जित हूं " लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"आपनें मेरे फायदे के लिये बिचारे लेनदारों को वृथा क्यों दबाया" लाला मदनमोहन बोले.

"न मैंनें किसी को दबाया न धोका दिया न अपनें बस पडते कसर दी उन लोगोंनें बढा, बढा कर आप के नाम जो रकमें

लिख लीं थीं वही यथा शक्ति कम की गई हैं और वह भी उन्की प्रसन्नता सै कम की गई हैं" लाला ब्रजकिशोर नें अपना बचाव किया.

"इन सब बातों सै मैं आश्चर्य के समुद्र मैं डूबा जाता हूं. भला यह पोटली कैसी है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"आपकी हवालात की खबर सुन्कर आपकी स्त्री यहां दौड आई थी और जिस्समय मैं आप सैं बातें कर रहा था उस्समय उसी के आनें की खबर मुझको मिली थी मैंनें उसै बहुत समझाया परन्तु वह आपकी प्रीति मैं ऐसी बावली हो रही थी कि मेरे कहनें सै कुछ न समझी, उस्नें आपको हवालात सै छुडानें के लिये यह सब गहना जबरदस्ती मुझै दे दिया. वह उस्समय सै पांच फेरे यहां के कर चुकी है उस्नें सवेरे सै एक दाना मुँहमैं नहीं लिया उस्का रोना पलभर के लिये बन्द नहीं हुआ रोते, रोते उस्की आंखें सूज गईं हा ! उस्की एक, एक बात याद करनें सै कलेजा फटता है. और आप ऐसी सुपात्र स्त्री के पति होनें सै निस्संदेह बडे भाग्य शाली हो" लाला ब्रजकिशोर नें आंसू भरकर कहा.

"भाई ! जब उस्ने उसी समय तुमको यह गहना देदिया था तो फिर मेरे छुडाने में देर क्यों हुई ?" लाला मदनमोहनने संदेह करके पूछा.

"एक तो दो एक लेनदारों का फैसला जबतक नहीं हुआ था और हरकिशोर की डिक्री का रुपया दाखिल कर दिया जाता तो फिर उन्के घटने की कुछ आशा न थी, दूसरे आपके चित्तपर अपनी भूलों के भली भांति प्रतीत होजाने के लिये भी कुछ ढील

की गई थी परन्तु कचहरी बरखास्त होनें सै पहलै मैंने आपके छुडानें का हुक्म ले लिया था और इसी कारण सै मेरी धर्मकी बहन आपकी सुशीला स्त्री को आपके पास आनें मैं कुछ अडचल नहीं पड़ी थी. हां मैंनें आपका अभिप्राय जानें बिना मिस्टर ब्राइट सै उस्की चीजैं फेरनें का वचन कर लिया है यह बात कदाचित् आपको बुरी लगी होगी" लाला ब्रजकिशोरने मदनमोहन का मन देखनें के लिये कहा.

"हरगिज नहीं, इस बातको तो मैं मनसै पसन्द करता हूं झूंटी भडक दिखानें मैं कुछ सार नहीं 'आई बहू आए काम गई बहू गए काम' की कहावत बहुत ठीक है और मनुष्य अपनें स्वरूपानुरूप प्रामाणिक पनें सै रहकर थोडे खर्च मैं भली भांति निर्वाह कर सक्ता है" लाला मदनमोहननें संतोष करके कहा.

"अब तो आपके विचार बहुत ही सुधर गए. एबडोलोमीन्स को ग़रीबी सै एकाएक साइडोनिया के सिंहासन पर बैठाया गया तब उस्नें सिकन्दरसै यही कहा था कि "मेरे पास कुछ न था जब मुझको विशेष आवश्यकता भी न थी अब मेरा वैभव बढेगा वैसी ही मेरी आवश्यकता भी बढ जायगी" कच्चे मनके मनुष्यों को अपनें स्वरूपानुरूप बरताव रखनें मैं जाहिरदारी की झूंटी झिझक रहती है इसी सै वह लोग जगह, जगह ठोकर खाते हैं परन्तु प्रामाणिक पनें सै उचित उद्योग करकै मनुष्य हर हालत मैं सुखी रह सक्ता है" लाला ब्रजकिशोरनें कहा.

"क्या अब चुन्नीलाल और शिंभूदयाल आदिको उन्की बदचलनी का कुछ मजा दिखाया जायगा ?" लाला मदनमोहननें पूछा.

"किसी मनुष्य की रीत भांति सुधरे बिना उस्सै आगे को काम नहीं लिया जासक्ता परन्तु जिन लोगों का सुधारना अपने बूते सै बाहर हो उन्सै काम काजका संबंध न रखना ही अच्छा है और जब किसी मनुष्य सै ऐसा संबंध न रक्खा जाय तो उस्के सुधारनें का बोझ सर्ब शक्तिमान परमेश्वर अथवा राज्याधिकारियों पर समझ कर उस्सै द्वेष और बैर रखनें के बदले उस्की हीन दशा पर करूणा और दया रखनी सज्जनों को विशेष शोभित करती है" लाला ब्रजकिशोरनें जवाब दिया.

"मेरी मूर्खता सै मुझपर जो दुख पडना चाहिये था पडचुका अब अपना झूंटा बचाव करनें सै कुछ फायदा नहीं मालूम होता मैं चाहता हूं कि सब लोगों के हित निमित्त इन दिनोंका सब बृत्तान्त छपवा कर प्रसिद्ध कर दिया जाय" लाला मदनमोहननें कहा.

"इस्की क्या जरूरत है? संसार मैं सीखनें वालों के लिये बहुत सै सत्शास्त्र भरे पडे हैं" लाला ब्रजकिशोरनें अपना संबंध बिचार कर कहा.

"नहीं सच्ची बातों मैं लजानें का क्या काम है? मेरी भूल प्रगट हो तो हो मैं मन सै चाहता हूं कि मेरा परिणाम देखकर और लोगों की आंखैं खुलैं इस अवसर पर जिन, जिन लोगों सै मेरी जो, जो बात चीत हुई है वह भी मैं उस्मैं लिखनें के लिये बता दूंगा" लाला मदनमोहननें उमंगसै कहा.

"धन्य! लालासाहब! धन्य! अब तो आपके सुधरे हुए बिचार हद्द के दरजे पर पहुंच गए" लाला ब्रजकिशोरनें गद्गद बाणी सै कहा "औरोंके दोष देखनें वाले बहुत मिल्ते हैं. परन्तु

जो अपनें दोषों को यथार्थ जान्ता हो और जान बूझकर उन्का झूंटा पक्ष न करता हो बल्कि यथा शक्ति उन्के छोडनें का उपाय करता हो वही सच्चा सज्जन है"

"सिलसिले बन्द सीधामामूली काम तो एक बालक भी कर सक्ता है परन्तु ऐसे कठिन समय मैं मनुष्य की सच्ची योग्यता मालूम होती है आप ने मुझको इस अथाह समुद्र मैं डूबनें सै बचाया है इस्का बदला तो आपको ईश्वर के हां सै मिलैगा मैं सो जन्म तक लगातार आपकी सेवा करूं तो भी आपका कुछ प्रत्युपकार नहीं कर सक्ता परन्तु जिस्तरह महाराज रामचन्द्र नें भिलनी के बेर खाकर उसे कृतार्थ किया था इसी तरह आप भी अपनी रुचिके विपरीति मेरा मन रखनें के लिये मेरी यह प्रार्थना अंगीकार करैं" लाला मदनमोहन ब्रजकिशोर को आठ, दस हजार का गहना देनें लगे.

"क्या आप अपनें मनमैं यह समझते हैं कि मैंनें किसी तरह के लालच सै यह काम किया?" लाला ब्रजकिशोर रुखाई सै बोले "आगे को आप ऐसी चर्चा करके मेरा जी बृथा न दुखावैं. क्या मैं गरीब हूं इसी सै आप ऐसा बचन कहकर मुझको लज्जित करते है? मेरे चित्त का संतोष ही इस्का उचित बदला है. जो सुख किसी तरह के स्वार्थ विना उचित रीति सै परोपकार करनें मैं मिल्ता है वह और किसी तरह नहीं मिल सक्ता. वह सुख, सुख की परमावधि है इसलिये मैं फिर कहता हूं कि आप मुझको उस सुख सैं वंचित करनें के लिये अब ऐसा बचन न कहैं."

"आप का कहना बहुत ठीक है और प्रत्युपकार करना भी मेरे बूते सै बाहर है परन्तु मैं केवल इस्समय के आनन्द मैं——"

"बस आप इस विषय मैं और कुछ न कहैं. मुझको इस्समय जो मिला है उस्सै अधिक आप क्या दे सक्ते हैं ? मैं रुपे पैसे के बदले मनुष्य के चित्त पर विशेष दृष्टि रखता हूं और आपको देने ही का आग्रह हो तो मैं यह मांगता हूं कि आप अपने आचरण ठीक रखनें के लिये इस्समय जैसे मजबूत हैं वैसे ही सदा बनें रहैं और यह गहना मेरी तरफ सै मेरी पतिब्रता बहन और उस्के गुलाब जैसे छोटे, छोटे बालकों को पहनावें जिन्के देखनें सै मेरा जी हरा हो" लाला ब्रजकिशोर नें कहा.

"परमेश्वर चाहेंगे तो आगे को आप की कृपा सै कोई बात अनुचित न होगी" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

"ईश्वर आप को सदा भले कामों की सामर्थ्य दे और सब का मंगल करे" लाला ब्रजकिशोर सच्चे सुख मैं निमग्न होकर बोले.

निदान सब लोग बडे आनन्द सें हिल मिलकर मदनमोहन को घर लिवा ले गए और चारों तरफ सै "बधाई" "बधाई" होनें लगी.

जो सच्चा सुख, सुख मिलनें की मृगतृष्णा सै मदनमोहन को अबतक स्वप्न मैं भी नहीं मिला था वही सच्चा सुख इस्समय ब्रजकिशोर की बुद्धिमानी सै परीक्षागुरु के कारण प्रामाणिक भाव सै रहनें मैं मदनमोहन को घर बैठे मिल गया ! ! !

॥ समाप्त ॥